बिसाऊ दिग्दर्शन



लेखक

डा० उदयवीर शर्मा   श्री अमोलकचंद जांगिड



प्रकाशक

तरुण साहित्य परिषद्

बिसाऊ (झुंझुनू-राज०)

बिसाऊ दिग्दर्शन

श्री रामावतार कसेरा, बिसाऊ के सम्पूर्ण अर्थदान से प्रकाशित



प्रकाशक

तरुण साहित्य परिषद्, बिसाऊ



लेखक

डा उदयवीर शर्मा

श्री अमोलकचन्द जांगिड



प्रथम संस्करण 1000 प्रतियां



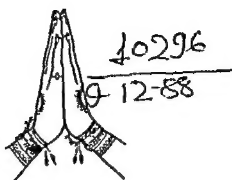
मुद्रक

मुरारका प्रिण्टर्स

नवलगढ़ (राज०)

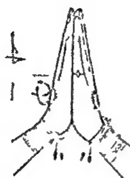
Bissau Digdarshan

By Dr Udaibir Sharma & Shri Amolak Chand Jangir



समर्पण

जिसका रस पी ज्ञान बढाया,
तन - मन को जिसने सरसाया,
उस ममतामयी जन्म - भूमि की
माटी के कण कण को अर्पित,
घने चाव से, घने भाव से
लिए सदा मन मे अपनापन
जन - मन की यह सार कमाई,
नगर बिसाऊ का दिग्दर्शन ।



प्रकाशकीय

श्री तरुण साहित्य परिषद् का चिर प्रतीक्षित प्रकाशन 'बिसाऊ दिग्दर्शन' आपके कर कमलो मे प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। प्रारम्भ से ही परिषद् का यह लक्ष्य रहा कि बिसाऊ नगर के सम्बन्ध मे अतीत से वर्तमान तक एक विस्तृत एवं प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत की जावे जिससे कि यह भावी पीढ़ी के लिए एक प्रेरणादायक प्रकाशन बन सके। मेरा यह विश्वास है कि परिषद् अपने इस उद्देश्य मे सफल रही है। यह सब डा० उदयवीर शर्मा एवं श्रीअमोलकचन्द जांगिड के अथक प्रयासो से ही सभव हो सका है। इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण व्यय भार बिसाऊ के युवा व्यवसायी श्री रामावतार कहेरा ने वहन करके मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम का अद्वितीय परिचय दिया है।

इस ग्रथ के लिए सामग्री एव सूचनाए जुटाने मे सब श्री प० रामदत्त शर्मा, डा० मनोहर शर्मा, पीरामल प्राय, सालीराम दायमा, अजरहुसैन वकील, चिमनलाल शर्मा, तुलाराम जोशी, काका वल्लभ मिश्र, गनेडा राजाजी, साम्लीराम भाटी, अलादीन खा, परमानन्द जटिया, गौरीशंकर पुजारी आदि ने जो हार्दिक सहयोग दिया उसके लिए परिषद् उन सब का आभार प्रकट करती है। इस ग्रथ मे वर्णित सगीत सम्बन्धी पुरानी जानकारी स्व० सदाराम जी गुरु से प्राप्त हुई थी। इनके अतिरिक्त जिन सज्जनो का प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग रहा है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

राजस्थानी के मूर्धन्य विद्वान श्रीमान् रावत जी सारस्वत ने इस ग्रथ की भूमिका लिख कर हमे कृतार्थ किया है। श्री सारस्वत मूलत बिसाऊ के निवासी है। बहुत पहले आपके पूर्वज चूरू मे बस गये थे।

पूरा प्रयत्न करने पर भी अनजाने में जिन जानकारियो का समावेश इस ग्रथ मे नही हो पाया है उनके लिए परिषद् क्षमा चाहती है। बिसाऊ के प्रवासी नागरिको की जानकारी उपलब्ध न हो पाने के कारण इस ग्रथ मे नहीं दी जासकी है।

रामजीलाल कल्याणी
मंत्री
तरुण साहित्य परिषद, बिसाऊ

स्वतन्त्रता दिवस, 1988

भूमिका

राजस्थान जैसे विशाल प्रदेश का वास्तविक इतिहास, कस्बे व शहर का पृथक इतिहास अनुभवी लोगो द्वारा तयार किए जाने से ही प्रकाश मे आसकता है। बहुत वर्ष पहले फतेहपुर (शे) कस्बे के लिए ऐसा एक प्रयत्न किया गया था। इस शैली को उपयुक्त मान कर ही लोगो ने अपने अपने कस्बे अथवा तत्कालीन सत्ता के अधीन रहे समस्त क्षेत्र के एसे इतिहास लिखने प्रारम्भ किए। यूरोपीय विद्वानो ने भी अपने सांस्कृतिक, पुरातात्विक तथा सामाजिक सर्वेक्षण इस प्रकार खण्डो मे विभाजित करके लिखे और अलग अलग जिलो, रियासतो के गजेटियर भी तयार किए।

बिसाऊ के डा० श्री उदयवीर शर्मा तथा श्री अमोलकचन्द जांगिड जो स्वय साहित्यकार, विद्वान तथा शिक्षाविद् हैं, ने अपनी निष्ठा और लगन से बिसाऊ का सर्वांगीण इतिहास प्रस्तुत किया है। पुस्तक म ऐतिहासिक एव भौगालिक परिचय के अतिरिक्त शिक्षा, साहित्य, कला, सस्कृति, व्यापार व्यवसाय आदि विषयो की विस्तृत जानकारी प्रामाणिक रूप मे दी गई है।

इस ग्रथ को प्राचीन महान व्यक्तियो से जोडे रखते हुए अधुनातन साहित्यिक, सांस्कृतिक, शक्षिक तथा अन्य सभी क्षेत्रो मे सामान्य जीवन जीते हुए प्रत्यक विशिष्ट व्यक्तित्व को इसम स्थान मिला है। नगर की सभी धाराओ मे अपना गतिशील जीवन जीने वाले प्रत्येक नागरिक की प्रतिभा का गान इस ग्रथ में गूज रहा है, यह इसकी अद्वितीय विशेषता है जिसका परम्परित सोच मे लिखे जाने वाले इतिहास ग्रथो मे मिलना कठिन है। आचलिकता क प्रान द ने इसको नगर के आम जनता की वस्तु बना दिया है। यह कहा जा सकता है, लेखक गण ने ऐसा कोई विषय अछूता नही छोडा है जिसका इस इतिहास मे उल्लेख नही हो।

बिसाऊ के निवासी अथवा यहा से पतृक सम्बध रखने वाले प्रत्येक नागरिक को तो यह ग्रथ रुचिकर लगना ही चाहिए, अपितु अन्य सस्कृति प्रेमी सज्जनो के लिए भी यह सग्रहणीय बन गया है।

इतिहास प्रेम भारत म वेदो से भी पूव से चला आता है। पुराण वेदा से भी पहले थे, यद्यपि आज उपल ध प्रमाण तो इसको प्राय विक्रम के बाद की रचना ही मानत हैं। इस दृष्टि मे हमारे इतिहास प्रेम की एक बडी पूर्ति इस ग्रथ से हुई है। जबतक हम अपने स्थान का ही इतिहास व भूगोल नहीं जानेंगे तब तक सुदूर यूरोप के देशो के इतिहास रट लने मे कोई सार नही है। अत इस इतिहास के माध्यम से इतिहास प्रेमियो के समक्ष जो जानकारी रखी गई है, यह सवथा स्तुत्य है।

मैं पुस्तक के लेखक तथा अ य किसी भी भाति इस महान् यज्ञ से सम्बद्ध हरेक साथी को अनेकश साधुवाद देता हू तथा यह शुभ कामना करता हू कि वे इसी प्रकार अपनी मातृभूमि की सेवा करते रहें और जन-जीवन म जागरूकता बनाई रखें।

रवीन्द्रनाथ टैगोर जय ती
सवत् २०४५ वि

रावत सारस्वत
डी २४२, मीरा माग
बनी पाक, जयपुर



संस्था के प्रथम संरक्षक

श्री रामावतार कसेरा

साहित्य साधना जीवन की मंगलमय साधना है। साहित्य का प्रचार, पावन-प्रकाशन आदि सभी पुनीत कार्य हैं। बिसाऊ के युवा व्यवसायी श्री रामावतार कसेरा ने इन्हीं कल्याणकारी कार्यों में सदैव हाथ बटाया है तथा वे साहित्य प्रकाशन में भावविभोर होकर रुचि रखते हैं। इसी का फल है कि 'तरुण साहित्य परिषद्', बिसाऊ के संरक्षक मण्डल के सदस्य के रूप में आप ही सर्वप्रथम आगे आए और अद्यावधि परिषद् की प्रत्येक प्रवृत्ति से आप सदैव जुड़े रहते हैं, चाहे कितना भी और कैसा भी भार उठाना पड़े। यह आपके अन्तर्मन की साहित्यिक रुझान का ही प्रकटीकरण है।

श्री कसेरा का जन्म बिसाऊ के एक व्यवसायी परिवार में हुआ। इनके पिता श्री गोरधनदास जी एक कुशल व्यापारी रहे हैं। कपड़ा, किराना तथा अन्य अनेक प्रकार की व्यापारिक विधाओं में आप सदैव मन से जुटे रहे। बिसाऊ में आपकी एक फर्म— भगवानदास कालूराम— के नाम से बहुत वर्षों तक अपनी सम्पन्नता के साथ चलती रही। बिसाऊ के बाजार में इस फर्म की अच्छी चल थी। कपड़े के व्यापार में इनकी प्रमुखता रही। श्री गोरधनदास जी के पिताश्री का नाम भगवानदास था। यह महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) से यहां व्यापार करने के लिए आये थे। इनके (भगवानदास) तीन पुत्र हुए— कालूराम, भूरामल और गोरधनदास। श्री गोरधनदास जी के चार पुत्र— नन्दकिशोर, सीताराम, रामावतार तथा विश्वनाथ— हुए। श्री रामावतार अपने बड़े भाई श्री नन्दकिशोर के गोद गए।

श्री रामावतार कसेरा बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी रहे। पढ़ने लिखने के प्रति आपका रुझान समय के साथ बढ़ता गया तथा विद्यार्थी जीवन में आप विद्यालयी प्रवृत्तियों में सदैव अग्रणी रहे। भाषण, लेखन तथा अन्य प्रतियोगिताओं में आपने सदैव नाम कमाया।

बचपन से ही आपको अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा तथा विद्यार्थी जीवन में आर्थिक कठिनाइयां होते हुए भी आपने हिम्मत नहीं हारी। पढ़ने के प्रति सजग रहे। आप अपनी कमियों को छिपाने में विश्वास नहीं रखते थे। इस कारण इनके गुरुजन विद्यार्थी रामावतार का उत्साह बढ़ाते रहे। वे अपनी कक्षा में उन्नत स्थिति से उत्तीर्ण होते गए और गुरुजनों का अगाधप्रेम भी इनके प्रति बढ़ता गया। श्री कसेरा ने बिसाऊ में हाईस्कूल तक अध्ययन किया। इसके बाद कलकत्ता जाकर नौकरी करते हुए पढ़ते रहे तथा बी काम की डिग्री अच्छे अंको से प्राप्त की।

लम्बे समय तक व्यापारिक प्रतिष्ठानों में नौकरी करते हुए आपने कलकत्ते के व्यापारिक तौरतरीकों को समझा और उनको व्यवहार में उतारा। धीरे धीरे व्यापार में दक्षता प्राप्त होने पर आपने ट्रांसपोर्ट का धंधा प्रारम्भ कर दिया और उसमें उत्तरोत्तर विकास करते रहे। आज आपकी गणना एक प्रतिष्ठित व्यवसायी के रूप में होती है।

श्री कसेरा के एक पुत्री— सविता (विवाहित २३ वर्ष) तथा तीन पुत्र— राजेश (१७ वर्ष), राकेश (१५ वर्ष) और सुरेश (१४ वर्ष) हैं। आपका भरा पूरा परिवार सुसम्य एवं सुयोग्य है।

श्री रामावतार कसेरा में सभी पतृक गुण हैं। नगर की सभी संस्थाओं को आवश्यकता पड़ने पर आप मुक्त हस्त से दान देते रहते हैं। साहित्य एवं शिक्षा से आपका विशेष जुड़ाव है। इसी के फलस्वरूप 'बिसाऊ दिग्दर्शन' के सम्पूर्ण प्रकाशन व्यय भार को आपने अपने ऊपर ले लिया। श्री कसेरा उदारमना व्यक्ति हैं। इसीलिए नगर के बहुत बड़े धनीमानी न होते हुए भी आप नगर की सभी संस्थाओं को अपने सीमित साधनों में भी अत्यधिक आर्थिक सहयोग देते रहते हैं, जो एक दानवीरता का उत्तम आदर्श है। ईश्वर ऐसे मुक्त हृदय दानी को और अधिक साधन सम्पन्न बनावें।

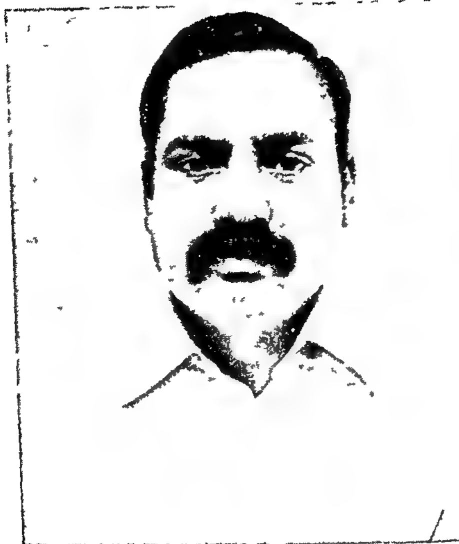
श्री कसेरा सरल हृदयी, निरभिमानी, समाज सेवी तथा मधुरभाषी गुणों से मंडित हैं। नगर विकास में आपसे अनेक अपेक्षाएं हैं।

नगर की ऐसी युवा प्रतिभा की उत्तरोत्तर प्रगति हो और परम प्रभु उनको शतायु करें, यही मंगलमय कामना है।





स्व० गोरधनदास बसेरा



श्री रामावतार कसेरा

पहला अध्याय

ऐतिहासिक झलक

आमेर (जयपुर) राज्य के सूर्यवंशी कछवाहा (कुशवाहा) शासकों की सुदीर्घ वंश परम्परा में वीरवर शेखाजी का जन्म हुआ। इनके विलक्षण व्यक्तित्व एवं बल विक्रम के प्रभाव ने 'शेखावत शाखा' को जन्म दिया। बिसाऊ के शासक शेखाजी की वंश परम्परा में अपना गौरवपूर्ण स्थान रखते थे तथा इनका ठिकाना (राज्य) भी शेखावतों के अन्य ठिकानों में अपना विशिष्ट महत्व रखता था। इतिहास की दृष्टि से गौरवशाली इस वंश परम्परा का संक्षिप्त परिचय यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

पूर्व परम्परा

कछवाहों की वंश परम्परा में हुए नरवर (ग्वालियर) के शासक ईशसिंह के पौत्र दुल्हेराव नरवर से दौसा आए और वहां के प्रथम शासक हुए। इनके पिता का नाम सोढदेव था। दुल्हेराव के पुत्र कांकिलदेव ने आम्बेर की नींव डाली तथा वहां के शासक हुए। इनके बाद क्रमशः हणुदेव, जनहडदेव, पज्जवनदेव, मलेसीदेव, बीजलदेव, राजदेव, कील्हदेव, कुंतलदेव, जूणसीदेव, राजा उदयकरण आमेर की गद्दी पर आसीन हुए।

उदयकरण के पुत्र बालोजी (वि स १४४५-१४८७) को अपने पिता के जीवनकाल में ही बारह गांवों सहित बरवाड़ा जागीर में मिला। इनके पुत्र मोकलजी वि स १४८७ में बरवाड़ा की गद्दी पर बैठे। इन्होंने अपने राज्य का विस्तार किया। वि स १५०२ में मोकलजी की मृत्यु हो गई। अपने पिता की मृत्यु के बाद राव शेखा १२ वर्ष की अवस्था में राजगद्दी पर विराजे। इन्होंने वि स १५०२ से १५४५ तक राज्य किया। ये अपने समय के अद्वितीय वीर थे। इन्होंने अपने बाहुबल से राज्य का विस्तार किया तथा एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और अमरसर को अपनी राजधानी बनाया। इन्होंने अनेक युद्ध लड़े और लगभग सभी में विजयश्री प्राप्त की। इनके और गौड़ों के मध्य हुए युद्ध के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है—

गौड़ बुलाया घाटवै, चढ आयो शेखा ।
धारा लस्कर मारणा, शेखाण रा अनसेरा ॥

एक छोटे से राज्य के शासक राव शेखा अपने बाहुबल से ३६० गांवों के अधिकारी हुए । इनकी पाग और 'पाग' थी । इन्हीं के नाम पर 'शेखावत शाखा' का प्रादुर्भाव हुआ ।

शेखाजी के बाद उनके पुत्र रायमल ने वि स १५४५ से १५६४ तक अपनी सूझ-बूझ एव निपुणता से शासन किया । इनके बाद राव सूजाजी गद्दी पर विराजे । सूजाजी के पुत्र राजा रायसलजी दरबारी ने लाडेला पर अधिकार करके अपने स्वतत्र राज्य की स्थापना की । रायसलजी के पुत्र भोजराजजी ने बादशाह अकबर से उदयपुर का पट्टा प्राप्त कर लिया और अपने ठिकाने (शासन) का विस्तार किया । अपने पिता की मृत्यु के बाद टोडरमल को उदयपुर का राज्य प्राप्त हुआ । इन्होंने वि स १६६७ से १७१८ तक शासन किया । इनकी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध है—

दोय उदयपुर ऊजळा, दोय दातार अटल्ल ।
एक तो राणो जगतसी, दूजो टोडरमल्ल ॥

टोडरमल के छठे पुत्र जुझारसिंह हुए जिन्होंने अपने पिता के जीवन काल में ही नए ठिकाने का निर्माण कर लिया था । इनके पुत्र जगरामसिंह हुए । जगरामजी के वीरवर शार्दूलसिंह हुए जिन्होंने झुंझुनू में अपने नए स्वतत्र राज्य की स्थापना की ।

शार्दूलसिंह (वि स १७८७-१७९९) का जन्म वि स १७३८ में लाडाणा के निकट टोक छीलरी (झुंझुनू) में हुआ । इनका ननिहाल मावडा में था । वे बचपन [illegible] ही स्वतत्र प्रकृति के व्यक्ति थे । उनमें अदम्य साहस था जिसका परिचय वे बचपन से ही देने लग थे । उनके साहस से प्रभावित होकर झुंझुनू नवाब रोहिलाखा ने उनको अपने राज्य का सुसचालन करने के लिए झुंझुनू बुलाया । यह घटना लगभग वि स १७७८ की है ।

नवाब के राज्य की हालत बिगडी हुई थी । सभी छुटभइया नवाब रोहिलाखा को तग करते थे । टूटिया पाचोदा डाकू की लूटपाट से प्रजा तग थी । शार्दूलसिंह ने उस डाकू का वध किया । इससे प्रसन्न होकर नवाब ने उन्हें काट की जागीर दे दी । १६ सवारों का मनसब बना दिया तथा पाच रुपए

दैनिक उन्हें दिए जाने लगे। वि स १७८० मे उनको झुंझुनू की नवाबी का दीवान बनाया गया।

शार्दूलसिंह ने झुंझुनू की शासन व्यवस्था सम्भालते ही बडवासी, बाट, कोलसिया, सेडी, बघेरा, बजावा, धनूरी, घोडीवारा, चेलासी, राहेली, रिजाणी आदि के नवाबो के आतंक को दबा दिया। इन सबको अपने वश मे कर लिया। वि स १७८३ मे शार्दूलसिंह नवाब को लेकर दिल्ली गए। वहा उन्होने बकाया की किश्तें कायम करवाई। इस प्रकार उन्होने झुंझुनू की नवाबी के चरमराते ढाचे को व्यवस्थित किया।

झुंझुनू नवाब रोहिलाखा की शासकीय कमजोरी के कारण उसके शत्रुओ की संख्या कम नही हुई। उसकी बेगम ने उसे समझाया और झुंझुनू का पट्टा शार्दूलसिंह को दिलवा दिया। राज्य पर पूर्ण अधिकार करने के लिए शार्दूलसिंह ने उदयपुरवाटी से अपने विश्वसनीय भाई व बंधुओ को बुलाया तथा मार्गशीर्ष सुदि ८ शनिवार वि स १७८७ तद्नुसार ता ५ दिसम्बर, सन् १७३० को झुंझुनू पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार झुंझुनू मे उनकी स्थिति सुदृढ हो गई। इस घटना का सूचक निम्नलिखित दोहा अत्यधिक लोक प्रचलित है—

सतरा सौ सतासिये, अगहन मास उदार।
साद लीनी झुंझुनू, सुद आठ सनिवार॥

इस प्रकार झुंझुनू पर दो सौ वर्षों से अधिक समय तक चलने वाला कयामखानी शासन हमेशा के लिए समाप्त हो गया। इसमे शूरवीर शार्दूलसिंह की चातुरी, वीरता तथा कार्यकुशलता ही कारगर हुई।

मगवाणा की लडाई के बाद शार्दूलसिंह झुंझुनू लौट आए। उनका संघर्षमय जीवन नौ वर्ष की आयु से ही प्रारंभ हो गया था और झुंझुनू पर अधिकार करने के बाद से लेकर अंत तक उन्होने अनेक युद्ध लडे। वे अंतिम समय मे परशुरामपुरा मे रहने लगे और ईश भक्ति मे लीन रहने लगे। यहा उन्होने अपने अंतिम समय मे वि स १७९८ मे श्री गोपीनाथ जी का मंदिर बनवाया। कुछ समय बाद वे बीमार हो गए और चैत्र सुदि १३ वि स १७९९ को उनका स्वर्गवास परशुरामपुरा मे हो गया। उनके लिए निम्नलिखित दोहा अत्यधिक प्रसिद्ध है—

सादूलो जगराम रो, सिहल बुरी बलाय।
राम दुहाई फेरदी, ल्हूकती फिर खुदाय॥

इनकी स्मृति म वत्तमान पुराने परशुरामपुरा मे इन पर १२ खम्भो की एक छतरी उनके पुत्रो ने वि स १८०७ म बनवाई जो आज भी शादूलसिंह की वीरता का गौरवगान कर रही है।

शादूलसिंह के जोरावरसिंह किशनसिंह, बहादुरसिंह, अखयसिंह, नवलसिंह व केशरीसिंह कुल छ पुत्र थे। बहादुरसिंह शादूलसिंह के जीवनकाल मे ही वीरगति को प्राप्त हो गए थे। इस कारण शादूलसिंह के राज्य को शेष पाच पुत्रो म बराबर बाट लिया गया। पाचो पुत्रो का यह राज्य 'पचपाना' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह बटवारा जेठ वदी १ (एकम्) वि स १८०० को सम्पन्न हुआ। केशरीसिंह बिसाऊ के शासक हुए।

बिसाऊ के शासक

ठाकुर केशरीसिंह

(वि स १७६६ से १८२५ तक)

केशरीसिंह झुझुनू मे शेखावतो के शासन के सस्थापक वीरवर शादूलसिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। इनका जन्म वि स १७८५ म हुआ था।

शादूलसिंह के स्वगवास के पश्चात उनका राज्य पाच भागो म विभाजित हुआ। इनके हिस्से मे बिसाऊ, सूरजगढ और डूण्डलोद सहित ८४ गाव आए। इन्होने नूआ, बिसाऊ, सूरजगढ उदयपुरवाटी, डूण्डलोद आदि स्थानो पर अपना शासन सुदृढ करने के लिए किले बनवाए। पिता के स्वगवास के समय इनकी आयु १४ वष की थी। य अधिक समय तक झुझुनू ही रह किन्तु पिता के राज्य का पाचो भाइयो मे बराबर बटवारा होने पर ये अपने प्रारम्भिक काल मे नूआ रहने लगे, जहा वि स १८०० मे एक किला बनवाया। इन्होने वि स १८०७ म डूण्डलोद म एक गढ बनवाया।

केशरीसिंह ने अपने राज्य को धीरे-धीरे सुदृढ बनाने की दृष्टि से बिसाऊ के किले की नीव वि स १८०८ मे रखी। यह किला स १८१२ म बन कर तयार हुआ। किले की नीव रखने के समय एक सौ एक बीघा जमीन पुण्याथ दी गई थी जिसका एक रुक्का मिति आषाढ वदी स १८१० का लिखा हुआ मिला है जिस पर केशरीसिंह की राजमुद्रा लगी हुई है, इस जमीन म से ५१ बीघा का एक ताम्र पत्र व पट्टा भी उक्त तिथि को ही बनाकर दिए गए हैं। उनमें से रुक्के की नकल आगे प्रस्तुत है—

५

४
दीनो

हु

से

में

हुई
स

से

लगता है, उस समय 'बीसाह्
चाहा परन्तु यह नाम प्रचार मे नही आसका । मानस म लोकप्रिय था । इस म
नाम अपनी प्रसिद्धि के कारण तत्कालीन जनक का प्रचार कराने के साथ
स्पष्ट होता है कि केशरीसिंह के द्वारा बिसा सकता है बिसाऊ का प्रारम्भिक
'बिसाले की ढाणी' की जनश्रुति भ्रामक है । परन्तु केशरीसिंह के ता 'बीसा
नाम कभी कोई 'बिसाले की ढाणी' रहा हो मिला था । उस समय बिसाऊ का
नामक गाव सुव्यवस्थित ढग से बसा बसाया ही न शासक ने उसको और उन्नत
बाजार अपनी उन्नति पर था तथा तत्कालीन र' अपनी रौनक पर था ।
बनाया । उस समय बिसाऊ का 'उतराधा बाज

पर एक धूल कोट वि स १८१८
केशरीसिंह ने 'मडीचा' नामक स्थान स प्रसिद्ध हुआ । इन्होने दूसरा
मे बनवाया जो आगे चलकर सूरजगढ नाम रवाया । इस प्रकार कोट किलो
पक्का किला उदयपुर मे वि स १८१८ म बन समय चारो ओर जमाली ।
का निर्माण करके इन्होने अपनी धाक जरी बनकर तयार हुई । इन्होने
वि स १८१९ मे बिसाऊ शहर की चहारदीव
बिसाऊ गढ मे ड्योढी-महल आदि बनवाए ।

शासन काल मे भी इनका जयपुर
जयपुर महाराजा माधवसिंह के से १८२२ तक नवलसिंह तथा
दरबार म बहुत सम्मान था । वि स १८१९ मे शामिल हुए । इनकी सेवा
केशरीसिंह दोना भाई बूदी के हाडो से हुए युद्ध सिंह ने इनका पुरस्कार स्वरूप
वीरता और पराक्रम से प्रसन्न होकर माध गाव थे । इन गावो को बाद म
'काटी खेडो का परगना' दिया जिसमे १२० बाट लिए ।
वि स १८२३ म दोनो भाइयो ने आधे-आधे

वस्था म आगे चलकर दोना को
'काटी खेडे के परगने' की शासन व्यह के पुत्र अर्जुनसिंह से अपने
कष्ट होने लगा । इसलिए दोनो ने बखतसिंर परिवतन कर लिया । सिंघाना
अधिकार के गाव देकर सिंघाना के कुछ गाव लेश और मिलन पर इनका कुल
मे चौथा हिस्सा तो पहले से ही था और चतुर्थ केशरीसिंह अब कुल ८४+२४=
हिस्सा वहा आधा (½) हो गया । इस प्रकार
१०८ गावो के शासक हो गए ।

सिंह का स्वर्गवास हुआ । इनके
वि स १८२५ म झुंझुनू म केशरी ानकवरी सती हुई । इनके तीन
साथ आउवा के कुशलसिंह चापावत की पुत्री न वाल मे ही हो गई । शेष दो
पुत्र थे । प्रथम पुत्र फतेहसिंह की मृत्यु बा पुत्री उम्मेद कवरी जीवित रहे ।
पुत्र — हणूतसिंह तथा सूरजमलसिंह और एक

केशरीसिंह के स्वर्गवास के चार वर्ष पश्चात वैशाख शुक्ला ३ स १८२६ को दोनो भाइयो ने पिता के राज्य का बटवारा कर लिया। परन्तु एक पट्टा दोनो का सम्मिलित रूप से वि स १८३० की जेठ बदी ५ का किया हुआ मिला है जिसकी नकल आगे प्रस्तुत है। इससे प्रकट होता है कि बटवारे के बाद भी सम्मिलित रूप से पट्टे किए जाते रहे है।

पट्टे की नकल

॥ श्रीरामजी

O मोहर

सीधी श्री राजी श्री हणवतसघजी राजी श्री सुरजमलजी बचनात क० बीसाऊ का पचा दसे प्रप्रची मदिर कीलाणदासजी क देहर धजा हाथ इकोवन ५१ बाहर की ये पचा ठराई उस र व दीया रा जे मी जेठ बदी ५ स १८३० दसपत गगाबीसन हुकम हीजूर लीपी।

यह पट्टा वर्तमान में 'पचायती मदिर' के नाम से प्रसिद्ध मदिर के सम्बन्ध में है। इन सब से यही प्रकट होता है कि बिसाऊ कस्बे की स्थिति उत्तरोत्तर प्रगति पर रही।

ठाकुर सूरजमलसिंह

(वि स १८२५—वि स १८४८)

सूरजमलसिंह का जन्म वि स १८१२ मे हुआ। अपने पिता के स्वर्गवास के पश्चात् १३ वर्ष की आयु मे वि स १८२५ मे वे बिसाऊ की गद्दी पर विराजे। केशरीसिंह के दोनों पुत्रो में प्रथम पुत्र के हिस्से मे डूण्डलोद और उसके गाव आए तथा द्वितीय पुत्र सूरजमलसिंह के हिस्से मे बिसाऊ सूरजगढ (अडीचा) तथा उसके गाव आए। इन्ही गावों पर उनके वशज (बिसाऊ के शासक) राज्य करते रहे।

बादशाह अलीगोहर शाह आलम ने शेखावाटी पर आक्रमण करने के लिए फर्रूखाबाद के पोहम्मा बिलोची और रेवाडी के प्रसिद्ध अहीर मित्रसेन को भेजा। अहीर मित्रसेन शेखावाटी पर दूसरी बार आया था। पहले वह शेखावतो से करारी हार खाकर लौट गया था। दूसरी घटना वि स १८३१ की है।

शेखावतो मे परस्पर गहरी फूट होने पर भी एक 'जातीय सकट' के रूप मे इस आक्रमण को स्वीकार किया और सभी शेखावत तत्काल एक होकर अपनी अपनी सेना लेकर माढण नामक गांव मे निकट एकत्रित हुए। सूरजमलसिंह भी अपनी सेना सहित उस जातीय सुरक्षा युद्ध मे सम्मिलित हुए। इस युद्ध मे शेखावतो की रक्षार्थ जयपुर नरेश महाराज प्रतापसिंह ने भी अपनी सेना भेजी।

शेखावतो और मित्रसेन की सेना मे घमासान युद्ध हुआ। सभी शेखावतो ने प्राण प्रण से अपना पराक्रम दिखाया। पीरूखा बिलोची वही युद्ध मे मारा गया और मित्रसेन प्राण बचाकर भाग गया। विजय श्री शेखावतो के पक्ष मे रही। अनेक शेखावत वीर इसमे शहीद हो गए जिसमे ठा० नवलसिंह के पुत्र लालसिंह का बलिदान विशेष उल्लेखनीय है। इनकी स्मृति मे उन पर एक छतरी आज भी वहा बनी हुई है।

सूरजमलसिंह ने 'अडीचा' गाव का नाम बदलकर वि स १८३५ में अपने नाम पर सूरजगढ रखा। इस स्थान पर पहले इनके स्वर्गीय पिता केशरीसिंह ने एक दुर्ग (धूलकोट) वि स १८१५ मे बनवाया था। उस समय तक इसका नाम अडीचा ही रहा। इस गाव को शहर का रूप सूरजमलसिंह ने ही दिया तथा शहर के चारो ओर बिसाऊ की भाति ही सफील (चहार दीवारी-ढूडा) बनवाई, किले मे महल बनवाए एव बाहर से धनवान लोगो को लाकर बसाया।

अहीर मित्रसेन की करारी हार से दिल्ली के बादशाह अलीगोहर शाह आलम (द्वितीय) को शेखावतो पर और अधिक क्रोध आया और उसने हार का बदला लेने के लिए नजफकुलीखा को वि स १८३६ मे शेखावाटी पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इस जातीय बलिदान के अवसर पर सीकर के राव देवीसिंह, खेतडी के बाघसिंह तथा सूरजमलसिंह आदि सभी शेखावतो ने अपने बल विक्रम का परिचय दिया। इस सकट के समय पर शेखावतो की सहायतार्थ अलवर नरेश महाराव प्रतापसिंह भी अपनी सेना सहित यहा आये थे।

वि स १८३७ मे नजफकुलीखा पहले से दुगुनी सेना लेकर शेखावाटी पर पुन आक्रमण करने आ धमका। शेखावत शूरवीरो ने इस बार भी अपनी सगठित शक्ति का परिचय दिया। इसम राव देवीसिंह (सीकर) नवलसिंह (नवलगढ), बाघसिंह (खेतडी) व सूरजमलसिंह का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

इस संकट के समय मे जयपुर नरेश ने शेखावतो की सहायतार्थ सेना भेजी क्योंकि अब तक शेखावत अपनी पारस्परिक फूट के कारण अपनी अपनी सुरक्षा के लिए जयपुर को 'कर' देने लगे थे।

नजफकुलीखा के नेतृत्व म मुगलसेना ने शेखावाटी मे प्रवेश कर लूट-खसोट मचादी। थोई और माधोपुर गांवो को लूट लिया गया। इस प्रकार हुए मुगलसेना के आक्रमण को सूरजमलसिंह ने शेखावत-शक्ति को सगठित कर खाटू मे आकर रोका। इस युद्ध के लिए खाटू 'रण-स्थल' बना। बडा घमासान युद्ध हुआ। दोना ओर के अनेक वीर इसमे मारे गए। शेखावता की सेना के वीरो मे दूजोद के सलहदीसिह, बलारा के हणूतसिह, मिसरीखां कायमखानी, दो कायस्थ भाई अजु न भीम, सरूपा बडवा हिंदूसिह, महादान चारण, मौजी राणा आदि के नाम वीर गति पाने वाले वीरो मे उल्लेखनीय हैं। हजारो शेखावतो ने अपना बलिदान देकर विजयश्री प्राप्त की। मुगल सेना भाग खडी हुई। नजफकुलीखा का सेना नायक मुरतिजाखा भडोचा स्वय भाग गया। नजफकुलीखा को शेखावाटी से खाली हाथ ही लौटना पडा। यह उसकी दूसरी भयकर करारी हार थी।

सूरजमलसिंह के जीवन का अधिकाश समय युद्धकार्यों मे ही व्यतीत हुआ। इन दिना मुस्लिम सत्ता तो कमजोर होती जा रही थी किन्तु शेखावाटी मे महाराष्ट्रो का जोर बढता जा रहा था। वि स १८३८ से १८४० तक शेखावाटी म इनके अत्याचारो की पराकाष्ठा रही।

शेखावतो में अपने पिता के राज्य को उत्तराधिकार मे 'सम विभाजन' करके प्राप्त करने की प्रथा से शेखावाटी प्रदेश छोटे छोटे टुकडा मे बटने लगा था। शेखावत-शक्ति बिखरने लगी थी। इस कारण सामूहिक शक्ति के स्थान पर व्यक्तिगत शक्ति का प्रदर्शन होने लगा। एक दूसरे की सहायता करने के स्थान पर एक दूसरे का विरोध करने लगे। ऐसी फूट की स्थिति मे महाराष्ट्रो का शेखावाटी मे आना और भी घातक रहा। शेखावाटी का एक भी नगर या ग्राम ऐसा नही बचा जो महाराष्ट्रा की चपेट म न आया हो।

सूरजमलसिंह ने इस स्थिति को सम्भाला। छोटे-छोटे शेखावत सरदारो को सगठित किया और अपनी सगठित शक्ति से महाराष्ट्रो का प्रतिरोध किया। महाराष्ट्रा की छोटी-छोटी टुकडियो का पता लगत ही वे उन पर धावा बोल देते थे। उस समय शेखावतो म ये ही इतने प्रबल थे जो महाराष्ट्रो का

खुलकर मुकाबला करते थे। अन्य शेखावत सामन्त इन तस्करों के सामने आते भय खाते थे।

महाराष्ट्र तस्करों ने बवाई, खण्डेला और उदयपुर पर आक्रमण करते हुए शेखावाटी के अन्य गावों मे प्रवेश किया। उन गाँवों म खूब लूट मार कर उन पर अपना अधिकार जमा लिया। यहा की अतुल धन सम्पत्ति को अपने कब्जे मे कर लिया। इन नगरों की लूट मार के बाद ये तस्कर झुन्झुनू, सिंघाना, खेतडी आदि नगरों की ओर बढे। सम्पूर्ण शेखावाटी में इनका आतंक छा गया।

वि स १८४० में शार्दूलसिंह की रानी मेडतणीजी ने झुन्झुनू में मनसादेवी के पहाड के निकट एक बावडी बनवाई। उसका निर्माण कार्य पूर्ण होने पर समस्त शेखावत (सादानी) सरदार उसकी प्रतिष्ठा के समय झुन्झुनू में एकत्रित हुए। इस कार्य में सूरजमलसिंह का बडा सहयोग रहा।

माधोजी सिंधिया को अपने राज्य की ओर आते देखकर महाराज प्रतापसिंह ने उसका मुकाबला करने के लिए शक्ति सगठन करना प्रारम्भ किया। जोधपुर के साथ-साथ शेखावतो को भी महाराष्ट्रो का मुकाबला करने के लिए बुलाया गया। लगभग समस्त शेखावत शूरवीर जयपुर की सहायतार्थ पहुच गए। सूरजमलसिंह भी अपनी सेना लेकर वहा पहुचे। इनको सेना के एक अंग का सेनापति बनाया गया। जयपुर नरेश स्वय प्रधान सेनापति रहे। वे सूरजमलसिंह के पराक्रम, बलविक्रम एव वीरता से स्वय पहले से ही परिचित थे। अन्य शेखावत भी इनको खूब मानते थे।

मरहट्ठो की सेना जयपुर पर आधमकी। इनके पास तोपखाना अधिक बडा था सेना भी विशेष शिक्षित थी और सेनापति डिबाइन स्वय एक कुशल योद्धा था। मरहट्ठो का दबदबा उन दिनो अधिक था, इनका हौसला बढा हुआ था। अत प्रथम आक्रमण इनकी ओर से ही हुआ। तुगा नामक स्थान पर दोनों सेनाए दिनाक २८ जुलाई, सन् १७८७ (वि स १८४४) को भिड गई। भयकर रूप से समराग्नि प्रज्वलित हुई। दोनो ओर क हजारो वीर सदा के लिए युद्ध भूमि म सो गए। सूरजमलसिंह ने भी अपनी अदम्य वीरता एव रणकौशल का परिचय दिया। इन्होने अनेक शत्रुओ को मौत के घाट उतारा स्वामिभक्ति और देश भक्ति के हितार्थ सूरजमलसिंह ने अपना कण-कण न्यौछावर कर वीरगति पाई। टाँई के ठाकुर जयसिंह भी इसी युद्ध मे वीरता प्रदर्शित करते

हुए सूरजमलसिंह के साथ श्रावण बदी ८ वि स १८४४ को मारे गए। अन्त मे विजयश्री जयपुर को प्राप्त हुई। महाराष्ट्री सेना भाग खडी हुई और भागते-भागते अपना सारा धन द्रव्य वही छोड गई।

जयपुर नरेश सूरजमलसिंह की वीर गति पाने की सूचना मिलने पर बडे दुखी हुए तथा उन्होने मार्मिक शब्दो के साथ शोक प्रकट करते हुए उनकी वीरता का बखान किया। इनके पुत्र श्यामसिंह को जयपुर बुलवाया गया। उस समय उनकी उम्र १७ वर्ष की ही थी। उनको धैर्य बधाया तथा बिसाऊ से लिए जाने वाले 'कर' मे स प्रति वर्ष १०००) एक हजार झाडशाही की छूट दी। इसके साथ ही तू गा मे वीरवर सूरजमलसिंह की स्मृति म स्मारक बनाने के लिए पच्चीस बीघा भूमि दी तथा उसम निर्माण काय शीघ्र करवाने के आदेश दिए।

श्यामसिंह ने अपने पिता की स्मृति मे तू गा मे वि स १८६६ म एक छतरी, शिवजी का म दिर कुआ और एक बाग बनवाया तथा शिव म दिर के लिए 'भोग स्वरूप' पच्चीस बीघा जमीन का पट्टा दादू पथी पुजारी के नाम किया। यह स्मारक तथा शिव म दिर आज भी विद्यमान हैं। छतरी निर्माण में दो हजार रुपए लगे।

ठाकुर श्यामसिंह

(वि स १८४४—वि स १८६०)

श्यामसिंह का ज म वि स १८२८ में हुआ। पिता की मृत्यु के समय इनकी आयु लगभग १७ वर्ष की थी। इनके पिता सूरजमलसिंह का तू गा के युद्ध मे वि स १८४४ मे स्वगवास होने के पश्चात् वे अपने पिता की गद्दी पर आसीन हुए। वे बहादुर, निर्भीक और स्वतत्र प्रकृति के शूरवीर थे। इनको जयपुर से झाडसाही रुपयो की छूट प्राप्त थी जो इनके राज्य कर से कम करदी जाती थी। जयपुर नरेश प्रतापसिंह के दरबार मे इनको अत्यधिक सम्मान प्राप्त था।

एक बार बडागाव के किशनसिंह से मामले (राज्य कर) के कारण को लेकर जयपुर नरेश की नाराजगी हो गई। वे समस्त शेखावतो के प्रतिनिधि बनकर 'मामले' के प्रकरण को लेकर जयपुर गए थे। उनको कैद कर लिया गया। किशनसिंह अपनी चाल से कैद से निकल भागे तथा वे श्यामसिंह के पास

आए। इन्होंने शरणागत को शरण देना अपना कर्त्तव्य माना और किशनसिंह को शरण दे दी। इस बात को लेकर जयपुर नरेश वीरवर श्यामसिंह से अप्रसन्न हो गए और उन्होंने नासिरअली के सेनापतित्व में बिसाऊ पर आक्रमण कर दिया।

टाँई नामक गांव में आकर जयपुर की साठ हजार फौज ने डेरा डाला और वहां से बिसाऊ पर हमला बोल दिया। श्यामसिंह ने गढ़ के सब दरवाजे बन्द करवा दिए, कुए बुरवा दिए तथा पूरी शक्ति के साथ आक्रमण का सामना किया। श्यामसिंह के एक दीपा नाई ने जो बजावा का निवासी था, अचानक नासिरअली पर आक्रमण कर दिया। उसका क्रोध उबाल खा चुका था। वह अपनी तलवार लेकर बुर्ज से नासिरअली पर टूट पड़ा। उसके पीछे सिरियासर का एक मौकावत सरदार भगवतसिंह भी कूद पड़ा। नाई की तलवार से नासिरअली मारा गया। जब सेनापति की मृत्यु का समाचार सेना में पहुंचा तो उसमें खलबली मच गई। सेना के पैर उखड़ गए। भागती हुई सेना ने अपनी हार मानली। इसके पश्चात् जयपुर और श्यामसिंह के मध्य संधि हो गई। श्यामसिंह ने अपने दो पुत्रों — चांदसिंह और गुलाबसिंह को संधि के अनुसार जयपुर की सेवा चाकरी के लिए दिए। आगे चलकर उन दोनों की मृत्यु जयपुर में हो गई। वह नाई भी उस मुठभेड़ में मारा गया। उसके वंशजों को बजावा में पांच सौ बीघा भूमि दी गई। यह युद्ध वि. सं. १८६० में समाप्त हुआ।

इस आक्रमण के सम्बन्ध में प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ 'वीर विनोद' के प्रणेता कविराजा श्यामलदास (उदयपुर) के संग्रह में मौजूद 'सेखावतां की वंसावली' नामक हस्तलिखित ग्रंथ से आवश्यक उद्धरण यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं —[1]

" "वा दिनां कून झुंझणूवाटी में राज जेपुर को मामलो मोन सो चढ़ गयो छो "मामरा का जबाब वास्ते सारा की तरफ सैं किसनसिंघजी बडागाव का जेपुर गया जद मुसाहिबा मोन तग करया तो यह सपत जबाब देकर बिसाऊ चल्या गया। उठ श्यामसिंघजी अपणे पास राख लिया। तो पर जेपुर स फौज साठ हजार बिसाऊ पर गई। तीन कोस डेरा हुआ। स्यामसिंघजी सहर का बारणा का तीन तीन कोस ताई का कूवा बुरा दिया।" "पाछै

१ वरदा २७/३ श्री सौभाग्यसिंह शेखावत द्वारा प्रकाशित श्यामसिंह शेखावत सम्बन्धी एक इतिवृत्त द्रष्टव्य।

झगडो सरू हुवो"" नौ महीना तक झगडो हुवो। जपुर की फोज तीन तरफ सै तो रसद ब-" करदी, बीकानेर कानी को रसतो पुलासा रह्यो तीं पर बीकानेर का महाराज आठ हजार फौज अपणी ऊ नाका पर गेर कर रसद ब-द कर दी।'

'यक नाई दीपो छो। सो रसोवडा म ढाल तलवार लगाया बठ्यो कासरा मांज रह्यो छो डरा ऊपर स कूदयो "नाई ऊ कन पू च कर नौसेरयां पर तरवार को वार करयो सो येक तरवार तो वह गई पाछ नौसेरया नाई के बांथ घाल लीनी एक भगवन्तसिंघजी सोवावत सिरियासर का नौसेरया पर तरवार बावै "जद नाई बाहमा " ये म्हारो घ्याल मत करो, दो"या का टूक करदयो। तीं पर भगवन्तसिंघ येक तरवार मारी कि दो"या का च्यार टूक हो गया।"

"नौसेरया कै मरता ही फोज डेरा मे चली आई और बिसाऊ टूटण से ना ऊमद तो गई। " आर फोज जपुर नै कूच कर दियो।"

" उठै दरबार मे लाट साहब जपुर महाराज न पूछी क तुम्हारे बो ही कुणसा देस छ जिसमे आदमी सातू बिलायत कमा कर आव और उस देम मे खप ज्याय ? तीं पर महाराज फरमाई कि सेखावाटी छै। जद लाट साहब हुकम दियो कि उस मुलक मे अगरेजी छावणी डालेंगे।"" "तीं पर ठाकुर स्यामसिंघजी क्ही, उठा को तो मैं ब-दोबस्त कर देस्यू। छावणी की तो कुछ जरूरत नहीं।" " आखिर साफ जबाब दे दियो कि म्हार जीवता अगरेजी छावणी नही पडली। ब दोबस्त म्है कर देस्यां। तीं पर लाट साहब हुकम दे दियो कि जब तक य बूढा बाबा जीव तब तक छावणी का रपणा कुछ जरूर नही। येह अपण तौर पर ब-दोबस्त कर लेसी।"

उक्त उद्धरणों से श्यामसिंह क व्यक्तित्व का पता चलता है और उनके युद्ध-कौशल की एक झलक मिलती है। इसी प्रकार बिसाऊ पर हुए इस आक्रमण के सम्ब-ध म दो पद्य रचनाए भी उपलब्ध हैं जो श्यामसिंह की गौरव गाथा गाने मे सक्षम हैं।[२] प्रथम रचना म से कतिपय रोचक एव सम्ब-धित उद्धरण यहाँ दिए जा रहे हैं—

---

२ द्रष्टव्य– वरदा २८/३ म बिसाऊ का घेरा और तत्सम्ब धी रचनाए लेखक ठाकुर सुरजनसिंह शेखावत पृ० २३–४०

१, टाँई बाँई टाठ कर, फौजा उतरी आय।
साह लिख भेजी स्याम कू, मोन किसन मिलाय॥

२ गढा मुक्ट जालोर गढ, बू दी जसलमेर।
स्याम बिसाऊ थोसजी, फौजा लग न फेर॥

३, स्यामा सूरजमाल रा, सेला भला सपूत।
पू चाया आमेर न, बरधां रा साबूत॥

४ बसो बिसाऊ चोगुणी, फौज न आव फेर।
बदसाहा मालम पडी, स्याम तणी समसेर॥

दूसरी रचना झुझुनू निवासी मीठूलाल भाट कृत 'बिसाऊ रासो' है जिसमे बिसाऊ पर हुए आक्रमण का तथ्यात्मक प्रामाणिक वर्णन है। इसमें वि स १८५९ के आसोज कृष्णा सप्तमी के दिन जयपुर की सेनाओ द्वारा बिसाऊ के घेरा लगाने का उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

सवत दस पर आठ, साल गुणसठ का जानौ।
आसोज बदी सप्तमी, फौज चढ आई अमानी॥
वार सनिसर वार, पहर तीसरे आई।
पडी मोरचा राड, तोप जित धणी लगाई॥
बजे नीसान मिठुलाल कहे धन धन घडी जु आज की।
तीन मास गाढा लडया, हटगी फौज महराज की॥

युद्ध की समाप्ति की तिथि क्रम पर प्रकाश डालते हुए वर्णन किया गया है—

सवत दस अर आठ, साल गुणसठ सुखदाई।
मगसर सुदी ज येक, सुकर दिन पडी लडाई॥
जीती राड स्यामसिंघ, बात सब देसा छाई।
देख्या जुध जिस्या, जोड कर मीठू गाई॥
बटी बधाई पडगने सुबस बसो यह देस।
राज करो जुग जुग सदा, स्यामसिंघ नरेस॥

समझौता होकर घेरा उठाने के बाद उपसहार के रूप मे वर्णन हुआ है—

पख पोस चवददस प्रथम जान।
अब भूजन पर गादी सुथान॥
अठारा सहस गुणसठ की साल।
लडी राड नामी नगरी बिसाल॥

इस 'घेरे' का मूल कारण एक दोहे मे कुशलता स व्यक्त हुआ है—

मामलात म्हापा नहीं, लूट लियो सब देस।
किसनसिंघ नें दूपू नहीं, हाका करो हमेस ॥३०॥

इन सब से तत्कालीन वीर समाज मे श्यामसिंह की प्रसिद्धि का पता चलता है।

कृष्णकुमारी के प्रकरण को लेकर जब वि स १८६३ मे जयपुर-जोधपुर के बीच युद्ध हुआ तो श्यामसिंह ने जयपुर का पक्ष लिया। इसके फलस्वरूप श्यामसिंह को ४२४४२) मामले म भरे गए।

श्यामसिंह स्वतत्र प्रकृति के वीर थे। महाराजा रणजीतसिंह (पजाब) उनके मित्र थे। वि स १८६६ मे अग्रेजो और रणजीतसिंह के मध्य सतलज के इलाके को लेकर सघष हुआ तो इस अवसर पर श्यामसिंह ने अन्य अनेक मित्रो की भाति रणजीतसिंह की सहायता में एक फौज सेनापति के नेतृत्व में एक सेना भेजी। एक लाख सनिको की विशाल सेना देखकर अग्रेजो और रणजीतसिंह में सधि हो गई, युद्ध टल गया। इसमें श्यामसिंह का विशेष योग था।

श्यामसिंह की धाक जयपुर ही नही अग्रेज सरकार तक जमी हुई थी। *वि स १८७५ (२१ दिसम्बर, सन् १८१८) को जयपुर नरेश जगतसिंह का* स्वगवास होने पर उनकी बडी रानी चन्द्रावती भटियाणी ने एक विश्वास पात्र रूपा नामक दासी के माध्यम से श्यामसिंह को अपना धम पिता बनाया तथा अपनी रक्षा का वचन लिया। श्यामसिंह के राखी बाधी। उन्होने १५०० सोने की मोहरे दी तथा रूपा दासी को भी ५२० मोहरे मिली। वि स १८७७ में जयपुर महारानी द्वारा श्यामसिंह का भेजे गए एक पत्र से पता चलता है कि अग्रेजो के आक्रमण के भय के कारण जयपुर महारानी ने श्यामसिंह से सहायता मागी, उनको भाई बनाया। आषाढ शुक्ला १०, शनिवार वि स १८८२ को श्यामसिंह की पुत्री गुलाबकवर का विवाह बूदी नरेश रामसिंह के साथ सम्पन्न हुआ। रूपा बढारण जयपुर द्वारा बाईजी के लिए सतलडा मोतियो का वेस भेजने का उल्लेख मिलता है। वश भास्कर और रामरजाट काव्य ग्रन्थो में विवाह का प्रसग रोचक ढग से वर्णित हुआ है। कतिपय आवश्यक उद्धरण यहा प्रस्तुत हैं—

दूजे विवाह पर अगना, सेखाउति व्याही सु वर।
अभिधा गुलाब कुमरि सु उचित स्यामसिंह तनया सुघर॥

(वश भास्कर राशि ८, मयूख १, पृ ४०३३)

वंश भास्कर के कवि सूर्यमल मिश्रण ने विवाह की धूमधाम का वर्णन अपने काव्य में किया है, बरात की विदाई का बड़ा रोचक वर्णन इस काव्य में हुआ है। श्यामसिंह का बूंदी की राजनीति में प्रमुख हाथ रहा है। रामसिंह के शासनकाल का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

मिलि सह स्यामसिंह प्रसत्त। प्रभु रघुपुरत्य यहि जिहि पत्त।
सठ इक चिमनसिंह सनाम। धरि भव मनोहरपुर धाम।

× × × ×

सह इम नारि दुव नर तीन। इम मिलि भुक्त राज्य अधीन।
(राशि ८ मयूख ६ पृ ४२१२)

इस प्रसंग में स्पष्ट है कि राव राजा रामसिंह के समय दो स्त्रियां— भटियानीजी और रूपाजी तथा तीन पुरुष— झूथाराम दो शेखावत श्यामसिंह और चिमनसिंह इन पांचों ने मिलकर सारे राज्य को अपने अधीन करके यथारुचि शासन चलाया था। इससे बिसाऊ के ठाकुर श्यामसिंह की प्रसिद्धि प्रकट होती है।

जयपुर दरबार तथा शेखावतों में श्यामसिंह की वीरता की धाक जमी हुई थी। शेखावतों में श्यामसिंह अपने जमाने के सर्वश्रेष्ठ वीर तथा कार्यकुशल समझे जाते थे। स्वयं महाराज ने जेठ बदी ७ सं० १८७४ और मार्गशीर्ष कृष्णा १० सं० १८७४ के लिखे पत्रों से यह स्पष्ट होता है। उन्होंने इन पत्रों में श्यामसिंह से जयपुर आकर राय देने के लिए लिखा है। उस समय कम्पनी सरकार जयपुर से संधि करना चाहती थी। जनरल सर डेविड आक्टर लोनी रेजिडेण्ट दिल्ली जयपुर आया था। इसके फलस्वरूप ब्रिटिश गवर्नमेंट से सन् १८१८ की संधि हुई। इस विषय में श्यामसिंह से राय ली गई थी।

वि० सं० १८८४ में श्यामसिंह ने झुंझुनू में गोपीनाथ जी का मन्दिर बनवाया। उसके भोग के लिए पर्याप्त मात्रा में जमीन मन्दिर के नीचे लगाई।

बीकानेर से सूरजगढ़ पर आक्रमण करने आए अमरचन्द सुराणा की वह तोप, जिससे वह सूरजगढ़ जीतना चाहता था अब तक सूरजगढ़ के किले के सामने वाली बुर्ज पर पड़ी श्यामसिंह की वीरता का गान करती रही है।

श्यामसिंह शूरवीर, धर्मात्मा दानी, बुद्धिमान और स्वामिभक्त थे। अग्नि होत्र करना, गोदान, ब्राह्मणों को भूमिवृत्ति, दान, वीरक्षत्रिया का पालन

पोषण, मान पूर्वक समस्त परिवार का उपकार, प्रत्येक भाई पर आई हुई विपत्ति का निवारण करना, शरणागत रक्षा आदि उनके प्रमुख गुण थे। एक साथ १०८ गायो का दान इन्होने ही किया। कई गरीब ब्राह्मणो की कन्याओ का विवाह इन्होने करवाया। ये जितने बल विक्रम मे श्रेष्ठ थे उतने ही मानवीय गुणो के आगार थे। इनका चातुर्य जितना प्रसिद्ध था, उतनी ही इनकी कार्य कुशलता अद्वितीय थी। ये कूटनीतिज्ञ शासक थे तो साथ मे सहृदय व्यक्ति भी थे। शार्दूलसिंह के पुत्र पौत्रो मे यही सर्वश्रेष्ठ हुए। महाराज सवाई जयसिंह की पूर्ण कृपा उन पर सदा रही। इनके सबसे बडे मुसाहिब हरजीमल शाह थे। उन्होने प्रजा पर कोई नवीन कर लगाना चाहा। किसी ने श्यामसिंह के पास निम्नलिखित पद्य लिखकर भेजा—

शार्दूलसिंह बडे भूपति हैं केसरमल जायो।
पोला ब्राह्मण भाट, कुटुम्ब चारु यश गायो।
तेके हणुमन्त और सूरजमल्ल राजा।
चढे निवल की मोड, सवारे काजा।
सूरजमल के स्यामसिह अरज कान सुन लीजिए।
हाथ जोड विनती करु नई लाग नहीं कीजिए।।

ये पंक्तिया पढकर मुसाहिब की लगाई हुई नई लाग तत्काल ही उन्होने बन्द करवादी। इससे श्यामसिंह का प्रभाव प्रकट होता है। उनके लिए यह प्रसिद्ध है—

धन बिसाऊ धन झुंझणू, धन धन स्याम नरेस।
सेखाटी रो सेहरो, मालम च्यारु देस।।

श्यामसिंह सांडू के राजा बीकावत अमरसिंह के पुत्र सरदारसिंह की पुत्री से विवाह करने वहा गए। उस समय एक दुष्ट ने इनकी वाग्दत्ता पत्नी से विवाह करना चाहा। इन्होने उसको द्वन्द्व युद्ध मे मार कर अपनी वाग्दत्ता से विवाह किया इस विषय का एक बहुत लोकप्रिय दोहा प्रसिद्ध है—

स्यामा सूरजमल रा, सेखा धरा सपूत।
सारू न सीधो करी, काढयो मोमो भूत।।

श्यामसिंह ने सदा शेखावतो का उपकार ही किया। खण्डेला के दोनो राजाओ का पक्ष लेकर उन्हे उनके राज्य वापिस दिलवाए। जयपुर की तरफ से बहुत से युद्धो मे वे शामिल हुए जिनमे अपने बल विक्रम के द्वारा यश कीर्ति

का ही उपार्जन किया। इनकी २५०० घुडसवार सेना हर समय राज्य की और दीन दुखियों की रक्षा के लिए तैयार रहती थी। जयपुर राज्य को 'कर' देने और उनकी सहायता करने के अतिरिक्त वे अंग्रेज सरकार से भी अपना स्वतंत्र सम्बन्ध रखने मे स्वतन्त्र थे। रेजिडेण्ट दिल्ली के यहां इनका भी रामदेव नामक एक वकील रहा करता था।

श्यामसिंह की शूरवीरता के लिए प्रसिद्ध है—

एक रगत कूरमा कर, घाटै अंग तमाम।
माण्या वो छोड़ें नहीं, सूरजमल रो स्याम॥

श्यामसिंह का स्वर्गवास आषाढ सुदि ३ वि स १८६० बृहस्पतिवार को ६२ वर्ष की अवस्था में हुआ। इनके पांच पुत्र हुए जिनमे गुलाबसिंह और चांदसिंह को जयपुर नरेश की सेवा में भेजा गया और वे दोनों वहीं स्वर्गवासी हुए। तीसरे पुत्र चनसिंह और चौथे हमीरसिंह थे पांचवें पुत्र मोतीसिंह की मृत्यु बाल्यावस्था मे ही हो गई। एक कवि ने श्यामसिंह के स्वर्गवास पर कहा—

सीकर मे लच्छो नहीं, नहीं खेतड़ी बखतेस।
अलसीसर अमरो नहीं, मलसीसर ऍसलेस।
सूरजमल रा स्याम तू, खाली करगो देस॥

श्यामसिंह के प्रशस्ति गान में अनेक डिंगल गीत मिलते हैं जिनसे उनका पराक्रम, शौर्य एवं अदम्य साहस प्रकट होता है।

ठाकुर हमीरसिंह
(वि स १८६०—वि स १६२२)

श्यामसिंह के पांच पुत्र हुए जिनमें से तीन छोटी उम्र मे ही देवलोकवासी हो गए। शेष दो— चनसिंह और हमीरसिंह— मे अपने पिता के स्वर्गवास के बाद बिसाऊ राज्य का दो बराबर भागो मे बटवारा हुआ। चनसिंह को सूरजगढ मिला तथा हमीरसिंह बिसाऊ की गद्दी पर श्रावण शुक्ला ४ स १८६० वि को आसीन हुए। इनका जन्म बिसाऊ मे वि स १८६३ मे हुआ था। गद्दी पर विराजते समय इनकी अवस्था २७ वर्ष की थी।

बिसाऊ का किला बहुत ही सुदृढ एवं विशाल होने के कारण सूरजगढ के शासक चनसिंह को दस हजार की आमदनी वाली जागीरी सम्पत्ति अधिक दी गई क्योंकि सूरजगढ के किले के धूल का परकोटा ही था। उसकी क्षतिपूर्ति

मे समान बटवारे की दृष्टि से ऐसा किया गया। उत्तराधिकार मे राज्य की समभाग परम्परा का कठोरता से पालन करने का यह एक अद्वितीय उदाहरण था।

हमीरसिंह के पिता के शासनकाल मे ही 'शेखावाटी ब्रिगेड' की स्थापना हो चुकी थी। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य शेखावाटी तथा इसके निकटवर्ती क्षेत्र मे होने वाली लूट-मार को रोकना था। बाहर से आए हुए लुटेरे-डाकू यहा वालो के साथ मिलकर शेखावाटी, बीकानेर राज्य तथा अन्य निकटवर्ती इलाको म लूट मार किया करते थे। ब्रिगेड की स्थापना होने के बाद भी इनका आतक दूर नही हुआ। इधर उधर मौका पाकर ये अपना काम बना लिया करते थे। बीकानर के शासक मुख्यत शेखावतो पर इस लूट मार का आरोप लगाया करते थे। इसी प्रकार शेखावाटी के शासक चूरू और बीदासर के शासको पर लूट पाट का आरोप लगाया करते थे। दोनो ओर के लुटेरो को परस्पर आश्रय देना प्राय उस समय दोनो पक्ष ही किया करते थे। इन पर सावधानी की दृष्टि रखने के लिए ही ब्रिगेड की स्थापना हुई थी।

इन आरोपो प्रत्यारोपो का निराकरण करने के लिए वि स १८६१ म गवनर जनरल के एजेण्ट कनल एलविस इधर आए। चूरू में उनका दरबार लगा। बीकानेर राज्य के कतिपय सरदार एव सेठ साहूकार उस दरबार में उपस्थित हुए। सेठ नन्दलाल केडिया भी इस दरबार में सम्मिलित हुआ।

बिसाऊ से हमीरसिंह भी उस दरबार में सम्मिलित होने के लिए गए। वे पहुचे उस समय दरबार हो रहा था। इनको आता हुआ देखकर अपने स्वामी के स्वागताथ सेठ नन्दराम केडिया खडा हुआ। इस घटना से सबको आश्चय हुआ तथा हमीरसिंह का प्रभाव इससे और अधिक बढा। साहब एलविस भी प्रभावित हुए। पूछने पर साहब को बताया गया कि वे हमारे स्वामी हैं। इससे एलविस साहब और भी प्रभावित हुए और स्पष्ट शब्दो में निणय दिया कि जिस राजा की प्रजा में ऐसे ऐस धनिक है, वह राजा कभी भी लूट मार नही कर सकता तथा न ही लूट-मार में सहयोग दे सकता। सभी का भ्रम दूर हो गया तथा हमीरसिंह का प्रभाव दुगुना बढ गया।

कनल एलविस ने शेखावाटी ब्रिगेड के सम्बन्ध में अपनी रिपोट गवनर जनरल को प्रस्तुत की। उसके फलस्वरूप सभी शेखावतो के पास इस विषय का खरीता आया कि जो 'मामला' जयपुर राज्य में दिया जाता है, उसे

अंग्रेजी राज सरकार कम्पनी में जमा कराया जावे। इस समय शेखावाटी ब्रिगेड अंग्रेजी सरकार के अधीन था। कर्नल एलविस का एक खरीता हमीरसिंह के नाम भी इस सम्बन्ध मे आया जो पौह वदी १२ वि स १८९१ को लिखा गया था। इस पर जयपुर नरेश ने अंग्रेजी सरकार के सम्मुख अपनी आपत्ति प्रस्तुत की परन्तु अंग्रेज सरकार का यह दोषारोपण कायम रहा कि जयपुर राज्य इन लूट मारो की रोकथाम करने म असफल रहा है तथा इन लुटेरो को दबाने म सक्षम नही है। फिर भी जयपुर की ओर से विश्वास दिलाने पर वि स १८९२ से बिग्रेड को जयपुर के अधीन कर दिया गया परन्तु शेखावत सरदार ५–६ वर्षो तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी को ही 'मामला' देते रहे।

हमीरसिंह अपने राज्य से लुटेरो को निकालना चाहते थे। इस कारण अपने पिता की भाति ही ये ब्रिगेड के कप्तान की प्राथना पर उसकी सहायता किया करते थ। इ होने ही बुहाने के चोरो को पकड कर कप्तान थर्स्बी के पास भिजवाया। एक बार कम्पनी के तीन ऊँट चोर लिए गए। उन चोरो को चनसिह (सूरजगढ) की सहायता से पकड कर तीनो ऊँट कम्पनी सरकार को दिलवाए। इस प्रकार हमीरसिंह ने अपनी प्रजा की सुख शान्ति के लिए भरसक प्रयत्न किए तथा चोर-लुटेरो के भय से शेखावाटी को मुक्त रखने के लिए कठोर परिश्रम किया।

शेखावतो को आपनी आय के अनुसार ब्रिगेड का व्यय भार अंग्रेज सरकार को देना पडता था। छोटे छोटे ठिकानेदार इस दोहरे व्यय भार से दबे हुए थे। जयपुर राज्य को भी मामला देना पडता था तथा ब्रिगेड का व्यय भार और बढ गया। इस प्रकार इस व्यय भार को उठाना कठिन हो रहा था। कुछ को तो अपने अधिकार के गांवो को रहन (गिरवी) रख कर यह भार वहन करना पड रहा था। इस प्रकार की स्थिति को देख कर हमीरसिंह व चैनसिंह ने समस्त शेखावतो की ओर से उनकी भावना को देखते हुए ईस्ट इण्डिया कम्पनी को एक पत्र ब्रिगेड खच की मुआफी के लिए लिखा। इस पत्र को लेकर लालचन्दजी और डालूराम कायस्थ गए।

एजेण्ट गवनर जनरल पर शेखावतो की ओर से लिखे गए पत्र का अच्छा प्रभाव पडा और भादवा वदी ५ स १९०० वि को कनल एलविस का उत्तर आया कि अंग्रेज सरकार आप लोगो की सहायता से प्रसन्न है। आप सरदारो के प्रबन्ध एव प्रभाव के कारण शेखावाटी मे अब चोरिया व डाके कम होने लगे हैं। इसलिए ब्रिगेड का व्यय भार मुआफ किया जाता है किन्तु इसके

साथ-साथ यह आज्ञा दी जाती है कि आप लोग मामला और फौज खर्च जयपुर राज्य को देवें। उनकी सुरक्षा और मातहती मे रहने से ही आपका भला होगा। अब कोई भी राजनीतिक पत्र व्यवहार किया जावे, वह आगे से जयपुर राज्य के माफत होना चाहिए। इस छूट से शेखावतो को कुछ राहत मिली। इसमे हमीरसिंह का प्रयास ही सफल रहा।

इस व्यवस्था से पहले शेखावत शासक अंग्रेजी सरकार से सीधा पत्र व्यवहार किया करते थे। वे पत्र व्यवहार करने मे स्वतत्र थे। छोटे छोटे ठिकाने होने के कारण इनको सुरक्षा की दृष्टि से अंग्रेज सरकार या जयपुर राज्य से मदद लेनी पडती थी। यही इनकी परवशता थी। वैसे वे स्वय अपने आप मे स्वतत्र व प्रत्येक शासन काय को करने मे सक्षम थे।

हमीरसिंह अपने समय के सभी शेखावतो मे बडे प्रतिष्ठित एव बुद्धिमान समझे जाते थे। इनसे बडी बडी समस्याओं पर राय लेने के लिए शेखावत सरदार प्राय बिसाऊ आया करते थे। य बडे चतुर सरदार थे। वि स १६०८ म सीकर के राव राजा भरवसिंह के लिए कुछ विरोधियो ने प्रवाद उठाया कि वे दासी पुत्र हैं। इस कारण सीकर के छुट-भाइयो और अन्य शेखावतो ने उनसे खान-पान बन्द कर दिया। विवाद आगे तक बढ गया तब डूडेले के शासक कृष्णसिंह तथा नवलगढ-मण्डावा के शासको को साथ लेकर हमीरसिंह सीकर गए और सबने मिलकर राव राजा के साथ भोजन कर उन्हें 'शुद्ध-रक्त' का सिद्ध किया। इस प्रकार उन्होने सामोद के रावल शिवसिंह को जो इस विवाद को उठाने मे मुखिया थे तथा शेखावतो के पुराने विद्वेषी थे, सदा के लिए चुप किया।

हमीरसिंह के केवल एक पुत्र जवाहरसिंह वि स १८८५ म राणावतजी रानी के गर्भ से उत्पन्न हुए। इनके प्रयास से ही बीकानेर की सीमा से होने वाले लूट मार आदि उपद्रवो पर कडी निगाह रखने के लिए बिसाऊ राज्य की सीमा मे टमकोर (बिशनगढ) मे एक किला वि स १६०७ मे बनवाया गया। वहा रहकर इन्होने बीकानेर से आने वाले लुटेरो का तथा उधर से होने वाले उपद्रवों को रोका।

कुवर जवाहरसिंह ने अपनी एक अलग पुलिस का गठन किया और उसके लिए भर्ती चालू करदी। उस मे घुडसवार, शुतर सवार, पदल आदि सभी प्रकार के जवान भर्ती किए गए। एक सुदृढ पुलिस का गठन देखकर सब

शेखावत सरदारो को यह विश्वास हो चला था कि अब जयपुर राज्य की पुलिस शेखावाटी से चली जावेगी ।

पुलिस के गठन के प्रसग को लेकर कुछ मुह लगे लोगो ने हमीरसिंह के मन में उनके पुत्र के प्रति अविश्वास उत्पन्न करने मे सफलता प्राप्त करली। ऐसे लोगो का कहना था कि कु वर साहब आपके राज्य को आप से छीनना चाहते है । इस बात का हमीरसिंह को पक्का विश्वास हो गया और उन्होंने कु वर साहब को उनके पुलिस सगठन को तोडने के लिए पत्र लिख भेजा। कु वर साहब ने पुलिस की भर्ती बन्द करदी और पुलिस सगठन को तोड दिया । इस बात से हमीरसिंह बडे प्रसन्न हुए और अपने पुत्र पर उनका आत्मविश्वास दृढ हो गया । पिता पुत्र के मध्य उत्पन्न हुए अविश्वास को प मौजीराम ने दूर करवाया । हमीरसिंह के तीन रानियो के अतिरिक्त एक पासवान (पार्श्ववान) भी थी जो दरोगा जाति की थी । इन पासवानजी ने वि स १६०६ मे बिसाऊ मे श्री बिहारीजी का मदिर बनवाया जो आज भी अपनी सज धज एव गरिमा के साथ गढ के सामने स्थित है ।

वि स १६१५ के आषाढ मास मे जयपुर से ताजीमी सरदारो को बुलाने के लिए एक रुक्का आया । श्रावण कृष्णा १२ स १६१५ वि को कुवर जवाहरसिंह जयपुर गए । उनको शीतल निवास के सरकारी महला मे ठहराया गया । उन्होने राज मन्त्री पडित शिवदीन के माध्यम से ताजीम' प्रदान करने के लिए जयपुर नरेश को निवेदन करवाया । इस पर महाराज प्रसन्न होकर चन्द्र महल म खास दरबार करवाकर जवाहरसिंह को खास चौकी की ताजीम' प्रदान की ।

जयपुर महाराज सवाई रामसिंह के हृदय मे कु वर साहब के प्रति प्रगाढ स्नेह व सम्मान था । वे उनकी वीरता एव कुशलता से प्रसन्न थे । इसके फलस्वरूप कु वर साहब को सम्मानित किया गया और उनको हाथी पर बठा कर चवर ढुलवाते हुए पलटन और बाजे गाजे के साथ चादपोल बाहर स्थित 'बसाऊ के डेरे' तक पहुचाया । इनको समस्त ताजीमी सरदार डेरे तक पहुचाने आए । बिसाऊ आने की इच्छा प्रकट करने पर इनके सम्मान मे इनको विदाई के समय, एक हाथी, एक लहरियो (जरी पल्ला का रुमाल), एक जामो (अचकन) एक दुपट्टा और पांच हजार रुपये पुरस्कार स्वरूप दिए । इसके साथ साथ पचास रुपए प्रतिदिन के 'थाल खर्च' के रूप म और बाधे । इस प्रकार सम्मानित होकर कु वर साहब माघ बदी ७ स १६१६ वि

को जयपुर से विदाई स्वीकृति (सीख) लेकर माघ सुदी १० को बिसाऊ पहुचे। बिसाऊ पधारने पर उनका अत्यधिक मान सम्मान हुआ।

अब तक हमीरसिंह के लिए सुख, सम्पत्ति, यशकीर्ति अपने आप ही भागी चली आ रही थी कि भादवा सुदी १४ वि स १६१६ को कुवर जवाहरसिंह का बिसाऊ मे युवराज के पद पर ही ३४ वर्ष की अवस्था म स्वगवास हो गया। यह एक दु खद घटना थी। चारो ओर शोक छा गया। प्रजा भी अपने युवराज का शोक सहन नही कर सकी। जयपुर महाराज को भी इस खबर का पता लगने पर बडा दु ख हुआ। शेखावत कुल शोक सन्तप्त हो गया।

अब हमीरसिंह को बिसाऊ राज्य के उत्तराधिकारी के रूप मे किसी को गोद लेने की चिन्ता सवार हुई। उस समय सूरजगढ वाले ही इनके अधिक निकट होते थे। अत गोविन्दसिंह (सूरजगढ) के द्वितीय पुत्र चन्द्रसिंह को वे अपने पास रखने लगे परन्तु अभी तक कोई पक्की लिखावट नही लिखी गई थी।

वि स १६२२ मे हमीरसिंह ने चन्द्रसिंह को गोद लेने की पक्की लिखावट लिखदी और जयपुर सूरजगढ इसकी नकलें भिजवादी और चन्द्रसिंह ही जवाहरसिंह के दत्तक पुत्र के रूप मे स्वीकार किए गए। कुछ समय बाद ही गोद नशीनी की दस्तूरी पूरी करली गई। इसके दो दिन बाद ही हमीरसिंह का स्वगवास ५६ वर्ष की आयु मे हो गया।

बिसाऊ शासन की स्थापना के बाद हमीरसिंह को ही अपने उत्तराधिकारी के रूप म किसी दूसरे को गोद लेना पडा और चन्द्रसिंह बिसाऊ की गद्दी पर गोद लिए हुए प्रथम शासक के रूप मे विराजे।

हमीरसिंह अपने नगर बिसाऊ की उन्नति चाहते थे। इसलिए उन्होने खुले दिल से सेठो को मुफ्त जमीन देकर बिसाऊ म बसाया। हमीरसिंह का सैन्य बल बडा तगडा था। अपने बहादुर सिपाहियो को उन्होने दूर दूर तक भेजा था। इस लिए उनकी फौज के लिए प्रसिद्ध हो गया।

काळ मुह की गादडी, खाया सूना खेत।
आसी फौज हमीर की, लेसी खाल समेत॥

हमीरसिंह बडे दानी, गोभक्त और उदार शासक थे। जन कल्याण कार्यों मे इनकी विशेष रुचि थी। वि स १६०० म इन्होने बिसाऊ मे १५००

बीघा जमीन गोचर भूमि (पशुग्रो के चरने के लिए) के रूप मे दान मे दी तथा घोलपालिया जोहड के चारो ओर पायतन हेतु ६०० बीघा भूमि इसके अतिरिक्त और प्रदान की। कुल २१०० बीघा भूमि इन्होने दान मे दी। १५०० बीघा जमीन घोलपालिया जोहड के पूर्व ओर उत्तर दिशा म मौजूद है। यह जोहड वि स १६०३ म बनकर तयार हुआ जो आज भी दानियो की यश कीर्ति को फला रहा है।

जन विकास की दृष्टि से हमीरसिंह का बिसाऊ के शासको मे विशेष महत्व है। जन चर्चा मे आज भी इनके कार्यों को स्मरण किया जाता है।

ठाकुर चन्द्रसिंह

(वि स १९२२—वि स १९३५)

ठाकुर चन्द्रसिंह सूरजगढ के ठाकुर गोविन्दसिंह के द्वितीय पुत्र थे। इनका जन्म सूरजगढ म वि स १९०४ मे हुआ और वि स १९२२ मे ये बिसाऊ राज्य के अधिकारी बने।

सूरजगढ के गोविन्दसिंह के प्रथम पुत्र हरिसिंह ने भी हमीरसिंह के गोद आने का प्रयत्न किया। उनका दावा था कि वह अपने पिता का ज्येष्ठ पुत्र है, चन्द्रसिंह उससे छोटा है। अत बिसाऊ वालो के गोद आने का प्रथम हक उसका है। परन्तु उनका हक माना नही गया।

हरिसिंह सूरजगढ से हमीरसिंह के द्वादशे पर बिसाऊ आए किन्तु उनको गढ के दीवानखाने मे नही ठहरने दिया गया। वे इस बात को लेकर क्रुद्ध हो गए। फतहसिंह मरूका से इस विषय पर उनकी 'बोल चाल' हो गई। सौभाग्यसिंह लाडखानी ने किसी प्रकार बीच बचाव करके उनको राजी किया और उनका डेरा शहरपनाह के बाहर करवाया। सायकाल किले में चन्द्रसिंह से मिलने के लिए आने पर राज्याज्ञा से परकोटा के सभी दरवाजो पर उपस्थित पहरेदारो ने उन्हे सशस्त्र भीतर नही जाने दिया। नगर द्वार पर ही लडाई होने की स्थिति उत्पन्न हो गई परन्तु सौभाग्यसिंह के द्वारा कपट जाल से बीच बचाव कर उन्हें सूरजगढ जाने के लिए राजी कर लिया। हरिसिंह सौभाग्यसिंह पर विश्वास करके सूरजगढ चले गए। बिसाऊ गोद आने की उनकी मनोकामना पूर्ण नही हो सकी। सौभाग्यसिंह को इस कार्य के लिए पाच सौ बीघा भूमि का पुरस्कार मिला।

चन्द्रसिंह के एक मात्र पुत्र जगतसिंह वि स १९३२ में हुए। इनके 'दशोठन' पर वि स १९३२ में सूरजगढ से सभी भाइयो को बुलाया गया। इस अवसर पर हरिसिंह और चन्द्रसिंह मे पुन प्रगाढ प्रेम हो गया। पीछे का सारा वरभाव भुलाकर दोनो भाई एक दूसरे के निकट आ गए। हरिसिंह नि सन्तान थे। अत उन्होने जगतसिंह को सूरजगढ़ की गद्दी पर बैठाने की इच्छा प्रकट की क्योकि उनका अपने दोनो भाइयो— विजयसिंह और जीवणसिंह— से धीरे धीरे समय के साथ विरोध भाव हो गया था। जगतसिंह को गोद लेने की इच्छा प्रकट करने के कुछ समय बाद ही उनका स्वगवास हो गया। अत सौभाग्यसिंह लाडखानी की राय से जगतसिंह को सूरजगढ की गद्दी पर वि स १९३५ मे तीन वय की आयु मे बठाया गया। इस अभिषेक के पाँच-छ माह बाद ही आश्विन शुक्ला पूर्णिमा स १९३५ को चन्द्रसिंह का स्वगवास ३१ वष की आयु मे हा गया। इसके फलस्वरूप सूरजगढ की गद्दी पर विजयसिंह आसीन हुए और बिसाऊ की गद्दी के अधिपति जगतसिंह बने।

चन्द्रसिंह का शासन काल केवल १३ वय रहा। इस अवधि मे इन्होने जयपुर राज्य मे अपना सम्मान व पद बढाया। जयपुर रेजीडे सी म भी इनका अच्छा प्रभाव था। शेखावाटी के सरदारो मे भी इनका बहुत सम्मान था। खेतडी के फतेहसिंह से इनकी बहुत घनिष्ठता थी। वे इनके माध्यम से खेतडी को जयपुर के शासन स अलग करना चाहते थे क्योकि इनकी (चन्द्रसिंह) जयपुर कौंसिल म बहुत चलती थी परन्तु थाडे समय बाद ही वि स १९३५ मे इनका स्वगवास हो गया।

चन्द्रसिंह एक कुशल शासक एव कलाप्रेमी थे। इन्होने 'चन्द्रमहल' बनवाया जो आज भी इनकी याद म अपने दिन तोड रहा है। इनके शासन काल में शान्ति रही। 'लूट मार' का वातावरण शान्त था। एक दूसरे पर आक्रमण करने की प्रवृत्ति भी भाइचारे और सहयोग मे बदल रही थी। जनता एक सुख-शान्ति का अनुभव करने लगी थी। अग्रेजो का प्रभाव बढता जा रहा था। रियासतो एव ठिकानो जागीरो का प्रभाव अग्रेजी शासन मे धीरे-धीरे विलीन हो रहा था। सभी शान्ति से जीना चाह रहे थे।

ठाकुर जगतसिंह
(वि स १९३५—वि स १९५०)

जगतसिंह अपने पिता चन्द्रसिंह के स्वर्गवास के पश्चात् तीन वर्ष की अल्पायु मे वि स १९३५ मे बिसाऊ की गद्दी पर विराजमान हुए। इनका जन्म वि स १९३२ म हुआ। सूरजगढ के ठा० हरिसिंह के स्वर्गवास के बाद उनकी अन्तिम प्रबल इच्छा की पूर्ति मे जगतसिंह को सूरजगढ की गद्दी पर उनके पिता की स्वीकृति से अभिषिक्त किया गया था किन्तु कुछ माह बाद ही उनके पिता का स्वर्गवास होने पर वे सूरजगढ से आकर बिसाऊ की गद्दी पर ही विराजे। बालक शासक जगतसिंह का शासन कुशलता से चलाने के लिए जयपुर राज्य की ओर से अमरचन्द मोदी और असरफुद्दीन काजी सिंघानेवाले को नियुक्त किया गया।

वि स १९३७ मे महाराज सवाईरामसिंह का स्वर्गवास हो गया और जयपुर की गद्दी पर महाराजा माधवसिंह विराजे। इनके शासन काल मे जयपुर के प्रधान मन्त्री बा० कान्तिचन्द्र हुए। इन्होने बिसाऊ के दोनो मन्त्रियो से बिसाऊ के राज्य सचालन का हिसाब मागा तो दोनो घबरा गए। दोनो मे परस्पर फूट पड गई। दोनो को जयपुर बुलाया गया। अमरचन्द मोदी का तो जयपुर में इसी अवधि में देहान्त हो गया और दूसरे को सेवा से पृथक कर दिया गया।

उक्त दोनो मन्त्रियो के पश्चात् बिसाऊ के शासन-सचालन का भार शेखावाटी के नाजिम हमीदुल्लाखा को सौंपा गया। उस समय निजामत का कार्यालय झुन्झूनू में था। नाजिम के प्रतिनिधि के रूप में रूपसिंह सलहदीसिंहका जाखल निवासी ने बिसाऊ के शासन का सचालन किया।

वि स १९४८ में १६ वर्ष की अवस्था में जगतसिंह का विवाह आऊवा के चापावत सरदार कुशलसिंह के पुत्र देवीसिंह की पुत्री सिरहकुवरी से हुआ। इसी वर्ष १९४८ में फाल्गुन शुक्ला ७ को इनकी कुक्षि से लेफ्टिनेंट कर्नल रावल बिशनसिंह का जन्म हुआ राज्य भर में आनन्द की लहर दौड गई। राज्य में सर्वत्र अत्यधिक खुशिया मनाई गई।

समय पाकर जगतसिंह बालिग हुए और राज्य कार्यों का सचालन करने में कुशल हो गए। पूर्णतया समर्थ व योग्य हुआ जानकर जयपुर राज्य से राज्य सचालन के पूर्ण अधिकार इनको प्राप्त हो गए। अधिकार पाते ही

इन्होने अपने प्रधान कर्मचारियो से हिसाब मांगा, तब रूपसिंह के मन में कुटिलता आई और अपने अन्य साथियो को अपने षडयन्त्र में मिलाकर जगतसिंह को जहर देने की योजना बनाली तथा एक दिन उनको जंगल में शिकार के समय शराब मे जहर मिलाकर पिला दिया। शिकार से लौटते ही उनकी देह में आग सी जलने लगी। इस समय तक उन षडयन्त्रकारियों ने ऐसा प्रबन्ध कर दिया था कि जगतसिंह की देह को कोई देख न सके। यहा तक कि रणवास में उनकी पत्नी चांपावतजी भी उनको देखने न आ सकी। सब जगह उनके बिमार होने की खबर फैलादी गई। हकीम आदि को भी षडयन्त्रकारियो ने अपनी ओर मिला लिया। धीरे धीरे जहर का प्रभाव बढता चला गया और तीसरे दिन आषाढ कृष्णा ३० सं० १९५० को बिसाऊ के इस १८ वर्षीय युवा एवं एक कुशल शासक का स्वर्गवास हो गया।

धीरे धीरे इस षडयन्त्र का आभास सभी सरदारो, जनता के प्रतिष्ठित लोगो, स्वामी भक्त नोकरो तथा रणवास में सबको हो गया। षडयन्त्रकारियो के विरोध मे एक उग्र वातावरण बन गया। ऐसी परिस्थिति बनती देखकर षडयन्त्रकारी घबरा उठे और उनके सिर पर हत्या चढकर बोलने लगी। इस कारण बिना निकटवर्ती सरदारो को सूचना दिए ही भेद खुलने के डर से भयभीत होकर उनका दाह संस्कार जल्दबाजी में ही करवा दिया। यहा तक कि महनसर, नागियासर, टाई आदि के निकटतम सरदारों को भी सूचना नही दी गई।

सारे षडयन्त्र की सूचना झुंझुनू के नाजिम हमीदुल्लाखा के पास पहुची। उन्होने जयपुर रिपोट करदी। जयपुर से पुलिस आई और सारे षडयन्त्र का भेद खुल गया। पुलिस ने रूपसिंह तथा उसके साथियो को गिरफ्तार कर लिया।

जयपुर दरबार में रूपसिंह को प्रस्तुत किया गया परन्तु उसने वहा भी अपना अपराध स्वीकार नही किया तो राजगद्दी के हाथ लगाकर परमात्मा की शपथ पूर्वक सच-सच बताने के लिए कहा गया। फिर भी अपराधी ने झूठ ही बोला। रूपसिंह जसे ही गद्दी से हाथ हटाकर चले कि धडाम से गिर पडे और वही उसके प्राण पखेरू उड गए। षडयन्त्र के वास्तविक अपराधी का पता सबको लग गया।

जगतसिंह के स्वर्गवास के पश्चात् बिसाऊ में जयपुर की ओर से मुंसर्मी (कोर्ट आफ वार्डस) होगई क्योंकि उस समय विशनसिंह बालक थे।

फिर भी राज्य के अधिकतर कार्य चांपावतजी की सम्मति और आज्ञा से ही होते थे। वे बड़ी बुद्धिमती, कुशल सचालिका, सुशील एवं दयालु राजमाता थी।

जगतसिंह एक कुशल योद्धा, चतुर प्रशासक, शिकार के शौकीन, सधे हुए घुड़सवार एवं जनता के प्रिय राजा थे। इनके असामयिक स्वर्गवास से जनता शोक सतप्त हो उठी थी। उस समय की व्याकुलता का वर्णन वृद्धजनों के मुख से सुना जा सकता है। बिसाऊ के इतिहास की यह एक दुखद घटना थी।

जगतसिंह के समय बिसाऊ में अनेक धनीमानी सेठ साहूकार थे जिनमें पोद्दार, सिंघानिया, सिगतिया, केडिया आदि परिवार अपनी प्रमुखता रखते थे। शिवदयालजी सिंघानिया ने अपनी धर्मशाला, कुआ, मन्दिर आदि में जाने की सुविधा पाने के लिए जेठ वदी ३ वि स १९४० को ठाकुर जगतसिंह को एक हजार रुपए जमा करा कर दक्षिण की ओर के परकोटे में एक मोरी निकलवाई। इस काम की पूरी व्यवस्था ठिकाने के जिम्मे ही रही। आज न वह परकोटा है और न वह मोरी। वह इण्डा फूटने के पूर्व तक 'सिंघानिया की मोरी' के नाम से प्रसिद्ध रही है।

उस समय राज घराने की संस्कृति अविश्वास, छल-छिद्र एवं कपटपूर्ण व्यवहार से दूषित थी। छोटे छोटे ठिकाने अपने सकुचित एवं सीमित वातावरण के कारण अभावों से भी पीड़ित थे। इस कारण हत्या के षडयन्त्र, गोद का झमेला उत्पन्न करना, उत्तराधिकार का झगड़ा आदि सामान्यतः हो जाया करते थे। वैसे जनता अपने सामान्य जीवन में जी रही थी।

रावल विशनसिंह

(वि स १९५० – वि स २००२)

जगतसिंह के स्वर्गवास के पश्चात् उनके इकलौते पुत्र विशनसिंह अपनी दो वर्ष की अल्पायु में वि स १९५० में बिसाऊ की राजगद्दी पर विराजे। इनका जन्म फाल्गुन शुक्ला ७ वि स १९४८ को हुआ। इनकी माता आऊवा के चांपावत सरदार देवीसिंह की पुत्री थी जिनका नाम सिरहकवरी था। बिसाऊ का शासन-सचालन कार्य राजमाता चांपावतजी की सलाह एवं आज्ञा से हुवा करता था। वे हर परिस्थिति का कठोरता एवं कुशलता से सामना करने का साहस रखने वाली थी।

राजमाता ने कठोर हृदय कर अल्पायु में ही अपने पति का दुःख भुलाकर अपने पुत्र का बड़ी कुशलता से पालन पोषण किया, अच्छी शिक्षाएं दी, उनका पथ प्रदर्शन किया तथा राज्य संचालन की दक्षता उनमें भरी। इस बात को बिशनसिंह ने भी दिनांक २ जून, सन् १९३६ को दिए गए अपने भाषण में स्वीकार किया है।

बिशनसिंह की अल्पायु के कारण जयपुर की कौंसिल से सब श्री गंगानारायण ईश्वरसिंह और अमरसिंह नामक तीन मुसाहिब राज्य कार्य-भार सम्भालने के लिए आए। उनकी अध्यक्षता सदा बिशनसिंह की माता ने ही की। इनकी बाल्यावस्था तक ये तीनों राज्य का संचालन करते रहे।

बिशनसिंह एक न्यायी एवं दूरदर्शी शासक थे। उस समय सूरजगढ़ में जीवणसिंह शासक थे। उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा तो उन्होंने गुप्त रूप से बिशनसिंह को सूरजगढ़ का शासन सौंपने की इच्छा प्रकट की क्योंकि वे निःसन्तान थे। जयपुर नरेश को भी इस आशय का पत्र गुप्त रूप से लिखा गया क्योंकि उस समय सूरजगढ़ के शासन का संचालन करने में नवाब ईसेखां और गोरवी ही एक प्रकार से सर्वेसर्वा हो रहे थे।

गोरवी एक वेश्या थी जिस पर जीवणसिंह की कृपा दृष्टि हो गई थी। उसने अपना प्रभाव शासन पर भी जमालिया था। नवाब ईसेखां जयपुर के राजमंत्री मुमताजुद्दौला के कहने से सूरजगढ़ का प्रधान कामदार बनकर आया था। ये दोनों जीवणसिंह की मृत्यु के बाद किसी दूसरे को सूरजगढ़ का शासक बनाना चाहते थे परन्तु उनकी चालें सफल नहीं हुईं क्योंकि सूरजगढ़ गद्दी के वास्तविक हकदार बिशनसिंह ही थे।

वि. सं. १९७२ में माघ बदी ६ को जीवणसिंह का स्वर्गवास हो गया। यह समाचार सुनते ही बिसाऊ से बिशनसिंह घोड़े पर सवार होकर वहां पहुंचे और सभी आवश्यक कार्य— क्रियाक्रम, ब्राह्मण भोजन आदि बड़ी कुशलता एवं सुचारू रूप से सम्पन्न किए। द्वादशे के सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न करके बिशनसिंह ने सूरजगढ़ की गद्दी पर अपने इकलौते पुत्र रघुवीरसिंह को बैठा दिया। इनको जीवणसिंह के गोद करने पर सूरजगढ़-बिसाऊ एक शासक के अधिकार में आगए। बिशनसिंह की इस दूरदर्शिता की सभी ने प्रशंसा की। जयपुर नरेश ने भी इस बात को स्वीकार किया।

बिशनसिंह ने अपने राज्य की सुरक्षा एवं सुव्यवस्था के लिए दिनांक ८ जनवरी, सन् १९२४ (वि. सं. १९८१) को 'रघुवीर पलटन' का गठन किया

जिसके सुबेदार मेजर सवलसिंहजी बहादुर आई ओ एम डायडी (जेजूसर के पास) प्रभारी थे। इनके मान-दफ्तर म 'पलटन' का पूरा प्रबन्ध होता था।

जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय के हृदय मे बिशनसिंह के प्रति गहरा सम्मान था। वे बिशनसिंह के कार्यों से प्रभावित होकर दिनाक ५ दिसम्बर, सन् १६३१ (वि स १६८८) को बिसाऊ पधारे और उनका मान बढाया। राजा और प्रजा दोनो ही जयपुर नरेश के आगमन से अत्यधिक प्रसन्न हुए। उनका दूसरी बार भी बिसाऊ पधारने का कार्यक्रम बना और स्वागत की पूरी तैयारियां की गई परन्तु अचानक जयपुर नरेश के दुघटनाग्रस्त होने के कारण वे नहीं पधार सके। उनको हवाई जहाज से बिसाऊ लाने के लिए नगर के बाहर पश्चिम की ओर नन्दपुरा हनुमानजी के मन्दिर के कुछ पीछे एक 'एयरोड्राम' (हवाई अड्डा) बनवाया गया जिसमे पांच सो बीघा भूमि रोकी गई। उसके चारो ओर काटे दार तार लगवाए गए। हवाई अड्डे से नगर तक सडक बनवाई गई जो अब नही रही है और न वह हवाई अड्डा ही कायम रह पाया है। उस समय के राजशाही ठाठ अब समय के साथ विलीन होते जा रहे हैं।

बिशनसिंह अपने समय क सुप्रतिष्ठ शासक एव 'नरेन्द्र मण्डल' में अपना प्रभाव रखने वाले ठिकानदार थे। वे अपनी प्रतिष्ठा के फलस्वरूप ही मेयो कालेज अजमेर की जनरल कौंसिल क मेम्बर सन् १६३३ व ३४ (वि स १६६० व ६१) म रहे, जनरल कौंसिल मे उनकी उपस्थिति का एक महत्व था। दिनाक २८ नवम्बर, सन् १६३३ तथा अन्य दिवसो पर उनकी जनरल कौंसिल म उपस्थिति के प्रमाण उपलब्ध हैं।

बिशनसिंह को जयपुर नरेश सवाई मानसिंह द्वितीय की ओर से दिनाक ४ अक्टूबर, सन् १६३८ (वि स १६६५) को 'रावल' के खिताब से सम्मानित किया गया। जयपुर दरबार म उनकी अत्यधिक प्रतिष्ठा थी। जयपुर की 'मान गार्ड' म भी आपका एक महत्व था। दिनाक १६ मई, १६३६ (वि स १६६६) को आपको जयपुर नरेश ने 'लेफ्टीनेण्ट कर्नल' की उपाधि से विभूषित किया। य दोनो सम्मान आपकी प्रतिष्ठा को उजागर करने वाले रहे।

लेफ्टीनेण्ट कर्नल रावल बिशनसिंह ने अपने जीवन काल म ही जेठ सुदी १५ (पूर्णिमा) वि स १६६६ को अपना शासन भार जयपुर नरेश के रज्युरपूशन म ७ तारीख ६ मई सन १६३६ के अनुसार रघुवीरसिंह को सौंप दिया। उसी दिन से बिसाऊ और सूरजगढ को एक कर पूरे राज्य (ठिकाने)

का नाम 'बिसाऊ' रख दिया गया। इस प्रकार उन्होने 'वानप्रस्थ आश्रम' धारण कर लिया। इस घटना को स्मरण करने के लिए निम्न दूहा प्रसिद्ध है—

कर सुत अधिकारी, छतर धारी सुप्यो छतर।
वानप्रस्थ धारी, बलिहारी रावळ बिसन॥

शेखावतो के इतिहास मे यह एक अद्वितीय घटना थी। वरन परम्परागत रूप से पिता की मृत्यु के बाद ही पुत्र को शासन मिलता रहा है। यह रावल बिशनसिंह की सूझ-बूझ, त्याग, दूरदर्शिता एव राजनीतिक कुशलता को प्रकट करता है।

इस शुभ एव मगल अवसर पर उन्होने कोट बिसाऊ से एक भापण प्रसारित किया जिसमे उन्होंने अपना भार हल्का होने की खुशी मे तथा अपने इकलौत पुत्र को युवराज पद देने की प्रसन्नता मे निम्नलिखित छूट जनता को दी—

(१) निकासी के माल पर जो जकात ली जाती है, उसकी मुआफी।
(२) नील पर जो जकात ली जाती है, उसकी मुआफी।
(३) मीरणी की आम इजाजत।
(४) बकाया जो काश्तकारान देहात इलाके बिसाऊ-सूरजगढ के जिम्म इब्तादाय स १९९९ लगायत स १९९० तक बाकी है, उसम तीस हजार रुपए मुआफी।
(५) लाग बाग जो ठिकाने म ली जाती है, वे मुआफ।

रावल साहब ने यह नियम भी बना दिया कि बिसाऊ-सूरजगढ एक रहेंगे और बडे पुत्र का ही उन पर अधिकार रहेगा। शेप पुत्रो को इच्छानुसार गांव दिए जाएगे ताकि भविष्य म राज्य के टुकडे कटुके न हो सकें। यह नियम *निर्धारण आपकी राजनीतिक दूरदर्शिता को प्रकट करता है।* इस नियम की तत्कालीन शासको मे सभी ने प्रशसा की। इससे आपका गौरव चारो ओर फैला। यदि यह नियम बहुत पहले बन जाता तो 'शेखावाटी' का स्वरूप ही दूसरा होता, व्यवस्था ही दूसरी होती, विकास भी अपने ढग का होता, शेखावाटी का 'सगठित स्वरूप' स्थापित हाता और इसकी 'शासन व्यवस्था' निश्चय ही विकसित हाती। शासन व गावो का विभाजन ही नही, एक गाव की जनता को चार चार, पाच पाच पानो मे विभाजित होने की नौबत नही आती। इस बात की गहराई को रावल बिशनसिंह ने समझा और एक अद्वितीय

नियम बनाकर एक राजनीतिक साहस, चातुर्य एवं दक्षता का परिचय दिया। इससे उनकी धाक जयपुर राज्य भर मे फैल गई।

बम्बई की जलवायु उनके अनुकूल होने के कारण वे अधिकतर वहा निवास किया करते थे। फिर भी अपनी प्यारी प्रजा की देखभाल सदैव किया करते थे। उनके बम्बई से प्रजा के हित के लिए आए हुए भाव भरे पत्र इस बात के प्रमाण हैं। वे सभी राजकीय अभिलेख म अब भी उपलब्ध हैं। उनकी यह एक मुख्य विशेषता थी कि उन्होने अपने पिता के समकालीन नौकरो को, उनके वश के व्यक्तियो को तथा समस्त सेवको को अपने राज्य मे ही नौकर रखा। कभी उनको कोई कष्ट नही होने दिया। उन्होंने अपने पुराने स्वामिभक्त नौकरो को उन्नति के अवसर दिए और उनको सदव पुत्र के समान समझा।

वे गुणी जनो के पारखी थे, प्रजापालक थे और बडे विवेकशील थे। उनको क्रोध आता था पर तु उन्होने कभी किसी का अनिष्ट नही किया।

ख्याति प्राप्त साहित्यकार श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेहरीजी रावल बिशनसिंह के शासन काल मे बिसाऊ आए। वे रावल साहब के गुरु थे। उन्होने बिसाऊ म एक रात वद्य कन्हैयालालजी के यहा विश्राम किया।

रावल साहब का लम्बा कद, पुष्ट शरीर, रोबीला चेहरा, गम्भीर मुख मुद्रा, दीनदुखियो पर द्रवित होने वाला सरल व कोमल हृदय, पनी दृष्टि, मोहक नत्र, विषय की गहराई तक पहुचने की राजनीतिक गति लम्बी भुजाए आदि उनके सभी गुण जब शाही पोशाक मे आकर्षक व्यक्तित्व को उभारते थे, प्रजा के सम्मुख प्रकट करते थे तो जन मन नत मस्तक हो अपने प्रिय प्रजापालक शासक को अपने श्रद्धा, सम्मान व सहयोग के भाव अर्पित करता था। उनके शासन मे राजा और प्रजा मे निकटता थी, दूरी नही थी। राजा अपनी प्रजा के घर जाया करता था, भोजन किया करता था तथा प्रजा के द्वारा आयोजित समस्त उत्सवा मे सम्मिलित हुआ करता था। राजा के साथ पूरी परगह' भोजन किया करती थी।

ऐतिहासिक गौरव के साथ साथ बिसाऊ का आर्थिक, सामाजिक, सास्कृति, शक्षणिक एव कलात्मक उत्थान भी इनके शासन काल मे कम नही हुआ। प्रारम्भ से ही सभी शासको ने बिसाऊ का सर्वाङ्गीण विकास करने मे पूर्ण योग दिया, परन्तु रावल बिशनसिंह के शासन काल मे बिसाऊ की गौरव-वृद्धि हुई जिसका प्रमाण उनका रघुवीरसिंह को बिसाऊ का शासन भार सौंपते

समय दिया गया भाषण है। उन्होंने बताया, "मुझे गर्व है कि मेरी प्यारी प्रजा मे इस वक्त कोटाधिपति व लक्षाधिपति सेठ साहूकारान सैकड़ो से ज्यादा हैं कि उन्होने दूर देशो म जाकर जहां अपनी व्यापार कुशलता का परिचय दिया है, वहां मातृभूमि प्रेम का भी नही भुलाया है। उन्होने अपनी मेहनत और व्यापार म सफलता प्राप्त करते हुए इस रेगिस्तानी भूमि मे अपने भाइयो के हितार्थ खुले दिल से खर्च करने मे सकोच नही किया है जिस के फलस्वरूप स्थान-स्थान पर कुवे, धर्मशालाए, स्कूल औषधालय हास्पिटल, पाठशालाए, चटशालाए, सस्कृत विद्यालय, कन्या पाठशालाए, गौशालाए व सदाव्रत कायम किए हुए हैं जो आज ठिकाने म नजर आरहे हैं। मैं उन सब ही धनीमानी व्यक्तियों को धन्यवाद देता हू कि जिन्होने इस प्रकार जन सेवा करने मे ठिकाने का हाथ बटाया है और जिसके फलस्वरूप आज ठिकाने के वा इनके सम्मिलित प्रयास से मुझे कहने मे हर्ष है कि ठिकाने के ६६ प्रतिशत ग्रामो मे मेरी प्रजा को विद्या ग्रहण करने की सुविधाए हैं।"[1]

उस समय राजकीय 'ठाठ-बाट व रवाब' से रहना रावल साहब को बहुत प्रिय था। सरल हृदय शासक होते हुए भी अपने 'राज्य का रोब' रखने के लिए वे सदा स्पेशल ट्रेन म चला करते थे। स्पेशल होटलो म ठहरा करते थे तथा पूरे लवाजमे के साथ रहते थे। बाहर हर जगह उनका नाम चलता था। 'आय-व्यय" की कभी उन्होने चिन्ता नही की। उन्होने सदा 'बिसाऊ का गौरव व राज्य का रवाब' बढाने का ही ध्यान रखा। यही कारण है कि जयपुर महाराज के यहा उनकी अत्यधिक मा यता थी। वे धार्मिक व आस्तिक इतने थे कि प्रत्येक पर्व पर दान पुण्य किया करते थे तथा प्रत्येक यात्रा के पूर्व अपने आने जाने का मुहूर्त अग्रिम रूप स स्वर्गीय प भोलारामजी मिश्र से निकलवाकर ही यात्रा किया करते थे। प भोलारामजी उनके राज गुरु थे।

रावल साहब सालग्रह (जन्म दिन) मनाने म बडा विश्वास रखते थे। सभी के जन्मदिन पर ब्रह्मभोज, परगह व ठिकाना कर्मचारियो को भोजन करवाया जाता था। उस दिन सलामी व नजरें होती थी, दरबार लगता था, तोपें चलाई जाती थी, रोशनी की जाती थी, आतिशबाजी का कार्यक्रम होता था।

---

१ द्रष्टव्य– शासन भार सौंपते समय बिशनसिंह का दिया हुआ भाषण दिनाक २ जून, सन् १६३६ पृ २

इसके बाद बाद में मार्गशीर्ष शुक्ला ७ वि. सं १९५८ को रामविलासराय सेगानी ने नगर के पूर्वी परकोटे (दक्षिण) में जनता की आवागमन की सुविधा प्रदान करवाने के उद्देश्य से एक मोरी निकलवाई जो इसके टूटने तक 'सेगानों की मोरी' के नाम से प्रसिद्ध रही है। इसी प्रकार इस मोरी से कुछ भाग उत्तर की ओर चलने पर सेठ रामविलासदास भगवानदास ने पूर्व की ओर का परकोटा तुड़वाकर एक मोरी निकलवाई जो 'झूंगटा की मोरी' कहलाती थी। अब यह मोरी भी टूट चुकी है। एक समय तो इन मोरियों पर भी मुख्य चारों दरवाजों की भांति पहरेदार रहा करते थे। झूंगटा ने अपनी धर्मशाला, कुआ, बगीची, मंदिर आदि के लिए जाने आने की सुविधा की दृष्टि से यह मोरी निकलवाई थी। इन मोरियों से सेठों का आर्थिक गौरव भी प्रकट हुआ करता था।

बिसाऊ में स्थित 'विष्णु नाट्य परिषद्' इनकी कला प्रियता का ही फल है। रावल बिशनसिंह खेल कूद के भी शौकीन थे। उन्होंने नगर में खेल भावना के विकास के लिए घवलपालिया जोहड़ के पास २५००) रु० दान करके 'रघुवीर क्लब' का निर्माण करवाया जिसमें लगभग सभी खेलों के लिए मैदान तैयार करवाए गए। यह काम पं० श्रीलालजी मिश्र एवं कन्हैयालालजी पोद्दार के निवेदन पर तथा उनके प्रयासों से दिनांक २६ अप्रैल, १९३६ (वि सं १९९३) को पूर्ण हुआ। नगर के खेल प्रेमी वहां खेलने व खेल देखने जाया करते थे। आज उस क्लब की स्थिति बड़ी दयनीय बनी हुई है। अपने स्वामी की स्मृति में निर्जन हो रही है, निर्जीव हो गई है।

रावल साहब की शासन व्यवस्था में कामदार, वकील, फौजदार, किलेदार, रिसालदार, कप्तान, चरवादार बटवाल खजानची, द्वाररक्षक आदि सभी सुयोग्य व स्वामी भक्त थे जिनमें बलदेव सहाय, बाबू दयाशेखर, पंडित रामदयाल शर्मा, ठा० नारायणसिंह, ठा० धारीसिंह आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। पंडित रामदयाल शर्मा ने बिसाऊ से पहले झुंझुनू निजामत में बिसाऊ ठिकाने के वकील के पद पर भी कुशलता से कार्य किया। इनकी कार्य तत्परता से रावल साहब प्रभावित थे। पं० रामदयालजी शर्मा डा० जयवीर शर्मा के पितामह थे। इनकी शासन व्यवस्था अनेक सीगों (विभाग) में बंटी हुई थी।

रावल बिशनसिंह ने सदा अपने राज्य व प्रजा से जुड़ाव रखा। गणगौर पूजन, देवी पूजन, शीतला पूजन आदि अनेक अवसरों पर 'दरबार की

सवारी' निकला करती थी तथा अनेक उत्सवों पर 'दरबार' सभा करते थे। इन आयोजनों पर राजा और प्रजा एक दूसरे के निकट आते थे। ये सभी आयोजन बड़ी धूम धाम से मनाए जाते थे। इनमें आखातीज और दशहरे का दरबार विशेष महत्व रखते थे।

इन्होंने ५२ वर्षों तक अकटक राज्य किया। इनका स्वर्गवास मार्गशीर्ष कृष्णा १५ संवत् २००२ को हुआ। उनका अपना अनोखा व्यक्तित्व था। उनका 'किशन निवास' उनको आज भी याद कर रहा है। इनकी प्रशंसा में अनेक चारण भाटों एवं विद्वानों ने पद्य बनाए, उनको अभिनन्दन पत्र भेंट किए तथा इनके शासन संचालन के विषय में अनेक सुखद प्रसंगों को पद्य बद्ध किया। उनमें कतिपय यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

१ सुर की समाज मिल मंगल मनायो मन,
कष्ण रंग धारो कष्ण विष्णु बनि आयो है ॥
(मुकनदान बारठ विरमी)

२ शेखावत कुल कलश नृप, श्री किशनेशसिंह भूर।
परसन ते पातक कटै, दर्शन से दुख दूर ॥
(प रामदयाल शर्मा)

मेजर ठाकुर रघुवीरसिंह

(वि स १९९६—वि स २०११)

शेखाजी के वंशजों द्वारा शासित परिमण्डल 'शेखावाटी' में बिसाऊ सूरजगढ के शासक रघुवीरसिंह का जन्म वि स १९७० में हुआ और उनको सूरजगढ बिसाऊ के शासक के रूप में संवत् १९९६ में राजगद्दी मिली। इनका विवाह बांसवाड़ा हुआ था। ये अपने पिता किशनसिंह की भांति प्रजापालक, उदार मन एवं न्यायी थे। इन्होंने सवाईमान गार्ड में सैनिक शिक्षा प्राप्त की तथा मेयो कालेज अजमेर में दिनांक एक सितम्बर, सन् १९२८ से एक मई, सन् १९३३ तक शिक्षा ग्रहण की। उस समय इनकी आयु लगभग बीस वर्ष की थी। इन्होंने न्यू कालेज ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी इंगलैण्ड में रहकर शिक्षा पाई। ये आधुनिक विचारधारा के पोषक शासक थे। ये उदार मन से सदैव सबका भला करने वाले थे। गर्व का अल्पांश भी इनको छूकर नहीं गया था। दया और दान इनके भूषण थे।

जनकल्याण के कार्यों मे इनकी विशेष रुचि थी। इसीलिए अपने क्षेत्र मे इनकी लोकप्रियता थी। पिलानी से सूहाफ तक ५० फुट चौड़ी पुख्ता सड़क तयार करवाने के लिए इनका विशेष योगदान रहा। ठिकाना बिसाऊ के देहात के खेतो की १९।)२ (उन्नीस बीघा बारह बिस्वा) जमीन इसके लिए इन्होने दी। जिसका प्रमाण मिसल नम्बर ४८४० मे दिनांक १५ फरवरी, सन् १९४५ को एक्जीक्यूटिव इन्जीनीयर, झुन्झुनू का लिखा हुआ पत्र है। इससे इनका विकास कार्यों के प्रति लगाव प्रमाणित होता है।

ठाकुर साहब ने बिसाऊ में स्थित श्री सनातन धर्म महावीर दल एव श्री विष्णु नाट्य परिषद् को भवन प्रदान किए जो क्रमश 'टीला' और 'उपासरा' के नाम से जाने जाते रहे हैं।

ठाकुर रघुवीरसिंह राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे। इन्होने राष्ट्रीय आन्दोलन मे सहयोग देते हुए अपने राज्य (ठिकाने) मे बेगार प्रथा पूर्णत बन्द करवा दी। गाधीजी के प्रति उनके हृदय में अच्छी श्रद्धा थी। जिसका प्रमाण इमारत चबूतरा को महात्मा गाधी की तेरहवी के दिन तारीख १२ फरवरी, सन् १९४८ को मुख्य बाजार मे आम सभा मे भाषण देते समय गांधी मदिर' (स्मारक) के लिए देने की घोषणा करना है। इस भवन को गाधी मदिर के रूप मे परिवर्तित, सर्वद्धित एव व्यवस्थित करने का पूरा भार नगरपालिका बिसाऊ को सौंपा गया था। किन्ही कारणो से नगरपालिका यह काय (गांधी स्मारक का निर्माण) अब तक नही करवा सकी। वतमान मे इस भवन में नगरपालिका का कार्यालय है। ठिकाने के शासन काल म यह भवन ठिकान का तहसील कार्यालय के रूप में काम आता था। उस समय यह 'चबूतरा' के नाम से ही जाना जाता था। ठिकाने के रवेन्यू कमचारी यहाँ बठा करते थे। बाजार के भावा तथा उसकी व्यवस्था का नियत्रण भी यही से होता था।

जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय के दरबार में भी इनका अत्यधिक सम्मान था। 'मान गार्ड' मे भी ये उच्च पद पर सम्मान प्राप्त थे। इनको जयपुर की ओर से आए पत्र क्रमाक ६१९६ दिनाक ५ सितम्बर, सन् १९४६ के द्वारा मेजर' की उपाधि से विभूषित किया गया। शेखावत सरदारो में यह उपाधि बिरला को ही मिल पाई है। इसका अपना एक विशेष महत्व था।

मेजर ठाकुर रघुवीरसिंह ने बिसाऊ गौशाला के लिए गौचर भूमि का पट्टा किया जो इनकी उदार एव पुण्य भावना को प्रकट करता है। गौ सेवा में

इनकी अटूट श्रद्धा थी। यह भूमि गाए चराने मे काम आती है। इसके अतिरिक्त आपने अनेक सस्थाओ की सहायता की। शिक्षा के विकास के लिए अपने राज्य मे आपने विद्यालय खुलवाए, उनका सचालन किया तथा उनको क्रमान्नत भी करवाया। अनेक धनीमानी लोगो को विद्यालय खोलने के लिए प्रेरित भी किया। आप कुशल समाज सेवी एव लोकप्रिय शासक थे।

ठाकुर साहब ने भारत के एकीकरण मे अपना सहर्ष सहयोग दिया और एक जुलाई, सन १६५४ को अपना राज्य देशी रियासतो के एकीकरण के अन्तगत राजस्थान सरकार को सौंप दिया और एक सामा य नागरिक की भाति अपनी जनता मे घुल मिल गए। इससे आपकी उच्च भावना प्रकट होती है।

ये एक कुशल शिकारी भी थे। इ होने अपने जीवन मे खतरा उठाकर भी अनेक शेरो की शिकार की। केशरीसिंह चापावत इनके सच्चे मित्र थे। वे भी कुशल शिकारी थे। वे इनको 'जाज' उपनाम से पुकारते थे।

स्वतत्र भारत के प्रथम आम चुनाव मे ठाकुर रघुवीरसिंह रामराज्य परिषद् की ओर से सन् १६५२ म खडे हुए और विधान सभा के सदस्य चुने गए। सन् १६६२ म आप स्वतत्र पार्टी की ओर से मण्डावा विधान सभा क्षेत्र से चुने गए। सन् १६६७ मे ये पुन स्वतत्र पार्टी की ओर से खेतडी विधान सभा क्षेत्र से चुने गए। ये जब-जब भी और जहा कही से भी चुनाव मे खडे हुए, सदव विजयी रहे। इ होने कभी 'हार का मुख' नहीं देखा। इससे इनकी लोकप्रियता प्रकट होती है। वे सदव याय के साथ रह तथा जनता का भला करते रहे। जब जनता के हितो की हानि होती दिखाई दी तो आपने याय की दृष्टि से अपने पद से त्याग पत्र देकर एक आदश प्रस्तुत किया। आपकी प्रजातान्त्रिक जीवन पद्धति मे प्रगाढ आस्था थी। इसी कारण जन मन मे अब भी *आपकी स्मृति ताजा बनी हुई है।*

ठाकुर साहब ने अपने शासन काल मे अनेक स्थानो पर औषधालय, हास्पिटल, कुए आदि बनवाए या उनके निर्माण और सचालन मे भरपूर सहयोग दिया। जनहित के कार्यों मे वे सदव तत्पर रहते थे।

व शासन व्यवस्था मे भी कुशल थे। इ होने अपनी शासन व्यवस्था को अनेक सीगो (विभाग) म बाट रखा था। प्रत्येक विभाग के अलग से प्रभारी अधिकारी थे जिनमे मुख्यत रिसालदार किलेदार, अटवाल आदि के

साथ साथ कामदार, सीनियर ग्राफिसर, खजानची भी विशेष सुयोग्य थे। नारायणसिंह व धारीसिंह का काय इनके शासन काल मे भी उल्लेखनीय रहा।

जागीर अधिग्रहण के समय तक श्री चिमनलाल जी शर्मा सीनियर सरिस्तेदार व गृह विभाग के प्रभारी, ग्रजहरहुसनजी वकील निजामत झुंझुनू, रामकिशनलालजी ग्रभिलेख प्रभारी तथा श्री गोपालसिंहजी सहायक सचिव के रूप मे विशेष महत्वपूर्ण ग्रभिलेख ग्रादि को निपटाने का काय करते रहे हैं।

ठाकुर रघुवीरसिंह का जयपुर रियासत के 'नरेन्द्र मण्डल' मे विशेष महत्वपूर्ण स्थान था। जयपुर दरबार के ग्राप 'ताजीमी सरदार' थे। 'राजपूत सभा' में ग्रापका गौरवपूर्ण स्थान था। प्रत्येक काय में ग्रापकी 'राय' एक महत्व रखती थी। 'बिसाऊ हाउस' का ग्राधुनीकरण करने में ग्रापका विशेष हाथ था।

ठाकुर साहब ने ग्रपने ठिकाने (राज्य) की ग्रार्थिक स्थिति को ग्रत्यधिक सुदृढ बनाया। ग्रापने राज्य सचालन में कुशलता लाने के भरसक प्रयत्न किए। इनके शासन काल में लगान व लाग बाग वसूली में उदारता का दृष्टिकोण रखा गया। कमचारियो के वेतनमानो का समय के साथ सही निर्धारण करके उनको लागू करने में ग्रापने बहुत रुचि ली। इन्होने ग्रपने सभी कमचारियो को पिता तुल्य सरक्षण दिया। इन्होने ठिकाने के पुराने कमचारियो की सेवाग्रो का विशेष ध्यान रखा। ये मानवीय दृष्टिकोण के उदारवादी शासक थे।

ग्रपने राज्य के सेठ साहूकारो, विद्वानो, कुशल कारीगरो तथा ग्रन्य सभी क्षेत्रो में हुई प्रतिभाग्रो का इन्होने बहुत ग्रादर किया।

ठाकुर रघुवीरसिंह शासक के साथ साथ साहित्यिक रुचि रखने वाले थे। ग्रापकी प्रतिभा से प्रभावित होकर ग्रनेक विद्वानो ने ग्रापका यश बढ गुण गान किया, उनको ग्रभिनन्दन पत्र भेंट किए तथा ग्रापका स्वागत सम्मान किया। इन्होने 'बिसाऊ का इतिहास' लिखवाने के बहुत प्रयत्न किए परन्तु इनकी 'वह इच्छा' इनके जीवन काल मे पूर्ण न हो सकी। 'वीर सतसई' (नाथूदानसिंह महियारिया) मे इन्होने विस्तृत 'कवि परिचय' लिखकर (दिनाक २८ जून, सन् १९५५) ग्रपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। विद्वानो मे प्रसिद्धि प्राप्त 'वरदा' त्रैमासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन करने वाली सस्था 'राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ के ग्राप प्रथम एव सस्थापक 'सरक्षक' थे।

आपके शुभ एव उत्साहप्रद आर्थिक तथा हार्दिक सहयोग के बल पर ही बिसाऊ की यह साहित्यिक सस्था अब अपने २६ वर्ष पूर्ण कर चुकी है। रघुवीर कला मन्दिर (बिसाऊ) को आपने आर्थिक सरक्षण प्रदान किया। रघुवीर क्लब के विकास से आपकी खेल के प्रति रुचि प्रकट होती है। इन्होने अनेक खेलो के मैदान धवलपालिया जोहड पर बनवाए जो आज भी अपनी जीर्णशीर्ण स्थिति मे पडे अपने विकास की प्रतीक्षा मे हैं।

गोरा रग, लम्बा कद, प्रभावशाली मुख मण्डल, तेजस्वी व्यक्तित्व मे उदार दृष्टिकोण, मधुर वाणी, सहयोगी स्वभाव आदि इनके विशेष गुण थे जो इनको जनता से जोडते थे।

बिसाऊ के अन्तिम लोकप्रिय शासक मेजर ठाकुर रघुवीरसिंह का स्वर्गवास दिनाक २१ सितम्बर, सन् १९७१ (आश्विन शुक्ला २ मगलवार वि स २०२८) को सायकाल ६ बज कर ५३ मिनट पर जयपुर मे बिसाऊ हाउस मे हुआ तथा उनका दाह सस्कार दिनाक २२ सितम्बर सन १९७१ (आश्विन शुक्ला ३ बुधवार वि स २०२८ क्षय तिथि) को सायकाल २ ३ बजे के मध्य ठाठ बाट से सम्पन्न हुआ। वे आजीवन तन मन-धन से प्रजा हितैषी बने रहे तथा आपके प्रति प्रजा की भी अटूट श्रद्धा रही। इनके दो पुत्र— चक्रपाणिसिंह और अजातशत्रुसिंह हुए।

ठाकुर रघुवीरसिंह के प्रशस्तिगान मे कहे गए अनेक पद्यो मे से एक यहा प्रस्तुत है—

शाद शर्मा रहे दुनिया मे हुजूरेवाला।
जब तलक चश्मे महो महर मे बीनाई है॥
नग मए ऐश मसरत का हो हर सिम्त वफूर।
जब तलक हुस्ने हसीना मे यह रानाई है॥
(प चिमनलाल शर्मा)[1]

—*—

१ प चिमनलाल शर्मा डा उदयवीर शर्मा के पिताश्री हैं।

१९ हमीरवास थली
२० डुमोली छोटी
२१ रसूलपुर
२२ मेघपुर
२३ चोराडी अगुणी
२४ रघुवीरपुरा चोराडी
२५ ढाणी खेजड़ा
२६ भवानीपुरा
२७ देउता
२८ मनाणा
२९ श्यामपुरा मनाणा

नरहड़वाटी—

१ लामा
२ हमीरवास लामा
३ जाखड़ा
४ गोविन्दपुरा जाखड़ा
५ गोवली
६ जवाहरपुरा नदी
७ हमीदपुर
८ गाडोली
९ चक गाडोली (बिशनशहर)
१० पाँचडिया
११ बिशनपुरा पांचडिया
१२ वास भोजा
१३ ढाणी स्योराणा
१४ छबररवाल
१५ जीणी
१६ हरिपुरा जीणी
१७ फरहट
१८ सूरजगढ
१९ घरडू
२० स्यालू छोटी
२१ इस्माइलपुर उर्फ पिचाणा बाँ
२२ अगुवाणा
२३ हमीरवास अगुवाणा
२४ बिशनपुरा अगुवाणा
२५ जेतपुर
२६ नानूवास
२७ सोती
२८ मोरात
२९ श्यामपुरा मटाणा
३० माटावास
३१ केहरपुरा
३२ लोदीपुरा

—*—

पचपाने के हिस्से सहित गांवो की सूची

झुन्झुनू वाटी—

१ झुन्झुनू $\frac{1}{8}$
२ बिरमी $\frac{1}{4}$
३ नुआं $\frac{1}{2}$
४ परशुरामपुरा $\frac{1}{8}$
५ गुढा $\frac{3}{16}$
६ उदयपुर $\frac{1}{16}$
७ लादूसर $\frac{1}{4}$
८ सोनासर $\frac{1}{3}$

सिंघाना वाटी—

१ सिंघाना $\frac{3}{16}$
२ खरखड़ा $\frac{1}{2}$
३ मुहाणा $\frac{1}{2}$
४ बड़वर $\frac{1}{4}$
५ बलोदा $\frac{1}{3}$
६ लाटी को वास (बेचिराग)

नरहड़ वाटी

१ बगड़ $1\frac{4}{8}$
२ सलामपुर $1\frac{4}{8}$
३ बुडाणा $\frac{3}{4}$
४ कासिमपुरा $\frac{1}{–}$
५ भडूंदा छोटा $\frac{4}{8}$
६ नरहड $\frac{1}{8}$
७ जाखोद $\frac{3}{4}$
८ बेरला $\frac{1}{2}$
९ ममलवास $\frac{1}{2}$

दान मे या इनाम मे दिए हुए गावों की सूची
(मुग्राफी के गाव)

झुंझुनू वाटी—

१ श्यामपुरा सिरियासर (चारणो को)
२ निवाई (ठा० भरतसिंह को)
३ श्यामपुरा मालसर (चारणो को)
४ श्री कृष्णपुर (खूबचन्दजी बजावेवाले को)
५ बीजूसर (श्री गोपीनाथजी का मदिर, झुंझुनू)
६ ढाणी मिश्रो की उर्फ बिशनपुरा (बजावे वाले मिश्र)

सिंघानावाटी—

१ हांसास (श्री गोपीनाथजी का मदिर, सूरजगढ)

नरहडवाटी—

१ मालमपुरा (उदावत राजपूतो को)
२ धी धवा (श्री सीतारामजी का मन्दिर सूरजगढ)
३ लीखवा (भरुजी के राजपूता को)
४ दिलावरपुर (चारणो को)

पसपाने के सहित मुग्राफ किए हुए गावो की सूची

झुंझुनू वाटी—

१ दुलवास $\frac{1}{8}$ (चारणो को)
२ ढाणी बिरमी $\frac{1}{2}$ (चारणो को)

३ कमालसर $\frac{1}{2}$ (चारणो को)
४ मेहरादासी $\frac{1}{8}$ (घसू के पीरजादो को)
५ कुहाड़ू बडा $\frac{1}{8}$ (रावो को)
६ मखवास $\frac{1}{8}$ (फकीरो का)
७ सीतसर $\frac{1}{8}$ (श्री गोपीनाथजी का मदिर, जयपुर)
८ बाकरा $\frac{1}{8}$ (झुझुनू के पीरजादो को)
९ बारवा $\frac{1}{2}$ (टकणत राजपूतो को)

सिंघानावाटी—

१ किठाणा $1\frac{3}{8}$ (श्री गोपीनाथजी का मदिर, जयपुर)
२ सीहोड $1\frac{1}{8}$ (तवर राजपूतो को)

नरहडवाटी—

१ चारणवास उर्फ सुलतानसर $\frac{1}{8}$ (चारणो को)
२ कुतुबपुरा $\frac{1}{8}$ (चारणो को)
३ बेरी $\frac{1}{2}$ (भैरुजी के राजपूतो को)
४ झेरली $\frac{3}{4}$ (भाजराजजी के राजपूतो को)
५ बडागाव $\frac{1}{8}$ (" ")
६ हासलसर $\frac{1}{8}$ (" ")
७ खीवासर $\frac{1}{8}$ (" ")
८ चीचडोली $\frac{1}{8}$ (" ")
९ सेही $\frac{1}{8}$ (पीरजादो को)
१० बिगोदना $\frac{1}{8}$ (पीरजादो को)



दूसरा अध्

भौगोलिक परिचय

बिसाऊ झुंझुनू जिले की उत्तरी तथा चूरू जिले की दक्षिणी सीमा पर स्थित है। यह ऐसा जिलो का एक सीमान्त शहर है। इसके निकट से ही सीकर जिले की सीमा निकलती है। इस प्रकार यह शहर तीनों जिलो का सीमा क्षेत्र होने से शेखावाटी का हृदय कहा जा सकता है। सांस्कृतिक एवं भाषा विज्ञान की दृष्टि से शेखावाटी के एक मानक स्वरूप के दर्शन यहां होते हैं। रियासती काल में भी भौगोलिक दृष्टि से इस नगर का अपना एक विशिष्ट महत्व था।

बिसाऊ जयपुर मण्डल की उत्तरी-पश्चिमी और बीकानेर मण्डल की दक्षिणी पूर्वी सीमा पर स्थित है। इसके चारों ओर अनेक गाव व शहर हैं। इसके उत्तर मे रामसर उत्तर-पश्चिम मे सातोली और चूरू हैं। यह बीकानेर मण्डल का एक प्रमुख जिला व शहर है तथा उत्तरी रेल्वे का एक बड़ा जक्शन है। यह बिसाऊ से पाच कोस की दूरी पर स्थित है। बिसाऊ के दक्षिण-पश्चिम म रामगढ, फतहपुर, मण्डावा, महनसर और गुन्ड्यास है, पूर्व मे गांगियासर, सिराधनू, अलसीसर, पीरामर, नाथासर, कोदेसर, मलसीसर आदि हैं पश्चिम मे ऊटवालिया और ठेलासर हैं तथा इसके दक्षिण म झुन्झुनू हैं। बिसाऊ नगर ३७ ४ डिग्री उत्तरी अक्षांश और ७५ ५ डिग्री पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।

धरातल—

बिसाऊ के उत्तर पश्चिम मे बालू रेत के टीले ही टीले नजर आते हैं। इनको 'रेत के पहाड' कहा जा सकता है। ये टीले प्रतिदिन हवा के प्रभाव से कुछ कुछ बढते ही जाते हैं। नगर की अन्य दिशाओ म इतने टीले नही हैं। इस कारण वह भूमि खेती के काम आती है। बिसाऊ के पूर्व म सघन जगल है जिसे 'बीड (बीहड) कहते हैं। बीड म जांट, कीकर, झाडी, रोहिड़ा, जाल, नीम, पीपल, खरी, कन्डा आदि भांति भांति के पेड हैं। आक, धतूरा, फोग, खीप,

खरसणा, बासा, बूई आदि यहां के मुख्य पौधे हैं। मुख्यत यहां धरातल रेतीला कहा जा सकता है।

जलवायु और मौसम—

नगर की जलवायु उष्ण और शीत दोनो ही कही जा सकती है। गर्मियों मे तेज धूप पडने से टीले शीघ्र गर्म हो जाते हैं और अत्यन्त उष्णता पैदा हो जाती है। इसी प्रकार सर्दियो मे ये टीले शीघ्र ही ठंडे हो जाते हैं और अत्यन्त सर्दी पड़ने लगती है। इस प्रकार हमारे नगर म छ माह तक उष्ण और छ माह तक शीत जलवायु पाई जाती है।

बिसाऊ म तीन प्रकार की ऋतुएं मुख्यत होती है— गर्मी, वर्षा और सर्दी। ग्रीष्म ऋतु अप्रेल से प्रारम्भ होकर सितम्बर तक रहती है। गर्मियो मे टीले गर्म हो जाते हैं और उनसे प्रभावित होकर हवा भी गर्म हो जाती है। यह गर्म हवा दोपहर मे खूब तेज चला करती है। इस गर्म तीखी और तेज हवा को 'लू' कहा जाता है। गर्मी की ऋतु मे तेज आंधियां भी आती रहती हैं। गर्मी म यहा रहना कठिन हो जाता है। इतना होते हुए भी यहां की रातें बडी सुहावनी होती हैं। प्रात काल का समय तो और भी अधिक मन भावना होता है।

गर्मी के साथ साथ ही वर्षा प्रारम्भ हो जाती है। यहा वर्षा जुलाई से प्रारम्भ होकर सितम्बर तक होती है। यहा वर्षा की कमी ही रहती है। वर्षा की कमी के कारण अकाल का सामना करना पडता है। यहा कभी कभी सर्दियो म भी वर्षा हो जाती है जिसको 'पोवठ मावठ' कहा जाता है। यहा अच्छी वर्षा होने पर तो एक साल तक का काम चलने लायक अनाज पैदा हो जाता है। समय पर वर्षा होती रहने पर यहा के टीले अच्छे उपजाऊ सिद्ध होते है। वर्षा मे इन पर बाजरा लगाया जाता है। उस उपज को 'दडा' कहा जाता है। इन पर बाजरा लम्बे समय तक हरा रहता है।

बिसाऊ मे सर्दी अक्टूबर से मार्च तक रहती है। सर्दी मे इतनी ठण्ड पडती है कि पाला भी जम जाता है। यहा तेज ठण्डी हवा को डॉफी (डाफर) कहा जाता है। इस तेज ठण्डी हवा के कारण हाथ पर 'फटने' लग जाते हैं। सर्दियो मे वर्षा कम होती है और जब कभी वर्षा हो जाती है तो ठण्ड और अधिक बढ जाती है। हिमाचल प्रदेश मे होने वाले हिमपात से इधर सर्दी बढ जाती है।

उपज—

वर्षा की कमी के कारण यहाँ मुख्यतः एक खरीफ की फसल (उन्याळू साख) पदा की जाती है। इसमें बाजरा, मोठ, मूग, गुवार, चूळा आदि बोए जाते हैं। यह फसल जुलाई के मध्य तक वर्षा होते ही बोई जाती है और अक्टूबर में काटली जाती है। इस फसल के साथ साथ ही खेतों में मतीरे, काकडी, काचरा, टीडसी आदि के बीज भी बोए जाते हैं। यहाँ के मतीरे बड़े मीठे और बड़े बड़े होते हैं। यहा की काकडी भी लम्बी और खाने में अच्छी होती है।

रबी की फसल (स्याळू साख) के लिए यहाँ भूमि और वर्षा अनुकूल नहीं हैं। भूमि रेतीली है, वर्षा कम है, खेतो मे सिचाई के साधन नही हैं। इस कारण यह फसल नही हो पाती है। माली लोग या जिनके पास खेतो मे सिचाई के साधन हैं, भूमि रबी की फसल के अनुकूल है, वे अल्प मात्रा मे गेहूँ, जौ, चना आदि पदा कर लेते हैं। साग सब्जी भी पदा कर लेते हैं। इसमें मुख्यत गाजर, मूली, सोगरी, प्याज, पालक मैथी, धनिया आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

बिसाऊ के खेतो मे लूग और पाला अधिक मात्रा मे होते हैं जो पशुओं का मुख्य चारा है। यहाँ जाटी और झाडी अधिक हैं। खरीफ की फसल के साथ साथ यह चारा काट, झाग व झाड लिया जाता है। यह चारा साल मे केवल एक बार होता है।

आजकल 'बाडियो' मे सब प्रकार की सब्जिया करने लगे हैं परन्तु उनकी मात्रा अत्यल्प ही रहती है। पानी का अभाव सबको खटकता है। कूए ६० ७०-१०० हाथ तक गहरे हैं।

वनस्पतियां—

यहा के बीड और खेतो में सागरी, बेरिया, करिया, ढालू, फोगलो खोखा, खीपोली आदि मुख्यत होते हैं। ये सभी यहाँ की प्रमुख सौगात' हैं। इन सभी का उपयोग बड़े चाव से किया जाता है। इनके अतिरिक्त वनस्पतियो मे अग्रांकित का उल्लेख किया जा सकता है— कागलहर, बाड करेला, सुरेली, आगियो सत्यानाशी चिकनाघास, चिडी धनिया हिरणचबो रूखडी, दूबडी, डन्ली, वेकरिया बगरो, मोनफूली, अवसन, सापणियो घास, करेलण, लूणियो घास, लोटणियो घास, मामरो, माघो काटो घटेल, मोथ, तिमानी, बिल्ली

साटो, भाखडी, आक, गरी, बबूल, कैर, बूई, सणियो, कू चो, ककेडो, भरु टियो, चिडी मोठ, झोझरू, धुलाई, आखफोड, कुरीघास, घूनरी, खरीटी, बासो, दुधावडी, गजरी, फोग, मूराली, मूगा जाटो, पसरकटाली, साटो पीनियो, बुई पीनियो, सूई पीनियो, पाडलसीगी, अमरबेल, सीमरण, घामण भोथियो, कास, डाब, गोदी, दिखणी गोखरु, धतूरो, मीजरियो घास, पीलवानी, मकडो घास लिगरियो घास, बणो घास, बमरी, मरवो, ऊट फोग, अरणी, ढाक, हिंगूण, भूगो, लाडुला रतुओ घास, घोडी खाज, डाभरियो, बड, बधुओ, मरगोजो, भेरणियो घास, खीर खाप, कमोद, डूडली आदि आदि। कम वर्षा का क्षेत्र होते हुए भी यह वनस्पतियो का घर है। यहा के पशु-पक्षी इन्ही पर निर्भर रहते हैं। ये वनस्पतियाँ दवा, भोजन, चारा आदि अनेक रूपो मे काम आती हैं। ये सभी प्रकृति की देन हैं तथा जीव मात्र के उपयोग के लिए उपलब्ध हैं। यूनाधिक मात्रा मे ये सवत्र पाई जाती है।

उद्योग धन्धे—

यहा के अधिकाश परिवार तो खेती पर ही अपना गुजर बसर करते हैं। यहा के बडे बडे सेठ साहूकार प्राय बाहर कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, गोहाटी आदि नगरो म रहकर व्यापार करते हैं। आजकल तो यहा के लोग विदेशो मे भी जाने लगे हैं। यहा के लोग खाडी देशो से अच्छा पसा कमाकर लाते हैं। यहाँ के सेठ लोग व्यापार मे बडे दक्ष हैं। इनका करोडो का व्यापार देश-विदेशो मे चलता है। यहा के मध्यम श्रेणी के लोग सरकारी या निजी क्षेत्रो मे नौकरिया करते हैं। यहा के लगभग पचास प्रतिशत लोग बाहर नौकरिया करते हैं।

यहा के कुछ लोग भेड बकरिया चराने का काम भी करते हैं। कुछ लोग भेडो के ऊन से बोरे, बरडी आदि बनाते है। यहा के सुनार जेवर (सोने के आभूषण) बनाते है। उनकी घडाई में दक्षता प्रशसनीय है। मीनाकारी का काम भी यहा होता है। कपडे सिलाई का काम भी यहा अच्छा होता ह। पुरानी फैशन के कपडे सीनवाले कारीगर भी यहा है। यहा की चप्पलें, जूते, पट्टिया आदि प्रसिद्ध रही हैं। ये दूर दूर तक बिकने जाती हैं। यहां के चमकार अपने काय में कुशल है। यहा दरी, नीवार, जेवडी आदि बनाने का काम भी चलता ह। यहा रुई पीनने का काम मशीनो से होता है। हाथ से पीनने वाले पिनारे भी अपने धध में कुशल है। रगाई बधाई का काय आजकल प्रगति पर है। यहा का ब धेज काय प्रसिद्ध ह। पीला, चूनडी, ओढना, पामचा,

लूगड़ा आदि बाहर बिकने जाते हैं। यहां के नीलगर रंगाई, छपाई, बधाई के कार्य में दक्ष हैं। मिट्टी के बर्तन भी यहां बनाए जाते हैं। यहां ईंटें बनाने-पकाने का काम भी अच्छा चलता है। खराद का काम भी यहां होता है। यहां के काष्टकार (खाती) भांति भांति की वस्तुएं तैयार करते हैं। यहां की बड़ी बड़ी विशाल एवं भव्य इमारतों में यहां के शिल्पकारों की कला को देखा जा सकता है। वेल्डिंग का काम भी यहां होता है। हाथ के कारीगर सभी अपना-अपना धंधा बड़ी कुशलता से करते हैं। कुछ तो अपने पैतृक धंधे के रूप में काम करते आ रहे हैं। ये धंधे अपनी रफ्तार से चल रहे हैं। तेल घाणी का उद्योग भी यहां अपनी प्रगति पर है। 'शुद्ध घाणी का तेल' को यहां विशेष पसन्द किया जाता है। चूड़े बनाना, मूंज की रस्सी बनाना, छाज, खरला आदि बनाना के धंधे भी यहां चलते हैं। दाल और तेल की मिलें भी यहां अच्छा उत्पादन करती हैं।

रहन-सहन, खान-पान, वेश भूषा—

हमारे बिसाऊ में लगभग सभी मकान पक्के हैं। अब कच्चे मकानों की संख्या नगण्य है। बड़ी बड़ी विशाल हवेलियां यहां का गौरव है। इनकी शिल्प कला और चित्रकारी दर्शनीय है। नगर में बिजली, पानी, सड़क आदि सभी सुविधाएं है।

यहां का मुख्य भोजन बाजरा और गेहूं है। दाल, मोठ, मूंग का प्रयोग भी होता है। मूंग मोठ और चने के पापड़ काम में लिए जाते हैं। इनकी मंगोड़ियां भी बनाकर काम में ली जाती हैं। बाजरे के आटे की 'राबड़ी' और चने के चून की (बेसन) 'कढ़ी' बनाई जाती है। दलिया, खीचड़ी, लापसी, दाल-चूरमा भात आदि उल्लेखनीय खाद्य हैं। दूध, दही, छाछ आदि का सेवन किया जाता है। विशेष उत्सवों पर 'विशेष भोजन' बनाया जाता है। अनेक प्रकार के मिष्ठान बनाए जाते हैं।

बिसाऊ के लोग साधारणतः धोती, कुरता, कमीज, टोपी, साफा, पगड़ी पेण्ट, कोट, बुसशर्ट सभी काम में लेते हैं। पुरानी और नई पीढ़ी की पोशाकों का प्रयोग अपनी अपनी रुचि के अनुकूल होता है। दुपट्टा लगाने का रिवाज अब नहीं रहा है। टोपी ओढ़ना और नंगे सिर रहना दोनों प्रकार की वेश भूषा यहां देखी जा सकती है।

यहां की औरतों की वेश भूषा पर भी पुरानी और नई संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है। जातिगत संस्कारों का प्रभाव भी औरतों की

वेश भूषा मे दर्शनीय है। इस बदलते हुए युग मे भी प्राचीनता से लगाव एक अनोखी बात है। यहा की औरतें मूल्यवान आभूषण पहनती हैं। धर्म, जाति और धन्धे की पहचान भी औरतो की वेश भूषा से हो जाती है। सभी में एक सास्कृतिक सौम्य भाव है।

जनसख्या—

सन् १९३१ मे बिसाऊ की जनसख्या ७७३५ थी जो सन् १९४१ में बढकर ८४७२ हो गई परन्तु १९८१ की जन गणना के अनुसार यहां की आबादी लगभग ७८०० ही रह गई। सन् १९८१ की जनगणना के अनुसार यहा की आबादी १८००० के लगभग ही थी। यहा सभी जाति के लोग रहते हैं।

यहा के लगभग आठ दस हजार आदमी नौकरी या व्यापार के लिए बाहर रहते हैं। सेठ साहूकार तो सभी सदा से बाहर ही रहते रह हैं। यदाकदा जात जडूला के लिए उनका यहा आना होता है।

बाजार—

बिसाऊ का बाजार अति प्राचीन है। वि स १८१० १२ से इसकी अवस्थिति के प्रमाण मिलते हैं। यहा का बाजार चौपड का बाजार था परन्तु आज वह स्थिति नही रही है। बाजार चौडा है। बाजार म हर प्रकार की वस्तुए मिलती हैं। आधुनिक साज सज्जा से लेकर सामान्य आवश्यकता एव उपयोग की सभी चीजें बाजार मे मिल जाती है। पसारट, गल्ला और किराने की बडी बडी दूकानें हैं। पान, बीडी, चाय आदि की पर्याप्त दूकानें है। हलवाइयो की दूकानें भी हर समय खुली रहती है। फल सब्जी आदि की दूकानें भी पर्याप्त मात्रा मे लगती है। बाजार म बिजली लगी हुई है जिससे उसकी रात्रि की शोभा बडी निराली हो जाती है। बाजार से होकर पक्की सडकें चारो ओर जाती है। बाजार मे सभी प्रकार की दूकानें हैं।

मार्ग—

बिसाऊ सडका व कच्चे माग से चारो ओर से जुडा हुआ है। यहा से टेम्पो रोडवेज, बसें, ट्रक, तांगा तथा अन्य वाहन चारो ओर जाते-आते रहते है। यहां से यातायात बड़ा सुगम है। बिसाऊ चूरू होकर बीकानेर तक रोडवेज से जुडा हुआ है। इसी प्रकार बिसाऊ झुन्झुनू होकर जयपुर तक रोडवेज से

जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त नागा और अन्य मार्ग भी बस आती हैं। चूरू से जयपुर रेल मार्ग पर बिसाऊ पश्चिमी रेलवे का प्रथम स्टेशन है। यहां से गंगानगर-जयपुर, बीकानेर-जयपुर, चूरू जयपुर गाड़ियां फतहपुर सीकर होकर जाती हैं। दिल्ली जानेवाले यात्री चूरू होकर रेल से जाते हैं या रोडवेज से झुंझुनूं होकर जाते हैं। बिसाऊ रोडवेज व ट्रेन मार्गों से चारों ओर से जुड़ा हुआ है।

भाषा—

सांस्कृतिक एवं भाषा यातायात इकाई की दृष्टि से रामगढ़ (सीकर), बिसाऊ (झुंझुनूं) तथा चूरू नगरों के मध्य वाला क्षेत्र शेखावाटी बोली का केन्द्र स्थल माना जा सकता है। यह तीनों जिलों को जोड़ने वाला क्षेत्र है। यहां की बोली राजस्थानी भाषा की एक उप बोली है जिस पर हिन्दी का प्रभाव दृष्टिगत होता है। यहां की बोली मानक राजस्थानी के अधिक निकट है।

नगर के प्राचीनतम स्थान—

बिसाऊ की वर्तमान बसावट का प्रारंभिक एवं प्राचीनतम प्रमाण वि. सं. १८१० से मिलता है। इस नगर की प्राचीनता में 'बूढ़िया महादेव का मंदिर, भोमिया जी का मंदिर, जुंझार जी का मन्दिर, समसखां पीर की दरगाह' आदि स्थान अपना विशेष महत्व रखते हैं। उत्तरी दरवाजे के बाहर पोद्दारों की छतरी के सामने जैन साधुओं पर निर्मित दो छतरियां वि. सं. १८२० २२ की हैं। जो नगर की प्राचीन समृद्धि की द्योतक है। इसी प्रकार 'मालासी के थान' की प्राचीनता भी एक शोध का विषय है।

उपनगरीय बस्तियां—

बिसाऊ के पूर्व में सेठ श्री भानीराम जी रूंगटा ने ग्यारह भवनों का निर्माण करवाकर उसे 'भानीपुरा' के नाम से आबाद कराया। ये सभी मकान ब्राह्मण परिवारों को वि. सं. १९९१ में दिए गए।

बिसाऊ की दूसरी उप नगरीय बस्ती में 'गोबिन्दपुरा' आता है। नगर के दक्षिणी दरवाजे बाहर गऊशाला मार्ग पर सेठ श्री गोबिन्दराम जी बजाज की धर्मपत्नी ने अपने पति की स्मृति में बारह भवन व एक धर्मशाला का निर्माण करवाकर उसे गोबिन्दपुरा नाम से आबाद किया। इस बस्ती की स्थापना वि. सं. २००३ में हुई।

तीसरी बस्ती 'जगनपुरा' है। यह बिसाऊ से पृथक अलग एक गांव रहा है। इसकी स्थापना बिसाऊ नरेश जगतसिंह (वि स १६३५ १६५०) ने की। पिछले वर्षों मे इसे बिसाऊ नगरपालिका क्षेत्र म शामिल कर लिया गया। इस प्रकार यह बिसाऊ की तीसरी उपनगरीय बस्ती के रूप मे जानी जाती है।

बिसाऊ के चारो दरवाजो तक सडक होने से बाजार व नगर की शोभा बढी है। यह सडक उत्तर मे हायर सैकण्डरी स्कूल के सामने से होती हुई आगे चलकर चूरू जाने वाले राजमार्ग से जुडी हुई है तो दक्षिण म बाजार और बस स्टैण्ड से होती हुई झुंझुनू जानेवाले राजमार्ग से जुडी हुई है। बिजली के बल्बो से सारा नगर जगमगाहट करता रहता है। खाडी देशो की कमाई से बिसाऊ की कई बस्तियां रानक पर है। यहा दो राजकीय अस्पताल हैं जो आवश्यक उपकरणो से पूर्णतया सज्जित हैं। डॉ॰ मनुभाई शाह की दक्षता के कारण झुंझुनू वालो का अस्पताल अपनी प्रसिद्धि मे सर्वोपरि है। यहा एक आयुर्वेदिक औषधालय तथा अनेक प्राइवेट क्लीनिक है। यहा तीन बैंक और दो डाकघर है। मुख्य डाकघर मे ही तारघर है। यहा टेलीफोन की सुविधा भी उपलब्ध है। यहा का थाना मण्डावा लगता है परन्तु एक पुलिस चौकी यहा है। यह चौकी पहले टाई मे थी। नगर क मुख्य मार्गों पर नगरपालिका के चूंगी नाके हैं। पूरे नगर मे जल आपूर्ति की सुविधा है। चि रा ल घि ट्रस्ट बिसाऊ के द्वारा बहुत वर्षों पूर्व ही नगर मे जल वितरण सुविधा प्रदान कर दी गई थी। नगर म एक पुस्तकालय, अनेक समाज सेवी सस्थाए, सास्कृतिक, साहित्यिक, धार्मिक, व्यापारिक सस्थाए हैं। नगर म अनेक धर्मशालाए, अतिथिगृह, विवाह भवन आदि हैं जो हर बडी सबके लिए सुलभ हैं।

बिसाऊ की गणना सन् १६३१ के पूर्व से ही कस्बो मे होती रही है। शेखावाटी मे इसका अपना गौरवपूर्ण भौगोलिक स्थान है। यहा के इतिहास ने भूगोल को बनाने मे योग दिया है तो भूगोल ने इतिहास को सदा नया रूप दिया है। ये दोनो परस्पर प्रभावित होते रहे है।

तीसरा अध्याय

शिक्षा और साहित्य

सामाजिक चेतना का मथन करने के लिए यहां की शैक्षिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के उत्थान की गति का पता लगाना आवश्यक होगा है। शेखावाटी अचल के अन्य प्रसिद्ध नगरों की उन्नति के साथ सम पद भाव से अग्रसर होकर बिसाऊ ने भी तत्कालीन परिस्थितियों मे अपना गौरवपूर्ण स्थान सदैव बनाए रखा है। यहां की नागरिक सचेतना सदैव यहां के संवेदनशील व्यक्तियों को प्रभावित एव प्रेरित करती रही है जिसको इस नगर की शैक्षिक एव साहित्यिक उन्नति का मूल तत्व कहा जा सकता है। यहा के शिक्षा और साहित्य के क्रमिक विकास की झलक आगे प्रस्तुत की जारही है —

शिक्षा विकास क्रम

अब से लगभग सौ वर्ष पूर्व शेखावाटी अचल के लोग स्वाध्याय के बल पर ही ज्ञानार्जन करके समाज मे अपना गुरु-पद प्राप्त किया करते थे। स्वाध्याय के साथ साथ चटशालाओं का प्रचलन हुआ। प्राप्त जानकारी के आधार पर बिसाऊ मे प्रथम चटशाला का प्रारम्भ श्री लूणकरण जी पुजारी और मूनरामजी पुजारी ने शिखर मन्दिर मे किया। गुरुजी की भोजन व्यवस्था बालकों द्वारा सीधा (एक समय की भोज्य सामग्री आटा, दाल, घी आदि) देकर की जाती थी। इनके शिष्यों मे रामकुमार जी पुजारी प्रमुख थे।

इसके बाद अब से लगभग ६५ वर्ष पूर्व बिसाऊ के तत्कालीन सेवाभावी कार्यकर्ता प० श्रीराम शर्मा ने बाजार के एक पूर्वाभिमुख चौबारे मे चटशाला खोली और इच्छुक बालकों को पढाने लगे। वे नगर के शैक्षिक एव साहित्यिक उत्थान के लिए समर्पित भाव से कार्यरत थे। आप सरस्वती के सबल उपासक थे। इसीलिए आपने अपने घर की समस्त पुस्तकें लाकर 'हिन्दी पुस्तकालय' की नींव डाली। इस साहित्य यज्ञ मे श्री प० व्रजवल्लभ शर्मा आपके अनन्य सहयोगी रहे।

कालान्तर मे इस पाठशाला की छात्र सख्या मे वृद्धि हुई। तब यह उत्तरी बाजार स्थानीय कानोडिया सेठो के एक चौबारे मे स्थानान्तरित हुई और वहा शिक्षाप्रचार के काय मे और तेजी आई। इसके बाद यह पाठशाला वतमान नगरपालिका भवन से पूव की ओर सटे हुए चौबारे मे स्थानान्तरित हुई जिसमें श्री केदारनाथ शर्मा भी शिक्षक थे। कुछ समय बाद यह शाला स्थानीय नरसिंह जी के मन्दिर से पूव की ओर सटे हुए एक नोहरे मे गई। इस समय तक यह लोग्रर प्राइमरी स्कूल (कक्षा चौथी तक) के स्तर मे शिक्षा प्रचार करने लगी। अध्यापकों मे भी वृद्धि हुई। समय के साथ यहा भी स्थानाभाव का अनुभव किया जाने लगा और यह स्कूल त्रिपोलिया वाले सेठो की नई हवेली के सामने वाले मकान मे चलने लगी। यहा इसे अपर प्राइमरी स्कूल (कक्षा छठी तक) का दर्जा मिला।

कुछ समय बाद बिसाऊ के दिल्ली प्रवासी सेठ जमनाधर जी पोद्दार ने नगर के शिक्षा प्रचार प्रसार मे विशेष रुचि ली। फलत नगर की अपर प्राइमरी स्कूल बिसाऊ के महनसरिया भवन मे स्थानान्तरित हुई और १६१० ई मे यहा एस डी मिडिल स्कूल के नाम से मान्यता प्राप्त विद्यालय प्रारम्भ हुआ तथा सन् १६२८ ई तक इसी भवन मे यह विद्यालय चलता रहा। इस अवधि म श्री मानसिंह इसके प्रधानाध्यापक रहे। सन् १६१७ १८ ई में सेठ जमनाधर पोद्दार ने इसका पूरा भार अपने ऊपर ले लिया और इसका पूर्व नाम 'सनातन धम मिडिल स्कूल' से बदल कर आर बी (राधाकृष्ण बिहारीलाल) मिडिल स्कूल' कर दिया। इसमें अमरनाथ, बलीराज, विष्णुराम, ब्रह्मानन्द, नानगराम आदि अध्यापक थे। इस समय उसके प्रधानाध्यापक प श्री दुर्गाप्रसाद जी शर्मा थे। इनके समय मे यह विद्यालय बहुत प्रगति पर रहा। कुछ समय बाद इसके प्रधानाध्यापक श्री एस के दत्ता, जो जनता म 'बगाली जी' के नाम से विख्यात थे, बडी लगन से विद्यालय की प्रगति मे लगे रहे।

सन् १६२८ मे ठाकुर साहब के कुए के पास जब नया पोद्दार भवन बन कर तयार हुआ तो यह सस्था उक्त नये भवन म आ गई। उस समय भी प मानसिंह प्रधानाध्यापक थे। उनके कायकाल मे सस्था मे पढाई के साथ साथ खेलकूद पर भी विशेष ध्यान दिया गया। इनके सेवानिवृत्त होने पर सन् १६३४ म प श्रीलाल मिश्र प्रधानाध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। इनका कायकाल काफी लम्बे समय तक चला। इस अवधि मे संस्था की बहुमुखी उन्नति

हुई और छात्रोपयोगी अनेक प्रवृत्तियों का प्रारम्भ हुआ। इसी समय 'सौरभ' पत्रिका का हस्तलिखित रूप में श्री गणेश हुआ। श्री रामदत्त जी शर्मा इसके प्रमुख लेखक थे।

कालान्तर में जब सेठ जमनाधर जी पोद्दार ने अपनी इहलीला सवरण की तो कुछ समय बाद यह संस्था श्रीमान् ठाकुर विष्णुसिंह जी की कृपा से सन् १९४६ में सरकारी छतरी में स्थानान्तरित हुई और इसका नाम 'बिसाऊ मिडिल स्कूल' रखा गया। आजादी के बाद सन् १९४८-४९ में श्री मनोहर जी शर्मा इस स्कूल के प्रधानाध्यापक हुए और यह संस्था बिसाऊ ठिकाने के सचालन में ही गतिशील रही।

समय की प्रगति एवं मांग के साथ बिसाऊ के नागरिकों ने अनुभव किया कि बिसाऊ में हाईस्कूल की स्थापना होना परमावश्यक है। एतदर्थ बम्बई प्रवासी बिसाऊ के सेठ घनश्यामदास जी पोद्दार एवं बाबू पुरुषोत्तमलाल जी झुनझुनूवाला के सद्प्रयत्नों से एक कमेटी का गठन किया गया जिसके सिक्रेटरी बाबू भगवतीप्रसाद जी टीबड़ेवाला मनोनीत हुए। इस कमेटी ने बिसाऊ के ठाकुर श्रीमान् रघुबीरसिंह जी को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और बिसाऊ मिडिल स्कूल को ठिकाने के सचालन में सन् १९५२ में हाईस्कूल का दर्जा प्राप्त हुआ। सेठ घनश्यामदास जी पोद्दार ने अपनी प्राइमरी स्कूल (जड भार स्कूल) का इस संस्था में विलीनीकरण करके बिसाऊ में हाईस्कूल की स्थापना होने का पथ सुगम कर दिया था। फलत इसका प्राइमरी विभाग वहां से हट कर सरकारी छतरी में चला गया और जड भार विद्यालय भवन हाईस्कूल का हो गया। स्थान सकोच के कारण सन् १९५४ में यह संस्था बिसाऊ के सिंघानिया सेठो की धर्मशाला में स्थानान्तरित होगई। वहां बम्बई कमेटी ने तीन नये कमरे छत पर और तीन नये कमरे धर्मशाला के पीछे बना दिये थे। उस समय श्री बुद्धसेन भा प्रधानाध्यापक थे। उन्ही के कार्यकाल में बिसाऊ ठिकाने के राजस्थान सरकार से विलीनीकरण के अवसर पर दिनांक १-७ १९५४ ई को यह संस्था सरकारी सचालन में चली गई।

इसमें कला विज्ञान और वाणिज्य सभी वर्गों के अन्तर्गत सभी प्रमुख विषयों की पढाई होने लगी। सन् १९७० ई में यह संस्था हायर सैकण्डरी स्तर में क्रमोन्नत हो गई। उस समय श्री एस एन माथुर प्रधानाध्यापक थे। इस संस्था का नया विद्यालय भवन श्री रामकुमार जी जटिया ने बनवाकर

राज्य सरकार को प्रदान किया और दिनांक १८२७३ से यह विद्यालय नये भवन में आकर सुव्यवस्थित ढंग से चलने लगा। तब से इसका नाम सेठ श्री दुर्गादत्त जटिया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बिसाऊ है। श्री उदयवीर जी शर्मा प्रधानाध्यापक के कार्यकाल (१९८४-८६) में सेठ रामगोपाल जटिया ट्रस्ट की ओर से २५० मेज व २५० स्टूल बनवाकर विद्यालय को प्रदान की गई। विद्यालय में फर्नीचर का अभाव खटक रहा था जो श्री उदयवीर जी के सद्प्रयत्नों से पूरा हुआ।

अब से लगभग ८५ वर्ष पूर्व की एक चटशाला समय के साथ अपना स्थान, नाम व स्तर बदलती हुई हायर सैकण्डरी के रूप में अपनी गौरवपूर्ण स्थिति में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार कर रही है। इस विद्यालय ने अपने सुदीर्घ शिक्षणकाल में अनेक प्रतिष्ठित विद्वान, साहित्यकार, वकील, इंजीनियर, प्रबन्धक, लेखाविद, व्यवसायी, उद्योगपति आदि तैयार कर समाज को दिये हैं।

इसके अतिरिक्त अनेक विद्यालय नगर में शिक्षण कार्य भलीभांति चला रहे हैं जिनका विवरण आगे दिया जा रहा है —

१ श्री जैंड ब्रार प्राइमरी स्कूल—

नगर की प्राचीनतम मान्यता प्राप्त स्कूल के रूप में श्री जड ब्रार प्राइमरी स्कूल का नाम अग्रगण्य है। इसकी स्थापना ज्येष्ठ कृष्णा १४ सं १९७४ को हुई। यह विद्यालय तत्कालीन स्थितियों में 'वर्नाक्यूलर फाइनल (कक्षा सात तक) तक के स्तर तक ही मान्यता प्राप्त रहा था। उस समय यह अपनी प्रसिद्धि पर था। आगे चल कर पुनः इसको प्राइमरी तक कर दिया गया। दिनांक १-७-५२ से ठिकाने की हाईस्कूल के अन्तर्गत कर उसका नाम श्री बिसाऊ प्राइमरी स्कूल रख दिया गया। तत्पश्चात् इसे भी हाईस्कूल के साथ राज्य सरकार ने अधिग्रहण कर लिया। अब भी यह 'जैंड ब्रार स्कूल' के नाम से जाना जाता है। इसके लोकप्रिय प्रधानाध्यापकों में श्री विष्णुदत्त जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

२ श्री मुलतानचन्द्र हजारीमल पोद्दार विद्यालय—

इसकी स्थापना ज्येष्ठ शुक्ला सं १९५२ को हुई थी। इसमें कक्षा तीसरी तक पढ़ाई हुआ करती थी। इसका अपना निजी विशाल भवन था। इसके संचालक सेठ मदनलाल जी पोद्दार थे। अब विद्यालय के स्थान पर इसमें पुस्तकालय चल रहा है।

३ राजकीय बेसिक प्राथमिक विद्यालय—

श्री जड आर प्राइमरी स्कूल जो सन् १९४४ से चला ,मागहा म दिनाक १ ७-५२ से ठिकाने के हाईस्कूल म प्रागर्न कर दिया गया तथा दिनां १-७-१९५४ को राज्याधीन हो गया। इस भवन में अब वह श्री जोरावरम नाथूराम राजकीय बेसिक प्राथमिक विद्यालय के नाम से प्रथम पारी चल रहा है।

४ श्री वशीधर पोद्दार राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय—

इसकी स्थापना वि स २०१५ में हुई तथा इसका सचालन राजस्था राज्य सरकार करती है। पहले यह प्राथमिक स्तर का विद्यालय रहा श सन् १९७९-८० मे उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर म क्रमोन्नत होजाने बिसाऊ नगर एव निकटवर्ती क्षेत्र की बालिकाओ को सुविधा प्राप्त हो गई इस विद्यालय का नया भवन स्व श्री रामकुमार जी जटिया की ओर से हाय सकण्डरी विद्यालय भवन के ठीक पीछे बनवाकर तयार कर दिया गया है।

५ राजकीय प्राथमिक शाला न १

इस विद्यालय की स्थापना जुलाई १९४८ ई मे हुई थी। यह विद्यालय करीब ११ वर्ष तक पोद्दारो की छतरी में चलता रहा और अब लगभग १७ वर्षो से श्री जोरावरमल नाथूराम पोद्दार प्राथमिक विद्यालय के भवन मे द्वितीय पारी में चल रहा है।

६ राजकीय प्राथमिक विद्यालय वार्ड न ३—

इस विद्यालय की स्थापना ११ अगस्त १९७२ को हुई थी। यह विद्यालय श्री रामकुमार रतनलाल पोद्दार द्वारा निर्मित भवन में चल रहा है।

७ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय—

यह विद्यालय पहले प्राथमिक विद्यालय न २ के नाम से चल रह था। दिनाक २-७-१९७३ को यह उच्च प्राथमिक स्तर म क्रमोन्नत होकर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के पुराने भवन (सिघानिया की धमशाला) में स्थानान्तरित हो गया। यह भवन सेठ श्री मन्नालाल जी राधेश्याम सिघानिया द्वारा राज्य सरकार को शिक्षण सस्था चलाने हेतु ही प्रदान किया गया था।

८ राजकीय प्राथमिक विद्यालय (नई स्कूल)

इस विद्यालय की स्थापना जुलाई १९७३ म हुई थी। यह भगवतीदेवी भनार देवी पोद्दार द्वारा निर्मित भवन में जुलाई १९८४ तक चलता रहा और अगस्त १९८५ म यह राजकीय प्राथमिक विद्यालय वाड न ३ के भवन में द्वितीय पारी म चल रहा है।

९ राजकीय प्राथमिक शाला मोहल्ला लटीकान—

इसकी स्थापना १९-७-८५ को हुई थी। वतमान मे यह लटीका द्वारा निर्मित धमशाला म चल रही है।

१० मौलाना आजाद प्राथमिक विद्यालय—

इस विद्यालय की स्थापना सवत् १९८७ में हुई थी। इसका सचालन मुसलिम कमेटी क द्वारा किया जाता है। इस सस्था में विशेषत उदू पढ़ाई जाती है तथा शिक्षा विभाग राजस्थान से मा यता प्राप्त है।

उक्त शिक्षण सस्थाओं के अतिरिक्त यहां कई अन्य गर सरकारी शिक्षण सस्थाए भी चल रही हैं जिनम निम्नांकित नाम उल्लेखनीय हैं। इनमे से अधिकांश मा यता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं —

१ श्री बी आर कानेज (उच्च मा स्तर तक) सचालक श्री भीखराज पारीक
२ श्री इनसेट मॉडल स्कूल (प्राथ स्तर तक) सचालक स्थानीय कमेटी
३ भारतीय पब्लिक स्कूल (प्राथ स्तर तक) सचालक स्थानीय कमेटी
४ श्री ज्ञानधारा प्राथमिक विद्यालय (प्राथ स्तर तक) संचालक श्री रामावतार शिवानीवाले
५ श्री आदश विद्या मन्दिर (प्राथ स्तर तक) सचालक स्थानीय कमेटी

नगर की प्राचीन गुरुपरम्परा गभीर और ठोस ज्ञान के लिए प्रसिद्ध रही है तथा यह एक यथाथ भी है। गुरुजी अपने शिष्य के प्रति आत्मीय भाव रखते हुए उसे पढ़ाया लिखाया करते थे। श्रद्धा सम्मान व प्रेम उस समय के विशिष्ट गुण थे जिनके बल पर यह परम्परा सफल हुई। यह शिक्षा जीवनोपयोगी हुआ करती थी सभी शिष्य-गण जीवन मे सफल होते हुए गुरु के प्रति श्रद्धानत रहते थे। गुरुपरम्परा मे पहाड़ें, महाजनी लेखा जोखा का रख रखाव, सस्कृत हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान तथा तत्कालीन समाजोपयोगी ज्ञान के साथ नतिक उत्थान पर विशेष बल दिया जाता था। गुरु नतिक आदश की प्रतिमूर्ति हुआ करता था, यही उसकी सफलता का मूल तत्व है। यह परम्परा शेखावाटी मे सवत्र सम्पूज्य भाव से चालू थी। बिसाऊ नगर में भी तत्कालीन शिक्षण व्यवस्था

के लिए यह परम्परा श्रद्धापूर्वक चली"। सरस्वती व गणेश पूजन तथा चौरचानणी जैसे उत्सव विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के सामाजिक सम्मान के द्योतक रहे हैं। इस परम्परा को श्रेष्ठिवर्ग की ओर से पोषण व संरक्षण बराबर मिलता रहा है।

नगर की प्राचीन गुरु परम्परा में सर्वश्री नानगरामजी, आशारामजी बालोतिया, सदाराम जी गुरु, गोपालदासजी स्वामी, बच्छराज जी मिश्र, सूरजमलजी, गोरधन जी गुरु, दुर्गाप्रसाद जी, कुंजलाल जी, केसरमल जी, घनश्याम जी मिश्र, मन्नालाल जी रिजाणीवाला, तुलाराम जी, हनुमान प्रसाद जी, दामोदर प्रसाद मिश्र आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में इस परम्परा की एक कड़ी के रूप में श्री खूबचन्द जी दायमा का नाम प्रसिद्ध है। अब यह परम्परा समाप्ति की ओर है।

देववाणी संस्कृत के प्रचार प्रसार की दृष्टि से यह नगर अपनी प्राचीन परम्परा रखता है। लगभग सन् १६०७ ई० में नगर के उतराधे बाजार में पं० शिवलालजी ने प्रथम संस्कृत गुरु के रूप में एक चौबारे में पढ़ाना प्रारम्भ किया। इनके बाद पं० खेतराम जी जोशी शास्त्री (पं० खेतसीदास जी) ने लगभग १६२६-२७ ई० से स्थानीय गंगाजी के मन्दिर में विधिवत वेदपाठशाला प्रारम्भ की। बाद में यह शाला श्री नरसिंह जी के मन्दिर में चली गई। आगे चल कर यही विद्यालय श्री वासुदेव बगड़िया की पुरानी दुकान के ऊपर वाले चौबारे में चलने लगा। यह विद्यालय उस समय श्रीराम जी झुंझुनू वाला के आर्थिक सहयोग से चलाया जाता था। वे उसके संचालक थे। पं० खेतराम जी के प्रमुख शिष्यों में पंचांगकर्त्ता पं० भोलाराम जी मिश्र, गोपीराम जी मिश्र, पं० चिमनलाल जी शर्मा, नौरतराज जी पुजारी, बृजलाल जी पुजारी, प्रहलादराय पुजारी, जीवणराम जी सिंगतिया, नरसिंहदेव स्वामी, छोगाराम खण्डेलवाल, केदार जी मिश्र, पं० तुलाराम जी जोशी, शुभकरण मिश्र आदि उल्लेखनीय हैं। यही शाला आगे चल कर १६२६-३० ई० के लगभग सेठ सूरजमल चिमनराम पौद्दार के मन्दिर के बाहर वाले एक कमरे में स्थानान्तरित होगई और सन् १६३३ ई० तक वहीं चलती रही। इस संस्कृत विद्यालय में प्रथमा, मध्यमा शास्त्री तक के लिए शिक्षण की व्यवस्था थी। ये सभी परिक्षाएं बनारस विश्वविद्यालय द्वारा संचालित होती थी।

संस्कृत के प्रचार प्रसार के क्रम में आगे चलकर श्री सुन्दरमल जी बजाज संस्कृत पाठशाला की स्थापना श्रावण शुक्ला २ संवत् १६४६ वि० में

हुई। उस समय नगर मे यह एक मात्र मान्यता प्राप्त संस्कृत विद्यालय था। इसका संचालन भार सेठ सुन्दरमल गोविन्दराम बजाज ट्रस्ट पर था। इसका अपना निजी भवन था, जो एक संस्कृत पाठशाला की गरिमा के अनुरूप था। इसमे दूर दूर के विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। इसके साथ सेठो की ओर से निःशुल्क छात्रावास भी चलता था। इसमे प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा दी जाती थी। इसमे एक लम्बी अवधि तक पं श्री अनोखेलाल मिश्र आचार्य पद पर रहते हुए संस्कृत शिक्षा का प्रचार - प्रसार करते रहे। इनके सहयोगी द्वितीय पं श्री शशिधर थे। इस विद्यालय ने अनेक विद्वान, पण्डित, ज्योतिषि, वैद्य आदि समाज को दिए। पं तुलाराम जोशी इसके अंतिम आचार्य रहे। उनके सेवाकाल मे अनेक परिवर्तन आये। इस विद्यालय का महत्व सदैव बना रहा।

पं शिवलाल जी, पं नेतराम जी, श्रीराम जी पुजारी आदि संस्कृत के साथ साथ ज्योतिष का भी अच्छा ज्ञान रखते थे। पं ब्रजवल्लभ जी, पं भोलाराम जी मिश्र, नानूराम जी पुजारी, पं दुर्गाप्रसाद जी आदि के नाम पुराने ज्योतिषियो मे विशेष उल्लेखनीय है। इनमे पं भोलाराम जी मिश्र ख्याति प्राप्त ज्योतिषि हुए। आपको सन् १९२४-२८ मे ठिकाने की ओर से 'राजगुरु' का पद व सम्मान मिला। आप दूर दूर तक एक पंचागकर्त्ता के रूप में प्रख्यात थे। इनका पंचाग पिछले ७७ वर्षों से प्रकाशित होता आरहा है। वर्तमान मे इनके सुपुत्र श्री भवानीशंकर मिश्र पंचाग बना कर प्रतिवर्ष प्रकाशित करवाते है। यह बिसाऊ के लिए एक गौरव की बात है। पं भोलारामजी मिश्र के स्वर्गवास के बाद से पं सीताराम जी शास्त्री एक प्रसिद्ध ज्योतिषि के रूप मे उभर कर सामने आ रहे हैं। श्री गौरीशंकर जी पुजारी भी ज्योतिष मे दक्षता रखते हैं।

वैद्यो की परम्परा मे श्री नानूराम जी पुजारी, श्रीराम जी पुजारी, नेतराम जी मिश्र, तोलाराम जी मिश्र, कन्हैयालाल जी, कन्हीराम जी तोलाराम जी खेमका के ब्राह्मण, बनारसीलाल सहल व इनके पिता आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान मे इस शृंखला में केदारमल जी दायमा, सत्यनारायण जी दायमा, मंगला प्रसाद आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं।

नगर मे शिक्षण कला मे दक्षता रखने वालो की भी एक लम्बी परम्परा है जिन्होने हजारो लाखो शिष्यो को तैयार कर समाज को दिए हैं जो आज विभिन्न क्षेत्रो मे अपनी कुशलता के साथ नगर का नाम ऊँचा कर रहे हैं।

अध्यापक परम्परा मे सवप्रथम श्री दुर्गाप्रसाद जी का नाम लिया जा सकता है। आपको नगर के पुराने मैट्रिक व इन्टरमीडियट' बताते हैं। आपके पास प श्रीलाल जी मिश्र ने भी शिक्षा ग्रहण की थी, ऐसा कहा जाता है। इनके बाद प श्रीलाल जी मिश्र, प रामदत्तजी पुजारी, डा मनोहरजी शर्मा, गिरीशचन्द्र शर्मा, कन्हैयालाल जी पोद्दार, महावीरप्रसाद टाईवाला, किशनसिंह चौहान, भीखराज पारीक, गजानन्द जी मिश्र, बनवारीलाल शर्मा, नन्दकिशोर जी मिश्र, सीताराम जी शास्त्री, मदनलाल जी दाधीच, शुभकरण जी मिश्र, हरिशंकर जी मिश्र मुरारीलाल माथुर, मन्नालाल दायमा, सीताराम जी जोशी, आत्माराम शर्मा, निरजनलाल पुजारी, राधेश्याम शर्मा, दुर्गाप्रसाद दाधीच आदि के नाम इस परम्परा के प्रथम सोपान मे अपना महत्त्व रखते हैं। इनमें अधिकांश अध्यापको की शिक्षण कला की विनोदवार्त्ता तथा इनकी ज्ञान गरिमा की चर्चा प्रसगवश चलती रहती है। इनमे से अधिकाश सेवानिवृत्त हो चुके हैं तथा शेष ने शिक्षणकला को छोड कर अन्य कार्यों को स्वीकार कर लिया है।

वर्तमान मे अध्यापन काय मे कुशलता से रत नगर के अध्यापकों मे सवप्रथम डा उदयवीर शर्मा का नाम उल्लेखनीय है जो वर्तमान पीढी मे राजकीय हायर सकण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक पद पर नगर के प्रथम अध्यापक हैं। इनके साथियो मे श्री ताराचन्द शर्मा वरिष्ठ अध्यापक तथा श्री अमोलकचन्द जागिड व्याख्याता पद पर शिक्षा विभाग मे कार्यरत हैं। श्री बनवारीलाल शर्मा कलानिधि राजकीय माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक हैं। इनके अतिरिक्त वर्तमान पीढी म अग्राकित अध्यापकों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं— सवश्री गौरीशकर शर्मा, श्यामसुन्दर मिश्र भवानीशकर शर्मा, गोविन्दप्रसाद माटोलिया, बजनाथ माली, घडसीराम नाई, हीरालाल दायमा देवीसिंह, लियाकतअली पुत्र नवाबअली, मौ सद्दीक मणियार, अब्दुलगफ्फार, सूवालाल, रामावतार शिवानीवाल मगतराम सहल (चूरू मे) रामेश्वरलाल शर्मा विश्वनाथ बेजारा, ओकारमल शर्मा, राधेश्याम शर्मा, चौथमल माली, इब्राहिम तेली, लियाकतअली, गोरधन, भूधरमल सोनी, मोहम्मद अनी मो फारुक, सलीम मणियार, अलीम मणियार कलाश पुजारी, इकबाल सुनीता शर्मा, अजीजबानू, मदन माली, श्रीकिसन पारीक, प्रेमचन्द, अमरनाथ शर्मा, कन्हैयालाल शर्मा, अम्बादानसिंह, हनुमानसिंह आदि।

नगर के शक्षिक महत्त्व को बढाने मे इन सबका विशेष योगदान है। ये सभी अपने अपने पद व स्थान पर अपनी विशिष्टता रखते हैं।

श्री रघुनाथ प्रसाद माटोलिया उप-निदेशक शिक्षा (महिला) मे प्रकाउन्टेन्ट हैं तो श्री ग्रामीर ग्नी शिक्षा विभाग मे व लि के पद पर कायरत हैं। श्री घासीरमल मीणा वत्तमान पीढी में नगर का प्रथम लेक्चरर है।

विद्यालयो के साथ साथ पुस्तकालयो का भी शिक्षा प्रचार-प्रसार म विशिष्ट योगदान रहता है। ये दोनो एक दूसर के पूरक हैं तथा एकात्म भाव से जुडे रहत हैं नगर म पुस्तकालयो की स्थिति भी अच्छी कही जा सकती है।

श्री हिन्दी पुस्तकालय नगर का प्राचीनतम पुस्तकालय रहा है। इसकी स्थापना वि ■ १९७० मे श्री श्रीराम जी शर्मा के द्वारा हुई। इसकी उ नति में स्थानीय जनता का पूर्ण योग दान रहा। वि स २००६ से यह पुस्तकालय नगरपालिका के सरक्षण म दे दिया गया। किन्तु कुछ समय बाद पुन इसका सचालन स्वतत्ररूप से नगर के माननीय व्यक्तियो के हाथ म आगया। इस समय इसकी पुस्तकें दिगम्बर जन पुस्तकालय म एक स्वतत्र कक्ष म रखी हुई है। श्री तुलाराम जी जोशी ने इसके पुनरुद्धार के लिए अथक प्रयत्न किया।

नगर का नवीनतम उ नत स्थिति वाला पुस्तकालय श्री चन्द्र सागर दिगम्बर जन पुस्तकालय है। इसकी स्थापना फाल्गुन कृष्णा १४ स २००३ म हुई थी। इतने अल्पकाल म इसन जो सराहनीय काय किया है, उसके लिए इसके सस्थापक श्री रामवल्लभ रामदेव जटिया एव वत्तमान मत्री श्री परमानन्द जटिया ध यवाद के पात्र हैं। इसक सस्थापक श्री महावीर प्रसाद सरावगी रहे है। श्री परमानन्द जटिया के कुशल सचालन मे यह सस्था उत्तरोत्तर उ नति करती आरही है। पुस्तकालय भवन का नवनिर्माण हुआ है तथा भविष्य मे उसे और विस्तार देन की योजना है। इसम पुस्तको की सुरक्षा एव रखरखाव के लिए पर्याप्त आलमारिया हैं। वाचनालय की व्यवस्था अत्य त आवश्यक है। इसम साहित्य की स्तरीय एव बहुमूल्य पुस्तकें उपलब्ध हैं।

स्व सेठ बिहारीलाल जमनाधर पोद्दार ने वि स १९९५ मे 'श्री रामेश्वरदास पोद्दार पुस्तकालय' की स्थापना की थी। कई वर्षों तक यह बहुत व्यवस्थित रूप से चला। किन्तु अब बन्द पडा है।

श्री मुलतान चन्द हजारीमल पोद्दार के वत्तमान पुस्तकालय भवन म पहले विद्यालय चलता था। अब वहा पुस्तकालय एव वाचनालय चल रहा है।

नगर अपनी आर्थिक उन्नति में लिए सदैव सचेष्ट रहा है तथा विकासोन्मुख है। यहां के प्रबुद्ध नागरिकों ने अपनी आर्थिक शक्ति के बल पर इस नगर के नाम को चमकाया है।

साहित्य - साधना

सुदीर्घ काल से बिसाऊ में साहित्य साधना होने के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। नगर के शासक भी साहित्य एवं उसके साधकों का सम्मान करने वाले रहे हैं। बिसाऊ के सभी शासकों पर अवश्य ही साहित्य रचनाएं हुई होंगी परन्तु वे क्रमबद्ध रूप से उपलब्ध नहीं हैं। ठाकुर सूरजमल (वि. सं. १८२५ से १८४४), श्यामसिंह (वि. सं. १८४४ से १८६०) आदि के सम्बन्ध में कतिपय डिंगल गीत उपलब्ध होते हैं। इन दोनों की वीरता विषयक अनेक काव्य तथा इनका काव्योल्लेख भी मिलते हैं जिनसे तत्कालीन बिसाऊ की साहित्यिक चेतना का पता चलता है।

ग्राम वृद्धों से सुनने को मिलता है कि सन् १८५७ के स्वाधीनता संग्राम के विफल क्रान्तिकारियों को भूमिगत होना पड़ा था। उनमें से एक इस नगर में आकर साधु रूप में रहने लगे थे। वे अपने संतजीवन के कारण नगर में 'तपसी जी' के नाम से लोकप्रिय हुए। तपसी जी के भजन यहां प्रसिद्ध हैं। उनके भजनों में 'संन्यासी' शब्द का भोग लगा मिलता है। उनके भजनों से निर्गुण की आराधना प्रकट होती है। कबीर की 'सबदवाणी' की भांति उन्होंने भी जीव माया व ब्रह्म का वर्णन करते हुए मनुष्य को 'अगतकर्म' से छुटकारा पाने के लिए सचेत किया है। मोहमाया का जाल, जग भ्रम काल के बाण, मन पक्षी का उड़ना, कर्मफलों का भोग आदि ऐसे शब्द संकेत हैं जो तपसी जी की काव्यधारा की ओर पाठकों को स्वतः ही आकर्षित कर लेते हैं। उनके पदों के कुछ अंश देखिए —

आवागमन मिटि जद जाणू, मोह माया सुपन में त्याग।
मन बाजार भरम्यो बेकारा कूड़ कपट दिल मे लाग॥

× × × ×

लिखिया लेख मिलिया गुरु मुरसद, खरा सन्त लिखलिया लाग।
गुरु परताप कथ संन्यासी, सबद सन बिरला के लाग॥

तपसी जी ने श्रावण कृष्णा १२ संवत् १९६३ के दिन मोक्ष प्राप्त की। उनके उत्तराधिकारी के रूप में उनके आश्रम में जैतगिरी महाराज रहने

लगे। ये भी पहुचे हुए सत थे। इनके पदा म भी निगु णोपासना की प्रधानता है। शब्दो की सरलता भावा को सहज ही ग्रहण कराती चलती है। इनके पद परम्परा से लोक मुख पर चल्ते आ रहे है। भक्त लाग प्राय रात्रि जागरण म गाते हैं। एक नमूना दृष्टव्य है —

अखण्ड तार मन मणियो पोयो, भीतर तार बा'र काई जोवो।
बायर तार हाथ नहीं आव, हीरो सो जलम अवरथा खोयो॥

प व्रजनाथ द्वारका प्रसाद मिश्र ने सवत् १९०१ शाके १८४६ मे सस्कृत ग्रथ 'मत्र महाणव' का प्रकाशन कराया। उक्तग्रथ की गुरु शकराचाय आदि ने काफी प्रशसा की है। ग्रथ के ऊपर लिखा है— (राजपूताना) बिसाऊ नगर निवासी— प व्रजनाथ द्वारका प्रसाद मिश्र— तच्छिष्य माधवराय वैद्य सग्रहीता मत्र महाणव।

यहा के विलासराय सारस्वत ने 'हास्यरस विलास' की रचना की जिसका प्रथम सस्करण वि स १९७७ मे प्रकाशित हुआ है। इस ग्रथ म हास्य रस के अनेक मनमोहक कथानक हैं जो गद्य, पद्य तथा मिश्रित रूप म लिखे गये हैं। उनके अनेक रोचक एव हास्य से ओतप्रोत चुटकले आज भी 'नगर बचा' मे कहे सुने जाते हैं। इससे उनकी लोकप्रियता सिद्ध होती है। आज भी यह ग्रथ तत्कालीन समाज का बौद्धिक चित्र प्रस्तुत करने मे पूण सक्षम है। इसमे उनके द्वारा वि स १९२२ मे रची हुई एक लावनी भी सग्रहीत है जिसमे बम्बई म होने वाले सौदो का सजीव चित्रण है। इस ग्रथ मे निकटवर्ती नगरो (चूरू रामगढ, फतहपुर आदि) के निवासियो के हास्य - प्रकरणों का सुन्दर सग्रह है।

बिसाऊ के प्रथम नाटककार के रूप में गजानन्द धोडीवाला का नाम विशेष उल्लेखनीय है। ये एक कुशल साहित्य साधक थे। इनकी लिखी हुई पुस्तको म 'अजीबरात' नाटक बिसाऊ मे तो अनेक बार मचित हुआ ही, इसके साथ ही अ य प्रदेशो म रहन वाले मारवाडियो ने उसे बहुत पसन्द किया। उस नाटक मे सूफी काव्यधारा का प्रतिपादन करते हुए 'सत्य प्रेम' को उजागर किया गया है। इसके सवाद पद्यात्मक हैं जो बडे प्रभावोत्पादक एव चित्ताकषक हैं। नाटक की भाषा सरल एव सहज 'हिन्दुस्तानी' है। आप रगून रहते थे और वहा की अनेक नाट्य सस्थाओ के डायरेक्टर थ।

इनके अतिरिक्त आपकी और भी अनेक रचनाएं मिलती हैं मारवाड़ी राष्ट्रीय गीत (वि. सं. १६७८), भजनमाला, वृद्धविवाह, वीरगपण आदि। उक्त पुस्तकें उस समय अत्यधिक लोकप्रिय रही हैं। वि म गाये जाने वाले हल्के स्तर के गीतों का विरोध करते हुए उन्होंने राष्ट्र गीत लिखे जिनमें गांधी, उनका स्वदेशी प्रेम, आजादी के लिए इन सबके आदि राष्ट्रीय विचारधारा का पोषण किया गया है। 'वीर-नपण' मुद्रत मारवाड़ी को महर को प्रगति देने वाला ग्रंथ है। श्री पोद्दारवाला ने अदम्य साहस ने अपनी लेखनी से स्वतन्त्रता की लहर का मार्ग बढ़ाया तथा राष्ट्रीय विचारधारा को सशक्त बनाया। उस समय जन जागरण करने में उनका बड़ा योगदान रहा।

सूरजमल जी गुरु गजल रचयिता थे। ये गुरु परम्परा में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। गुरु शिष्य के भावों को प्रगाढ़ करने के लिए विद्यालयों पटशालाओं में यथा समय सरस्वती और गणेश पूजन हुआ करते थे। 'चौक चानणी' के उत्सव पर गुरु-शिष्य नगर भ्रमण किया करते थे। उस समय गजलें गाई जाती थी। ये गजलें सूरजमल जी की बनाई हुई होती थी जिनमें बिसाऊ की गजल, सौदे की गजल, सास बहू की गजल, गणेश व सरस्वती की गजल आदि विशेष प्रसिद्ध थी। इन गजलों का प्रमुख उद्देश्य छात्र, उनके अभिभावक तथा गुरु को सामाजिक दृष्टि से ससम्मान जोड़ना था। इनकी भाषा सरल सुबोध और जन जीवन की अभिव्यक्ति को सहजभाव से प्रकट करने वाली है। चाहे इन गजलों में उन साहित्यिक तत्वों के दर्शन न होते हो जिनसे उनका उस दृष्टि से अंकन किया जा सके, फिर भी वे गजलें जन सामान्य के सर्वाधिक निकट रहने के गुण अवश्य रखती है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं—

(१) गजल सौदे की—

सोदो घणो बिसाऊ मांय। सौदा करने सब कोई आय।
सोदो कर छतीसों जात। खोल कहूं मैं उनकी बात।
नेतसी दास कहिए रंगबाज। को सौदे मे कर आवाज।

(२) गजल बिसाऊ—

सदा रखो सेवक पर महर। सुबस बसो बिसाऊ सहर।
सब नगरी को मुखिया रीत। शेर अजा की रहतो प्रीत।
श्री बिसनसिंहजी तप हजूर। नित नित मुख पर बरस नूर।
सत बुरजो कि लो है बको। बरी निसदिन मान सको।

झुनझुनूवाला यहां है मोटा । आडू पर्च नहीं है छोटा ।
सरावगी दूजा केसाण । इतनी बात पुराणी जाण ।
खेमका को तीखा वार । परदेसां मे चल बिहार ।
सिंगतिया यहां सेठ कहाव । माया मुक्ती ऐस उठाव ।
केडिया सेठ सदा सें बाज । रजपूती चलगत में साज ।
आडू सिर मे है पोद्दार । ऐसा और नहीं दातार ।

सूरजमल जी के सुपुत्र श्री गोरधन जी गुरु ने भी गजलें बनाई व रस ले ले कर गाईं । इनकी सब गजलें प्रकाशित हैं । इन्होंने गजलों के अतिरिक्त हास्य एव व्यग्य प्रधान कॉमिक, एकाकी नाटक तथा विविध प्रसगो पर कविताए रची । वे अपनी कामिक का प्रदर्शन स्वय के निर्देशन मे ही किया करते थे तथा उसके मुख्य पात्र आप स्वय ही होते । उनकी रचनाओ मे प्राय सामाजिक कुरीतियो पर करारा व्यग्य पाया जाता है । आज के 'नुक्कड नाटको' की भांति वे नाटक लिख कर गली के नुक्कडो पर चिपकाया करते थे जिनको लोग प्रात उठते ही बडे चाव से पढा करते थे । इन सवादो का मूल विषय नगर की विशेष घटनाओ को रोचक ढग से जनसाधारण के सम्मुख रखना ही होता था । इनकी काव्य रसिकता से लोग प्रभावित थे तथा उनकी रचनाओ को सुनने पढने के लिए आतुर रहते थे । खेद है इनकी सभी रचनाए प्रकाशित नही हो सकी । आप एक नुटीले व्यग्यकार, सफल कलाकार, कवि एव मनमौजी लेखक थे ।

सदाराम जी गुरु नगर के प्रथम ख्याल लेखक व गायक तथा उसके अभिनयकर्ता थे । आपकी ख्यालो मे गहरी पैठ थी । आपने बहुत से ख्याल लिखे किन्तु उनमे से कुछ ही प्रकाशित हो पाये । इनके ख्यालो के मुख्य कथानक प्रेम, धर्म, समाज, लोक रगत, इतिहास आदि विषयक कथाओ पर आधारित रहे हैं । इन्होने रामगढ, फतेहपुर, चिडावा आदि शेखावाटी के प्रमुख नगरो के प्रसिद्ध ख्याल लेखको व गायको की खूब सगत की थी । ख्यालों की गायकी, साजसज्जा, बोल, मूल तत्व तथा प्रदर्शन आदि सभी मे आपकी गहरी गति थी । दूर दूर के ख्याल गायक व खिलाडी (खिलारी) इन से राय लेने आया करते थे । इनके निर्देशन मे अनेक ख्याल अभिनीत हुए जिनकी काफी प्रशसा हुई । उस समय ख्याल ही मनोरजन का प्रमुख साधन था । ये ख्याल सारी रात दर्शको को बाधने मे सफल होते थे । सदाराम जी के ख्यालो मे भी ये सभी विशेषताए पाई जाती हैं । उनकी प्रकाशित रचनाओ के नाम अग्रांकित हैं—

(१) नासरुद्दीन हसन फरोस (ख्याल)
(२) सदुराम भजनावली (कवित्त)
(३) काली चालीसो (कवित्त)
(४) चालाक चोर (नाटक)

राधश्याम सिगतिया एक अच्छे रचनाकार, कुशल सम्पादक, साहि प्रचारक एव पत्रकार थे। आपने अपने सीमित साधना मे भी 'समाज हितर पाक्षिक पत्र बिसाऊ से निकाला जो अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। इसका प्रथ अक २१-८-६३ (भाद्र पद शुक्ला २ बुधवार स २०२०) को प्रकाशित हुआ। उस पत्र ने कई साहित्यकार तयार भी किय। उस पत्र मे अच्छे विद्वान साहित्यकारो की रचनाए भी प्रकाशित हुआ करती थी। किन्तु अर्थाभाव क कारण वह दीर्घायु प्राप्त नही कर सका।

हि दी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल (वि स १९००) के प्रारम्भ स ही बिसाऊ मे भी साहित्य सृजन के प्रमाण मिलते हैं भले ही वह विपुल मात्रा मे व क्रमबद्ध न रहा हो। यहा प्रारम्भ म भक्ति परक रचनाए हु हैं। इसके बाद हास्य नाटक गीत राष्ट्रीयता से ओतप्रोत रचनाए सामाजि गजल, ख्याल व फुटकर कविताए होती रही हैं। इन सबको एक उन्नत स्तरीय साहित्य की श्रेणी म रखने म सकोच होता है। पर तु वि स २००० के बाद यहा जो साहित्य साधना हुई उसको राज्य स्तरीय ही नही बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर यश कीर्ति मिली है। बिसाऊ म ज म लेकर प्रख्यात साहित्यकारो का वणन आगे की पक्तियो मे किया जा रहा है —

भोलाराम आय कविता, भजन आदि बनाया व स्वय गाया करत थे। घ होने प वीरभद्र आय नाम स वदिक भाव भजनावली' पुस्तक का प्रकाशन वि स २०३८ (१९५२ ई) म करवाया। इस ग्रथ म कुल ६७ भजन सकलित हैं, जो समय समय पर उनके द्वारा गाय-बनाय गय है। श्री आय स्वतत्र गति, मति एव मन मस्ती क व्यक्ति थे। उन्होने जीवन म अनेक उतार चढाव देखे थे। वे आजादी के लिए जन जागरण म लगे रहे तथा उन्होने नगर विकास की प्रत्येक गतिविधि मे जम कर भाग लिया। अत में अपने जीवन के पिछले ३० वर्षों तक बम्बई की चौपाटी पर शा तानुज आय समाज के महोपदेशक के पद पर रहे और आय समाज के प्रचार प्रसार मे तल्लीन रहे। अपने उपदेश एव भजनो के माध्यम स उ होने हजारो - लाखो श्राताओ को प्रभावित कर

आर्य समाज के सिद्धान्तों के ढाचे मे ढाला, यही उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता थी ।

भारतीय संस्कृति की धारा मे प्रवाहित होने वाले अधिकांश विचारो के दर्शन उनके भजनों में होते है । प्रत्येक भजन अपनी प्रभावी विषय वस्तु, सरल भाषा एव प्रेरक भावो के कारण पाठक को आकर्षित करता है । उनकी सुबोध व प्रभावी गयता रचनाकार की सफलता का मूल तत्व है । हृदय से निसृत भावगगा हर पाठक को स्नान करा कर मन को पावन कर देती है । प्रथम पद्य की प्रथम पक्ति है—

प्रभु हमे अपने रग मे रगदे ।
हम हैं आपके आप हमारे ऐसी मन मे भरदे ।
× × × ×
धीर भद्र तेरे दर्शन पाऊ, ऐसा मुझको करदे ।।

८० श्रीलाल जी मिश्र

राजस्थान साहित्य के कुशल अन्वेषक, समर्थ समालोचक एव साहित्य - साधनारत मौन तपस्वी प० श्रीलालजी मिश्र का जन्म २० अगस्त सन् १६१० ई को वरदा नगरी बिसाऊ (झुन्झुनू) म हुआ । आपके पिता श्री हनुमतरायजी मिश्र बिसाऊ क अत्यन्त प्रतिष्ठित सज्जन थे । पिता श्री के नियमित निर्देशन मे रहकर आपने अपना अध्ययन प्रारम्भ किया और चिड़ावा हाई स्कूल से सन् १६२८ ई मे हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की । ध्यान रहे कि उस समय यातायात के साधनों का अत्यन्त अभाव था । बालक श्रीलाल छुट्टी के दिन चिडावा से बिसाऊ पैदल आया जाया करता था । यह उनकी पढाई के प्रति अभिरुचि एवं शारीरिक क्षमता का प्रमाण है । आपने सन् १६३५ ई म अंग्रेजी साहित्य, हिन्दी एव संस्कृत विषय लेकर बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सन् १६३७ ई मे हिन्दी साहित्य मे एम ए की उपाधि प्राप्त की । आप जन्मजात कुशाग्र बुद्धि के धनी थे । इसी कारण आप सदव द्वितीय श्रेणी म उत्तीर्ण होते रहे । आप बी० टी० का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए शिलांग (आसाम) गए । वहाँ रह कर अध्ययन करते हुए कलकत्ता विश्वविद्यालय से १६४० ई मे यह प्रशिक्षण कुशलता से प्राप्त किया । उस जमाने मे आसाम जाकर पढना, विदेश जाकर पढने के बराबर था । उस समय शेखावाटी क्षत्र के गिने चुने एम ए, बी टी. योग्यता प्राप्त विद्वानों मे आप एक थे ।

अध्ययन क्षेत्र में ही नहीं प. श्रीलाल जी मिश्र अध्यापन क्षेत्र में अति शीघ्र ही उच्च पद पर पहुंच गए। आप सर्वप्रथम १६२८ ई. में ६ . . परीक्षा पास करके मिडिल स्कूल, बिसाऊ में सहायक अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए तथा योग्यता, सूझबूझ और दक्षता के आधार पर १६३१ ई. में आपको उसके प्रधानाध्यापक पद पर नियुक्त किया गया। सन् १६३१ ई. से अपनी रिटायरमेंट की आयु तक श्री मिश्र जी बिसाऊ, महनसर और डूण्डलोद में मिडिल व हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक पद पर एक कुशल प्रशासक के रूप में रहे। आपका सर्वाधिक २२ वर्षों का सुदीर्घ सेवाकाल (१६४७-१६६६) सेठ रामचन्द्र गोयनका सैकण्डरी स्कूल, डूण्डलोद में रहा। आपने सभी स्थानों पर अपनी कार्य क्षमता, सुमधुर व्यवहार एवं कुशल प्रशासन के कारण यश अर्जित किया। आप शेखावाटी के वयोवृद्ध एवं ख्याति प्राप्त प्रधानाध्यापक थे। आप द्वारा बहुत बड़ी संख्या में तैयार की गई सुयोग्य शिष्य प्रशिष्यों की मण्डली अपने जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्यरत होकर आपकी कीर्ति का विस्तार आज भी कर रही है।

आप गांधीवादी विचारधारा के थे। इसलिए जीवन पर्यन्त खादी को धारण किया। उस समय के राष्ट्र सेवियों से आपका गहरा सम्बन्ध रहा, जिनमें श्री नरोत्तमलाल जी जोशी (झुंझुनू) सरदार हरलालसिंह जी, श्री दुर्गादत्त हारीत (बिसाऊ), प. मुरलीधर शर्मा (मण्डावा) तथा सांवरमल बासोतिया (नवलगढ़) के नाम उल्लेखनीय है।

श्री मिश्र जी को राजस्थानी साहित्य के प्रति विशेष लगाव था और उसके लिए कुछ करने की तीव्र ललक थी। सन् १६३०-३५ की अवधि में आप अपनी स्कूल से हस्तलिखित पत्रिका 'सौरभ' का प्रकाशन किया करते थे। उस समय आपकी प्रेरणा से अनेक साहित्यकार तैयार हुए जिनमें डा. मनोहर शर्मा का नाम अग्रगण्य है। श्री तुल्लाराम जोशी, श्री निरंजन लाल जोशी, डा. उदयवीर शर्मा, श्री अमोलकचन्द जांगिड़ आदि अनेक प्रतिष्ठित विद्वान आपकी शिष्य मण्डली में रहे हैं। आपको वर्तमान समय में नगर का 'साहित्य गुरु' कहा जा सकता है। आपके साहित्यकार साथियों में डा. कन्हैयालाल सहल, डा. नागरमल सहल, श्री महावीरप्रसाद जोशी, श्री बनवारीलाल सुमन तथा श्री बजरंगलाल पारीक के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

आपने बिसाऊ में 'राजस्थान साहित्य समिति' की स्थापना की तथा उससे 'वरदा' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। समिति के आप



स्व प श्रीलाल मिश्र



डा० मनोहर शर्मा

सस्थापक अध्यक्ष रहे । आपके प्रेरक परामश से 'वरदा' ने अपने प्रकाशन जीवन के २९ वष पूरे करलिए है । यह एक अद्वितीय उपलब्धि है । आपने डूण्डलोद विद्यालय से वार्षिक प्रकाशन के रूप मे 'साधना' को एक साहित्यिक पत्रिका क रूप मे लगातार १० वर्षो तक निकाला जिससे अनेक नवयुवक-लेखको ने लाभ उठाया । एक स्कूली पत्रिका होने पर भी 'साधना' मे अच्छी सख्या मे उच्च कोटि की साहित्यिक रचनाए छपती थी जिनके कारण उसके सभी अक आज भी सग्रहणीय समझे जाते हैं ।

आपके शताधिक लेख[1] वरदा, मरुभारती, राजस्थान भारती, मरुवाणी, मधुमती, जागती जोत आदि अनक पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए है । इनक अलावा आपने अपनी मौलिक रचनाओ से भी राजस्थानी का भण्डार भरा है । इनमे कविता, कहानी एकाकी, ललित निब ध विशेष उल्लखनीय हैं । उनकी कविताओ क मुख्य विषय राष्ट्रीय जागरण, प्रकृति चित्रण भक्ति साधना त्याग, बलिदान आदि रहे हैं । उनके एकाकी बालकोपयोगी हैं । सभी एकाकी सोद्देश्य लिखे गए हैं । उनके प्रमुख एकाकियो मे सतीत्व की परीक्षा, प्रान कृतज्ञता, नमक हलाली, सच्चा याय आदि विशेष उल्लेखनीय हैं । सभी मौलिक रचनाए राजस्थानी साहित्य की अमूल्य मणिया हैं ।

आप एक खरे विद्वान समीक्षक के रूप मे विशेष समादृत रहे । समालोचक की पनी दृष्टि आपको मिली हुई थी । आप खरी - खरी लिखने वाले थे । साहित्यिक लीपापोती करना आपको पसन्द नही था । 'मेघदूत के राजस्थानी अनुवाद' 'उमरखयाम के राजस्थानी अनुवाद' आपके आलोचनात्मक विशेष लेख है । राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ के महाकवि ईसरदास आसन' से एव सादुल राजस्थानी रिसच इ स्टीटयूट बीकानेर के 'महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन' से दिए गए आपके अभिभाषण क्रमश 'अर्वाचीन राजस्थानी का य' (वरदा) और 'सुकवि शिवसिंह शेखावत और उनकी प्रीति

---

१ साधना वष २२ से २५ मे लेख— स्व प श्रीलाल मिश्र की साहित्य साधना ले डा उदयवीर शर्मा पृ ८ से १८

(उनके द्वारा तयार की गई सूची मे— १२२ लेख, ११२ पुस्तको की समीक्षा प्रकाशित करवाइ जाने की सूचना है ।

वलिका' (राजस्थान भारती) अविस्मरणीय हैं।[२] राजस्थानी कविता 'वदना' आपके द्वारा सम्पादित एक सुन्दर प्रकाशन है। डूण्डलोद राजघराने कवियो की कृतियो को प्रकाश मे लाने का श्रेय आपको ही है। यह आपकी साहित्यिक देन सिद्ध हुई है।

बिसाऊ की सभी स्थानीय सस्थाओ मे आप सक्रिय कार्यकर्त्ता एव रहे। हिन्दी पुस्तकालय के तो आप उद्धारक और पोषक थे। श्री रघुवीर कला मन्दिर के आप अध्यक्ष रहे। जन पुस्तकालय के सच्चे मार्गदर्शक रहे तो रामलीला कमेटी के सक्रिय सदस्य। आप 'गौड विप्र सभा' के सस्थापक अध्यक्ष रहे। डूण्डलोद मे भी आप अनेक सामाजिक सस्थाओं के मार्गदर्शक रहे।

समग्र रूप मे श्री मिश्र जी की जीवनधारा मे उनकी साहित्य ने एक तटब घ का काय किया। ज्यो ज्यो यह धारा आगे प्रवाहमान हुई तटबन्ध बनाती चली। इन तटब धो पर खडे होकर पारखियो ने उस धारा का निरखा - परखा और उसम भरपूर लाभ उठाया। उन्होने प्रयासो से राजस्थानी को उन्नत बनाना अपनी जीवन धारा का प्रमुख रखा परन्तु वे साथ ही हिन्दी को भी सदव आगे बढान का प्रयास करत रहे।

आपके साथिया मे ही प रामदत्त जी पुजारी हैं जिन्होने अपने जीवन का अधिकाश समय नाटका के मचन एव रामलीला के प्रदर्शन मे व्यतीत किया। ऐतिहासिक व धार्मिक नाटका का रगमच पर प्रदर्शन, उनके निर्देशन एव व्यवस्थापन के अभाव म असभव नही तो मुश्किल अवश्य होता। नाटका म शोधन एव परिशोधन करके मचीय बनाने म आप विशेष योग्यता रखते हैं। आपके द्वारा रचित नाटक भी प्रदर्शित हुए बताते हैं। यद्यपि आपकी कोई रचना प्रकाशित नहीं हो पाई है।

डॉ॰ मनोहर शर्मा

डॉ॰ मनोहर शर्मा मातृभाषा राजस्थानी के एक समर्थ एव सर्वाधिक प्रतिष्ठित लेखक हैं। अर्वाचीन साहित्य या प्राचीन गद्य, पद्य, नाटक जीवन

---

२ उनके द्वारा सँवार की गई एक समीक्षात्मक सूची जो सन् १९५५ से १९७४ तक की है की हस्तप्रति के आधार पर उन्होने उस अवधि तक ११३ पुस्तको की समीक्षाए प्रकाशित करवाई है। द्रष्टव्य — मरुवाणी वर्ष २१ के २५। वर्ष २२ व २३ व ... पृ ८ से १८ तक।

चरित्र, शोधपत्रिका सम्पादन, लोकसाहित्य सग्रह और प्रकाशन आदि तथा वत्तमान में प्रचलित सभी साहित्य-विधाओ मे डा शर्मा ने अपनी निष्ठा से लेखनी चलाई है, जो स्पृहणीय है। वत्तमान युग मे साहित्य और सस्कृति के जिन माधकों ने विशेष साधना की है और उच्च स्तरीय साहित्य समाज को दिया है, उनमे डा मनोहर शर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आपका जन्म प जगन्नाथ जी शर्मा की धमपत्नी श्रीमती धन्यादेवी की कुक्षि से मिति आश्विन कृष्णा द्वितीया सवत् १९७२ वि को शेखावाटी के बिसाऊ नगर मे हुआ। वे क्षण अत्यधिक पुण्यमय और सौभाग्यप्रद रहे होंगे जिनमे राजस्थानी के इस विलक्षण व्यक्तित्वधारी सरस्वती पुत्र का जन्म हुआ। आपका बाल्यकाल प्राय कलकत्ता मे व्यतीत हुआ और प्रारम्भिक शिक्षा महाजनी मे हुई। इसके बाद आपको देवनागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा का ज्ञान कराया गया। कलकत्ता से आकर आपने अपनी जन्मभूमि बिसाऊ की मिडिल स्कूल म पढाई की। मिडिल परीक्षा उत्तीण करने के बाद आपने मेट्रिक से लेकर एम ए, साहित्य रत्न, काव्यतीर्थ तथा पी एच डी (१९६५), सभी परीक्षाए अध्यापन काय करते हुए स्वयपाठी छात्र के रूप मे उत्तीर्ण की और सभी म उन्नत स्थान प्राप्त किया।

सन् १९३४ म मेट्रिक परीक्षा उत्तीण करने आप बिसाऊ की प्राइमरी स्कूल म अध्यापक हो गए और इसके बाद उत्तरोत्तर अध्ययन और अध्यापन मे आगे बढते ही गए। काफी समय तक बिसाऊ मे अध्यापन काय करने के बाद राजकीय सेवा के बन्धन स मुक्त होने के लिए रुइया कालज, रामगढ मे प्रोफेसर रहे। इसके बाद श्री शादूल सस्कृत विद्यापीठ बीकानेर से हिन्दी प्रवक्ता के रूप म सन् १९७२ में अवकाश ग्रहण किया। तत्पश्चात् आपने श्री अखिल भारतीय साधु मार्गी जैन सघ, बीकानेर के मुखपत्र (पाक्षिक) 'श्रमणोपासक' के सम्पादन का कायभार सभाला और सन् १९८१ तक इसी पद पर काय करते रहे। वत्तमान मे आप घर पर ही साहित्य साधना मे लीन हैं।

सवप्रथम सन् १९३४ ई मे मारवाडी सम्मेलन के मुख पत्र 'समाज सेवक' म आपके लेख प्रकाशित हुए तथा आग भी समय-२ पर प्रकाशित होते रहे। ये सभी लेख राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित थे। सन् १९३७ मे 'हस' म आपका २५ पृष्ठों का एक लेख 'राजस्थान का एक कवि राजिया' नाम से प्रकाशित हुआ। इसके बाद तो आपका लेखन क्रम बहुत ही

तीव्र गति स आग बढा परन्तु प्रकाशन की सुविधा न होने के कारण वह इकट्ठा ही होता रहा। आगे चलकर शोध पत्रिका (उदयपुर) और मरुभारती (पिलानी) का प्रकाशन चालू होने पर उनमे लख धड़ाधड़ छपने लगे। 'परम्परा' (जोधपुर) म भी आपके लेख बराबर छपते रहे।

आपकी रचनाओं मे भाषा, विषय वस्तु और शैली की दृष्टि से विविधता पाई जाती है। आपने हिन्दी और राजस्थानी दोनो मे ही खूब लिखा है। आपने प्राचीन राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व, इतिहास, लोकसाहित्य, अनुसधान, समीक्षा, नवीन मौलिक रचनाए आदि सबके लेखन म राजस्थानी साहित्य और संस्कृति को भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक अभिन्न अग मानते हुए उसके महत्त्व को प्रकाशित किया है। उनके साहित्य का सक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है[1]—

(१) राजस्थानी भाषा मे रचित स्वतन्त्र रचनाए तथा अनुवाद

(अ) राजस्थानी पद्य— १ अरावली की आत्मा २ गीतकथा ३ गाथी गाथा ४ कूंजा ५ गोपीगीत ६ धोरा रो सगीत ७ अमरफल ८ अन्तरजामी ९ जय जन नायक १० आरजधारा ११ पद्मी १२ अबला १३ गजमोती १४, फूलपालडी १५ रसधारा १६ जातरी १७ धरतीमाता १८ मनवार १९ मोमाखी।

(आ) राजस्थानी मे पद्यात्मक अनुवाद— १ राजस्थानी मेघदूत २ राजस्थानी उमरखयाम ३ वीतराग री वाणी ४ राजस्थानी गीतासार ५ राजस्थानी अन्योक्ति शतक ६ राजस्थानी रवी वाणी।

(इ) राजस्थानी गद्य— (१) कहानी सग्रह— कन्यादान सोनलभीग, बालवाली
(२) निबन्ध सग्रह— रोहीडे रा फूल
(३) एकाकी सग्रह— नणसी रो साको

(२) प्राचीन राजस्थानी साहित्य का सकलन एव सम्पादन

१ बातां रो झूमखो (तीनभाग) २ राहबसाहब ३ रागमल मातडिय री वात

---

[1] यह रचना सूची 'डा० मनोहर शर्मा का राजस्थानी साहित्य को योगदान' लेखक— श्री मोमनारायण पुरोहित स ली गई है।

४. प्राचीन राजस्थानी बात संग्रह ५ कुंवरसी सांखलो ६ चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि ७. गोपीचन्द ८ पारवती जी रो ब्यावलो ६ राजस्थानी जन काव्य १० राजस्थानी प्रवाद (सात शतक) ११ राजस्थानी पहेलियां (छ शतक) १२ राजस्थानी चुटकला (दो शतक) १३ राजस्थानी अधूरा पूरा ।

(३) हिन्दी लेखन कार्य

१ शोध प्रबन्ध - राजस्थानी बात साहित्य एक अध्ययन २. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा ३ राजस्थानी लेखसंग्रह ४ राजस्थानी लोक संस्कृति की रूपरेखा (पूज्य विनोबा भावे जब पद - यात्रा करते हुए दिनांक २४-३ १९५९ को बिसाऊ नगर में पधारे थे, उस समय यह पुस्तक उन्हें भेंट की गई थी।) ५ रससिद्ध रामनाथ कविया ६ राजस्थानी कथागीत ७ राजस्थानी हरजस ८ डा दशरथ शर्मा लेख संग्रह (सम्पादन)

(४) हिन्दी लेखमालाएं

१ राजस्थानी बात विवेचन २ राजस्थान की मौखिक संत वाणी ३ राजस्थान की मौखिक भक्तवाणी ४ राजस्थानी लोक गीतों में भारतीय संस्कृति ५ राजस्थानी शब्द चर्चा ६ राजस्थानी कहावतों की कहानियां ।

(५) विविध रचनाएं– १ कवि का गाव (पद्य) २ पत्र पुष्पम् (श्लोक संग्रह)

उक्त रचना सूची से प्रकट होता है कि डा शर्मा जी का बहुआयामी कृतित्व आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचायक है । आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य 'वरदा' का सम्पादन है । आचार्य बद्रीप्रसाद साकरिया ने वरदा के शोधप्रबन्ध विशेषांक में लिखा है— 'वरदा के शोधपूर्ण लेखों की यदि कहीं कोई चर्चा चले तो उसके सम्पादक प मनोहर शर्मा सामने आकर खड़े हो जाते हैं और मनोहर जी की विद्वता, कार्यकुशलता और सम्पादकत्व की बात चले तो 'वरदा' सामने आजाती है ।' आपने अपनी लेखनी के बल पर राजस्थानी भाषा और साहित्य के लेखक मण्डल में उच्च स्थान बनाया है, यह सब उनके अथक परिश्रम, अटूट लगन और समर्पण भाव को प्रकट करते हैं । वे बिसाऊ के ही नहीं राजस्थानी साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र हैं । आपकी लेखनी गतिशील है । मौलिकता सदा उनको प्रिय रही है । लोक साहित्य के तो आप अद्वितीय महारथी हैं ।

आपकी साहित्य साधना का सदैव सम्मान हुआ है। आप राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर की सरस्वती सभा के लगभग २० वर्षों तक निरन्तर सदस्य रहे। आप साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के राजस्थानी एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य सन् १९८२ तक रहे। आप 'मरुभारती' व परामर्श मण्डल के सदस्य हैं। राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, बीकानेर के पीठ स्थविर पद पर आप प्रतिष्ठित हैं। आप श्री संगीत भारती, बीकानेर की प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष सन् १९८१ तक रहे। 'वरदा' त्रैमासिक शोधपत्रिका के पिछले तीस वर्षों से आप अवैतनिक सम्पादक हैं। 'विश्वम्भरा', 'राजस्थानी गंगा' के आप सम्पादक हैं। राजस्थान भारती, वैचारिकी, कला अनुसंधान आदि पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल में आप रह चुके हैं। आप अनेक पत्र पत्रिकाओं से आज अपने चौथे आश्रम में भी दृढ़ता से सम्बद्ध हैं।

डा. शर्मा को उनकी मोनल मीत पुस्तक पर राजस्थानी प्रचारिणी सभा कलकत्ता (सन् १९७२), मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई (१९७६) राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, बीकानेर (१९७६-७७) से पुरस्कार मिल चुके हैं। उनकी 'धोरां री संगीत' पर मारवाड़ी सम्मेलन, बम्बई का वागीश्वरी पुरस्कार (१९८०) मिला है। उनकी 'बालवाड़ी' पुस्तक भी अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष के अन्तर्गत राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, बीकानेर से (१९७९-८०) पुरस्कृत हुई है। आप राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा 'विशिष्ठ साहित्यकार' के रूप में १९६७ ६८ ई० से सम्मानित हुए। श्री संगीत भारती, बीकानेर ने आपको सन् १९७० में 'कलाश्री' की उपाधि से अलंकृत एवं सम्मानित किया। राजस्थान रत्नाकार, दिल्ली की ओर से प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार के रूप में १९७६ में आप सम्मानित एवं पुरस्कृत हुए। सन् १९७६ में साहित्य परिषद्, लक्ष्मणगढ़ ने आपको सम्मानित किया। श्री तरुण साहित्य परिषद् बिसाऊ ने आपको 'अभिनन्दन ग्रंथ एवं सम्मान राशि भेंट कर सन् १९७८ में सम्मानित किया। बिसाऊ नगर विकास मण्डल, बम्बई के द्वारा भी आपका भव्य स्वागत किया गया तथा आपकी साहित्य सेवा और साधना के अनुरूप 'भेंटराशि' दी गई। आपको उदयपुर से 'कुंभा पुरस्कार' मिला जिसके सम्बन्ध में श्री बद्रीप्रसाद साकरिया, वल्लभ विद्यानगर से लिखते हैं—

> 'मनहर' री रस माधुरी, किण बिध करूं बखाण।
> रीझ गुणां आदर दियो, एकलिंग दीवाण॥

इस प्रकार डा. शर्मा विभिन्न संस्थाओं द्वारा विविध रूप में समय समय पर पुरस्कृत एवं सम्मानित हुए हैं।

डॉ० मनोहर शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित होकर श्री सोमनारायण पुरोहित (बीकानेर) ने 'डॉ. मनोहर शर्मा का राजस्थानी साहित्य को योगदान' शीर्षक से एक 'शोध प्रबन्ध' लिखा है जो दिसम्बर १९८३ में प्रकाशित हुआ।[1] यह अनेक दृष्टियों से एक महत्त्वपूर्ण एवं संग्रहणीय ग्रंथ है। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व पर जितना लिखा जावे, वही कम है। ऐसे साहित्य महारथी वरदा की कृपा से कभी कभी अवतरित होते हैं। वस्तुतः वे अद्भुत प्रतिभा के धनी हैं।

२० तुलाराम जोशी

बिसाऊ के संस्कृत के पंडित घराने में जन्मे पं. तुलाराम जी जोशी स्वयं संस्कृत एवं हिन्दी के प्रकाण्ड पंडित हैं। आप अपने विद्वान पूर्वजों की सातवीं पीढ़ी में आते हैं। आपके पूर्वजों में श्री खेमकरण जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये शिव के अनन्य भक्त थे। शिव कृपा से इन्होंने धन मान और यशकीर्ति अर्जित की बताई। ये अधिकतर बाहर रहा करते थे। आपके दादाजी श्री भोजराज जी वेदों के ज्ञाता थे। आपके पिताजी श्री खेतराम जी शास्त्री (बिनसीदास जी) अपने समय के नगर के सुप्रतिष्ठित संस्कृत पंडित थे। इन्होंने अध्ययन और अध्यापन दोनों कार्य किए।

आपका जन्म १६ नवम्बर १९१७ को बिसाऊ में हुआ। आपने अपने पिता श्री के संरक्षण में पढ़ना लिखना प्रारम्भ किया। आप बड़े कुशाग्र बुद्धि बालक थे। आपके छोटी अवस्था में ही कौमदी आदि कण्ठस्थ हो गये थे। आपने एम. ए., साहित्याचार्य, आयुर्वेद विशारद की परीक्षाएं उत्तीर्ण की जिनमें साहित्याचार्य में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। इसके सम्मान स्वरूप आपको विद्यालंकार की उपाधि मिली।

श्री जोशी जी सन् १९३४ से १७ वर्ष तक मिडिल स्कूल, गांगियासर (झुंझुनू) में प्रधानाध्यापक पद पर रहे। इसके बाद उक्त स्कूल को राजस्थान सरकार को सौंप कर आप मुक्त हो गए। आपने दो वर्षों तक सुन्दरमल बजाज संस्कृत विद्यालय बिसाऊ में भी प्रधानाध्यापक पद पर कार्य किया।

श्री जोशी जी सदा ही साहित्य सेवा में जुटे रहे। गांगियासर से आपने विद्यालय पत्रिका के रूप में दो वर्ष तक 'वरदा' का वार्षिक प्रकाशन किया

---

१ यह शोधप्रबन्ध वरदा वर्ष २६ अंक ३-४, १९८३ के एक विशेषांक के रूप में भी प्रकाशित हुआ है जिसके सम्पादक डा. उदयवीर शर्मा हैं।

जिसमे विद्वानों के महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ करते थे। आज यह यही 'वरदा' त्रैमासिक शोध पत्रिका के रूप में आपके अथक प्रयासों से नियमित रूप से प्रकाशित होने लगी जो अब तीसवें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ की स्थापना की और उसके माध्यम से वरदा का नियमित प्रकाशन चालू करवाया। आप समिति के संस्थापक मंत्री हैं। आपने अपना काम छोड़कर वरदा के लिए अथ संग्रह किया तथा प्रकाशन क्रम को निरन्तर रखा। यह आपके जीवन की एक विशेष उपलब्धि है।

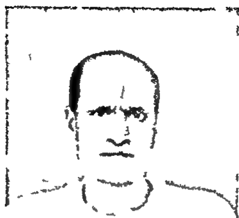
आप संस्कृत और हिन्दी दोनों में लिखते हैं। आप तत्काल पद्य रचना कर सकते हैं। आप मानवीय भावों के कुशल चितेरे हैं। आपने राजस्थानी शब्द कोष भी तैयार किया जिसका कुछ अंश वरदा में प्रकाशित भी करवाया था। इस कार्य को विद्वानों ने बड़ा महत्त्वपूर्ण माना। यदि वह समय पर प्रकाशित होता तो एक विशेष उपलब्धि होता। साहित्य से जुड़ा पुस्तकालय के प्रचार प्रसार में भी आपको सदा ही विशेष रुचि रही है। हिन्दी पुस्तकालय का पुनरुद्धार करने के लिए आपने अथक प्रयत्न किए। अन्त में उसका पृथक् अस्तित्व बनाये रखने के लिए उसका जन पुस्तकालय में अलग से एक प्रकोष्ठ बनवाकर उसके संरक्षण में उसे दे दिया। यह आपकी सूझबूझ का ही फल है।

साहित्य के साथ-साथ श्री जोशी जी जनसेवा में भी संलग्न रहे हैं। आप गांधी वादी विचारधारा के व्यक्ति रहे हैं। गोचर भूमि की रक्षा के लिए आपने नगर में आमरण अनशन भी किया तथा अपने लक्ष्य में सफल हुए। आप नगर के जन जागरण में अग्रणी रहे तथा नगरपालिका के अध्यक्ष पद पर रहते हुए जन सेवा की। नगर के विकास में आपका योगदान बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा है।

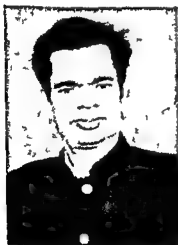
उन्मुक्त प्रकृति के धनी होने के कारण आपने कहीं भी बंध कर रहना पसन्द नहीं किया। आप हमेशा अपनी स्वतन्त्र गति मति के साथ आगे बढ़ना पसन्द करते। आप सम्प्रति आयुर्वेद के माध्यम से जन सेवा कर रहे हैं। आप स्वयं एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय का संचालन करते हैं जो जोशी आयुर्वेद भवन के नाम से बिसाऊ में स्थित है। इसी में औषध विक्रय विभाग भी है।

श्री रतनलाल जोशी

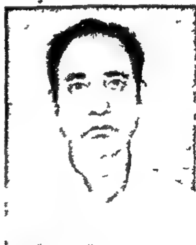
श्री रतनलाल जोशी हिन्दी के जानेमाने एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। आप अधिकतर कलकत्ता, बम्बई आदि महानगरों में रहते हुए हिन्दी के



प० तुलाराम जोशी



डा० उदयवीर शर्मा
परिषद् के साहित्य मन्त्री



श्री अमोलकचन्द जागिड
साहित्य मन्त्री



स्व श्री सदारामजी गुरू
पुरस्कार प्रदान करते हुए



श्री नथमल वसेरा



श्री विश्वम्भरनाथ अग्रवाल

राजस्थानी साहित्य के भण्डार को भरने के लिए लेखन व प्रकाशन काय करते रहते हैं। साहित्य सेवा मे आपकी एक गति है। आपका सम्पर्क विभिन्न राज्यों से होने के कारण आप अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं।

आपका जन्म १९२२ म बिसाऊ मे हुआ। आपके पिताजी स्व प द्वारिका प्रसाद जोशी थे जो एक सुलझे हुए विचारक और सहृदय व्यक्ति थे। आपने मूल रूप से पत्रकारिता का व्यवसाय स्वीकार किया। आपने सन् १९४०-४२ म आजादी के लिए सत्याग्रह मे भाग लिया तथा महात्मा गाधी के पास रहकर उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा प्राप्त करते रहे।

आपकी सवप्रथम रचना मन् १९४८ मे 'लालकिले म' शीपक स हिन्दी म प्रकाशित हुई। इसके बाद आपके 'क्रांतिकारी प्रेरणा क स्रोत' चट गांव की गौरव गाथा' आदि ग्रंथ प्रकाशित हुए। इन ग्रथो का विमोचन स्व प्रधान मत्री इन्दिरा गाधी न किया था। आपक अप्रकाशित ग्रंथ प्रकाशनाधीन हैं—मृत्युञ्जयी क्रांतिकारी प्रेरणा क स्रोत (दूसरा भाग), गीतगगा (राजस्थानी लोक गीत), हरजस आदि।

आपने पत्रकारिता मे वीर भूमि, समाज सेवक, भाई बहिन, राजस्थानी समाज, कुल लक्ष्मी आदि मासिक, पाक्षिक पत्रों का प्रकाशन व सम्पादन किया है। इस काय मे आपको अच्छी सफलता मिली। कलकत्ता की प्रसिद्ध सस्था विप्लवी निकेतन, सतीथ सहृति, राजस्थानी समाज सस्कृति सदन आदि से आप समय समय पर सम्मानित एव पुरस्कृत भी हुए हैं।

श्री जोशी जी बचपन से ही स्वतत्र विचारो के धनी रहे हैं। गाधी युग मे हरिजन सेवा करने का व्रत आपने लिया और उनके बच्चो को समाज का कड़ा विरोध होते हुए भी पढ़ाया। आजादी के आन्दोलन म बचपन से ही सक्रिय होने के कारण आपकी स्कूली शिक्षा पूरी नही हो सकी। वसे आपने भ्रमण करके अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था, तभी तो आप विद्वान, सफल सम्पादक, लेखक व कुशल वक्ता होसके। आपने अन्य प्रान्तो म राजस्थान के नाम को चमकाया है। आप 'राजस्थानी रत्न' है।

श्री किशनसिंह चौहान

श्री किशनसिंह जी भी अच्छी कविता किया करते है। आप एक प्रबुद्ध लेखक भी हैं। आपका एक 'शोकगीत' बहुत प्रसिद्ध हुआ है। आपने

श्री नाथ जी से सम्बन्धित एक पुस्तक का प्रकाशन भी करवाया है। इसमें गोरखनाथ से लेकर आज का विकासक्रम दिखाते हुए नाथ पथ का विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा नाथ पथ की वाणी भी उसमें प्रकाशित हुई है। आपकी नाथ पथ की भक्ति मे गहरी पैठ है। आपके अनेक लेख 'साधना' तथा 'वरदा' में भी प्रकाशित हुए है। आप स्वतन्त्रचेता एवं अपने विचारो के धनी हैं। गम्भीर साहित्य में आपकी सदैव आस्था रही है। कोरा प्रशस्ति परक साहित्य आपकी रुचि का विषय कभी नही रहा। भक्ति साहित्य की ओर आपका विशेष झुकाव रहा है।

श्री निरंजनलाल जोशी

श्री जोशी जी वर्तमान में राजस्थान साहित्य समिति के अध्यक्ष हैं। आपने अनेक लेख व अन्य रचनाए लिखी। आपने बिसाऊ का इतिहास भी लिखा जो प्रकाशित नही हो सका।

श्री दुर्गाप्रसाद दाधीच

श्री दुर्गाप्रसाद दाधीच भी हिन्दी और राजस्थानी के लेखक हैं। आपके अनेक लेख वरदा, साधना आदि में प्रकाशित हुए है। आप एक प्रभावशाली वक्ता भी रहे है। श्री जीवणलाल सिंगतिया भी वरदा के एक लेखक रहे हैं। इन सभी ने बिसाऊ के साहित्यिक गौरव को बढाने में अपना योगदान किया है।

श्री महावीरप्रसाद दाधीच

आप अपनी युवावस्था में एक जोशील कवि के रूप में उभर कर सामने आये। आपके व्यंग्य सीधी चोट करने वाले हुआ करते थे। आप बिन्दु कवि के उप नाम से अपने कविता काल में प्रसिद्ध रहे हैं। आपने विविध विषयो पर दोहे, कवित्त, छप्पय सवैया, कुण्डलिया आदि लिखे हैं। इनका कोई संग्रह प्रकाशित नही हो सका। आपने तत्कालीन शासकों व सेठ साहूकारों पर कविताए लिखी जो तत्कालीन समाज को अच्छी भी लगी। उनकी उपलब्ध कविताओं मे सेठ लक्ष्मीनारायण जी पोद्दार, गोविन्ददेव जी के मन्दिर की झाकी ठाकुर बिशनसिंह जी रघुवीरसिंह जी, गिरधारीलाल जी झुन्झुनूवाला आदि की प्रशंसा में उनके द्वारा किए गए पुण्य कार्यों का वर्णन है। भावगांभीर्य वाली बात इन कविताओं में नही है। हाँ, स्तुति व प्रशस्ति परक

रचनाओं की श्रेणी में इनका महत्व स्वीकारा जा सकता है। बिसाऊ नरेश बिशनसिंह जी पर लिखी कविता का एक उदाहरण देखिए —

> शेखावत कुल मुकुट मणि, श्री विष्णुसिंह नरेश।
> तव गुण महिमा को करे, थकित शारदा शेष ।।
> थकित शारदा शेष, पार नहीं कोई पावें।
> प्रजापाल विप्र भूप, आपका जग यश गावे।
> कह बिच्छू कविराय, आप जयपुर पति भावत।
> रावल पदवी पाय, नाम कियो ज्यु शेखावत ।।

डा० उदयवीर शर्मा

डा उदयवीर शर्मा हिन्दी और राजस्थानी के प्रख्यात लेखक हैं। इनके पितामह प श्री रामदयाल जी शर्मा फारसी और उर्दू के कुशल लेखक, कवि और इतिहास के ज्ञाता थे। आपके पिता श्री चिमनलाल जी भी संस्कृत और हिन्दी के विद्वान है। इनकी फारसी व हिन्दी मे लिखी कविताए डा शर्मा के संग्रह मे हैं। सुयोग्य दादा व पिता के संरक्षण व मार्गदर्शन में डा शर्मा ने लिखना-पढना सीखा। आपका ज म मिति कार्तिक शुक्ला १४ संवत् १९८८ मे बिसाऊ मे हुआ। आपने श्री बिसाऊ मिडिल स्कूल से मिडिल कक्षा उत्तीर्ण करके रूइया हाईस्कूल, रामगढ मे अध्ययनरत रहकर सन् १९५० मे 'मट्रिक' उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् अगस्त १९५० से ही आपने श्री बिसाऊ मिडिल स्कूल मे पढाना प्रारम्भ कर दिया। आपने अध्यापन के साथ साथ अध्ययन भी चालू रखा और स्वयपाठी छात्र के रूप मे एम ए (हिन्दी १९६२) साहित्यरत्न तथा पी एच डी (१९७३) की उपाधि प्राप्त की। आपने १९६० मे बी एड का प्रशिक्षण प्राप्त किया। ठिकाना बिसाऊ के अधिग्रहण के साथ आप दिनाक १-७ ५४ से राजकीय सेवा मे आगए तथा सम्प्रति आप राजकीय हायर सैकण्डरी विद्यालय के प्रधानाध्यापक पद पर कायरत हैं।

सन् १९५०-५२ मे डा मनोहर शर्मा (प्र अ) द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित हस्तलिखित विद्यालय पत्रिका 'सौरभ' मे आपकी रचनाए छपने लगी और उनकी प्रेरणा से साहित्य की ओर आपका अधिक रुझान बढा। यथार्थ मे यही से लेखक के रूप मे आपने प्रथम सीढी पर पैर रखा और उनकी कृपा एव प्रेरणा से निरन्तर लिखना प्रारम्भ किया। शिक्षा एव साहित्य गुरु डा मनोहर जी शर्मा के श्रीचरणो मे बठकर आपका साहित्य रचना क्रम अब भी

चालू है। आपने राजस्थानी भाषा मे कहानी, कविता, एकाकी, लघुकथा, ललित निबंध आदि लिखे हैं तथा राजस्थानी लोक संस्कृति एव साहित्य के पक्ष को और उजागर करने के लिए 'राजस्थानी व्रत कथाए' एक लेखमाला 'वरदा' मे प्रकाशित करवाई। लोक भजन, लोक गीत, झीडे तथा अन्य सामाजिक धार्मिक व पारिवारिक उत्सवो पर गाये जाने वाले लोकगीतो का क्रमश प्रकाशन करवाया। आपकी अब तक अग्रांकित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ पिरथीराज सुरजा (जनकाव्य, १९६४) २ एमनाकवार (जनकाव्य, १९६५) ३ डाफी (ऋतुकाव्य, १९७३) ४ बिसाऊ का सक्षिप्त इतिहास (१९६४) ५ बिसाऊ दर्शन (१९८०) ६ शेखावाटी का इतिहास (१९८०) ७ सूटो (ऋतुकाव्य, १९८०) ८ किरत्या रो झूमको (लघुकथा, १९८२) ९ शेखावाटी के साहित्य का इतिहास प्रथम खण्ड (१९८३) १० श्रीलाल शतक (राजस्थानी पद्य, १९८३) ११ शेखावाटी के साहित्य का इतिहास द्वितीय खण्ड (प्रकाश्य)

उक्त ग्रथो का समग्र रूप मे विवेचन और विश्लेषण किया जाय तो प्रकट होता है कि इसमे जनकाव्य, ऋतुकाव्य, लघुकथाए, इतिहास आदि मूल विषयो पर पद्य व गद्यात्मक रचनाए लिखी गई है। पिरथीराज और एमना कवार दोनो जनकाव्य हैं। प्रथम जनकाव्य मे भाई और बहिन के सच्चे प्रेम को प्रदर्शित करते हुए उसके कथानक का निर्माण हुआ है जो 'हुपजीण' जनकाव्य की टक्कर की सवेदनशीलता रखता है। दूसरे मे महाभारत मे वर्णित अभिमन्यु प्रकरण का लौकिक स्वरूप प्रकट हुआ है। ऋतुकाव्यो मे डाफी (शीतलहर) और सूटो (वर्षासहित तेज तूफान) दोनो राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतिया हैं। डाफी का चित्रण प्रकृति, जन समाज, गरीब-अमीर, खेत, बाग आदि विविध रूपो मे प्रभावशाली ढग से किया गया है। सूटो एक प्रतीक काव्य कहा जा सकता है। कवि ने इसके माध्यम से समाज में जनक्रांति लाकर सुदर समाज के निर्माण की आशा व्यक्त की है। लघुकथाओ में 'किरत्या रो झूमको' विशेष उल्लेखनीय है। यह कथासग्रह विद्वानो में अत्यधिक समादृत हुआ है। इसकी बोधकथाए पचतत्र की बोध-कथाओ के समान प्रेरक मानी गई हैं।

इतिहास ग्रथो मे डा शर्मा के दो ग्रथ— (१) शेखावाटी का इतिहास (२) शेखावाटी के साहित्य का इतिहास प्रथम खण्ड बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रथ हैं। इनसे इतिहास व साहित्य को प्रकाश मे लाने का एक गौरवपूर्ण कार्य पूरा हुआ है।

डा शर्मा ने लोकसाहित्य और संस्कृति के विभिन्न आयामों का विवेचन प्रस्तुत किया है। आपके महत्त्वपूर्ण लेख वरदा, मरुभारती, साधना, मरुवाणी, लाडेसर, राजस्थान भारती, मधुमती, जागती जोत, माणक आदि राजस्थान की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आप अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत हुए हैं जिनमें से अग्रांकित का उल्लेख किया जा सकता है—

(१) राजस्थानी ग्रेज्युएट्स नेशनल सर्विस एसोसियेशन, बम्बई द्वारा 'सूंटो' काव्य ३० नवम्बर १९८२ को एक हजार रुपया से पुरस्कृत हुआ।

(२) जिला प्रशासन झुंझुनू (जिलाधीश) से गणतंत्र दिवस १९८३ पर प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ।

(३) हिन्दी साहित्य संसद, चूरू द्वारा हिन्दी दिवस १९८४ पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किये गये।

(४) दिनांक १६ १२-८४ को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच संदेश, नवलगढ द्वारा आप सम्मानित एवं पुरस्कृत हुए।

(५) राजस्थान शिक्षक संघ जिला शाखा, झुंझुनू द्वारा वरिष्ठ अध्यापक के रूप में दि० १९ ९ ८६ को आपका हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

डा शर्मा की साहित्य सेवा में 'वरदा' त्रैमासिक शोधपत्रिका का सहसम्पादन कार्य उल्लेखनीय है। आप पिछले ३० वर्षों से राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ के उपमंत्री हैं तथा प्रकाशन कार्य के लिए समर्पित है। आप तरुण साहित्य परिषद्, बिसाऊ के संस्थापक साहित्य मंत्री हैं। आप राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर तथा राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, बीकानेर के पिछले [illegible] वर्षों तक सदस्य रहे हैं। वर्तमान में आप साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के राजस्थानी एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य हैं।

मौलिक लेखन कार्य के साथ साथ आपने 'राधामंगल', 'डा मनोहर शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ' आदि का सम्पादन किया है तथा आप अनेक ग्रंथों का प्रकाशन व सम्पादन कार्य कर चुके हैं। आपकी शताधिक रचनाएं (कविता, कहानी, एकांकी, लेख) प्रकाशित हो चुकी हैं। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर के सैकण्डरी पाठ्यक्रम में आपकी एक पुस्तक स्वीकृत है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि डा शर्मा की अनेक काव्य रचनाएं तथा गद्य ग्रंथ अभी प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। आप एक निष्ठावान साहित्यकार

हैं तथा आपके लेखन काय म एक निरन्तरता है। इसी कारण राजस्थानी साहित्यकारो म आपका महत्वपूर्ण स्थान है।

श्री अमोलकचन्द जांगिड

राजस्थान के प्रमुख राजस्थानी गद्य लेखको मे श्री अमोलकचन्द जांगि[ड] का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपके सरल, सबल एव संवेदनशील राजस्थानी गद्य की विद्वानो ने बहुत प्रशसा की है। आपने सदा ही प्रकाशन पर कम औ[र] लेखन पर अधिक ध्यान दिया है।

श्री जांगिड का जन्म बिसाऊ म दिनाक १० नवम्बर, १९३३ म हुआ आपके पिता श्री मन्नालाल जी जांगिड एक कठोर परिश्रमी, अपनी कला प्रवीण तथा सहृदयी सज्जन थे। उन्होने अपने पुत्र को सुयोग्य बनाने के लि[ए] मन से प्रयत्न किया। उनके प्रयत्नो के फलस्वरूप श्री जांगिड ने श्री बिस[ाऊ] मिडिल स्कूल से आठवी कक्षा उत्तीर्ण करके बागला हाईस्कूल चूरू से मैट्रि[क] परीक्षा सन् १९५१ म उत्तीर्ण की। आप सन् १९५२ ई म मिडिल स्कू[ल] बिसाऊ मे अध्यापक होगये तथा आपने आगे भी अध्ययन जारी रखा। अ[पने] कठोर परिश्रम से स्वयपाठी छात्र के रूप म सन् १९६४ में आपने एम [ए] (हिन्दी) परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सन् १९६६ मे बी एड प्रशिक्षण प्रा[प्त] किया। ठिकाना बिसाऊ के अधिग्रहण के साथ आप दिनाक १-७ ५४ राजकीय सेवा म आगए तथा उत्तरोत्तर पदोन्नति पाते रहे। वतमान म प्र[धान] व्याख्याता (हिन्दी) पद पर कायरत हैं।

आपको छोटी कक्षाओ म ही प श्रीलाल जी मिश्र स साहित्यिक प्रेर[णा] मिलती रही। यही से आपके मन म साहित्य का बीजारोपण मानना चाहि[ए] इसके बाद १९५८ तक आते आते डा मनोहर शर्मा की प्रेरणा से आप साहि[त्य] साधना म एक निष्ठा एव लगन से लग गए। आपकी रचनाए वरदा प[त्रिका] मरुवाणी में छपने लगी। इसके बाद लाडेसर, सरवर, [illegible] जागती जो[त] शिविरा, माणक आदि पत्र पत्रिकाओं म आपकी कहानियां, एकांकी, ले[ख] संस्मरण, रेखाचित्र आदि काफी मात्रा म प्रकाशित हुए जिनकी विद्वानों [illegible] प्रशंसा की। आप शीघ्र ही एक स्थापित राजस्थानी साहित्यकार [के] रूप में उभर कर सामने आये। आपने हिन्दी म भी खूब लिखा है।

राजस्थानी लोक साहित्य के संग्राहक के रूप में भी आपने [illegible] [illegible] की। लोक गीतों पर आपके अनेक महत्वपूर्ण [illegible] [illegible] गया [illegible] पत्रिकाओं मे छपा। आपने राजस्थानी गद्य लेखन म एक अद्भुत विविधा को [illegible]

निबन्धो के विषय बनाये जिन पर कभी किसी ने सोचा भी नही था । श्री जांगिड के ऐसे मौलिक निबन्धो मे कुछ नाम उल्लेखित हैं— कुचरणी, हेत, गळचट, सीलिए री लीला, डर, सिरजन, मसखरी, तीज, धोळमा, हुसर, हुचकी आदि । आपने कविताएं भी लिखी किन्तु उनमे आपका कवि मन उतना नही रम पाया जितना गद्य रचनाओ में लेखक मन रमा है ।

श्री जांगिड का एक राजस्थानी कहानी सग्रह 'शेखावाटी री आचलिक कहानिया' प्रकाशित हुआ है । यह पुस्तक विद्वानो में समादृत हुई है । इसमे अधिकाश कहानियां अपने आचलिक स्वरूप म प्रस्तुत हुई है । आचलिक कहानियो की दृष्टि से इसे प्रथम सग्रह कहा जा सकता है । इसके पूर्व डा मनोहर शर्मा ने अपने कहानी सग्रह 'कन्यादान' म आंचलिक कहानिया प्रस्तुत की है। इस प्रयोग के बाद श्री जांगिड जी ने ही आचलिक कहानिया प्रस्तुत की है जो राजस्थानी गद्य म एक अभिनव प्रयोग है ।

श्री जांगिड के गद्य की चाहे वह सस्मरण, रेखाचित्र या कहानी हो, यह मूल विशेषता रही है कि वह सदा यथार्थ से जुडा रहता है । आप सदा समाज से जुड कर लिखते हैं । आप यथार्थ के गम्भीर चितेरे हैं । आपके चित्रण मे एक सजीवता एव गहरी अनुभूति परक गति रहती है जो पाठक को रचना की कथावस्तु से सहज भाव से जोडती है ।

शिक्षा और साहित्य के आप साधक हैं तो कला और सस्कृति के आराधक हैं । सगीत को आप जानते हैं तो भित्तिचित्रो को पढना आपको आता है । आप जनभावनाओ के उद्भावक हैं । नगर के कण-कण से आपका लगाव है तो जन-जन से जुडाव । आप एक 'पठमैठ' के साहित्यकार हैं ।

श्री ताराचन्द पुजारी

प रामदत्त जी पुजारी के सुपुत्र श्री ताराच द जी हरियाणा मे आयुर्वेद विभाग मे व्याख्याता पद पर कार्यरत है । आप एक अच्छे कवि और आयुर्वेद के श्रेष्ठ विद्वान हैं । आपने स्थानीय कवि सम्मेलनो म भाग लिया और अपनी सुरुचिपूर्ण कविताओ से श्रोताओ का मनोरजन किया । आपने आयुर्वेद सम्ब धी बहुत सी पुस्तकें लिखी है जिनमे से कुछ हरियाणा के आयुर्वेद शिक्षा के पाठ्यक्रम म स्वीकृत हैं । यहा उनकी पुस्तको के नाम दिये जारहे हैं—

१ उप वद्य पथ प्रदर्शिका २ आयुर्वेद पदार्थ विज्ञान ३ आयुर्वेद द्रव्य गुण विज्ञान ४ सस्कृत सुधा मजरी ५ द्रव्य गुण विज्ञान भाग ग चाटसहित ६ आयुर्वेद का परिचयात्मक इतिहास ७ आयुर्वेद शरीर रचना विज्ञान

८ आयुर्वेद सुभाषित साहित्यम् ९ प्रारम्भिक पदार्थ परिचय १०. प्रारम्भिक रस परिचय ११ आयुर्वेद का सामान्य परिचय १२ आयुर्वेद पदार्थ दर्शन १३ आयुर्वेद शल्य विज्ञान १४ अभिनव शल्य विज्ञान १५ आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान १६ आयुर्वेद योग रत्न माला १७ रोगनिदान के सिद्धान्त १८ Fundamental Principal of Ayurveda

श्री बनवारीलाल शर्मा 'कलानिधि' बिसाऊ के बहुचर्चित राजस्थानी के कवि हैं। अब तक आपकी 'राणीसती' और 'हनुमान चालीसा का अनुवाद' (पद्यात्मक राजस्थानी) पुस्तकें प्रकाश में आचुकी हैं। दीपावली पर 'रामरमी' के दिन प्रतिवर्ष एक लम्बी कविता का प्रकाशन करवाना आपकी एक 'हॉबी' है। आप सदव अपनी मस्ती म विचरण करने वाले कवि रहे हैं।

श्री रामजी लाल कल्याणी एक कुशल लेखक एव युवा कवि हैं। आप तरुण साहित्य परिषद् के मत्री हैं। आप अनेक व्यापारिक, सास्कृतिक व सामाजिक कार्यों म व्यस्त रहते हुए भी साहित्य सृजन करते हैं, यह नगर के लिए एक गौरव की बात है। आपकी साहित्यिक विचारधारा म नवीनबोध के साथ साथ प्राचीन के प्रति रुझान भी झलकता है। आप साहित्य साधक के साथ साथ साहित्य सेवी अधिक हैं। आपने गोशाला-पत्रिका का अनेक बार सम्पादन भी किया है।

बिसाऊ की साहित्य प्रतिभा म श्री मुरारि माथुर, राधेश्याम गुप्त, हरिशकर मिश्र सुरेश जांगिड बी ई, सुरेश माथुर आदि के नाम उल्लेखनीय है। इन्होने अनेक कविताए समय समय पर लिखी हैं।

श्री परमान द जटिया साहित्य से जुडे हुए हैं। अनेक पत्रो, स्मारिकाओं का कुशल सम्पादन आपने किया है। आप तरुण साहित्य परिषद् के अध्यक्ष हैं। श्री गौरीशकर पुजारी, श्री पूरणमल वद्य व श्री अलादीनखा भी साहित्य से जुडे हुए है। श्री अलादीनखा तरुण साहित्य परिषद् की कायकारिणी के सदस्य भी हैं। आप किसी काम का जोश के साथ उठाते हैं और उसी जोश के साथ उसे पूरा भी करते हैं।

वरदा नगरी बिसाऊ साहित्य के लिए एक साधना स्थली है। अब नव हस्ताक्षरो को भी और आगे आने की आवश्यकता है।

चौथा अध्याय

कला और संस्कृति

साहित्य की भांति कला और संस्कृति भी मानव मन के उत्कृष्ठ सौन्दर्य का प्रदर्शन करती है जिसमे सभी रसो के दर्शन होजाते हैं। कलाकार की सूक्ष्म दृष्टि प्रकृति के कण-कण म व्याप्त रहती है और प्रकृति का सौन्दर्य ही उसकी कृतियो का उपादान होता है। इसलिए कला एव संस्कृति समाज के प्राण हैं। उसके बिना समाज का अस्तित्व ही नही होता।

कला का मुख्य स्वर उल्लास या आनन्द है और वह तभी मिलता है जब हम उसमे रम हुए और अपने को भूले हुए होते है। इसलिए कला के कलेवर मे सगीत, नृत्य, नाटक आदि सभी का समावेश होता है जिनमे मानव को प्रभावित करने वाली सारी भावनाओ की अभिव्यक्ति होती है। इन सब म ही संस्कृति सिंचित एव पल्लवित होती है।

कला के तत्व

१ सगीत

सगीत मानव मन की गहराइयो को अनायास ही छू जाता है और सुख दु ख आदि मनोवेगो को असीम शान्ति प्रदान करता है। एक सगीतकार ने ठीक ही लिखा है कि सगीत म ईश्वर से साक्षात्कार कराने की असीम शक्ति निहित है। सगीत के स्वर मन को एकाग्र करके इतने अधिक लीन और स्थिर कर देते हैं कि हृदय की समस्त चचल वृत्तिया केन्द्रीभूत होकर अन्तर्मुखी होजाती है। यही वह स्थिति है जहा अह की समाप्ति होती है और परमात्मा मे तल्लीनता बढती है।

सगीत कभी भी क्षेत्र म बधकर नहीं चला है। इसकी व्यापकता ही इसकी अमरता का द्योतक है। भारतीय सगीत का सुन्दर स्वरूप राजस्थान की सीमा मे आकर अपने ढग से विकासमान हुआ है। समय के साथ धीरे-धीरे

आगे चल कर इसके घराने कायम हुए हैं। राज्याश्रय पाकर तो इसने बड़े ढंग से अपने स्वरूप और सीमाओं में और भी अधिक विकास किया है। इसी विकासक्रम की ज्योति राजस्थान के कोने-कोने में, जहां तनिक भी संवेदनशीलता रही है, जलती रही है।

शेखावाटी संस्थान के ठाकुरों के राजघरानों में भी संगीत की आनन्ददायिनी लहर दौड़ी है। बड़े बड़े सुप्रसिद्ध संगीतकार यहां हुए हैं तथा बाहर से आये हैं और अपनी संगीत माधुरी से सबको रसमग्न किया है।

इस विकासक्रम में बिसाऊ ठिकाना भी सदा गतिशील रहा है तथा यहां के राज और समाज ने संगीत का सहजानन्द मिलजुल कर प्राप्त किया है। बिसाऊ ठिकाने की स्थापना के बाद स्व. ठाकुर विष्णुसिंह जी तक राजघराने में संगीत के स्वर गूंजते रहे हैं। परन्तु इस अवधि का प्रामाणिक वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हो पारहा है। उस समय कलावंत, पातुर, गायिका, नर्तकी, लोकगायक, संगीतकार आदि विशिष्ठ रूप से राज्याश्रय में रहा करते थे।

ठाकुर विष्णुसिंह जी का रुझान संगीत कला की ओर विशेष था, जिसके कारण बाहर से अच्छे-अच्छे गायक, वादक और नर्तक बिसाऊ में आये। उनको राज्याश्रय मिला और नगरवासियों में संगीत का प्रचार व प्रसार भी हुआ। उस समय के गायक सगुण निर्गुण धारा के भक्ति-पदों को शास्त्रीय संगीत में गायन किया करते थे जिससे यहां के नागरिक भी आनन्दित होते रहते थे। इस प्रकार भक्ति संगीत का झरना अट्टालिकाओं से बहता हुआ गांव की झोंपड़ियों तक जा पहुंचा। आज भी भक्ति संगीत की यह पावन धारा गायक संतों के मुख से निसृत होकर गांव के हर घर आंगन को रसमग्न कर रही है। इस दृष्टि से श्री विष्णुसिंह जी के काल को संगीत, नाटक एवं लोक नृत्य का स्वर्णयुग (चरमोत्कर्ष काल) कहा जा सकता है।

बिसाऊ नगर में संगीत का विकास प्रांकित धाराओं में हुआ— (१) शास्त्रीय गायकी (२) भक्ति संगीत (३) ख्याल गायकी (४) लोक गायकी (५) वाद्य एवं वादक।

(अ) शास्त्रीय गायकी

शास्त्रीय संगीत के गायकों एवं वादकों का स्व. ठा. विष्णुसिंह जी ने अच्छा सम्मान देकर उनको बिसाऊ में बसाया। उन्हें सब तरह की सुविधाएं

प्रदान की। उनमे जो प्रमुख गायक एव वादक थे, उनका सक्षिप्त विवरण आगे दिया जा रहा है—

१ हरिबक्स कलावत

ये एक समर्थ सितार वादक थे। उनके वर्षों की साधना का ही फल था कि उनकी अगुलिया सितार पर चलती थी तब स्वरो की तान बडे बडे गायको को मुग्ध कर दिया करती थी। उन्होने अच्छे माने हुए गायको की सगत की थी, जिनकी रिकार्डस आज भी उपलब्ध हैं और सुनी जा सकती हैं। उस वक्त के जानेमाने कलाकारो मे आपकी कलासाधना का उत्कर्ष सभी पर अपनी अमिट छाप छोड गया।

२ मोहम्मद बक्स

मोहम्मद बक्स व उनके पिता अच्छे गायक एव वादक थे। इनके गायन मे जयपुर घराने के अन्दाज लम्बे आलापो के साथ वातावरण म नव प्राण फूक देते थे। ये बहुत अच्छे सितार वादक थे। उनकी विशेष कर दिशा की आकर्षक उर्मियो म मन सहज ही रम जाता था।

आप नवलगढ के[1] प्रसिद्ध सितारवादक अहमद बक्स के प्रिय शिष्य थे।[2] आगे चल कर आप उस्ताद मोहम्मद बक्स बिसाऊ वाला के नाम से मशहूर हुए। आप 'हिजमास्टर्स वॉयस' म सितारवादक के पद पर काय करते थे।

३ करीम बक्स

स्व मोहम्मद बक्स के साथ करीम बक्स भी गाया करते थे। इनकी द्रुत लय म तानों का सुन्दर प्रदर्शन हुआ करता था। आप सितार बजाने के साथ तबला भी बजाया करते थ। गायन एव वादन मे मोहम्मद बक्स - करीम बक्स की जोडी को लोग चाव से सुना करत थे।

४ भट्टजी

आप बिसाऊ दरबार म सगीत के बादशाह कहलाए। इनको सुनने दूर दूर से सगीत प्रेमी आया करते थे। आप आजीवन सगीत साधना म लग रहे। सुना जाता है कि आपका मल्हार राग पर पूर्ण अधिकार था। एक बार बिसाऊ गढ के आम दरबार हाल मे आप एकाग्र भाव से मल्हार गा रहे थे।

१. वरदा २९/१-२ राजस्थान के सुघड सगीतकार ले० डा० मुरारिलाल।

गायन मे मस्त म सभी श्रोताओं को अपनी गायकी से भीगे हृदय का सा गाना भीगी मिट्टी की मा सौंधी खुशबू सा जगाती हो।

५ बरातो

ठिकाना बिसाऊ के आश्रय म अनेक गायिकाए रही जिनमे बाते दुर्गा, जस्सी, रामकुमारी आदि के नाम लिए जाते हैं, किन्तु उनम नाम विशेष ख्याति प्राप्त रहा है। बरातो बिसाऊ म स्थायी रूप मे नहीं रही। जब कभी बुलाया जाता, गाजाती थी। लेकिन उसकी गायन की ख्याति ठिकाना बिसाऊ का हाथ विशेष रहा है। बिसाऊ नरेश की कद्रदानी ही ख्याति का एक मुख्य आधार था।

६ पन्नालाल सुनार

पन्नजी सुनार शास्त्रीय सगीत के अच्छे गाता थे। वे स्वय सारगी तानपुरे पर गाया करते थे। आपके कठ बहुत सुरीले थे। आप नियमित रूप से रियाज किया करते थे। आपने अच्छे २ कलाकारों की सगत की और सम्मान प्राप्त किया। बताया जाता है कि आपके तानें बेजोड हुआ करती थी जिसे सुन कर लोग विमोहित से हो जाया करते थे।

७ बिहारी चोपदार

बिहारीलालजी ने तत्कालीन गुरुजनो की सेवा म रहकर सगीत का अच्छा अभ्यास कर लिया था। आप सुधीजनों म अपनी गायकी की निराली छाप छोडते थे।

८ बिड़दीचन्द पुजारी

पुजारीजी न शास्त्रीय सगीत का कई सालों तक अभ्यास किया तथा कुछ रागो को एक सलीके से पेश करने म महारत हासिल करली थी। बस वे कलाकारो व गायको का जी जान स साथ दिया करते थे।

९ गोपालदास स्वामी

आप वद्य होते हुए भी शास्त्रीय सगीत के ज्ञाता थ। आप अच्छा गाया करते थे। आप अपने मदिर म ,सभी तरह के वाद्य यत्र रखते थे तथा अकेले मे जमकर अभ्यास किया करते थे।

१० बिरमादत्त पुजारी

पुजारीजी शास्त्रीय सगीत के ज्ञाता ही न थे बल्कि अच्छे गायक भी थे। इनकी गायकी मे पूर्वी रग का प्रभाव था। बरसो बिहार मे रहने स इनकी

शली व वोल पूर्वी रगत लिए हुए होते थे। आप तबला वादन भी कर लेते थे। वसे स्वतन्त्रता (१९४७) के बाद के समय मे बिसाऊ मे सगीत प्रेमियो की बठक व रियाज आपके घर पर ही हुआ करती थी। आप लोगो को बडे चाव से सगीत की शिक्षा दिया करते थे। वृद्धावस्था मे भी उनकी लगन म किसी प्रकार की ढिलाई नहीं देखी गई।

११ याकूब अली

सन् १९४० से १९६७ ई० तक बिसाऊ मे याकूब का नाम कलावतो मे सबसे अग्रणी व प्रभावशाली रहा है। बडे-बडे कलाकार व गुणीजन याकूब से प्रभावित ही नही होते बल्कि कुछ अवसरो पर तो उनका लोहा भी मानते थ। वैसे याकूब के व्यक्तित्व मे निरालापन था। दुबला पतला शरीर, छोटी कद-काठी, गोरा चिट्टा रग, चूडीदार पायजामा, चोला और सिर पर टोपी तथा छोट से शीघ्रता से बढते कदम हर शख्स को एक बार अपनी ओर आकर्षित कर ही लेते। उनके गायन व वादन को देख व सुन कर तो हर व्यक्ति उस छोटे स शरीर म एक अद्भुत शक्ति का दशन करते थ।

याकूब साहब श्री विष्णुसिंह जी बिसाऊ नरेश के दरबारी गायक रहे हैं। उस वक्त शेखावाटी प्रदेश म माने हुए गायको व वादको म याकूब अपना विशिष्ट स्थान रखते थ। आसपास के गायक तो उनके समक्ष टिक भी नही पाते थ। वसे इनकी आवाज मे आकषण या माधुर्य न था फिर भी अपनी लम्बी तानो व बन्दिशो की विशेष अन्दाज म वह अदाकारी लोगो का मन बाध रखने मे पूरी तरह सफल रहती।

बिसाऊ के 'विष्णु नाट्य परिषद्' व 'कला मन्दिर' सस्थाओ की ओर से मचित नाटको में सगीत याकूब का ही होता था। उस वक्त के युवको म श्री नरसिंहदेव स्वामी, श्री गजानन्द मिश्र, श्री शुभकरण मिश्र, श्री हरिशकर मिश्र, श्री ब्रजलाल सोनी, श्री श्रीलाल डीडवानिया आदि मुख्य थे, जो प रामनन्द जी पुजारी की व्यवस्था म याकूब से सगीत की शिक्षा ग्रहण करते थे। एकदिन श्री रघुवीर कला मन्दिर मे रात्रि सगीत गोष्ठी का आयोजन था। याकूब से लोगो ने जिद् के साथ कहा कि कोई ऐसी तान सुनावो जो सबकी आखो म आसू ला देवें। याकूब न अपने दानो हाथो से कान छूते हुए पण्डित जी स कहा कि वह ऐसा तो कोई वादा नही करता लेकिन आप सुनकर उदासीनता अवश्य अनुभव करने लगोगे। इसके तुरत बाद याकूब ने 'दुखवा मै कासे कहूँ सजनी' पक्ति को अनेको बार अनेको अन्दाज म इस प्रकार पेश

किया कि लोग चित्रलिखे से अवाक् बैठे रहे और उनकी आंखें भीगी हुई थीं। स्वयं यानूब के आंसुओं से हारमोनियम भीग गया था। वह रात अभी तक लोगों के मन पर अमिट छाप छोड़े हुए है। बाद में यानूब साहब १९४-६ मे पाकिस्तान चले गए।

१२ सदाराम जी गुरु

आप सुरीले कंठ के धनी थे। आपकी आवाज बहुत दूर तक आसानी से सुनी जासकती थी। आपकी गायकी का एक विशेष अन्दाज था। मुख्यतः आप राजस्थान के शेखावाटी ख्याल गायकी के विशेषज्ञ थे। लम्बी तानों और थाह गायकी से आप राग के मुख्य स्वरों के मम तक पैठ जाया करते थे। आपका मुख्यतः एक ताल, चौताल व आड़ा चौताल की बन्दिश में राग का विस्तार तथा मुरकियों का मनोहारी प्रभाव देखते ही बनता था। इन्हीं विशेषताओं से आप श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करदिया करते थे। बिसाऊ में सन् १९४० से १९६० तक आपकी संगीत में अच्छी खासी धाक रही।

१३ रसीदखां सारंगिया

रसीद खां कलावंत पिछले चालीस वर्षों से सारंगी वादन कर रहे हैं। इनके वादन में माधुर्य के साथ साथ गायक की लय, तान व मींड में चार चाँद लगा देने की भी विशेष क्षमता है। आपने पं काशीनाथ, कलकत्ता व श्री बिहारी लाल कत्थक जैसे गायकों के साथ संगत की और श्रोताओं से वाह वाह लूटी।

१४ श्री रामसिंह

स्व प्रह्लादराय का भाई श्री रामलाल दरोगा बिसाऊ के एक अच्छे सितारवादक रहे हैं। वे सितार की मरम्मत भी स्वयं कर लिया करते थे। यद्यपि आपका अभ्यास अल्प अवधि का ही था फिर भी गायक मण्डली में अनेक बार आपने संगत को निभाया है। आप हारमोनियम व बांसुरी वादक भी थे।

१४ अजमेरी खां

अजमेरी खां बिसाऊ के संगीत प्रेमी लोगों का मन भावता गायक एवं वादक रहा है। पिछले २२ वर्षों में बिसाऊ की जनता में अजमेरी खां की बड़ी धूम मची रही। आप शास्त्रीय एवं सुगम संगीत के अच्छे गायक थे। उनके कंठ से निसृत ध्वनि की वक्र लहरों में सुगम तोड़ व मोड़ 'ललन महमूद'

की तरह एक अलग ही विशेषता रखती थी। वे गजल व कव्वाली भी बहुत अच्छे ढंग से पेश किया करते थे। आज भी लोगों के पास उनके गायन की टेप पाई जाती है और लोग उसे बड़े चाव से सुनते हैं। आप तबला, हारमोनियम व ढोलक के बहुत बढ़िया वादक थे। हारमोनियम पर पड़ती हुई उनकी अंगुलियां को देखपाना बड़ा मुश्किल था। आपने अनेक अवसरों पर प० काशीनाथ, बिहारीलाल, आचार्य मुरारिलाल, (बीकानेर) आदि के साथ तबला पर संगत की और प्रशंसा प्राप्त की। आपका सन् १९८१ में निधन होने पर बिसाऊ भी संगीत में निर्धन हो गया।

१५ मालीराम मिश्र

श्री मालीराम जी मिश्र हारमोनियम वादक थे। बिसाऊ में नाटक मंचित करने और गानों का हारमोनियम पर अभ्यास देना आपका ही काम था। नाटक में परोवाला हारमोनियम आप ही बजाया करते थे।

१६ मालीराम भाटो

श्री मालीराम जी नगर के विख्यात गायक नाटक निर्देशक, अभिनय के कुशल कलाकार तथा हारमोनियम वादक हैं। पिछले तीन दशकों से बिसाऊ में संगीत एवं रंगमंच पर आपने साधिकार प्रभाव जमाये रखा है। आप सुगम संगीत के श्रेष्ठ गायक हैं। भक्ति संगीत में आपकी रुचि खूब है। आप एकताल, तीनताल, दादरा आदि में भली प्रकार से गायन प्रस्तुत करते हैं तथा आपके आरोह-अवरोही तरंग में भी माधुर्य मिलता है। भले ही सुर-साधने में आपको उतनी दक्षता न मिली हो, फिर भी आप लयकारी का एक विशेष अन्दाज और मौलिक मोड़ देकर श्रोताओं को बांधने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

१७ श्री नरसिंहदेव स्वामी

आपने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा याकूब साहब से ग्रहण की। आप बचपन में ही संगीत के प्रति अत्यधिक रुचि होने से शीघ्र ही बहुत अच्छा गायन प्रस्तुत करने लग गये थे। आपके कंठ में असीम पौरुषीय बल था। इसी कारण से इनके गायन को श्रोता बहुत पसन्द करते थे। राग बिहाग में 'लट उलझी सुलझा जा रे बालम' गायन प्रस्तुतीकरण के साथ आंगिक संचालन भी मार्मिकता के साथ होता था जिससे सचमुच श्रृंगार का वातावरण बन जाता था। आपकी राग के वादी संवादी सुरों पर पकड़ और चढ़ान बहुत ही सुन्दर होती थी। आप प्रसिद्ध कथावाचक थे। इसलिए भक्ति संगीत पर आपकी गहरी पकड़ थी। खेद है, आपका स्वर्गवास सन् १९८३ में हो गया।

१८ काका वल्लभ

आप रगमच के प्रसिद्ध नाटय निदेशक, सफल कलाकार अभिनेता, हा एव पाश्व सगीत के प्रस्तोता तथा तबला वादक रहे हैं। आप एकताल, तीनताल, दादरा आदि बजा लेते हैं। आप कला मन्दिर सस्था सस्थापक सदस्यो म से एक है। आपने नाटक एव सगीत के लिए अपनी समयावधि को समर्पित भाव से सेवाए देकर व्यतीत किया।

१९ श्री ब्रजलाल स्वणकार

श्री स्वर्णकार भी याकूब के शिष्य रहे तथा वर्षों कला मन्दिर की मे रहकर समय व्यतीत किया। निरन्तर अभ्यास का अभाव खलता अवश्य था फिर भी आपने कुछ ठुमरियो की अच्छी तयारी करली थी। आप रगमच भी खिलाडी रहे हैं विशेषत हास्य अभिनेता क रूप मे।

२० श्री मोहनलाल आय

आप कलार्नेट अच्छी बजा लते हैं। आप रगमच के पुराने कलाकार हैं तथा नाटक के सगीत म आपका कलार्नेट वादन बहुत सराहनीय रहा है। आपके कठ अत्यधिक मधुर होने के कारण आपके गायन का श्राताओ पर अच्छा प्रभाव पडता था।

२१ श्री गजानन्द मिश्र

आप रगमच के श्रेष्ठ अभिनेता, कलाकार, हारमोनियम वादक एव गायक हैं। आप ने भी याकूब साहब से सगीत की शिक्षा ग्रहण की। आप बहुत मीठा गाते है तथा तार सुरा तक आसानी से मीड मारने मे सिद्धहस्त हैं।

२२ प० भोलाराम आय

पडित जी का व्यक्तित्व ही इतना प्रभावशाली था कि आपके गायन को बडे धय के साथ श्रोता गए सुना करते थे। आपके कठ से निसृत सजे हुए सुरो का लय एव ताल के समन्वित प्रवाह का साथ मिलने पर सम्गत अन्दाज का प्रभाव दृष्टिगोचर होता था। आपका सुरो पर गजब का नियन्त्रण था और न हीं-न ही मुरकियो का असाधारण प्रभाव नि सदेह श्राताओ को मत्रमुग्ध कर लेता था। आप तबला वादन भी करते थे। वस आप रगमच के श्रेष्ठ कलाकार, हास्य अभिनेता, कवि एव आय समाज के प्रचारक रहे हैं। आप पृथ्वीराज कपूर घराने के पण्डित रह तथा अनक चलचित्रो[1] म पण्डित का किरदार बखूबी निभाया है। आपका सन् १९८३ म स्वगवास होगया।

१ यश चोपडा की फिल्म 'नाग' म पण्डित का रोल अदा किया।

२३ सूरदास

वर्तमान में सूरदास जी ही एक मात्र तबला एवं ढोलक वादक हैं। आप नगारी भी बहुत सुन्दर बजाते हैं। डको से नगारी का वादन करने में आप ...ण हैं। आप नगारी पर तीनताल, दादरा, कँहरवा तथा हरियाणवी ध्यान के ...तोड़े अच्छा बजा लेते हैं।

२४ अमोलक चन्द जांगिड़

आजादी के बाद बिसाऊ नगर में संगीत शिक्षा की गति मंद न हो, इसके लिए श्री अलाहीन खां, श्री मुरारिलाल बगड़िया, श्री अली बहादुर आदि युवावर्ग आगे आये, उनमें श्री जांगिड़ जी का भी योगदान रहा था। आपने कलामन्दिर संस्था के मंत्री पद पर रह कर संगीत शिक्षण की निरन्तर व्यवस्था रखी। प० श्री रामदत्त जी शर्मा की प्रेरणा से आपने सर्वप्रथम कलामन्दिर के संगीत शिक्षक चूरू के श्री मालीराम से शिक्षा ग्रहण की। आप अच्छा गा लेते हैं। कलामन्दिर की ओर से आयोजित शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में आपने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर मेडल प्राप्त किया। प० काशीनाथ जी के समक्ष अपना गायन प्रस्तुत कर आपने उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्री अजमेरी खां के निर्देशन में दो विद्यार्थी तबला वादक तैयार हुए। प्रथम— श्री भागीरथ स्वामी का पुत्र प्रकाश स्वामी तबला वादन अच्छा कर लेते हैं। आप तोड़ों का प्रस्तुतीकरण शानदार करते हैं। इसके अलावा आप हारमोनियम भी बहुत प्यारा बजाते हैं। द्वितीय— श्री नृसिंहदेव स्वामी का पुत्र श्रीराम स्वामी भी तबला वादन बोलों के साथ अच्छा कर लेते हैं। श्री शुभकरण मिश्र, श्री हरिशंकर मिश्र, श्री श्रीलाल डोडवाणिया, श्री गिरधारी लाल ठाकर, श्री नारायणसिंह, श्री भजनलाल नाई, स्व० सदाराम गुरु के दोनों लड़के— श्री बजनाथ व श्री गोपीराम आदि सब शास्त्रीय संगीत में गायन प्रस्तुत करके अपना निराला प्रभाव छोड़ते थे।

डा० मन्नू भाई शाह, श्री प० रामदत्त जी पुजारी, श्री मालीराम दाधीच, श्री मदनलाल दधीच, श्री अलाहीन खां, श्री किरोड़ी लाल मिश्र आदि लोग शास्त्रीय संगीत के अच्छे ज्ञाता हैं। यद्यपि ये गाते नहीं हैं, फिर भी संगीत के पारखी हैं। इनके सामने अच्छे अच्छे गायक भी गाते समय घबराहट सी महसूस करते हैं।

(ब) भक्ति सगीत

ईश्वर के प्रति अनन्य आस्था तथा समर्पण भाव को ही है और भगवान के गुणो का सस्वर मुखर गान ही भक्ति सगीत है। भक्ति पद्य रचना ही भजन है। भक्ति के पदो को स्वर, राग, ताल एव साथ प्रस्तुत किया जावे तो भक्ति रस की अजस्र धारा निसृत हो जो मानव मन को स्वच्छ कर ईश्वर से सानिध्य करने का मार्ग कर देती है।

समय व परिस्थितियो के अनुसार बिसाऊ नगर मे भी भक्ति एव हरिकीर्तन का प्रचार प्रसार हुआ। आज भी स्थान स्थान पर नगर मे भक्तजनो की ओर से हरिकीर्तन व रात्रि जागरण होते रहते हैं और श्रद्धा एव आस्था के साथ सभी उन मे भाग लेते है। स्थानीय सस्थाओ की ओर से अखण्ड रामायण पाठ का सचालन किया जाता है। अनेक भजन मण्डलियां हैं लेकिन उनमे कोई जातिगत भेदभाव नही पाया जाता है। सभी तरह के लोग अपने इष्ट को प्रसन्न करने के लिए मनोती मनाते है तथा रात्रि जागरण करते प्रसादादि बाटते है।

बिसाऊ के भक्त गायको को दो श्रेणियो में बाँटा जा सकता है—
(१) निर्गुण भक्ति गायक (२) सगुण भक्ति गायक।

(१) निर्गुण भक्ति गायक

निर्गुण भक्ति गायको की एक परम्परा रही है तथा उनकी एक लम्बी सूची है। यहां मुख्य-मुख्य गायको का परिचय दिया जा रहा है। १६०० ई से पूर्व की जानकारी क्रमबद्ध एव प्रामाणिक रूप से उपलब्ध नहीं हो पाई है। बिसाऊ नगर के बडे-बूढ़े नागरिको म प० रामभक्त शर्मा, श्री बाबा वल्लभ मिश्र व श्री दीनेश्वा राजाजी आदि से गायको की जो सूची मिली उसी के आधार पर यहाँ उनका सक्षिप्त परिचय दिया जारहा है—

१ मोवाराम सेवाराम नायक

राजस्थान म अनेक सत हुए हैं जिन्होने अपनी भक्ति व परिनयन से सिद्धियां प्राप्त की है। इस सता की उनके शिष्या प्रशिष्या की एक परम्परा रही है। व उनकी बाणियां गाकर भक्ति रस की अजस्र धारा प्रवाहित करते रहते है। इन गायको के साथ मुख्य इकतारा, हारमोनियम, ढोलक, करताल भाझ चिमटा आदि होते है।

बिसाऊ मे नोपाराम-लेसूराम की जोडी निगु ण गायकी मे प्रसिद्ध रही है। वे दोनों इकतारे पर बडे धैय के साथ आलाप लेकर सुरा को साधते थे फिर निगु ण वाणी का जिसे भक्ति लोक मे 'सबद' कहा जाता है, तल्लीनता से गाते थे। उनके कठो मे बडा लोच और माधुय था जिससे श्रोता भक्त-गण बडे प्रभावित होते तथा टेरियो के द्वारा टेर को ऊँचा उठा कर वे समा बाध देते थे।

२ भू थाराम

भू थाराम अपनी मण्डली का मुख्य गायक था। उसके साथ प्रणतिया व नथूराम टेर उठाते थे। भू थाराम की आवाज सुरीली और ठण्डी रात्रि में दूर-दूर तक सुनाई देने वाली थी। इनकी सबद वाणियों का प्रमुख विषय ईश्वर की एकता व आत्मा की अमरता आदि होते थे। इनको महन्त का पद प्राप्त था।

३ अकबर खा पठान

खान साहब एक पहुँच वान सन थे। आप ज्ञानमार्गी सतो की वाणी और प्रेममार्गी सूफी कवियो की राग रागनियो मे निबद्ध पदो के गम्भीर गायक थे। आप सबद वाणियो के अथ तथा पदो मे आये शब्दो पर भी गहरी पकड रखत थे। आपकी सगत मे श्री मनोराम मुनीम और कन्हैया राणा रहते थे। उस समय आप निगु ण भक्ति सगीत के प्रतिनिधि गायक थे। आपकी गुरु गम्भीर आवाज और इकतारे की धुन का साम्य गजब का प्रभाव छोडत थे।

४ जतगिरि महाराज

तपसी जी के डेरे म जतगिरि महाराज के पास गुणीजना एव श्रोताओ की भीड हमेशा लगी रहती थी। आप वाणियों को बडे सयत स्वरो मे शृखलाबद्ध ढग से प्रस्तुत करते थे जिससे भक्तजनो को अभूतपूर्व आनन्द प्राप्त होता था। इनके शिष्यो की मण्डली टेर उठाने मे बडी दक्ष थी, इसलिए कभी करुण कटुता का आभास तक नही हुआ करता था।

५ जसराज बालासरिया

आप स्वय वाणी रचते थे तथा बहुत अच्छा गाते थे। आपकी गायन शैली शास्त्रीय ढग की होती थी। इसलिए सबद वाणियो म भी शास्त्रीय सगीत की झलक देखने को मिलती थी। गुणीजनो मे आपका विशेष स्थान था।

६ आदूशाह सांई और उनके पुत्र

आदूशाह स्वयं कवि एवं गायक थे। उनकी रची वाणियां प्राय भी कुछ गायक गाते हैं। उनके तीन पुत्र आसा, म्हौना व दीना सांई निर्गुण भक्ति संगीत के प्रभावशाली गायक थे। इनकी वाणियों में स्वरों के साथ शब्दों का भी महत्व होता था। इनका मुख्य विषय संसार की नश्वरता, जीव और ब्रह्म की अभिन्नता, जाति प्रथा की व्यर्थता आदि होता था।

७ बीने खाँ 'राजाजी'

वर्तमान समय में राजाजी ही एक निर्गुण भक्ति-संगीत के गायक शेष रहे हैं, जो पिछले ५० वर्षों से गाते रहे हैं। आप वृद्धावस्था में भी एक रात्रि जागरण को भी अछूता नहीं छोड़ते। आपको संगीत के प्रति अगाध प्रेम है। इनके बिना आज भी कोई रात्रि जागरण पूरा नहीं होता। आपकी आवाज में भारीपन व खरखरापन होने के बावजूद शैली की विशिष्टता है जिसके कारण गायन में आकर्षण बना रहता है। आपका रागों की भी अच्छी जानकारी है तथा आप ताल एवं लय में बंध कर गाते हैं। आप अब भी इकतारे पर गाते हैं।

८ मालीराम पुजारी

आप भी इकतारे पर बहुत अच्छा गाते थे। आपकी आवाज में कोमलता एवं माधुर्य होने के कारण निर्गुणी भजनों में आप चार चांद लगा देते। आप रात्रि जागरण चाहे नगर के किसी भाग में हो, अवश्य भाग लेते थे। खेद है कि आपका पिछले वर्ष स्वर्गवास हो गया।

९ गिलू माली

गिलू माली गायकों में अपनी दखल रखता था। इनकी बारीक आवाज होते हुए भी गायन में माधुर्य था। कण्ठ से निसृत तार स्वरों की पतली धार दूर दूर तक सोये लोगों को जगादेती थी। आप निर्गुण व सगुण दोनों धारा के पदों को गाते थे।

१० रामूजी बासोतिया

रामूजी की गम्भीर मुद्रा व मर्दानी आवाज स्वत ही श्रोताओं को अपनी ओर खींच लेती है। आप बहुत धैर्य के साथ ठाह में गाते है। इस समय बिसाऊ में आप निर्गुण व सगुण दोनों धारा के प्रमुख गायकों में से एक हैं। आपकी आवाज व गायन शैली सीधी सपाट तथा गुरुआपन लिए हुए होती है।

११ मातूराम माली

मातूजी पिछले दो दशको से गाते आरहे हैं। आप दीनेला-राजाजी के निर्देशन मे मज कर तैयार हुए। आपकी आवाज एव शैली ठीक रामूजी वासोतिया जैसी है। निगुणी पदो की गायकी मे दीनेला राजाजी का प्रभाव अधिक पाया जाता है। आपके गायन का प्रारम्भ बहुत ही सुदर व आकर्षक होता है। लय का उतार चढ़ाव श्रोताओ को अनायास ही अपनी ओर खीच लेता है।

१२ भूराराम माली

आप इकतारे पर गाते हैं। आप सगुण और निगुण दोनो शाखाओ के पदो को भक्तिरस मे सराबोर होकर गाते हैं। एक हाथ म इकतारा और दूसरे हाथ म करताल लेकर आप झूम झूम कर गायन का प्रस्तुत करते हैं। आप अन्य गायको को भी गायन मे टेर उठा कर साथ देते हैं।

इनके अलावा अनेक भक्त गायक हैं, जिनके नाम यहां गिनाये जा रहे हैं— लीलियो, नथू भगी, धनो कुम्हार, गजाधर कुम्हार, सुरजा बालो नायक, हरजी कुम्हार, ओंकार चमार आदि।

(२) सगुण भक्ति गायक

सगुण भक्ति सगीत की रसधारा भारत के कोने-कोने को छूकर पावन करती है। राधाकृष्ण की लीला को लेकर हर एक प्रदेश म भक्ति सगीत का सृजन हुआ है। श्री वल्लभाचाय और उनके अष्टछाप सम्प्रदाय ने कीतन सगीत को सुप्रसिद्ध किया। इन सभी ने नये नये पदो की रचना की और उनको तत्कालीन राग रागनियो मे निबद्ध किया। भक्ति रस मे सराबोर ये पद सदियो से भारतीय जनमानस को रस सिक्त करते आ रहे हैं।

बिसाऊ नगर मे ठा० विष्णुसिंह जी के काल मे भक्ति सगीत परम्परा का अधिक प्रचार एव प्रसार का अवसर मिला। उनकी ओर से भक्त गायकों को प्रोत्साहन-पुरस्कार मिला करता था। अत भक्त गायकों की कई मण्डलियां तयार होगई और अपने प्रेमाराध्य के चरण कमलो पर सगीत भरी पुष्पाजलियां अर्पित करने लगी। इस काय मे बिसाऊ की दो सस्थाए 'श्री विष्णु नाटय परिषद्' एव 'रघुवीर कला मन्दिर' ने गायको को तयार किया। बिसाऊ के नागरीकजनो के कानो मे भक्त सूर का इकतारा, तुलसी का मजीरा, चतन्य की करताल, मीरा के नूपुर, स्वामी हरिदास का तम्बूरा और सत तुकाराम की

खजरियो की मधुर गूंज सात्विक भावनाओं को जन्म देने लगी। हर भक्त गायक भक्ति रस में निमग्न संकीर्तन से अपने आराध्य देव को रिझाने लग गया। भक्ति संगीत के ऐसे गायकों का संक्षिप्त परिचय यहां दिया जारहा है—

श्री मालीराम भाटी ने पिछले कई दशकों से बिसाऊ के गायकों में अपना प्रमुख स्थान बना रखा है। आपने बहुत से गायकों को तैयार भी किया है। आपका सादा जीवन व समय की पाबन्दी गुणीजनों पर विशेष प्रभाव छोड़ती है।

श्री गजानन्द मिश्र सुगम संगीत के बहुत अच्छे गायक हैं। आपके कंठ बड़े सुरीले व लय की लम्बी आरोह अवरोह श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। आप जमकर लम्बे समय तक नहीं बैठते लेकिन जो दो तीन गायन प्रस्तुत करते हैं, वे बहुत प्रेरक बन पड़ते हैं। आजकल आप अस्वस्थ होने के कारण जागरणों में भाग नहीं ले पारहे हैं।

स्व० सदाराम जी गुर के सुपुत्र श्री बजनाथ जी भक्ति संगीत के एक सराहनीय गायक थे। आपकी गायन शैली में हरियाणवी और वृन्दावनी रंग पाई जाती थी। आप पीताम्बरी धारण किए रहते थे। आपके गायन का प्रस्तुतीकरण बड़ा मार्मिक एवं कंठ माधुर्य बड़ा मादक था। आप ख्यावला में गाते थे। आपके कार्यक्रम में पुरुषों एवं स्त्रियों से सारा मंच खचाखच भर जाता था। आपकी संगत में हमेशा अजमेरी खां रहा करते थे। इस कार्य में उनके आकर्षक व्यक्तित्व का योगदान था। इनके छोटे भाई श्री गोपीराम जी भी बहुत अच्छे गायक थे। आप तीनताल व कैरवा में शृंगारिक पदों को रसीली तान में सुनाते थे। आप ख्यावला भी गाते थे। सखेद लिखना पड़ता है कि उक्त दोनों भाइयों का असामयिक निधन होगया।

श्री गौरगराम बालासरिया पश्चिमी दरवाजे की मण्डली का मुख्य गायक है। आपकी मरदानी आवाज ने गायन को थाह के साथ प्रस्तुत करने में शानदार महारत हासिल कर रखी है। टेरिया के साथ आपकी आवाज दूर से आसानी से पहचानी जासकती है। आजकल आप श्री गंगाजी के मन्दिर में नित्य प्रातःकाल एवं सायंकाल भक्ति संगीत का प्रसारण करते हैं। इनके साथ ही केसाराम माली पदों के सीधे सादे बोलों को धुन में भक्तिभाव से तल्लीन होकर गाते हैं।

श्री सावरमल सोनी श्रीराम व कृष्ण के परम भक्त हैं। सावन के ना मे एवं कृष्ण जन्माष्टमी पर मन्दिरो मे हिण्डोला तैयार करते हैं। आप रवा ताल मे भजन गाते हैं। आप बारीक आवाज मे बडी तल्लीनता से ते हैं।

श्री रामूजी वासोतिया और मानूराम मानी जम कर गाने वाले हैं। नको सारी रात गाते हुए बीत जाती है। भजन गायको मे इनका प्रभाव विशेष खने को मिलता है। आप दोनो ही गम्भीरता एवं धर्य के साथ गायन प्रस्तुत रने मे सिद्धहस्त हैं। इसलिए इनकी जोडी को यदि अद्वितीय कहा जाय तो तिशयोक्ति न होगी। समय-समय की राग रागनिया मे गायन प्रस्तुत कर ाप वातावरण को और भी रसमय बना देते हैं।

श्री सूवाराम मास्टर अपनी गायक मण्डली के सरदार हैं और स्वयं हुत अच्छा गाते हैं। चढे सुरो मे तार सप्तक को स्पर्श करते हुए आप ऊँची ावाज मे गाते हैं, जिससे दूर दूर तक उनकी आवाज सुनाई देती है। आवाज ं कोई थिरकन नही, वह तो सीनेसपाट मार्ग पर बढ़ती चली जाती है। इनकी ण्डली मे टेरिए बडे सम्भ हैं। इसलिए टेर को बहुत ऊँचा एवं लम्बा खींच कर ाल के साथ वापस सम पर आना एक अलग ही विशेषता प्रकट करती है। नकी मण्डली कई घण्टा तक जम कर गाती है।

श्री श्रीलाल डोडवाणिया भी मन्दिरो के सकीर्तन कार्यक्रम मे चाव से भाग लेते हैं तथा इतनी सधी हुई आवाज न होते हुए भी व ताल व लय के साथ गायन प्रस्तुत करते हुए अनेक मुरकियो और मीडा से श्रोताओ को आकर्षित कर लेते हैं। आप सब रंग के गायक हैं।

श्री दुर्गादत्त जोशी भी भक्ति संगीत मे रुचि ही नही रखते थे बल्कि 'मूड' होने पर अच्छा गा लेते थे तथा ढोलक भी बजा लिया करते थे। श्री म्हालाराम नाई सचीय कलाकार के साथ-साथ एक अच्छे गायक भी थे तथा हारमोनियम भी अच्छा बजा लिया करते थे। अनेक रागो मे अपना गायन प्रस्तुत करते हुए आप आलापो एवं तानो की झलकिया भी प्रदर्शित करते थे।

श्री द्वारका प्रसाद दरोगा, ठाकुर गिरधारीसिंह, नारायण सिंह भाटी, हरिशंकर मिश्र आदि का नाम युवा कलाकारो मे प्रमुख स्थान पर लिया जाता है। श्री द्वारका प्रसाद धीरज के साथ अनेक पदो को बडे मिठास से गाते हैं

जबकि ठाकुर गिरधारी सिंह ने एक अरसे की रियाज के बाद अनेक तालों अनेक रागों को प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त करली थी। श्री नारायण सिं भाटी के कंठ बड़े मधुर हैं तथा गायन को अपने विशेष लहजे म प्रस्तुत कर हैं। आवाज म लचीलापन और नन्हीं-नन्हीं मुरकियों का प्रभाव श्रोताओं को आकर्षित करने के लिए काफी है और नारायण इसम कोई कमी नहीं छोड़ता। श्री हरिशंकर मिश्र दिल बहलाव के लिए गाया करते हैं। आप एक अच्छे मचोय कलाकार और गायक हैं। इनके गायन की लोगा ने काफी प्रशसा की है

श्री हनुमान जी चेजारा व श्री बनारसीलाल शमा सेतूवाला बहुत मीठा गाया करत थे और भजन का बहुत शौक रखते थे किंतु आप असामयिक निधन होगया। स्व० मालीराम जांगिड जा स्वय हारमोनियम अच्छा बजाते थे, के सुपुत्र मुन्ना भी ढोलक बहुत सुन्दर बजाता है तथा रा जागरण मे प्रेम से भाग लेता है। श्री नागरमल जी जांगिड भी भक्ति संगीत मन य प्रेमी हैं और स्वय भी गाते हैं।

श्री हीरजी घाभाई, श्री चौथमल माली, श्री गोपाल माली तथा नारायण शर्मा भी भजन मण्डली रखते हैं और अच्छे-अच्छे भजन गाते तथा रात्रि जागरण को सफलता के साथ सम्पन्न कराते हैं। श्री गणपत खड़ा होकर करताल के साथ नाचते हुए अच्छा गाता है। इनके अलावा नवयुवाओं मे अनेक गायक कलाकार समाज के सामने आरहे हैं तथा भक्ति संगीत की साधना में अनवरत लगे हुए हैं। जिनके कुछेक नाम यहां दिय जाते हैं— श्री हनुमान माली, मोती माली, श्रवण, निवास मीणा, फूलचन्द मीणा, महावीर मीणा, भागा नायक आदि।

(ख) शेखावाटी ख्याल गायकी एवं बिसाऊ के ख्याल गायक

शेखावाटी का लोक साहित्य, लोक नृत्य एव लोक नाट्य राजस्थान मे ही नही अन्य राज्यो म भी लोकप्रिय है। राजस्थान की यह अमूल्य धरोहर है। इनमें लोक नाट्य परम्परा से जो प्राप्त है उसका अल्पांश ही अब हमे देखने-सुनने को मिलता है। लोक नाट्य का पूर्ण सुव्यवस्थित रूप तो मिलना कठिन ही है, फिर भी वह जन मानस के आनन्द, उत्साह एव मनोरजन का महत्वपूर्ण साधन है।

विभिन्न अवसरो पर लोक नाटको का आयोजन बडे जोशखरोश के साथ किया जाता है। रम्मत, ख्याल एव तमाशा आदि विधाए लोक नाट्य के

न्तगत ही आती हैं। शेखावाटी म प्रमुखत ख्याल ही अधिक प्रचलित है। ख्याल एक कथा मे गूंथा हुआ पद्यबद्ध नाटक है जिसका कथानायक ऐतिहासिक तथा धार्मिक व्यक्ति होता है। यह एक प्रकार से सगीत में विशेष प्रकार का प्रदर्शन है जिसे ख्याल का नाम दिया जाता है। शब्दावली में धुनों के अनुसार गाने की शैली को भी ख्याल कहते हैं जसे छोटी रगत का ख्याल, बडी रगत का ख्याल, लगडी रगत का ख्याल, लावणी ख्याल, डेढ रगती ख्याल आदि।

ख्याल नाटक का ही एक प्रकार है। शहर या गाव के खुले चौक म इसका मच होता है, जहा दस बारह तख्ते डाल दिये जाते हैं। तख्तो के चारो ओर वृत्ताकार जमीन पर श्रोतागण बठ जाते हैं। ख्याल करने वाले पात्रो को 'खिलाड़ी' कहा जाता है। तख्तो पर सब खिलाड़ी आजाते हैं। एक तरफ साजिन्दा बठ जाते हैं। साज मे मुख्यत हारमोनियम, सारगी, ढोलक, नगारी आदि होते हैं। स्त्री पात्रो का अभिनय पुरुष ही जनाना वस्त्र पहन कर करते हैं।

ख्याल प्रारम्भ होने से पहले कुछ अन्य प्रक्रियाए इस नाट्य शैली म ही पूर्ण की जाती है जसे पहले सफाई वाला सफाई करने के लिए आता है जो सगीत की दूहा शैली मे, दूहा बोलता है— 'भगी आया इश्क दीवाना, मैं आय बना लाल गुरु का बाना।' फिर छिड़काव करने के लिए भिश्ती या सिक्का आता है जो उसी प्रकार दूहा बोलता है। तत्पश्चात् ईश प्रार्थना व गुरु नमन की पक्तिया बोली जाती हैं। इतनी सब प्रक्रियाए पूर्ण होने पर ख्याल प्रारम्भ किया जाता है।

राजस्थान मे ख्याल दो प्रकार से प्रदर्शित होते रहे हैं जिनके अलग-अलग ढग और अलग-अलग रूप हैं— (१) कुचामनी ख्याल (२) शेखावाटी ख्याल। जयपुर मे अलीबख्सी व उदयपुर म भीलो का गवरी भी ख्याल रूप म प्रचलित हैं। कुचामनी ख्याल म उस्ताद हुकमीचद जी पुस्करणा के शिष्य पण्डित लछीराम जी जगह जगह अखाडा कायम करते हैं। अखाडा स्थल अग्राकित हैं— कुचामण, वूडसू, भीण्डी नावा, वसरोली, परवतसर, डेगाणा, मेड़ता जतारण, डाबला, किशनगढ आदि। पुस्कर जी क मेले म कुचामनी ख्याल विशेषतौर पर प्रदर्शित किया जाता है। कुचामनी ख्याल मे नृत्य एव साजसज्जा पर अधिक बल दिया जाता है तथा सगीत पर अपेक्षाकृत कम जबकि शेखावाटी ख्याल जो विशेषत चिड़ावा स निसृत है, म सगीत पर अधिक बल देते हुए नृत्य एव सज्जा पर तुलनीय नियत्रण रखते हुए उसका प्रदर्शन किया जाता है।

बिसाऊ नगर म शेखावाटी ख्याल के प्रति सेठ साहूकारों एव ग्राम जनो मे विशेष लगाव रहा है। यहाँ बिड़ावा से नानू राणा, पन्नाल टाली, गोविन्दराम, बिसाला ढाकोत, दुल्हाराम, भराराम, मूनाराम इत्य ख्यालकर्त्ता आया करते थे। बड़े बूढ़ों से सुना जाता है कि नानू राणा जो इन सबसे अधिक ख्याति प्राप्त ख्याल रचयिता एव खिलदारी रहा है, भी इन नव रचित ख्याल को बिसाऊ म मचित करना तथा यह ख्याल बिसाऊ ख्याल पण्डितो से सशोधित होकर ही अन्यत्र खेला जाता। बिसाऊ में मुख्य ढोला मरवण, वजीर शहजादी, विराट, द्रोपती चीर हरण, जगदेव कका पदमा मण, राजा रिसालू, हीर रांझा, भगत पूरणमल, गोपीचन्द, दुल्हा बा इन्द्र सभा आदि तथा हकरसिया ख्याल समय-समय पर खेले गये हैं। बिस म खेलो की आर्थिक व्यवस्था श्री पूरणमल जी गजाधर जी बुचासिया, श्री रा रामनिरजन झुंझुनू वाला आदि सेठ बहुत रुचि लेकर करते थे, क्योंकि स्वय भी ख्याल के शौकीन थे इस कला की बारीकियो से भलीभा अवगत भी थे।

यो तो ख्याल की जानकारी रखने वाले कस्बे मे बहुत रहे हैं किन्तु इ कला का सूक्ष्मता क साथ अध्ययन एव रचना व मचन पर विशेष अधिक रखन वाले कुछ लोग ही थे उनका सक्षिप्त परिचय यहा दिया जारहा है —

जेसराज सेवदा

आप ख्याल रचना एव प्रदशन के विशेष ज्ञाता थे। बिड़ावा खिलदारी बिसाऊ मे प्रवेश करते ही पहले सेवदा जी को याद किया क और उनकी स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ही प्रदशन करते थे। आपको स ख्याल कण्ठस्थ होते थ। आप बोल को सही स्थान पर सही श दो म प्रस् करने वाल पारखी थ।

करीमा मीर

आप शास्त्रीय सगीत व शेखावाटी ख्याल सगीत के विशेषज्ञ थे ख्याल मे दूहा-लावणी का अधिक प्रयोग होना है। दूहा लावणी पर आप पूरा अधिकार था। जब ख्याल मच पर करीम खा साहब बठे हुए होते थे सभी खिलदारी मच पर दूहा गाते समय पूरी सावधानी बरतते थे। यदि क ताल या लय म चूक होजाती तो खा साहब उसी वक्त उसको खबर लेते कभी कभी तो स्वय टेर को उठा कर दूहे को पूरा करते। यही कारण था f नानू राणा भी खा साहब स पहले सलाम बजाते और कद्र करत थ।

चाँद खां बटवाल

चांद खा साहब ने ख्याल रगत की सूक्ष्म पहचान करने मे महारत हासिल कर रखी थी। आप ख्याल प्रदशन के समय साजिन्दो एव खिलदारियो का वाछित निर्देशन भी दिया करते थे। आप स्वय भी अच्छा गाया करते थे। जब कभी अवसर मिलता आप 'बाल की खाल' निकालने मे कसर नही छोडते थे।

नागजी भाट

भट्ट जी ख्याल के कोरे शौकीन ही नही थे बल्कि ख्याल गायकी मे पूरी दखल रखते थे। आप अदा के साथ बोल को पेश करने मे दक्ष थे। इसलिए खिलदारियो को दूहा बोलते समय अनुकूल अभिनय प्रदशन मे आप पूरा सहयोग प्रदान करते थे।

नागरमल मिश्र

मिश्र जी को जो कुछ कहना होता, डके की चोट कहा करते। आप ख्याल रचना एव मचन कला के अच्छे पारखी थे। आप खिलदारिया की व्यवस्था में भी हाथ बटाते थे तथा आर्थिक सहयोग दिलवाने मे भी पीछे नहीं रहत थे।

मब्दू पटवा

मब्दू पटवा वरिष्ठ अनुभवी ख्याल कलाकारा मे स एक रहे हैं। उस समय के जितने भी ख्याल मचित होते थे, वे भी सभी उनके कठ पर रहते थे। खिलदारी कही भी चूकता या भूलजाता ता मब्दू साहब उनको तुरत बोल कर याद दिलात थे। आप नगारी के तोड पर और बोल पर वाह-वाह की झडी लगा देते थे और खिलदारियो का उत्साह बढाते थे।

सदाराम गुरु

सदाराम जी गुरु एक मोहक व्यक्तित्व के धनी थे। आपका ख्याल गायकी मे गहन अध्ययन एव सगीत की सूक्ष्म पकड खिलदारिया को प्रभावित करने के लिए बहुत काफी थे। आप स्वय ख्याल रचयिता, कवि एव नाटककार रहे हैं। आपका लिखा 'नसरुद्दीन हसन परोस' ख्याल आसपास के क्षेत्र मे प्रसिद्ध रहा है। आपकी पान की दुकान पर रात्रि मे हमेशा ही श्रोताओ की भीड लगी रहती थी, क्योकि आप और आपके साथिया द्वारा नित्य साजबाज के साथ दूहा-लावणी का प्रोग्राम चलाया जाता था। हमेशा रात के दो बज जाना एक सामा य बात थी। इससे कलाप्रेमियो को मनोरजन के साथ-साथ

गायनो एव वादको का अभ्यास होता था और उनसे गायन वादन मे शानदार निसार आजाता था । इनके शिष्यों एव प्रशिष्यो की एक श्रेष्ठ टोली तयार होगई थी । बाहर से आनेवाली टोली पहले गुरुजी के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करती थी ।

सताराम भाट और ओंकारमल ब्राह्मण ख्याल के बडे रसिया थे। कही से खिलदारियो की टोली आने की सूचना मिलते ही इनके उमग चढ जाता और वे सब तरह की व्यवस्था म लग जाते थे । आप दोनो ख्याल के अच्छे गाता थे । बोल का पूरा मोल करते और स्वय भी गाया करते थे । इनकी आवाज बडी प्यारी एव पैनी थी ।

दीना नीलगर व दीना तली ख्याल पर मर मिटने वाले रसिया हुए है । दीना नीलगर थो तो सारे ख्यालो के बोल कठ पर होते थे । ख्याल होने की सूचना मिलने पर उनके घूघर व ध जाते थे । घर के सारे धन्धो को छोड कर इसी म रातदिन लग जात और पूरे समपण भाव स ख्याल को [illegible] करवात थ । गायको को वाह वाह देकर उत्साह बढाने के साथ-साथ खलनेवाली कमियो के प्रति तुरन्त चिल्ला कर रोक लगा कर पुन कहने का आग्रह करते थ । उनके पूरे जीवन को ही ख्याल जीवन कह तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। ऐसे रसिया ख्याल कलाकार मुश्किल से मिलते है ।

हीरा नाई भी रसिया खिलन्दारी था । लोग उसकी तेज चाल और हाथ म रुमाल और अन्य की मुसकान से सारे हँसी के लोटपोट होजाया क थ । उसकी तडक भडक से मोहित होकर गाव के लोग उस 'रोशनी नाम पुकारा करते थ । इनकी आवाज बडी मीठी और तार स्वर म होती थी ज दूर दूर तक भली प्रकार से सुनी जा सकती थी । वे स्वय बहुत अच्छा नाच करते थ । दूहा लावणी को रस मे मग्न होकर बडी मस्ती से गाया करते थे । हालाकि वे ताल का विशेष ध्यान नही रखते थे । इसस कभी-कभी रस भग या रग भग होजाया करता था ।

अमरचन्द धोबी ख्याल का कमाल का रसिया एव कलाकार था । कही भी ख्याल होना हो वह वही पहुच जाया करता था । उसका खाना पीना हराम होजाता जब तक कि वह ख्याल प्रदर्शन को देख कर उसकी सटीक आलोचना न कर लेता । दिन मे किसी दुकान पर बठ कर पूरा मजमा लगा लेने म आप पूरे दक्ष थे । उनके बोलने का अपना अलग ही अन्दाज था ।

आप कहानी के खजाने थे और कथानक कहने मे पूरे दक्ष। जब कभी कहानी का दौर चल पडता तो फिर घण्टा ही नही रात-रात भर विश्राम नही मिलता था। कहानी की तरह ही ख्याल-कथा को भी रस लेकर कहते थे जिसमे सुनने वाले पूरी कहानी सुने बिना नही हटते थे।

इसी क्रम मे श्री मालीराम जी दायमा भी ख्याल गायकी के रसिया और अच्छे ज्ञाता हैं। आपके बोलन का निरालापन लोगो को आकर्षित किये बिना नहीं रहता। आप हास्य एव व्यग्य मे पटु हैं। आपकी स्मृति मे बिसाऊ की प्रमुख घटनाए विचरण करती रहती है। जब भी अवसर आता है, आप प्रसग के साथ उन्हे पेश करके लोगो का मन जीत लेते हैं।

(द) लोक गायक

राजस्थान का लोक जीवन विभिन्न उत्सवो, त्यौहारो एव पर्वों के माध्यम से प्रकट होता है और वही से राजस्थानी सस्कृति का स्रोत प्रारम्भ होता है। राजस्थानी सस्कृति का जीवित रखने म राजस्थान के लोक-गायकों का प्रमुख योगदान रहा है। लोक-गायको के माध्यम से ही हमारी सस्कृति के अनेक आयाम खुलते हैं और वे जनमानस मे ऊर्ध्व दिशा मे मर्यादाओ का मार्ग प्रशस्त करते नजर आते हैं।

(१) ब्यावला गायक

राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र मे ब्यावला गायन की स्वस्थ परम्परा पिछली डेढ शताब्दी से अनवरत चल रही है। राजस्थानी सस्कृति का यह प्रमुख भाग रहा है। ये जन मानस मे भारतीय महापुरुषो एव देवियो आदर्शों एव मर्यादाओ तथा त्याग एव परम्पराओ का रुचि परक पद्य-बद्ध कथानक प्रस्तुत करते हैं तथा उनकी वृत्तियो और रुझान का परिष्कार करते हैं। ब्यावले को पुरुष और स्त्रिया बराबर सुनते हैं तथापि प्रमुखत स्त्रिया ही अधिक सख्या मे होती हैं तथा इसे धार्मिक कृत्य समझते हुए निष्ठा एव भक्ति के साथ श्रवण करते हुए उपदेश ग्रहण करती हैं।

ब्यावला गाने वाले मुख्यत जोगी, ब्राह्मण व गोसाईं जाति के लोग होते हैं। इनमे जोगियो का यह मुख्य काय होता है। वे ब्यावला गाकर ही रोजी रोटी कमाते हैं। उनका यह धधा वश परम्परा से चल रहा है। इनके बाद ब्राह्मणो और गोसाईयो का स्थान है।

ब्यावले को हिन्दी में 'मंगल' कहते हैं । सामान्यतः शेखावाटी में इनमें मंगल, रुक्मणी मंगल आदि ब्यावले बड़े चाव से सुने जाते हैं । इन ब्यावलों में शिव का विवाह, श्री कृष्ण का विवाह विस्तार से बताया जाता है और अनेक उपकथाओं का रस भी मिलता है । नरसी जी का माहेरा भी एक विवाह कथा है किन्तु इसमें मुख्य विषय वस्तु मायरा भरने की है । अवतार श्री कृष्ण अपने भक्त नरसी जी की प्रार्थना पर दौड़े आते हैं और ठाठबाट से मायरा भरते हैं ।

मूलतः हम यह कह सकते हैं कि ब्यावला लोक-गाथा काव्यों में आता है किन्तु विविधताओं को दृष्टिगत रखते हुए इसमें शिष्ट काव्य का सा ही रसानन्द प्राप्त होता है । यह अन्य साहित्यिक काव्यों से अपना पृथक स्थान बनाये रखता है । पिछले वर्षों में कुछ विद्वानों ने अनेक ब्यावलों की और रचनाएं भी की हैं । 'राधामंगल' काव्य भी एक सुन्दर विवाह काव्य है ।[1]

ब्यावला गाने वालों के मुख्य वाद्य सारंगी, हारमोनियम, ढोलक आदि होते हैं । जोगी तो सदैव सारंगी पर ही गाते हैं लेकिन ब्राह्मण आदि गायक आजकल हारमोनियम भी काम में लेने लग हैं । ब्यावला मोहल्ले के लोग मिल कर खुले चौक में बठाते हैं । एक तख्ते पर ब्यावला गायक व उसकी मण्डली बैठ जाती है तथा उसके पास नीचे जमीन पर श्रोतागण बैठ जाते हैं । यह रात्रि में रोजाना सुना जाता है । करीब एक सप्ताह में यह समाप्त हो जाता है । अन्तिम दिवस को मोहल्ले के हर घर से भेंट दी जाती है । इस प्रकार मोहल्ले मोहल्ले में यह कार्यक्रम चलता रहता है ।

सर्वप्रथम गणेश वन्दना होती है, उसके बाद ईश वन्दना और भवानी की स्तुति गाई जाती है । तत्पश्चात् ब्यावला प्रारम्भ करते हैं । ब्यावला गायक संगीत के अच्छे जानकार होते हैं । वे विभिन्न राग रागनियों में भजन व ब्यावले को प्रस्तुत करते हैं । मुख्यतः ये लोग बरवा, चाल बरवा, राग काफी, बसन्त, पहाड़ का दूरा, बहार, माड प्रभाती, भरव-भरवी आदि में गाते हैं । इसके साथ ही राधेश्याम तर्ज और गजल चाल का भी उपयोग करते हैं ।

बिसाऊ में अनेक परिवार ऐसे हैं जिन्होंने मात्र ब्यावला गाकर ही जीवन यापन किया है । आज भी उन घरानों के गायक ब्यावला गाते हैं

---

१ राधामंगल' रचयिता— मुरलीधर पुजारी, सम्पादक डॉ० उदयवीर शर्मा व श्री अमोलक चन्द जांगिड ।

लेकिन अब उनका यह मुख्य व्यवसाय नहीं रह गया है। आधुनिक सभ्यता के द्वारा आये परिवर्तन से अब इन लोक काव्यों की लोकप्रियता कम होती जारही है। बिसाऊ के ब्यावला-गायकों का यहां संक्षिप्त परिचय दिया जारहा है —

स्व० जेसराज वालामरिया बिसाऊ के प्रतिष्ठित संगीतज्ञ, ख्याल-गायकी के सूक्ष्म पारखी, लोकप्रिय भजनीक तथा श्रोताओं के अत्यन्त प्रिय ब्यावला गायक थे। आप तपसी जी के डेरे में सदैव जतगिरि महाराज के सानिध्य में रहकर गायन किया करते थे। बाहर से आने वाले गायकों में आपकी धाक मानी जाती थी। ब्यावला गायन में आपकी संगत में ढोलकी वादक स्व० श्री बींजराज स्वामी और स्व० श्री सल्लाराम स्वामी रहते थे।

स्व० श्री गोरुराम गोसांई ने ब्यावला गाने वालों में सबसे अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आप १९१० ई० से १९४० ई० तक अनवरत ब्यावला गाने का ही कार्य करते रहे। गोसांई जी मात्र शेखावाटी क्षेत्र में ही नहीं बल्कि कलकत्ता, बम्बई आदि महानगरों में भी ख्याति प्राप्त थे। शेखावाटी के सेठ साहूकार उन्हें वहां बुलवाते और ब्यावला सुनते थे। फिर पर्याप्त भेंट देकर विदा करते थे।

स्व० श्री देवजी जोगी और उनके पुत्र स्व० श्री सुरजाराम जोगी भी बहुत वर्षों तक बिसाऊ व अन्य क्षेत्रों में ब्यावला सुनाने का पावन कार्य करते रहे हैं। अन्य राज्यों में जाकर मारवाड़ी समुदाय को ब्यावला, भजन आदि सुनाकर उनमें देश के प्रति प्रेम जगाते और धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति रुचि उत्पन्न करते थे। वे एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहते और अपनी सारंगी की मधुर तान से निसृत भक्तिरस का पान कराते रहते थे।

म्हादाराम जोशी भी गाव में ब्यावला गाकर सुनाया करते थे। वे इस कार्य को अंशकालीन धन्धे के रूप में अपनाए हुए थे।

पिछले दो दशकों से ब्यावला के प्रति लोगों की रुचि समाप्त प्राय होने लगी है। कुछ तो वर्तमान में आधुनिक अनेक श्रव्य साधन होगए और कुछ मशीनों के कारण बहुत अच्छे अच्छे कार्यक्रम भली प्रकार से सुने जाने की सुविधाएं मिल गई। रेडियो, टेपरिकार्डर, टी वी आदि से लोगों की रुचियों में परिवर्तन आगया। फिर भी ब्यावला गाने का क्रम एकदम से टूट नहीं

गया है । अब भी ये कार्यक्रम स्थान स्थान पर सुन्दर ढग से सम्पन्न होते हैं। इनके गायकों ने भी जनमानस के अनुरूप ही कथ्य शैली म परिवर्तन कर लिए तथा सारंगी के स्थान पर आधुनिक वाद्यों का प्रयोग करने लग गए। श्री सदाराम गुरु के दोनों पुत्र स्व० श्री बजनाथ व श्री गोपीराम समयानुकूल ख्यावला गायन कला मे दक्ष थे वे श्रोताओं को आकर्षित करने की तकनीक जानते थे । इसलिए उनका कार्यक्रम सदैव सफल रहा । इनके साथ संगति करने वाले श्री अजमेरी खा कलावन्त व श्री सूरदास रहे हैं। वर्तमान में श्री नौरंगराय गोलासरिया एक सफल ख्यावला गायक हैं और बिसाऊ व आसपास के क्षेत्रों म लोगो की ख्यावला सुनने की इच्छा को पूर्ण करते रहते हैं ।

(२) राती जगा गायक

शेखावाटी क्षेत्र सतियो की पावन भूमि रही है तथा पीर पैगम्बरों एव देवों की पूजा स्थली रही है । बिसाऊ नगर के जनमन म इनके प्रति अगाध निष्ठा एव पूज्य भाव रातीजगा के माध्यम से देखने को मिलता है। जनसाधारण मनौतिया मनाते है और अपना इच्छित कार्य पूर्ण होने पर सतियों, पीरो एव देवो का रातीजगा बोला हुआ होता है, पूरा करते हैं तथा प्रसाद बाटते हैं । सतियो एव देवी-देवियो का रातीजगा प्राय धनिक वर्ग के लोग बोलते है तो पीरो का रातीजगा सामान्य वर्ग के । किन्तु संस्कृति का मौलिक रूप जनसाधारण म ही देखने को मिलता है ।

गूगोजी एव रामदेवजी की रातें प्राय हरिजनो मे चमार जाति के लोग जगाते हैं । वैसे अन्य किसी भी जाति मे बोली गई रात इन्ही के द्वारा जगाई जाती है । गूगोजी की रात जगाने म ये लोग डरु व कचोळा (कासी का बाटका) वाद्य काम मे लेते है । डरु के दोनो ओर ढोलकी की तरह चमड़ा मढ़ा हुआ होता है तथा बीच के भाग को जो सुतलियो से नियन्त्रित होता है, को मुट्ठी में लेकर दबाव डालते रहते है तथा दाहिने हाथ मे एक पतली छिली हुई जड़ की लकड़ी रखते हैं जिसे मढ़े हुए चमड़े पर मार कर स्वर निकालते हैं । ये गुंजित स्वर अन्य वाद्यो से अलग ही रसदायक होते हैं । इनके साथ एक व्यक्ति कासी के कचोले (प्याले) को लकड़ी के डण्डे से बजाता रहता है जो लय को समान ताल मे बाधता है । दोनो वाद्यो की आवाज एक विशेष प्रकार का प्रभाव छोड़ती है । डरु वाद्य एक प्रकार से वैज्ञानिक वाद्य ही कहा जा सकता है । जनश्रुति के आधार पर लोगो का मानना है कि जहाँ डरु बजाई जाती है, वहाँ सर्प नही आता । इसी विश्वास के साथ गूगाजी की रात जगाई जाती है ।

ग्रामीणो का अधिकाश समय खेता व जगलो मे बीतता है जहा सप काटने की घटनाए हाती रहती हैं। इसलिए ऐसे स्थानो पर गूगोजी की रात जगाई जाती है। लोगों की काफी भीड होजाती है तथा रातभर वाद्यो के साथ उनका गायन व नत्य चलता रहता है। वाद्या की गू ज चारो ओर के वातावरण मे जल-उर्मियो की तरह तरगे उत्प न कर देती हैं। उन तरगो की थिरकन धरती पर भी महसूस की जा सकती है। इससे आस-पास के सप घबराकर दूर निकल जाते हैं और वह स्थान निरापद होजाता है।

कुछ भी हो, जनसाधारण मे गूगोजी की 'सकळाई' पर अटूट विश्वास और अगाध श्रद्धा है। उनक लिए इससे इतर सोचना भी कल्पनातीत है। अ य देवताओ के प्रति भी उनका चि तन कितना कमजोर बन जाता है, इसका उदाहरण इस कहावत मे स्पष्ट झलकता है 'राम बडो क गूगो' ? बडो है सो ता बडो ही रसी पण सापां सं वर कुण बाधै।" इसके अलावा माताजी की रात व पित्तर पित्तरानी की रात भी जगाई जाती है।

रातीजगा को जगाने वाले मुख्य गायक अग्राकित हैं—
मुखी जोरा चमार, भूरो चमार, गणेशा चमार, नथू चमार, नौरगा चमार आदि।

(३) धमाल गायक

वसन्त पचमी से होलिकोत्सव तक शेखावाटी मे धमालें गाई जाती हैं। बिसाऊ मे धमाल गायको की टोलिया मोहल्लो के अनुसार बनी हुई हैं जो डफ के साथ धमालें गाते हैं। धमालें दो प्रकार की गाई जाती हैं—

(१) शास्त्रीय (थाह मे) (२) सुगम (चलत मे) शास्त्रीय धमाल गायको की परम्परा अब समाप्त हो चली है। शास्त्रीय धमाल एक ताल म निबद्ध होती है जिसकी लयकारी लम्बी एव ऊची होती है। गायक के पैर कभी कभी उठते हैं तथा डफ का वादन छोटे छोटे सकेता पर चलता है। सम आने पर भी डफ की थाप व कदम की अदा मे उठान व बोल एव शानदार व आकपक सामञ्जस्य उपस्थित करता है। शास्त्रीय धमाल का अ तिम गायक नगर मे सावलराम मीणा था। उसके बाद ये धमाले गाते हुए नही देखा।

चलत की धमाल साधारण कहरवा ताल मे गाई जाती है तथा इसे प्राय सभी शौकीन लोग गाते हैं। इसमे गायक, वादक एव नतक सभी परो मे घुघुरु बाध रहत है। कुछ के हाथा म डफ तो कुछ के हाथो मे छिमछिमिये

होते हैं। साथ में बांसुरी वादक भी होना है। एक गायक (मुखिया) स
प्रारम्भ करता है फिर सभी उस टेर को उठाते हैं और वाद्य एक लय
बजाते रहते हैं। साथ में बैठते हुए एवं चलते हुए एक गोल घेरे में नाचते
हैं। चलत की धमाले पुरानी व नई चाल की गाई जाती हैं तथा पुरानी च
में पौराणिक आख्यान प्रधान होते हैं तो नई चाल में राजनीति एवं शृंगार
प्रधान होता है।

बिसाऊ में धमाल गायको के बहुत से नाम आगे दिये जारहे हैं
धमाल गाने में गाव में प्रसिद्ध माने जाते रहे हैं —

जैस जी राजपूत, जेसाराम बालासरिया, बिलासा बालासरिया, रावत
भोजराज जी का, सीवू खाँ, सावलराम मीणा, गोपालजी चौहान, मनजी दायमा,
गणपत स्वामी, सूरजमल स्वामी, धन्नो कुम्हार, काका बल्लभ मिश्र, पूरणम
मीणा, काना मीणा, रामेश्वर बाबा, गोपाल माटोलिया, बिरजा दरजी,
हनुमान दरजी, नवला, डाला, रूपा माली, द्वारकाप्रसाद दरोगा, परसा माली,
गोपाल माली आदि।

(ग) वाद्य वादक

गायन, वादन एवं नृत्य से संगीत सर्वांगपूर्ण बनता है। वाद्यो का
वादन ही संगीत चक्र का आधार स्तम्भ है। प्राचीन काल में सरस्वती का वाद्य
'वीणा' तथा नारद मुनि की वीणा प्रसिद्ध है। बाद में चलकर सूरदास के
तंबूरे ने समाज पर अपना भरपूर प्रभाव छोड़ा। इसीलिए कहा है—

तंत्री नाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग।
अनबूडे बूडे तिरे जे बूडे सब अंग॥

बिसाऊ में भी विभिन्न वाद्यो के वादक रहे हैं जिन्होंने अपने वादन
से संगीत प्रेमियो को आकर्षित किया है तथा समाज पर अचूक प्रभाव छोड़ा है।
सन् १६०० ई० से अबतक जो वादक हुए हैं, उनकी जानकारी बिसाऊ के वयोवृद्ध
महानुभावों से प्राप्त कर एक सूची के रूप में यहां दी जारही है —

१ हरिबक्स– सितार वादक २ मोहम्मदबक्स– सारंगी, सितार, तबला वादक
३ करीमबक्स– सितार एवं तबला वादक ४ पन्नालाल सुनार– तानपुरा वादक
५ कालूराम जी पुजारी– हारमोनियम ६ विरमादत्त जी पुजारी– हारमोनियम
व तबला ७ याकूब– सितार हारमोनियम व तबला ८ रसीदखां– सारंगी

१०. मासो मीना— इकतारा १० दीना साई— इकतारा ११. जसराज गलासरिया— इकतारा १२ नोपाराम नायक— इकतारा १३ नेखूराम नायक— इकतारा १४ भूपाराम भगी— इकतारा १५ मकबरखां पठान— इकतारा १६ काना मुनीम— इकतारा १७ लिछमण रामकुमार बैलवान— इकतारा १८ मुसरफ भगत— इकतारा १९ दीनेखां राजाजी— इकतारा २० रामसिंह— सितार, बांसुरी, हारमोनियम २१ मालीराम भाटी— हारमोनियम २२ मालीराम मिश्र— हारमोनियम २३ म्हालाराम नाई— हारमोनियम २४ सदाराम गुरु— हारमोनियम २५ अजमेरी खां— तबला, ढोलक, हारमोनियम २६ नृसिंह देव स्वामी— हारमोनियम २७ ब्रजलाल सोनी— हारमोनियम २८ मोहनलाल भाय— कलारॉट, हारमोनियम, ढोलक २९ गजानन्द मिश्र— हारमोनियम ३० बाका वल्लभ— तबला ३१ भालाराम भाय— हारमोनियम, तबला, ढोलक ३२. सूरदास— ढोलक, नगारो ३३ प्रकाश स्वामी— तबला, हारमोनियम ३४ मजनलाल नाई— हारमोनियम ३५ अमोलकचन्द जांगिड— हारमोनियम ३६ गिरधारीसिंह ठाकुर— बैंजो ३७ रामा स्वामी— हारमोनियम, तबला ३८ दुर्गा जोशी— ढोलक ३९ मुन्ना जांगिड— ढोलक ४० बैजनाथ पुरोहित- हारमोनियम ४१ गापीराम पुरोहित- हारमोनियम ४२ पनिया दरोगा- बांसुरी ४३ बंशी दरोगा ड्राइवर— बांसुरी ४४ पीरु फरास (old)— बांसुरी ४५ केसो पोद्दार— बांसुरी ४६ गुभजी मिश्र— बांसुरी ४७ हसनखां— अलगोजा ४८ लिछमण मीणा— अलगोजा ४९ भगवाना मीणा— अलगोजा ५० भूरा माली— इकतारा ५१ मादुलसिंह दरोगा— बांसुरी ५२ सीताराम माटोलिया— हारमोनियम ५३ मातूराम माली— हारमोनियम ५४ रामूजी बासोतिया— हारमोनियम ५५ नोरंगराम बासोतिया— हारमोनियम आदि आदि।

२ मंच की मीनारें, ताल की तरंगें

(अ) नाट्य कला

कला धर्म निरपेक्ष होती है जो न रंग देखती है न जाति, न धर्म देखती है न सम्प्रदाय, न ऊंच देखती है न नीच। वह तो हर मन की गहराइयों का स्पर्श करते हुए समान रूप से सुखानन्द देती है। कलाग्नि के तप में तपस्वी तो गलता है पर मूल्य पनता है। अतः जहां कला के साधक जीवित हैं, वहां मानवीय गुणों का प्रभाव नित्य है - अनन्त है।

शेखावाटी अंचल के इस छोटे से कस्बे बिसाऊ में नाट्य कला को विशेष उन्नति के अवसर मिले। अतः यहां के कलाकारों एवं कलासंस्थाओं के महत्व का यथोचित मूल्यांकन न करना सच्चा न्याय न होगा।

स्व ठा श्री विष्णुसिंह जी के शासन काल को बिसाऊ नगर में हा साहित्य एवं संस्कृति के उत्थान का स्वर्णयुग कहा जावे तो अत्युक्ति न होगी। ठा साहब सन् १८९२ में गद्दी पर बैठे तथा सन् १९०८ ई में अपनी मृ. से शासन सम्भालते रहे। तब से ही बिसाऊ नगर में ठाकुर साहब की प्रेरणा से सेठ साहूकारों की ओर से अनेक कार्यों में धन लगाया गया। परि शेखावाटी के श्रेष्ठ कलाकार, संगीतज्ञ, वास्तुकार, काष्ठकला विशेषज्ञ साहित्य संस्कृति के ज्ञाता बिसाऊ में आकर सदा के लिए बस गए। ठाकुर साहब को इन कलाओं के प्रति अगाध प्रेम था। अतः उन्होंने इन क के विकास एवं प्रसार के लिए अनेक संस्थाओं को जन्म दिया तथा कला प्रेम को सुविधाएं प्रदान कर प्रोत्साहन दिया।

सन् १९२० ई से १९६० ई तक का समय बिसाऊ में नाटय क का सर्वश्रेष्ठ काल कहा जा सकता है। उस जमाने में भारत के बड़े बड़े नग में पारसी शैली के नाटकों का मंचन बड़े जोशखरोश के साथ होरहा था उसी का प्रभाव बिसाऊ की नाटय कला पर भी पड़ा। उस समय क के प्रेमी कलकत्ता आदि स्थानों पर जाकर नाटक की मंचीय व्यवस्था, अ कला, परदों की बनावट आदि का अनुभव करके बिसाऊ में उसी शैली नाटक के मंचन का प्रयत्न किया करते थे। बाद में चलकर तो पात्रों को अ अनेक बार प्रसंगानुसार नाटक अथवा तत्संबंधी सिनेमा अनेक बार दिखाया जाता था, ताकि पात्र ऐतिहासिक पात्र के जीवन को मंच पर स्वाभाविकता के साथ उतार सकें।

नाटकों का स्थायी मंच बनाने हेतु ठा विष्णुसिंह जी ने एक भवन (पासरा) जो गाव के पश्चिम दरवाजे के पास स्थित है, प्रदान किया जिसमें आषाढ़ कृष्णा २ संवत् १९७५ (सन् १९२१ ई) को 'विष्णु नाटय परिषद' संस्था की स्थापना हुई जिसके सर्व प्रथम संस्थापक अध्यक्ष स्व श्री केशवनाथ शुक्ला (मास्टर) हुए। वर्तमान में श्री रघुनाथ प्रसाद गाटालिया इसके मंत्री है।

आगे चल कर वि स १९९३ (सन् १९३६ ई) में ठा रघुवीरसिंह जी के नाम पर स्व डा वासुदेव जी चूड़ीवाला ने 'श्री रघुवीर कला मन्दिर' की स्थापना की। बाद में श्री श्रीलाल जी मिश्र, प रामदत्त जी पुजारी व श्री डा मनुभाई शाह के कठिन परिश्रम से यह संस्था उत्तरोत्तर उन्नति करती गई। वर्तमान में इसके मंत्री श्री श्रीलाल जी डीडवाणिया हैं।

इसके बाद नगर मे अनेक संस्थाए जन्मी और बाल्यकाल मे ही काल कवलित होती गई। हाँ, एक संस्था 'युवक कला परिषद्' जिसकी स्थापना १९७० ई मे श्री अलाद्दीन खां, श्री शुभकरण जांगिड व श्री दुर्गाप्रसाद मिश्र जसे युवको द्वारा की गई जिसे अब श्री नृहसिंहदेव स्वामी के पुत्र श्री रामा स्वामी अपने युवा साथियो के बल पर भली प्रकार स सचालित करता है। इस संस्था ने अनेक नाटको का मचन करके खटकने वाले अभाव की पूर्ति करने का भरसक प्रयत्न किया है। ये तीनो संस्थाए समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण नाटको का सफल मचन करती रही हैं।

बिसाऊ में नाटक कला के अनेक पारखी विद्वान हुए जिन्होने नाटक-परम्परा को आगे बढाया तथा उनके कठिन परिश्रम व उचित दिशा निर्देशन से नाटक संस्थाए उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रही। उनके नाम दिये बिना बिसाऊ का साहित्य, नाटक, सगीत का इतिहास सही माने मे इतिहास नहीं कहा जा सकता। अत उनके नाम अग्रांकित हैं — स्व डा श्री केशवलाल शुक्ला, श्री गोपालदास स्वामी, श्री गोवर्द्धन गुरु, श्री गजाधर घोडिया, श्री श्रीलाल मिश्र, श्री रामदत्त पुजारी, श्री मनोहर शर्मा, श्री रामवल्लभ मिश्र, श्री सदाराम गुरु, श्री मालीराम भाटी, श्री नर्हसिंहदेव स्वामी, डा मन्नूभाई शाह आदि।

प्रारम्भिक काल म एक मात्र संस्था विष्णु नाटय परिषद् की ओर से अनेक नाटको का मचन हुआ जिनम नगर के सभी कलाकार भाग लेते रहे। काफी वर्षों तक संस्था पर पुराने कलाकारो का वचस्व बना रहा जिनमे प्रमुखत श्री डा केशवलाल, श्री गोपालदास स्वामी, श्री गजाधर घोडिया, श्री सदाराम गुरु व श्री श्रीलाल मिश्र थे।

कालान्तर मे युवा कलाकारो का असन्तोष स्पष्टत उभर कर सामने आया और परिणामत 'श्री रघुवीर कला मन्दिर' संस्था की स्थापना हुई जिसम पुराने खेमे के दो प्रमुख महारथी प श्रीलाल मिश्र एव प. रामदत्त शर्मा ने इस संस्था की व्यवस्था को सम्भाला। आपने वर्षों तक इस संस्था के अध्यक्ष व मत्री पद पर रहकर इसका सफलता पूवक सचालन किया। युवावग मे श्री राम-वल्लभ काका, श्री मालीराम भाटी, श्री शुभकरण मिश्र, श्री गजानन्द मिश्र, श्री नर्हसिंहदेव स्वामी, श्री हरिशकर मिश्र, श्री निवास दायमा आदि कलाकारो के अथक परिश्रम ने परिष्कृत नाटय-कला का प्रदर्शन कर शेखावाटी क्षेत्र मे अपना स्थायी प्रभाव छोडा जिनकी रोचक स्मृतिया आज भी लोगो के दिलो मे अमिट छाप बनाए हुए हैं। रामराज्य, प्रताप प्रतिज्ञा, अभिमन्यु, सिकन्दर,

मीरा आजादी के दीवाने आदि नाटकों को कभी भुलाया नहीं जा सकता ग्रौ इनमे प्रमुख भूमिका अदा करने वाले श्री गजानन्द मिश्र, श्री शुभकरण मि श्री श्रीलाल दरोगा, श्री रामवल्लभ काका, श्री मालीराम भाटी, श्री हरिक मिश्र, श्री गिरधारी ठाकुर, श्री गोविन्द ठाकुर, श्री भोलाराम आय ग्रं अभिनयकर्त्ताग्रों की स्मृतियां गुजरे जमाने के दिनों की यादें ताजा कर देती हैं

उपर्युक्त नाटकों की शृंखला में भक्त प्रह्लाद, हरिश्चन्द्र, भक्त ध्रुवो अजीबरात, सावित्री सत्यवान, महामाया, दुर्गादास, परिवर्तन, रक्षा-बन्ध सामाजिक क्रान्ति आदि नामों को और जोड़ा जासकता है जिनमें अभि करने वाले कलाकारों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की गई थी। स्व सदाराम प रामदत्त जी पुजारी श्री काकावल्लभ व श्री मालीराम भाटी से सम्पर्क करने पर जो सूचनाएं उपलब्ध हो सकी उसके अनुसार बिसाऊ में निम्नलि नाटकों का मंचन हुग्रा —

विष्णु नाट्य परिषद् द्वारा अभिनीत —

१ बिल्व मंगल (भक्तसूरदास) २ स्वर्ण कुमार ३ चन्द्रहास ४ वीर ह ५ महामाया ६ दुर्गादास ७ परिवर्तन ८ क्रान्ति सन ९ भयंकर १० पौरस सिकन्दर ११ रामराज्य १२ भर्तृहरि १३ रक्षाबन्धन १४ सा सत्यवान १५ सम्राट अशोक १६ दिल की प्यास १७ वाल्मीकि १८ अनिरुद्ध १९ अजीबरात २० सामाजिक क्रान्ति २१ श्रवण २२ अभि २३ पाप परिणाम २४ नलराजा २५ लकड़हारा।

भाग लेने वाले कलाकार —

१ भगतराम पुरोहित, चूरू २ गोपालदास स्वामी ३ डा लोकनाथ ४ केशवलाल ५ महादेव ६ गोवर्द्धन गुरु ७ गजाधर घोडिया ८ कुंजीलाल ९ पूरणमल पुजारी १० बद्रीनारायण वैद्य ११ महावीर मास्टर १२ नि पुजारी १३ प रामदत्त पुजारी १४ नहसिंहदेव स्वामी १५ शुभकरण १६ रामवल्लभ मिश्र १७ मनोहर शर्मा १८ नन्दकुमार भाटी १९ श्रीलाल डीडवाणिया २० कान्तिलाल कम्पाउण्डर २१ निवास दा २२ म्हालाराम नाई २३ भोलाराम आय।

सखियों का अभिनय —

१ गिन्नीराम २ केसर नाई ३ माहताल आय ४ म्हालाराम ५ सत्यनारायण वावमाण ६ श्रीलाल दरोगा ७ मान दीलाल नाई ८ प नार पुरोहित ९ केदार मिश्र।

गीतकार— १ केसर सराफ, रामगढ २ भजनलाल ३ प्रहलाद दरोगा ४ मालीराम भाटी

निर्देशक— १ डा केशवलाल २ गोपालदास ३ नागरमल मुनीम ४ सदाराम गुरु ५ रामदत्त पुजारी ६ बृजलाल जोशी

पोशाक— अब्दू पटवा

सीन— मथुराम सुनार व घड़सीराम मिस्त्री

कलामन्दिर द्वारा अभिनीत नाटक —

१ भक्त प्रहलाद २ दिलकी प्यास ३ हरिश्चन्द्र ४ प्रताप-प्रतिज्ञा ५ भक्त अम्बरीश ६ सिकन्दर ७. सावित्री सत्यवान ८ सती अनुसूया ९ उषा अनिरुद्ध १० श्रीमती मजरी ११ अभिमन्यू १२ अजीबरात १३ मीरा १४ आजादी के दीवाने १५ रामू चनणा १६ ढोला मरवण

मुख्य कलाकार — १ प रामदत्त पुजारी २ मालीराम भाटी ३ रामवल्लभ काका ४ गजानन्द मिश्र ५ शुभकरण मिश्र ६ हरिशंकर मिश्र ७ गोविन्द पुरोहित ८ गिन्नी पुरोहित ९ रामू चपरासी १० ब्रजलाल स्वर्णकार ११ वासुदेव जोशी १२ रुक्मानन्द माटोलिया १३ वासुदेव दरजी १४ केसरदेव जागिड़ १५ इन्दरचन्द नाई १६ नृहसिंहदेव स्वामी १७ श्रीलाल डीडवानिया १८ मदनलाल दाधीच।

संगीत— १ केसा सराफ २ प्रहलाद दरोगा ३ मालीराम मिश्र ४ मालीराम भाटी ५ सदाराम गुरु ६ गणपत जोशी ७ सोहन भाण्ड ८ मोहनलाल भाय ९ अजमेरी खा १० सूरदास

सीन— १ रामवल्लभ मिश्र २ निवास दायमा ३ मालीराम भाटी

पोशाक— मुरली दरजी, बशीधर आदि

मेकअप— केसव, प्रहलाद, म्हालीराम नाई मालीराम नाई आदि

गायक— मोहनलाल भाय, गिन्नीलाल पुरोहित, केसर नाई, सत्यनारायण वाक्याण, श्रीलाल दरोगा, रामू चपरासी, गोविन्द ठाकर, गिरधारी ठाकर, नारायणसिंह भाटी, रामू दरोगा आदि

कॉमिक— गोरधन गुरु, रामू चपरासी, रामू दरोगा, ब्रजलाल सुनार गजानन्द मिश्र, धनश्याम भाट, नारायणसिंह दरोगा आदि

पर्दा तयारकर्ता— किशनलाल दरोगा, रामकुमार चेजारा, द्वारकाप्रसाद चेजारा हनुमान चेजारा, रामदेव चेजारा, नन्दकुमार भाटीवाडा आदि

सन् १९६० ई के बाद के न्‍णशों म नाटककला का ह्रास प्रारं
हो गया था । सिने-चित्रों का प्रचार एव प्रसार, रेडियो, केसेट, विडियो र्‍
साधनो का व्यापक प्रयोग होने से नाटको के प्रति लोगा की अभिरुचि कम होनी
चली गई और इन सब का प्रभाव बिसाऊ नगर के नागरिको पर भी प
स्वाभाविक था । दूसरे, नाटक-मचन परम्परागत शली से हो रहा था त
अधिक व्यय साध्य था । तीसर, आधुनिक तकनीक एव नवीन शली व प्राव
का नितान्त अभाव जनरुचिया का परिष्कार नही कर पाई । बिसाऊ में परम्प
से ऐतिहासिक एव धार्मिक नाटको का ही मचन हाता रहा । सामाजिक नाट
की ओर कभी ध्यान ही नही गया । परिणामत मात्र परम्परा का निर्वा
होना रहा । वही नाटक, वही शली तथा वही सगीत आज भी चल रहा है
जबकि आज की नाटयकला एक नए परिवेश म ढल कर समाज के नवीनतम
तथ्यो एव प्रसगो एव मूल्यो का व्यग्यात्मक प्रकटीकरण करके लोगो के दिलों
को झकझोर देने मे कोई कोरकसर नही छोडती । चौथे, स्त्रीपात्र का पाट कोई
पुरुष अदा करे, यह इस युग मे स्वाभाविक नही माना जाता । शेखावाटी क्षे
की महिलाए मच पर सहज ही आना नही चाहती । अत महिलापात्रो के
अभाव मे नाटयकला के विकास मे अवरोध उत्पन्न कर दिया जिससे एक ठहराव
सा आगया । युवा वग की ओर से भी कोई ठोस प्रयास नही किया गया ।
हालाकि सगीत एव नत्य मे नवीन तेवर देखने को मिल जाते हैं ।

नये कलाकारो एव पदाधिकारियो मे श्री मलाल्भीन खाँ श्री रघुनाथ
माटोलिया श्री भवानीशकर शर्मा श्री गौरीशकर पुजारी, श्री दुर्गाप्रसाद
मास्टर, श्री शुभकरण जांगिड, श्री रामा स्वामी श्री प्रमोद मिश्र श्री बाबू लाल,
श्री द्वारकाप्रसाद न्‍रोगा का पुत्र आदि युवका के नाम लिए जासकते हैं ।
इन लोगो ने पुरानी व नई सस्थाओ म रहकर अनेक नाटको क मचन में
महत्वपूर्ण योगदान किया । इनके द्वारा अभिनीत नाटको मे मुख्य मुख्य नाटक
अप्राकित हैं —

१ शाही लकड़हारा २ अजीबरात ३ राम् चनणा ४ ढोलामरवण
५ रूपवसन्त ६ आजादी के दीवाने [illegible] राखी आदि ।

अब नाटक अभिनय नत्य एव मचीय व्यवस्था मे जिन पुराने व नये
कलाकारो ने अपनी प्रमुख भूमिका अदा की है उनका सक्षिप्त परिचय यहाँ
दिया जारहा है । वस्तुत इनके बिना बिसाऊ के नाटयकला एव सस्कृति का ज्ञान
अधूरा ही रह सकता है —

८. डा० केसवलाल शुक्ला

आप गुजराती थे। आपके पिता श्री बिसाऊ के पोद्दार अस्पताल मे मुख्य चिकित्सक नियुक्त होकर आये थे। उनके स्वर्गवास के बाद उनके स्थान पर उनके पुत्र डा केसवलाल एक लम्बे समय तक चिकित्सक रहे। आपकी नाटयकला एव नृत्यकला के प्रति गहरी रुचि थी। आप 'विष्णु नाटय परिषद्' के सस्थापक अध्यक्ष रहे। आपने अपने समय मे नाटको का सफलतापूर्वक मचन करके अपनी योग्यता का परिचय दिया। आपने अनेक नवयुवको को तैयार किया तथा नगर के सम्मानित वैद्यो और गुरुओ को इस ओर आकर्षित करके उनका भरपूर सहयोग प्राप्त किया।

१० रामदत्त शर्मा

आपका जन्म बिसाऊ नगर के पुजारी परिवार म हुआ। आपने विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की और ५० वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। आप रघुवीरकला मन्दिर सस्था के तीन दशको तक अध्यक्ष, मत्री आदि पदो पर कार्यरत रहे। आप कलामन्दिर की ओर से जितने भी नाटक खेले गए, उन सबका गहन अध्ययन करके, उनसे सम्बन्धित फिल्मो को देख कर सशोधन करके उनका पुनर्लेखन किया करते थे जिससे नाटको के दृश्यो म तारतम्यता व भाषा की प्रभावशीलता तथा सवाद मे कसावट व भावो और विचारो के सम्प्रेषण में चारचाद लग सके। प श्रीलाल मिश्र उनके नाटको को 'चू-चू का मुरब्बा' बताया करते थे। आपका अभिनय भी काफी सराया गया है। आप एक अच्छे प्रोम्पटर भी रहे हैं।

श्री गौरधन गुप्त

आपने नाटक म हास्य अभिनय को प्रधानता दी। आप द्वारा रचित अनेक कामिक नाटको म अभिनीत की गई जिनमे आप स्वय निदेशक, अभिनेता और प्रस्तोता होते। आपने अनेक गजलो की रचना की और उनका प्रयोग नाटको मे भी किया गया जो दर्शको द्वारा काफी सराही गई।

श्री मालीराम मिश्र

आप नाटको मे सगीत निदेशक का पद भार वहन करते थे। आप स्वय पैरो वाले बडे हारमोनियम को दोनो हाथो से बजाया करते तथा सुमधुर ध्वनि एव लहरो से नाटक के दृश्यो को काफी प्रभावशील बना देते थ।

श्री श्रीलाल पडिहार

आप पुराने कलाकारो में से एक हैं। एक साधारण दुकानदारी करने वाले व्यक्ति द्वारा नाटयकला में प्रवेश कर सफलता के साथ पाव जमा लेना साधारण व्यक्ति के बलबूते की बात नही। आपका अभिमन्यु का पार्ट ... लोग नहीं भुला पाये हैं। आपने अनेक बार सखी का पाट भी अदा किया था।

रामवल्लभ मिश्र 'काका'

आप मिश्र परिवार से हैं। आप ठिकाना बिसाऊ की सेवा में ... वर्षों तक रहे। आप ऊँट के श्रेष्ठ सवारो म गिने गए। आप कला मन्दिर के संस्थापक सदस्यो मे से एक हैं। आप सीन सेटिंग और मचीय व्यवस्था के पारखी और नियत्रक रहे। आपका अभिनय कौशल अद्वितीय रहा है। 'सिकन्दर पोरस' नाटक म प्रमुख पात्र सिकन्दर का किरदार जिस सूझबूझ व बारीकी से अदा किया उस आज भी जन-समाज भूल नही पाया है। आपने सिकन्दर के पूरे व्यक्तित्व को स्वाभाविक ढग से परदे पर उतारा। लम्बा डीलडौल विशाल सीना, सिर पर राजा की किलगी, एक हाथ तोप की नाल पर तथा दूसरा हाथ हवा मे खेलता हुआ एक धमाके के साथ 'पाव मेरे चूमते हैं ... जहा के बादशाह' बोल दर्शका को रोमाचित कर गए। सचमुच उस ... के वीरोचित बमब ने सिकन्दर की बहादुरी को जीवत बना दिया।

श्री निवास दायमा

आप कला मदिर के एक कमठ कार्यकर्ता थे। नाटक के लिए ... तयार करवाना और उसके लिए आवश्यक सामान जुटाना उनका मुख्य ... होता था। टिकिट विक्रय मे भी उनका योगदान सराहनीय रहा। गर्मी के ... बिहारीजी के मदिर से सट कर एक बडी छान के नीचे छिड़काव करा चारपाइया डलवा कर रखते थे और गाव के प्रमुख लोग बठकर उनके ... हास्य-व्यग्य की बौछार छोड़ा करते थे। निवास स्वय छेड करने मे अव्वल दर्जे का माहिर था। वह नाटक के पात्रो की तलाश करने मे भी बड़ा ... था। आपका एक जीप दुर्घटना मे स्वर्गवास हो गया। आपके शोक म ... दिन पूरा बाजार बन्द रहा था।

श्री गजानन्द मिश्र

आप एक लम्बे अर्से तक अध्यापन करने के पश्चात् नगरपालिका ... सेवारत रहे। आपने अनेक वर्षों तक कला मन्दिर के मत्री पद पर ...

किया। आपके अभिनय ने सदैव दर्शकों को गहरा प्रभावित किया। आपके अनेक नाटकों के मुख्य पात्र का अभिनय मुक्तकंठ से सराया गया। आप अधिकांशतः धीरोदात्त और नायक का पाट ही लेते और उसे बहुत ही गंभीरता के साथ मंच पर खरा उतारते। 'रामराज्य' नाटक में आप द्वारा अभिनीत राम का किरदार और 'प्रताप प्रतीज्ञा' में प्रताप का अभिनय बिसाऊ के नागरिकों के लिए सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

श्री शुभकरण मिश्र

आपका जन्म बिसाऊ के मिश्र परिवार में हुआ। आप एक योग्य अध्यापक रहे। आप कला मंदिर के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। आप विशेषतः भावना प्रधान पात्रों का अभिनय बखूबी कर लेते थे। आपके चेहरे एवं मुख मुद्रा से ही भाव तरंगें निसृत होती रहती थी। बोल फूटने से पूर्व ही दर्शकों के मन्तव्य का स्पर्श उनकी भाव मुद्राओं से ही हो जाता था। आपके सिकन्दर 'नाटक' में पुरु, भर्तृहरि' में भर्तृहरि तथा 'रामराज्य' में लक्ष्मण के अभिनय ने दर्शकों की आंखों में आंसू ला दिए। विशेषकर प्रेमी पात्रों का अभिनय इनसे खूब फबता था।

श्री नृसिंह देव स्वामी

आप कला मन्दिर के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। आप नाटकों की एक लम्बी शृंखला से बराबर जुड़े रहे। आपका अभिनय औरों से कुछ हट कर था। आवाज में गहरा भारीपन और जोश का अतिरंजित प्रभाव अभिनय की प्रवृत्ति में कभी-कभी गतिरोध कर डालते। किन्तु संगीत के माध्यम से अभिनय की गतिशीलता में कहीं अवरोध उत्पन्न नहीं होता था। आप एक प्रभावशाली श्रेष्ठ गायक थे। आपका स्वर्गवास सन् १९८३ ई० में पक्षाघात से होगया।

श्री हरिशंकर मिश्र

आप श्री गजानन्द मिश्र के लघु भ्राता हैं। आप अध्यापन के साथ २ नाटकों में भी बराबर भाग लेते रहे। दोनों बंधुओं की जोड़ी नाटकों में 'राम लक्ष्मण' की तरह जानी गई। आप भाव प्रधान अभिनय करने में बड़े कुशल हैं। 'प्रताप प्रतिज्ञा' नाटक में शक्तिसिंह का अभिनय दर्शकों में काफी सराहा गया। सूक्ष्म मनोभावों का सम्प्रेषण सहज भाव भंगिमा के साथ पात्रानुकूल वातावरण सृजन करते हुए निर्वाह करना इनकी खास खूबी रही है। मंच और दर्शकों के मध्य भेद को समाप्त कर पात्र का सामान्यीकरण करने में कृत्रिमता

से परहेज ही करते । आप पूर्ण शक्ति लगाकर समर्पण के साथ अभिनय कला को साधना में लगे रहते थे । आपका 'भर्तृहरि' नाटक में 'पींगला' का अभिनय भी खूब प्रशंसित हुआ ।

श्री मालीराम माटो

आपका अधिकांश समय संगीत एवं नाट्यकला में ही बीता है। बचपन कलकत्ता में संगीत सीखने में बीता । उसके बाद बिसाऊ में लगभग नाटकों का निर्देशन, संगीत निर्देशन व अभिनय प्रस्तुतीकरण करते हुए अनेक कलाओं व आयामों का स्पर्श कर पाये । इनके अभिनय में परम्परागत इंगितों की प्रधानता रही । 'प्रताप प्रतिज्ञा' नाटक में आपका अकबर का अभिनय भाव एवं कला की दृष्टि से अन्यतम रहा ।

श्री म्हालीराम नाई

आपने स्त्री पात्र का अभिनय करने में शानदार महारत हासिल करली थी । वीर राजकुमारियां, रानियों व प्रमुख सखी का किरदार आप शानदार ढंग से प्रस्तुत करते । आप स्वयं एक अच्छे गायक भी थे ।

श्री श्रीलाल डोडवाणिया

आपने नाटकों में धार्मिक महिला देवियों का अभिनय के अलावा 'सिकन्दर' नाटक में दियाकर तथा 'भक्त प्रहलाद' में प्रमुख पात्र प्रहलाद का अभिनय बड़ी सफलता के साथ अदा किया । आप नाटकों में आये गानों को स्वयं प्रस्तुत करके अभिनयकला को और भी प्रभावी बना देते थे । आपको सैकड़ों कवित्त एवं सवैये कण्ठस्थ हैं । आपको हास्य एवं व्यंग्य को समयानुसार प्रस्तुत करने में कमाल हासिल है ।

श्री वेणीमाधव

आपने विष्णु नाट्य परिषद् की वर्षों निःस्वार्थ भाव से सेवा की । आप परिषद् के मंच की देखभाल तथा आवश्यक सामान का रखरखाव दक्षता से करते थे । आपका युवावस्था में ही स्वर्गवास हो गया, यह अत्यन्त खेद की बात है ।

श्री अलाद्दीन खां

आप डाक विभाग में सेवारत रहते हुए भी संगीत एवं नाटकों में सक्रिय दिलचस्पी के साथ आगे आये । आपने संस्था की व्यवस्था एवं आर्थिक सहयोग जुटाने में भरपूर योगदान किया । आप कलामन्दिर के अनेक वर्षों तक

कार्यकारिणी सभा के सदस्य रहे। जब जब भी संस्था मे शिथिलता आई, आप उसे सक्रिय बनाने मे जुट जाते थे। आप एक अच्छे गायक और डफ नर्तक हैं। आप शास्त्रीय संगीत के भी अच्छे ज्ञाता है।

श्री अमोलकचन्द जांगिड

आपने श्री रघुवीर कला मन्दिर के अनेक वर्षों तक मंत्री पद पर रहते हुए संगीत का प्रचार एवं प्रसार किया तथा अनेक नाटको का मंचन करवाया। आपने स्व० अजमेरी खा को कला मन्दिर में संगीत शिक्षक के पद पर रखा। उक्त अवधि मे अनेक युवको ने शास्त्रीय एवं सुगम संगीत सीखा।

श्री रघुनाथ प्रसाद माटोलिया

आपको बाल्यकाल से ही नाट्यकला के प्रति रुचि रही है। आपने अनेक नाटकों मे अच्छा अभिनय प्रस्तुत किया। आपने विष्णु नाट्य-परिषद् के अनेक वर्षों से मंत्री पद का कार्यभार सम्भाल रखा है। सन् १९६० के बाद मे अभिनीत नाटकों की शृंखला मे नई कडिया जोडने में इनका प्रशंसनीय योगदान रहा है।

श्री भवानीशंकर शर्मा

आप स्व० श्री दुर्गाप्रसाद जी शर्मा के सुपुत्र हैं। आप अनेक वर्षों तक विष्णु नाट्य परिषद एवं कला मन्दिर के मंत्री पद पर सुशोभित रहे। आपने अपने समय मे अनेक नाटको का सफलता के साथ मंचन करवाया। आपकी संगीत में भी रुचि है। विशेषकर आप स्कूली विद्यार्थियो का नाट्यकला एवं संगीत का प्रशिक्षण देकर तैयार करते रहे है, यह एक कला के प्रति विशेष लगाव का द्योतक है।

श्री गौरीशंकर पुजारी

आप नाटकों में रंगमंचीय व्यवस्था तथा पात्रों की वेशभूषा व साज-सज्जा का कठिन कार्य परिश्रम के साथ तैयार करवाते हैं। आप स्वयं एक अच्छे कलाकार हैं। आपने अनेक नाटको मे अनेक पात्रों का अभिनय कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। आप कॉमिक भी प्रस्तुत करते हैं।

श्री मोहनलाल आर्य

आप नाटकों मे स्त्री पात्र का अभिनय एवं गायन प्रस्तुत करते रहे हैं। आप विशेषतः नाटक मे संगीत देने के लिए स्मरण किये जाते [redacted]। आप क्लारनेट बहुत अच्छी बजाते हैं।

श्री सुधीर दायमा

आप श्रेष्ठ बाल कलाकार प्रसिद्ध हुए। आपका लवकुश का पर्ट अत्यन्त श्रेष्ठ रहा।

इनके अलावा निम्नलिखित कलाकारों को भी उनके अभिनय के लि भुलाया नहीं जा सकता।

१ गिरधारीसिंह ठाकरा— मीरां का (प्रमुख पात्र) अभिनय, मध्यन्तर में गायन का प्रस्तुतीकरण, बैंजो का कुशल वादक।
२ नारायणसिंह भाटी— सखी का पाट, नृत्य एवं गायन का प्रस्तुतीकरण
३ घनश्याम भाट— रंगमंच पर लोक नृत्य प्रस्तुत करना, अच्छा नर्तक।
४ भूरा दरोगा— हास्य व्यंग्य, महिला पात्र का अभिनय।
५ देवीसिंह— कलामन्दिर के मंत्री पद पर रहे, अनेक नाटकों में अभिनय किया
६ श्री मदनलाल दाधीच— नाट्यलेखन का कार्य, रिहर्सल में प्रोम्प्टर का क
७ प्रमोद मिश्र— आजादी के दीवाने नाटक में भगतसिंह का शानदार अभि
८ ओमप्रकाश पुजारी — आजादी के दीवाने नाटक में चन्द्रशेखर आजाद अभिनय
९ ब्रजलाल स्वर्णकार— कॉमिक के प्रमुख पात्रों का अभिनय प्रस्तुतीकरण
१० रामू चपरासी— कामिक के पात्रों का अभिनय
११ बाबू खां— नाटकों में गायन एवं नृत्य का शानदार प्रस्तुतीकरण
१२ श्री दुर्गाप्रसाद मिश्र— अनेक नाटकों में कामिक का प्रस्तुतीकरण, निर्दे स्वयं अच्छे कलाकार। रामू चनणा नाटक बिसाऊ व मण्डावा में मंचन किया।

(ब) घुंघरु के स्वर

नृत्य का विकास मानव के उद्‌भव के साथ-साथ ही हुआ मान चाहिए। नृत्य मानव को एक ईश्वरीय वरदान है। इसलिए वह अपनी आत्मीय भावनाओं का प्रकटीकरण नृत्य के द्वारा करता आ रहा है। वह अपनी अभिवृत्तियों एवं कलाओं का विकास इस माध्यम से करते रहने की साधना में लगा रहता है। उसे इसकी प्रेरणा सदैव प्रकृति के विशाल रंगमंच से मिलती रहती है।

पुराणों के अनुसार आदि नर्तक भगवान शंकर माने जाते हैं। उनके ताण्डव नृत्य (संहार नृत्य) त्रिपुर नृत्य तथा दाम्पत्य नृत्य जगत विख्यात हैं। पार्वती

का लास्य नत्य सृष्टि के निर्माण हेतु हुआ था। रामायण तथा महाभारत काल में क्रमश रावण ने ताण्डव नृत्य द्वारा भगवान आशुतोष को प्रसन्न करने तथा अर्जुन ने उत्तरा को नत्य की शिक्षा देने के प्रसंग मिलते है। बाद मे चल कर भरतमुनि ने 'नाटयशास्त्र' ने ही नृत्य का शास्त्रबद्ध कर दिया। नत्य के भावो, मुद्राओ और अभिनय की एक प्रणाली बनादी गई। उसी के अनुसार आज भारत में चार प्रमुख शास्त्रीय नृत्य माने जाने लगे— भरत नाट्यम्, कथकलि, मणिपुरी और कत्थक।

बिसाऊ मे शास्त्रीय नृत्य की कोई परम्परा की जानकारी उपलब्ध नही होरही है। फिर भी ठाकुर विष्णुसिंह के समय मे अनेक नत्यागनाए नगर मे आकर रहीं और अपने नृत्यो से रगमहल को रगीन बनाया। इनमे बीबो, दुर्गा, जस्सी, रामकुमारी और बसन्ती प्रमुखत गिनाई जा सकती है। बिहारी कत्थक के पिताश्री कथकली नत्य मे बेजोड रहे हैं। उनका घुघुरओ पर कमाल का नियत्रण था। घुघुरुओ की जोडी म से किसी एक घुघरु की आवाज निकाल कर वे अपनी साधना व अभ्यास का नमूना प्रस्तुत करते थे।

सन् १६४५ ई से १६५५ ई के दशक म स्व० इन्दरचन्द नाई एक मात्र शास्त्रीय नत्य के कलाकार रहे। उनका नाटको म ताण्डव नत्य एव राधाकृष्ण का शृगार प्रधान नत्य दर्शको के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा। उक्त नत्यों मे मास्टर इन्द्र की मोहक भावभगिमाए एव मुद्राए, घुघुरुओ के रसीले स्वर तथा ताल-साम्य कमाल का रहा है और इनको का रजन करने मे ही नही बल्कि आध्यात्मिक रसानुभूति कराने मे भी उन्होने सफलता प्राप्त की। आपने अनेक सालो तक कलकत्ता के रगमच पर भी अपनी नत्यकला एव अभिनयकला का शानदार प्रदर्शन किया था।

इनके अलावा नाटको म सामान्य नृत्य प्रस्तुत करने वाले कलाकार अप्राक्ति हैं — मोहनलाल आय म्हालीराम नाई, केसर नाई, श्रीलाल डीडवाणिया, धनश्याम भाट, नारायणसिंह भाटी, प्रमोद जोशी, बाबूला आदि।

लोक नृत्य

लोक नृत्य किसी क्षेत्र के आचलिक जनजीवन के उल्लास का प्रतीक है। उस समय प्रत्येक व्यक्ति के हृदय के बन्द द्वार खुल जाते है। शेखावाटी क्षेत्र के लोक नत्य भी पूरे राजस्थान के जन जीवन का प्रतिनिधित्व करने मे पूर्ण सक्षम हैं। उनके परो की थिरकन लोकगणा म शिव के त्रिपुर नृत्य सा वीरत्व एव पार्वती के 'लास्य' सी सुखानुभूति उत्पन्न कर देती है।

बिसाऊ नगर में विभिन्न त्योहारों एवं उत्सवों पर निम्नलिखित नृत्य किये जाते हैं — (१) घूमर (२) गींदड़ नृत्य (डांडिया नृत्य) (३) डफ नृत्य (४) चौपड़ नृत्य (५) निशान नृत्य (गुगोजी) (६) कच्छी घोड़ी नृत्य (७) भोपाभोपी नृत्य आदि ।

अधिकांश नृत्यों का मूल घूमर नृत्य है । घूमर मूलतः राजस्थानी नारियों का नृत्य है जिसे पुरुष भी स्त्रियों का वेश धारण करके करते हैं । घाघरे ओढ़नी से सुसज्जित तथा आभूषणों से अलंकृत नारियां घूमर नृत्य करती हैं, उस समय उनके हाथों का संचालन व कमर की लचक देखते ही बनती है । बारीक ओढ़नी के घूंघट में चमकता हुआ उनका मुख चन्द्र और भी मनोहारी लगता है। सावन के महीने में घूमर डाली जाती है तथा 'लूर' गाई जाती है । विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर प्रायः घूमर नृत्य होता है । चाकपूजने (विवाह उत्सव) के समय घूमर नृत्य अवश्य ही किया जाता है ।

सारे भारत में गींदड़ नृत्य राजस्थान के प्रमुख नृत्य के रूप में ख्याति प्राप्त है । होलिकोत्सव के दस दिन पूर्व ही गींदड़ नृत्य प्रारम्भ हो जाता है । यह रात के समय एक बड़े मैदान में आयोजित किया जाता है । मैदान के मध्य में एक लम्बी बल्ली रोपदी जाती है । उसके चारों ओर तख्ते डाले जाते हैं। कभी कभी इसका मंच बहुत ऊँचा बनाया जाता है । पूरे मैदान में छिड़काव किया जाता है । तख्ते पर नगाड़ा व नगाड़ची होता है । मैदान में एक गोल घेरे में बन्ध कर गींदड़ नृत्य किया जाता है । काफी संख्या में लोग विभिन्न वेषभूषा धारण करके नृत्य में भाग लेते हैं । नगाड़े का वादन और डंकों की चोट में लयदारी के साथ सम चलता है । गोल घेरे में सबके पैरों में बंधे घुंघरुओं की आवाज वातावरण को गुंजायमान कर देती है ।

बिसाऊ में परम्परानुसार उतरादे दरवाजे के बाहर, दक्षिण दरवाजे के बाहर स्टण्ड पर अगूणे दरवाजे के बाहर चेजारों के मोहल्ले में, गुदड़ी बाजार में तथा आथूणे दरवाजे के बाहर मालियों के मोहल्ले में गींदड़ नृत्य होता है । किन्तु सन् १९३८ ई में गुन्दड़ी बाजार का गींदड़ नृत्य एक अविस्मरणीय घटना बन गई । श्रीराम रामनिरंजन झुंझनूं वाला व गुन्दड़ी बाजार के लोगों में ठन गई और प्रतिद्वन्द्वता हो गई । दोनों ओर से उस समय गींदड़ नृत्य पर लाखों रुपये खर्च किए गए । दोनों ओर से कई दिनों तक दिनरात गींदड़ नृत्य चलता रहा । आसपास के नगरों एवं गांवों से गींदड़ नृत्य के

कलाकार बुलवाये गए और उनके लिए भोजन एवं नशे आदि का पूरा प्रबन्ध किया गया। स्थानीय कलाकारों को भी भोजन आदि देने की व्यवस्था की गई थी। दोनों ओर के गींन्द नृत्य मे दिनरात विभिन्न तरह के स्वांग लाये जाते थे और आसपास के नगरो और गावो के लोगो की भीड नित्य गींदड देखने के लिए आया करती थी। इस गींदड नृत्य मे मोहनलाल आय के नेतृत्व म सतरज के मोहरों की चाल के स्वाग ने बडे बडे लोगों के दिल जीत लिये थे। गींदड नृत्य में सतरज की पूरी चालें (हाथी, घोडे, प्यादिया, बादशाह, वजीर आदि का प्रदर्शन) दिखाने म कमाल की कला का प्रदर्शन किया गया। उसे सर्वश्रेष्ठ स्वाग घोषित किया गया। दूसरा, भूरजी दरोगा का सिर पर सात घडे रख कर गींदड नत्य करना द्वितीय दर्जे का स्वांग घोषित किया गया। भूरजी का सुनहरी ओढणा और कलीदार घाघरे में सिर से पैर तक स्वर्ण आभूषणों से अलकृत 'कचन छरी सी कामिनी' का वह नृत्य दर्शकों को अब भी भुलाये नही भूलता। इनके अलावा अनेक तरह के स्वाग रोजाना लाये जाते थ। अन्त म बिना हारजीत के तत्कालीन ठाकुर साहब के हस्तक्षेप से गींन्द समाप्त किया गया।

सन् १९६० ई में स्व जमनाधर जी पोद्दार के पुत्र श्री नथमल जी पोद्दार के प्रयत्न से गणतन्त्र दिवस के शुभ-अवसर पर दिल्ली मे बिसाऊ के गींन्द एव घूमर नृत्यकारों की एक टोली बुलवाई गई। राष्ट्रपति की उपस्थिति म दोनो प्रकार के नृत्यों का प्रदर्शन किया गया। उस समय उन नृत्यो की काफी प्रशंसा की गई। उक्त टोली का नेतृत्व श्री गौरीशकर पुजारी ने किया तथा निर्देशन का कार्य श्री मानीराम भाटी ने किया। नृत्यकारो मे श्री भूरा दरोगा, हनुमानजी दरजी, श्री भूनिया दरोगा, श्री हसनखा नगाडची, बिरजू दरोगा, शकर मीणा आदि थे। हनुमानजी दरजी बिसाऊ के एक श्रेष्ठ लोक कलाकार हैं। आप होली के दिनो मे सारी सारी रात नृत्य करते रहते किन्तु थकने का नाम नही लेते। आपका डफ के ऊपर नृत्य बडा प्रसिद्ध रहा है। इसलिए उक्त गणतन्त्र दिवस के अवसर पर भी आपका डफ के ऊपर नृत्य का प्रदर्शन करवाया गया जिसने दर्शकों को विमोहित कर दिया और तालियो की गडगडाहट म नृत्य समाप्त हुआ। श्री भूरजी दरोगा का सात घडो को सिर पर धारण किए नृत्य का प्रदर्शन बडा शानदार रहा। उनकी लचक और घूमर नृत्य पर जनता वाह्वो उछल पडी। गींदड नृत्य मे भाग लेने वाले कलाकारो के नाम अग्रांकित हैं — सोहन घसूदी, सुलताना मीणा, गोपीराम दरोगा, टीकू माली, मातू माली, मोती माली, लिछमण माली, निवास माली, स्याली माली, परसो माली, भागर जाट, रामेश्वर-गणपत चमार, बनवारी माली, गोपाल माली, शार्दूलसिंह आदि।

गींदड नत्य मे प्रमुख रोल नगाडची का होता है। बिसाऊ में निम्नलिखित नगाडची प्रसिद्ध रहे है — रसूला तेली, मग्घो मोची, फूलो मावो हसनखा, मिलू माली, नारायण कुम्हार, धनजी कुम्हार, पूरण मीणा आदि।

डफ नृत्यकार भी वही हैं जो गींदड नृत्यकार रहे हैं। डफ नत्य वालो मे श्री हनुमानजो दरजी का नाम सबसे ऊपर आता है। क्योंकि उन्होंने अपने जीवन के स्वर्णिम समय को डफ नत्य मे ही व्यतीत किया। ... पर नृत्य बडा मनमोहक होता था। एक तो उनका पतला शरीर, दूसरे शरीर पर जनाने कपडे बहुत अच्छे सोहते-फबते थे। इसलिए उनके अगो का सचालन सबको आकर्षित करता था। इनकी बराबरी में आते श्री सुलताना मीणा व सोहनलाल घसूदी, श्री मूनाराम दरोगा व मीणा हैं।

डफ के साथ बासुरी बजाने वालो का योगदान भी कम नहीं होता। बासुरी वादको में मुख्यत निम्नलिखित कलाकारो के नाम बताये जाते हैं पीर फीरास व साइजी, कैसा पौद्दार, शुभजी मिश्र, पनिया दरोगा, वशी भानु नसिंह दरोगा आदि।

गूगोजी का निशान नत्य व कच्छी घोडी नत्य को युद्ध नत्य का न दिया जा सकता है। इन दोना नत्यो मे युद्ध के बाजे बजाय जाते हैं हथियारो के सचालन का प्रदशन किया जाता है। कच्छी घोडी नृत्य एक गोल घेरे म दोनो ओर के वीर कृत्रिम घोडा पर सवार होकर एक विशेष चाल एव नृत्य के साथ आक्रमण व प्रत्याक्रमण तथा आक्रमण को निरस्त करते बचाव क साथ निकल कर पुन आक्रमण का प्रदशन ढोल-नगारो के वादन साथ साथ चलता रहता है। कृत्रिम घोडा कपडे व कागज का बना हुआ होता जिसे कलाकार बीच के भाग को कमर में डाले रहता है। उसके चारों ओर कपडे की झूल होती है जिससे कलाकार का अधोभाग नजर नहीं आता ऊर्ध्वभाग अश्वारोही जैसा ही नजर आता है। इसे देख कर प्राचीन युद्ध दृश्य आखों के सामने घूमने लगता है। इसस दर्शकों म वीरभावना का स्फुरण होता है। इस नृत्य के कलाकार बिसाऊ में प्रशंसित बताये जाते हैं— (१) रसूला तेली (२) समाउद्दीन तेली (३) नूरा तेली (४) जमाल तेली।

निशान नत्य का अनुसूचित जाति क लोग करते हैं। निशान को हाथ मे लिए हुए नगारा व बजाना (बडा नगारा) बजाते हैं। ढूप क हाथ

ाकळ होती हैं जिसे नाटकीय ढग से सिर पर मारते हैं। गूगोजी के मेले पर मशान नृत्य बडे जोशखरोश के साथ चलता है। इस प्रकार वीर भावना से अभिभूत नत्य करते हुए गूगाजी पीर के स्थान पर पहुचते हैं।

यादो के झरोखे मे विभिन्न कलाकार

ठिकाने के समय मे ही बिसाऊ म कुछ लोग अपनी कला साधना, कारीगरी एव सवारी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उस समय आवागमन के लिए हाथी, घोडे, ऊँट, रथ आदि का उपयोग हुआ करता था। ठिकाने के पास स्वय की सेना होती थी। घोडो के लिए अस्तबल, ऊटो के टोळो के लिए बाडे व हाथियो के लिए बडे बडे नोहरो की व्यवस्था की जाती थी। बिना साधन वाले लोग पदल यात्रा किया करते थे। ठिकाने व मनिको के करतब भी देखने योग्य होते थे।

ठिकाने के अलावा बडे बडे सेठ साहूकारा व अन्य मध्यवर्गीय लोगो के पास भी बहुत अच्छी नसल के ऊट होते थे। उनका बडे लाड प्यार से बनाव शृगार किया जाता था। उस समय ऊट की सवारी का बडा शौक था। गणगौर के मेले और अन्य त्योहारो पर ऊटो की दौड कराई जाती थी तथा सव प्रथम को पुरस्कार बाटे जाते थे। इसलिए ऊट सवारी के उस्तादो की बडी कद्र थी। बिसाऊ मे प्रख्यात उस्ताद प्रसिद्ध हुए — श्री बुद्धगिरि जी मिश्र, श्री अकबर खा खोखर श्री घीसा कसाई, श्री मुकारब खा आदि। बाद मे चल कर श्री रामवल्लभ काका भी एक अच्छे ऊट सवार बने।

अच्छे घुड सवारो के नाम यहा दिये जारहे हैं जिन्होने अपने समय मे काफी नाम कमाया था —

(१) नासरअली हकीम (२) मरजी मिश्र (३) मुकारब खा (४) सद्दू खा (५) हासम खा (६) नादू खा गोलमदार (७) फरीद खा (८) नारायण जी दरोगा।

श्री फरीद खा घोडी को फेरने एव तेज बनाने मे दक्ष थे। आपके लिए सुना जाता है कि एक बार आपको एक ठठेरे की 'बोदी घोडी' देकर खेतडी सूचना पहुचाने का हुक्म दिया गया। वे घोडी को तेज करने की विद्या जानते थे। इसलिए उन्होने इस मरियल घोडी को औषध खिला कर शीघ्र स्वस्थ कर लिया तथा निर्धारित अवधि म खेतडी पहुच गए और समाचार सुगता कर कुछ घण्टो म ही बिसाऊ वापस आगये।

ठिकाने मे राणियो के लिए रथों की विशेष व्यवस्था की हुई थी। ठाकुर के कृपा पात्र सेठ साहूकारो को भी रथ रखने को विशेष छूट मिली हुई थी। रथ के लिए सुन्दर बलो की जोडी और एक बैलवान की आवश्यकता होती थी। बलिष्ठ व कुशल बैलवान ही रथ सवार होता था। बिसाऊ में उस समय अनेक कुशल रथसवार हुए, उनके नाम अग्रांकित हैं —

(१) जवान जी दरोगा (२) अणदोजी बलवान (३) रामकुमार जी बलवान (४) ठडू माळी आदि।

बिसाऊ ठिकाने की ओर से दक्षिण दरवाजे के बाहर प्रसिद्ध 'हाथियों का नोहरा' था जिसमे दो या तीन हाथी हमेशा रहा करते थे। हाथियों के महावत भी वहीं रहकर हाथियो के खाने पीने की व्यवस्था करते थे। प्रत्येक हाथी के लिए उस समय रोजाना बीस सेर के दो बडे 'रोट' पका कर खिलाने की व्यवस्था थी। सेठ साहूकारो को हाथी के होदे पर ढुकाव निकालने को आना ठिकाने की ओर से प्राय मिल जाया करती थी। हाथी को बस में करने का काम महावत का होता है। इसलिए कुशल महावत ही को ढुकाव आदि के लिए भेजा जाता था। कभी कभी दुघटनाओ मे महावतो को जान से हाथ धोना पडता था। एक बार चूरू के सेठ के पुत्र के विवाहोत्सव पर जयपुर से हाथी भेजा गया। उस हाथी का महावत बिसाऊ का चांदा था। बिसाऊ और चूरू के रास्ते मे हाथी बिगड गया और उसने चांदा महावत को एक खेजडे की डाल व होदे के बीच फास लिया तथा अपनी सूड से चांदा का काम तमाम कर दिया।

बिसाऊ के निम्नलिखित महावत प्रसिद्ध हुए —

(१) भीखजी महावत लालू का पिता (२) मिसरी महावत (३) गीगा महावत (४) चान्दा महावत (५) मुनीर महावत (६) लालू महावत।

बिसाऊ ठिकाने के पास अनेक जगी तोपें भी थी इसलिए अच्छे कुशल तोपची और गोलमदार भी रहा करते थे। राजा व राजकुमारो की सालगिरह पर तोपो की सलामी दी जाती थी। जयपुर आदि राजा के पधारने पर उनको २१ तोपों की सलामी दी जाती थी। बिसाऊ के अगूने दरवाजे के पास तोपखाना बना हुआ था जिसमे क्रम से तोपें रखी होती थीं। उन तोपों में एक तोप बहुत बडी थी जिसको उस समय जहाजी तोप के नाम से पुकारा करते थे।

बिसाऊ मे अनेक तोपची प्रसिद्ध हुए हैं। उनके नाम जानकारी के लिए यहा दिये जारहे हैं —

(१) इलाहीबक्स मुरजादखानी (२) पीरु खा (३) सहजू खा (४) बिदल खा (५) इलाही बक्स (६) महतू खा— जहाजी तोप का तोपची।

यहा के निशाने बाज भी कम ख्याति प्राप्त नही थे। आसपास मे उनकी बडी धाक थी। यहा उनके नाम दिये जा रहे हैं —

(१) गुलराज केडिया[1] (२) ठा० विष्णुसिंह जी (३) लादूखा पठान (४) हासिम खां (५) भवरसिंह राजपूत (६) ठा० रघुवीर सिंह

बिसाऊ मे उस समय स्थान-स्थान पर अखाडे हुआ करते थे। वहा हमेशा कुश्ती करने का अभ्यास चला करता था। लोगो मे शरीर का बलिष्ट बनाने और कुश्तिया लडने का बडा चाव था। प० श्रीलाल जी मिश्र की बगीची व डाकीदो का कुआ कुश्ती लडने व अभ्यास करने के प्रसिद्ध स्थान थे। बिसाऊ में उस समय नामी पहलवान जो हुए, उनकी एक सूची यहा जानकारी के लिए दी जारही है —

१ निजो जोशी २ शिरू जोशी ३ श्रीलाल मिश्र ४ हनुमान मिश्र ५ बल्लभ मारोलिया ६ किशार मिश्र ७ विलास बालासरिया ८ चोला बालासरिया ९ काला बालासरिया १० बिरजा दादू का ११ श्रीलाल दरोगा १२ सुरजमल स्वामी १३ मनजी दायमा १४ काका बल्लभ १५ जीता जोशी १६ माला मुसद्दी १७ नन्दकिशोर मिश्र १८ गोदूराम पुजारी १९ गोदू माली २० किदार जी का पुत्र हनुमान जी मिश्र २१ बानू नीलगर २२ मूनो भाट २३ जीवण सिगतिया २४ अत्तरफिरोस पहलवान।

३ वास्तुकला

बिसाऊ नगर अनुमानत तीन सौ वर्ष पूर्व का बसा हुआ है। ठाकुर श्यामसिंह के समय से यहा अन्य क्षेत्रों से आकर अनेक सेठ-साहूकार बसने लगे थे। सेठो के प्रभाव से नगर मे व्यापार बढने लगा और चारो ओर से माल का आना जाना प्रारम्भ हो गया। उन्हें ठिकाने की ओर से जान-माल की सुरक्षा एव तत्सम्बन्धी अन्य सुविधाए मिली हुई थी। अत वे स्थायी रूप से

---

१ गुलराज जी केडिया ब दूर से चिरमी का अचूक निशाना लगाने मे सिद्धहस्त थे। विवरण— केडिया जातीय इतिहास, पृष्ठ सख्या १६२

यहा बस गए और उन्होने नगर के विकास में भरपूर सहयोग प्रदान किया। उन्होने स्थान-स्थान पर कूए, धर्मशालाए छतरियां, औषधालय, हवेलिया, प्याऊ, बगीचे, बावडिया, जोहड़े, तालाब, मन्दिर आदि बनवाए। इससे मजदूरों को मजदूरी मिलती रहती थी तथा कलाकारो को अपनी कला-प्रदर्शन का सुअवसर मिलता था। उस समय मजदूर निर्धारित समय में कितना ज्यादा काम करता है, यह नहीं देखते थे बल्कि वह कितना अच्छा काम करता है, को विशेषत परखा जाता था। कारीगरो व मजदूरो की हाजिरी उनके टगे हुए अगरखियों को गिन कर ही कर दिया करते थे। सेठो के पीछे मुनीम लोग भी दरियादिल हुआ करते थे। इसलिए किसी प्रकार के 'मजदूर सगठन' की आवश्यकता ही नहीं थी। तब कारीगरो मे प्रतिस्पर्धा होती थी और वे अपनी अपनी उत्कृष्ठ कलाओं का प्रदर्शन करके ख्याति प्राप्त करते थे।

यहा भवन निर्माण में चिकनी मिट्टी, खान के बाठे (पत्थर), बाठ फोड़ कर बनाई हुई रोडी को पका कर तैयार किया हुआ चूना तथा उदयपुरवाटी क्षेत्र में रघुनाथगढ से गढी हुई तयार खभिया काम मे लाई जाती रही हैं। उस वक्त लोहे का सामान उपलब्ध कराना बडा कठिन था। इसलिए डाटे के मकान हुआ करते थे। आवश्यकता पड़ने पर लकडी की कडिया (बीम) काम म लाई जाती थी।

वास्तुकला एव स्थापत्यकला की दृष्टि से जो निर्माणकार्य विशेष महत्वपूर्ण है, उनका यहा सक्षिप्त विवरण दिया जारहा है—

बिसाऊ का गढ

स्व० शार्दूलसिंह जी के सबसे छोटे पुत्र श्री केसरीसिंह जी को राज के पाचवें भाग म बिसाऊ का क्षेत्र मिला। बिसाऊ, जो पहले कभी बिसाने की ढाणी कही जाती रही होगी, मे केसरी सिंह जी ने सवत् १८०८ में एक विशाल गढ का निर्माण करके उसका नाम केसरगढ रखा। अनुमानत इसका परकोटा सवत् १८३० तक श्री सूरजमल जी के समय मे बन कर तयार हुआ था।

किला दो गज मोटी दीवाल उठा कर बनाया हुआ है। इसमें कुल सात बडी बडी बुर्जें हैं जिनमे एक 'हजारी बुर्ज' कहलाती है। इनमे सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया हुआ है। गढ के चारो ओर की दीवारो में तकनीकी छेद बने हुए हैं जिनम से होकर व बुर्जों से गोलिया दागी जा सकती थी। गढ़ में

मुख्य दरवाजा पूरा लोहे की पत्तियो से जड़ा हुआ है। इसके मध्य मे लोहे के बड़े-बड़े भालो के फलक लगे हुए हैं जिसे हाथी भी तोडने मे असमर्थ रहता है। इसको पार करने के बाद करीब चालीस गज की दूरी पर गढ का दूसरा दरवाजा आता है। इसकी बनावट भी प्रथम दरवाजे के समान है। इसमे बैठ कर मुसाहब राजकाय किया करते थे। इसके दाहिनी ओर विशाल दीवान खाना है जिसको श्री बलदेवदास जी ने बनवा कर तयार करवाया था। इससे आगे तीसरा दरवाजा (पोळ) मुख्य महल (जनानखाना) का आता है जिनमे चन्द्रमहल शीशमहल तथा विसन निवास विशेष प्रसिद्ध हैं।

गढ के बाहर दक्षिण दरवाजे की ओर एक राजकीय कुआ और एक मन्दिर है। कुआ और गढ सुरंग से जुडे हुए बताते हैं। आपातकाल मे उसका उपयोग किया जाता था। बाद मे चलकर गढ के भीतर भी एक कुई बनवाई गई थी। गढ के चारो ओर बस्ती को भीतर समेटे हुए मजबूत परकोटा बना हुआ है जिसके चारो दिशाओ मे चार दरवाजे बने हुए है। उत्तरी, दक्षिणी व पूर्वी दरवाजे तो अब नष्ट प्राय हैं, किन्तु पश्चिमी दरवाजा आज भी पूरी तरह कायम है जिसमे पिछले वर्षों तक बिसाऊ ठिकाने के अन्तिम कामदार श्री धारीसिंह जी रहा करते थे। इस दरवाजे पर एक छोटी पत्थर की गणेश मूर्ति प्रतिष्ठित है जिसे बिसाऊ की प्राचीनतम मूर्ति बताते हैं। परकोटा अब भी काफी दूर मे शेष है। इसकी चौडाई काफी है जिस पर एक आदमी आसानी से दौड सकता है।

गढ के भीतर एक बडा शस्त्रागार था। आजादी के बाद उसके सभी शस्त्र राज्य सरकार को सभला दिये गए। पूर्वी दरवाजे के पास तोपखाना था जिसमे अनेक बडी बडी तोपें थी। सालगिरह आदि उत्सवो पर अथवा किसी प्रतिष्ठित राजपुरुष के पधारने पर १७ या २१ तोपो की सलामी दी जाती थी। जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह II ५ दिसम्बर १९३१ ई [1] को बिसाऊ पधारे थे। स्व ठा विष्णुसिंह जी ने २१ तोपो की सलामी देकर बडी घूमधाम और शानशौकत से महाराजा का सम्मान किया था। गढ के भीतर महलो मे भित्तिचित्र नही मिलते हैं। किन्तु दीवानखाने मे ठा शार्दुल सिंह, केसरी सिंह, सूरजमल, श्याम सिंह, हमीर सिंह, आदि के स्वर्णिम चौखटा म मढे हुए आदमकद चित्र लगे रहते थे जो चित्रकला के उत्कृष्ठ नमूने कह जासकते हैं।

---

१ नवलगढ का इतिहास पृष्ठ स १५७ ले० श्री सुरजनसिंह शेखावत

वनमान मे इस गढ को ठिकाना बिसाऊ के लेखपाल सेठ रामनारायण पोद्दार के सुपुत्र सेठ भजनलाल पोद्दार ने खरीद कर अपने अधिकार में कर लिया है। अब दीवानखाने मे वे आदमकद चित्र दिखाई नहीं देते हैं।

राज (ठिकाने) की छतरी

दक्षिण दरवाजे की सफील के ठीक बाहर पश्चिमाभिमुख बनी हुई यह छतरी ऐतिहासिक स्थापत्य कला एव मुगलकालीन परम्परागत शैली का एक उत्कृष्ठ नमूना है। ग्यारह सीढिया चढने पर छतरी के चारो ओर बना हुआ चबुतरा आता है और चारो ओर तिबारे बने हुए हैं। इसके बाद करीब तेरह सीढिया चढने पर छतरी की खास ऊपरी मंजिल आती है। चारा दिशाओं में पाच पाच कलशनुमा गुम्बजें बनी हुई हैं तथा सटी हुई साथ साथ दो दो बारहदरिया बनी हुई हैं। बारहदरी के पास दो छोटी छोटी गुम्बजें बनी हैं जिनके अग्रभाग मे सु दर हाथी निर्मित है। हाथी की सूड अब खण्डित हो गई है। मध्य मे बडी अण्डाकार गुम्बज है जो काफी ऊची है और वही छतरी का मुख्य भाग है। प्रत्येक गुम्बज की छत, मण्डप के नोचले भाग मे, विभिन्न रंगों की कलम से चित्रित है जिनमे अकित हजारो भित्तिचित्र कला के बेजोड नमूने है। करीब १५० साल का लम्बा काल बीत जाने पर भी ये चित्र आज के से बने दिखाई देते है और इनके सौ दय व आकपरण में कोई कमी नहीं आई है। इसके निर्माण की तिथि का पता नही चला है। इसके कीर्तिस्तम्भ पर अंकित आलेख अब तक साफ होगये हैं। हा, बडे बूढो से सुना जाता है कि ठाकुर हमीरसिंह जी की पासवान ने ठाकुर हमीरसिंह जी का स्वगवास होने पर उनकी स्मृति मे इसका निर्माण करवाया था।

इस छतरी के निकट उत्तर की ओर खुलती हुई एक और छतरी बनी हुई है। यह स्व श्री विष्णुसिंह जी की माताजो चाम्पावतजी की स्मृति में बनाई हुई है। यह छतरी श्रेष्ठ किस्म के इटाली सगमरमर की श्वेत टाइलो से जडी हुई है। यह अत्य त सु दर और दशनीय है। इसके जालीदार मुख्य मण्डप के बाहर ऊपर सगमरमर की टाइल पर निम्न लेख उत्कीण है —

"श्रीमान् विष्णु महीपति शुभ मिति लोके प्रथा स्थापयना स्वर्गीये पित्तरोतयो सुविमला कीर्तिच विस्तारयत् ॥ यावत्चन्द्र दिवाकर क्षितो दातवाक्षितो । स्वर्गीय प्रिय काम्य भा यर दयच्छत्री शुभाशुभवीम् । सन १६२२ ई०।''

सिगतियो की छतरी

ठिकाने की छतरी के अनुकरण पर ही यह सिगतिया की छतरी दक्षिण दरवाज के बाहर मीणो के मोहल्ले मे बनी हुई है। इसके चारो कोनो पर बड़ी बड़ी गुम्बजें, उनके पास छोटी गुम्बज तथा बीच में बारहदरी बनी हुई है। बीच मे सबसे बड़ी गुम्बज, उसकी अण्डाकार छत और छत के नीचे भित्तिचित्र बने हुए हैं। यह छतरी एक बड़े नोहरे के भीतर निर्मित है जिसके चारो ओर काफी जगह छोड़ी हुई है। इसके दो मुख्य दरवाजे हैं— एक दक्षिण और दूसरा उत्तरी। श्री प्रहलादराय सिगतिया के कथनानुसार यह छतरी स्व सेठ जी श्री गुदीराम जी सिगतिया के पिता सेठ जी श्री मोतीराम जी सिगतिया की स्मृति म सवत् १६०० के लगभग बनकर तैयार हुई।[1] इस छतरी के दक्षिण की ओर एक कुआ बना हुआ है और एक बाड़ी छोड़ी हुई है।

पोद्दारो की छतरी

यह छतरी उत्तरी दरवाजे के बाहर सेठ जी श्री जोरावरमल जी चैनीराम जी पोद्दार की ओर से बनवाई हुई है। इसका मुख्य दरवाजा काफी ऊँचा है और लोहे की पत्तियो से जड़ा हुआ है। दरवाजा पूरा लदा हुआ है तथा इसके भीतर दो तिबारी बनी हुई है। अन्दर प्रवेश करने के बाद चौदह सीढ़िया चढ़ने पर छतरी का विशाल अण्डाकार भाग बना हुआ मिलता है जो स्थापत्य कला का शानदार नमूना है। मुख्य दरवाजे के ऊपर एक लेख पट्टिका जड़ी हुई है जो सम्भवत बाद मे लगाई हुई मालूम देती है। पट्टिका का लेख इस प्रकार से है — 'सेठ श्री जोरावरमल जी चैनीराम जी पोद्दार की छतरी मु० बिसाऊ सन् १६२१ ई०।' उक्त छतरी उल्लेखित वर्ष से पहले की निर्मित है। यह पट्टिका शायद उनके वशजो ने स्वामित्व बनाए रखने हेतु बाद मे लगाई है। दरवाजे के पास चबूतरे पर जो कीर्ति स्तम्भ है, उसके ऊपर सूर्य एव गणेश का चित्र उकेरित है तथा नीचे लेख लिखा हुआ है। किन्तु अब वह अपठनीय है। मुख्य दरवाजे के भीतर प्रवेश करने पर बाईं ओर एक उससे छोटी छतरी बनी हुई है। नीचे के हिस्से म शिवालय बना हुआ है तथा सीढ़िया चढ़ने पर अण्डाकार छतरी बनी हुई है। अण्डे की छत के भीतरी भाग मे एक पीतल पट्टिका अकित है जिसम निम्न लिखित लेख अंकित है —

---

१ श्री अरविन्द शर्मा के राजस्थान पत्रिका मे प्रकाशित लेख मे मोतीलाल सिगतिया की हवेली का निर्माण काल सवत् १८७५ दिया हुआ है।

"श्री गणेशायनम अगस्मन शुभ सवत १९३७ शाके १८०२ मासोत्तम मासे फालगुन मासे श्रवेमने पुण्यतिथि १२ शनिवार। यह समय में सेठजी वैश्य वशीय पोद्दार जाति मानीराम जी के ऊपर छतरी कराई नन्दराम पुत्र रामचरणदास हरसाहब कराई व जयदेव चेजारा चिणी लाग रूप ऊपरे हुवो ६९५।।। =) ।"

ऐसी अनेक छतरिया बिसाऊ मे चारो ओर बनी हुई हैं जिनके नाम अप्राक्ति हैं — टीबड़ेवालों की छतरी, पोद्दारो की छतरी, जतीजी की छतरी, खेमको की छतरी व समस्त पोद्दारो की छतरियां आदि आदि।

यहा की विशाल हवेलिया, भव्य कमरे, बडी बडी धर्मशालाए अतिथि भवन विवाह भवन, देव मन्दिर, मस्जिद, यतीमखाना, कूए, जोहड आदि सभी प्राचीन एव नवीन निर्माण कला की दृष्टि से अत्य न्त गौरवपूर्ण हैं। इन सबसे तत्कालीन कलाकारो की कुशलता एव दक्षता का पता चलता है तथा उनसे बनवाने वालो की कला प्रियता इनसे प्रकट होती है। नगर का प्राचीन एव नवीनतम निर्माण कार्य यहा की छवि को निखारने मे सक्षम है। इन सबको बनाने वाले कुशल कारीगरो की स्मृतिया आज भी ताजा बनी हुई हैं जिन्होंने नगर के नाम को भवन निर्माण कला के क्षेत्र मे उन्नत किया।

४ हवेलियो के भित्तिचित्र

शेखावाटी क्षेत्र के भित्तिचित्र पिछले दो तीन दशको से शोधकर्त्ताओं एव कलामर्मज्ञो के लिए विशेष आकर्षण-केन्द्र बन गए हैं। यहा के किलों, हवेलियो मन्दिरो, अतिथिगृहो तथा छतरियो मे असख्य उत्कृष्ट भित्तिचित्र कला प्रेमियो को मौन निमत्रण देते हुए से लगते हैं। ऐसी सुन्दर कलाकृतियां प्रमुखत शेखावाटी के कस्बो की हवेलियों मे पाई जाती है। इन कस्बों में बिसाऊ का नाम भी विख्यात है।

बिसाऊ के सेठो ने अनेक हवेलिया बडे चाव से निर्मित कराई थीं। स्थापत्य कला की दृष्टि से ये अनूठी हैं। इनकी बनावट सुरक्षा की दृष्टि से भी अच्छी कही जासकती है। दो से तीन मजिलवाली इन हवेलियो मे दो चौक होते हैं। प्रधान दरवाजा प्राय लदवा होता है तथा दोनो ओर तिबारिया बनी होती हैं, जो बठक' के रूप मे काम मे ली जाती हैं। एक ओर ऊँट घोडो के 'ठाण' बने होते हैं। उनसे सटकर ही बनी कोटडियो मे उनका सामान 'पिलाण' आदि पड़े रहते हैं। भीतर ड्योढी या पोळी होती है जिसके दोनो ओर दो

गोमें होते हैं। पोळी की जोडी (किवाड) पीतल से जडी हुई बहुत मजबूत बनी होती है। चौखट पर बहुत सुन्दर 'कोरणी' की गई हैं। चौखट के ऊपर एक 'आले' म श्री गणेश जी की मूर्ति स्थापित होती है। भीतर के चौक मे हर कोने पर एक तिबारी और प्रत्येक तिबारी मे दो 'साळ' (शयन कक्ष) होती है। तिबारी के साथ एक रसोई व एक 'परिण्डा' बना होता है। चौक के बीच मे एक तुलसी का 'थावला' होता है। ऊपर की मजिल पर अनेक हवादार चौबारे बने होते हैं जिन्हे 'रगमहल' या 'चित्रशाला' भी कहते हैं। इनके आगे तिबारी तथा तिबारी के आगे खुले भाग को 'चादणी' कहते हैं। कुछ हवेलियां मे दो से अधिक चौक भी मिलते हैं।

ये हवेलिया भित्तिचित्रो से भी सजाई जाती हैं। इनके भित्तिचित्रों की शैली प्राय परम्परानुसार नजर आती है लेकिन विषयवस्तु की दृष्टि से इनमे विविधता मिलती है। अत यहा पे चित्रो की विषयवस्तु की व्यापकता को ध्यान मे रखते हुए निम्नोक्त भागो मे इन्हे विभाजित किया जा सकता है — (१) पौराणिक कथानक के चित्र (२) धार्मिक विषयो के चित्र (३) लौकिक प्रेमाख्यानों के चित्र (४) पारिवारिक जीवन विषयक चित्र (५) राजदरबार से सम्बधित चित्र (६) प्रतीकात्मक चित्र (७) पशुपक्षी विषयक चित्र (८) पेड-पौधों व बेलबूटो के चित्र (९) विविध।

उक्त विषयो के भित्तिचित्र बिसाऊ की निम्नलिखित हवेलियो, धर्मशालाओ, मन्दिरो एव छतरियो आदि मे मिलते हैं —

(१) सेठ मोतीलाल जी सिगतिया की हवेली (२) सेठ गोविन्दराम जी सिगतिया की हवेली (३) टीबडेवालो की हवेली (४) सेठ हीरालाल बनारसीलाल झुनझुनू वालो की हवेली (५) सेठ जयदयाल जी केडिया की हवेली (६) सेठ नाथूराम जी पोद्दार की हवेली (७) सिहानियो की हवेली (८) महनसरियो की हवेली (९) श्री नन्दलाल जी बयाल की हवेली (१०) सेठ नागरमल जी कानोडिया की हवेली (११) पोद्दारो की सात हवेलिया (१२) ऊँटवालियो की हवेली (१३) श्री बाबूलालजी की हवेली (१४) सफडो की हवेली (१५) बागला की हवेली (१६) सेठ मदनलाल जी पोद्दार की हवेली (१७) सेठ गोविन्दराम जी की हवेली (१८) श्री मुलतानचन्द हजारीमल पोद्दार पुस्तकालय (१९) श्री दत्तलाल जी महनसरिया की हवेली (२०) गूदी वाला की हवेली (२१) सेठ जमनाधर जी पोद्दार की हवेली (२२) सेठ नागरमल जी बुचासिया की हवेली (२३) तिपोलिया हवेली (२४) श्यामसुन्दर

गाडोन्या की हवेली (२५) गुणामेडी के पास झुंझुनू वालों की हवेली (२६) सेठ बोयतराम जी की धर्मशाला (२७) रुगटो की धर्मशाला (२८) सेठ जमनाधर जी पोद्दार की धर्मशाला (२९) बिसाऊ ठिकाने की छतरी (३०) पोद्दारो की छतरी (३१) सिगतियो की छतरी (३२) श्री बिहारी जी का मन्दिर (३३) श्री नृहसिंह जी का मन्दिर (३४) बागला का मन्दिर (३५) शिखिर मन्दिर (३६) सेठ बिहारीलाल जी की हवेली व कमरा (३७) तंतरजी की हवेली (३८) मुसद्दियो की हवेली, नोहरा (३९) खेमको की हवेली (४०) चिमनराम रामकुमार पोद्दार (डाकोडा) की नई पुरानी हवेलिया (४१) श्रीराम जी झुंझुनू वाला की हवेलिया आदि आदि मुख्य उल्लेखनीय हैं।

उपर्युक्त प्रमुख हवेलियो के भित्तिचित्रो पर चूरू के अग्रवाल बन्धु, ब्रिटिश नागरिक श्री आदूला कूपर व उनके साथ श्री गिरिशचन्द्र शर्मा के पुत्र गाइड के रूप मे, स्व श्रीलाल जी मिश्र, श्री रतनलाल मिश्र श्री अरविन्द शर्मा तथा प्रयटन विभाग के अधिकारी बिसाऊ की अनेक यात्रा करके शोधकार्य कर चुके हैं और तत्सम्बन्धी कुछ सामग्री भी प्रकाशित करवाई गई है।

सेठ मोतीलाल जी सिगतिया की हवेली के 'रगमहल' में पाए जाने वाले भित्तिचित्रो का कलावैभव शेखावाटी के अन्य कस्बो की हवेलियो के चित्रो से अपनी विशेषता लिए हुए हैं। इनमे एक ही 'जगदेव ककाली' के प्रसग को तीन चित्रो मे पूर्ण किया गया है।— (१) जगदेव की रानी अपने पति का सिर काटते हुए (२) रानी के द्वारा जगदेव का सिर ककाली को दान करते हुए (३) ककाली के द्वारा थाल मे रखे हुए जगदेव के सिर को दरबार मे राजा जयचन्द के सामने प्रस्तुत करते हुए। इन तीनो चित्रो से पूरा कथानक सजीव हो उठता है तथा नाट्यानन्द की सी अनुभूति होती है। इस पर अन्य भी कई चित्र हैं।

टीबडेवालो की हवेली की पोळी व टोडो के नीचे चित्रित भित्तिचित्र बडे आकर्षक हैं। इनमे धार्मिक, पौराणिक एव लौकिक प्रेमाख्यानो के चित्र कला पारखियो के अध्ययन का विषय बन सकते हैं। एक प्रतीकात्मक चित्र तो बडी गहराई से समझने का है। इस चित्र म एक रथ का चित्र है। रथ में एक राजा बठा हुआ दिखाया गया है। रथ मे जुते घोडे पर एक सवार बठा है। उसके सामने एक पशु का चित्र है, जिसकी पूछ के अंतिम भाग पर ऊपर का मुख ऊपर की ओर उठा हुआ है। पीठ घोडे के समान है, जिस पर केवल

पलाण लगा हुआ है। मुख मे से एक देवी का अवतीर्ण होना दिखाया गया है, जिसकी सूचना घोडे का सवार रथ मे बैठे हुए राजा को दे रहा है।

सेठ हीरालाल बनारसीलाल की हवेली के भित्तिचित्रो मे मुख्यत लैला मजनू, हीरराभा, गोपीचन्द भरथरी के चित्र विशेष आकर्षक हैं। इन चित्रो म मानवीय मनोभावों का सुदर प्रकटीकरण हुआ है। मजनू हड्डियो का ढाचा मात्र रह गया है। लला की आखो म असीम प्रेम व सेवा का भाव प्रकट होता है। पास मे बठे ऊँट से मालूम होता है कि लला बडी दूर से चलकर अपने प्रेमी से मिलने आई है। 'हीरराभा' के चित्र मे हीर को अपनी सहेलियो के साथ राझा से मिलने के लिए आई हुई दिखाया गया है। 'गोपीचन्द भरथरी' के चित्र म गोपीचन्द के शिष्यत्व ग्रहण करने का प्रसग दखने को मिलता है।

सेठ जयदयाल जी केडिया की हवेली के बाहर 'टोडो' के नीचे अनेक चित्र अच्छे कलात्मक हैं। ये चित्र शेखावाटी-सस्कृति की धरोहर है। एक चित्र मे गणगौर की सवारी का बडा सुन्दर चित्रण है। ईसर व गणगौर की प्रतिमाओं को दो स्त्रिया चौकियो पर रख कर सिर पर उठाये चल रही हैं। पीछे पूरा जुलूस बाजो के साथ चल रहा है। बिसाऊ मे अब भी इसी परम्परानुसार गणगौर की सवारी निकलती है। इस हवेली की प्राचीनता को देखते हुए कहा जासकता है कि बिसाऊ में गणगौर की सवारी अनुमानत २०० वर्ष पूर्व से निरन्तर चिन्हानुसार निकल रही है।

सेठ नाथूराम जी पोद्दार की हवेली के 'रगमहल' के चित्र कला की दृष्टि से बडे महत्वपूर्ण कहे जासकते हैं। इनमे कई चित्र सामाजिक प्रसग एव स्थिति को उजागर करने मे बडे सफल हुए हैं। एक चित्र म एक औरत गगासागर से रास्ते म घोडे पर बैठे घुडसवार को पानी पिला रही है। घुडसवार दोनो हाथो की 'ओक' बना कर पानी पीते हुए दिखाया गया है। दूसरे चित्र में एक राजपूत वीर को युद्धभूमि मे जाने के लिए उसकी पत्नी तिलक करत हुए विदा कर रही ह। पास मे घोडा सजाधजा खडा है। इनके अलावा विभिन्न हवेलियो म निम्नोक्त चित्र भी पाए जाते हैं —

(१) बलराम द्वारा कस और कृष्ण द्वारा कुवलियापीड हाथी का वध (२) जगदेव का शीशदान (३) कौरव सभा मे शातिदूत के रूप मे कृष्ण (४) गोपियो की पालकी म कृष्ण (५) राधाकृष्ण (६) ऋद्धिसिद्धि सहित श्री गणेश (७) बांसुरी वादक बाकेबिहारी (८) मत्स्यावतार (९) सिंहवाहिनी दुर्गा

(१०) काला गोरा भैरव (११) समुद्र मथन (१२) वराह अवतार (१३) लैला मजनू (१४) सेठाणी (१५) सेठो की गद्दी का दृश्य (१६) राम की बारात (१७) दुल्हे का तोरण मारना (१८) ठाकुर ठकुरानी (१९) ढोलो मरवण (२०) गाय का दूध निकालती महिला (२१) दही बिलोती हुई बुढ़िया (२२) हाथी, घोडे, रथ, ऊँट, पदल सैनिक आदि।

कुछेक हवेलियो के प्रतीकात्मक चित्र बडे सुन्दर व अनूठे बने हुए है, जसे नौ नारी कुजर तथा पच नारी अश्व। साधारणत कई हवेलियों में समान चित्र मिलते हैं, जसे लट्टू वाली, पखे वाली, राजा रानी, पखा झलती दासिया, सखिया, हुक्का पीते हुए बादशाह, बिलोवणा करती हुई गृहणी, हाथी, घोडे रथ, पालकी, बला की जोडी, ऊटो पर सवार सजीले जवान, बारात, राग रागनिया, मकान, पेडपौधो के दृश्य पौराणिक कथानको के दृश्य, बेलबूटे, फूल पत्तिया आदि।

उन्नीसवी शताब्दी के अन्त तक शेखावाटी के सेठो के अग्रजो से सम्पर्क व सम्बध बन चुके थे। यहा के चित्रकार भी पाश्चात्य शली से प्रभावित हो चुके थे। अत उनका प्रभाव भित्तिचित्रो पर भी परिलक्षित होने लगा। यूरोप के कई तेलचित्र, लीथोग्राफ ओलियोग्राफ तथा कमरा चित्र भारत म प्रचलित होने लगे तथा इग्लेण्ड की महारानी विक्टोरिया जाज पचम् तथा महारानी मेरी के चित्र भी हवेलियो पर आने लगे। ऐसे चित्रो से अलकृत हवेलियाँ बिसाऊ मे मुख्यत बुवासियो की हवेली, महनसरियो की हवेली, त्रिपोलिया हवेली गूदीवालो की हवेली विहारीलाल जी पोद्दार की हवेली, परसराम जी पोद्दार की हवेली आदि हैं। इनमे आधुनिकता से प्रभावित चित्र मिलते हैं जसे कोट पतलून पहने अग्रेज सैनिक, रेलगाडी, कार, तोपगाडी, जहाज, वायुयान आदि।

बिसाऊ नगर के भित्तिचित्रकारो मे प्रमुख रूप से प्राय चेजारा जाति के कारीगर प्रसिद्ध रहे हैं। इन्हे कुमावत भी कहते हैं। वतमान में भी ये ही लोग कलाकार हैं। जयपुर शली के चित्र जो जयपुर के शाही महलो एव किलो में पाए जाते हैं, वे सब कुमावत कारीगरो की कला की उत्कृष्ठता के द्योतक हैं। इसी प्रकार बिसाऊ के कुमावतो मे भी वशानुगत कारीगर चले आरहे हैं। बहुत पहले के तो नही, परन्तु एक शताब्दी पूव एव पश्चात् के कारीगरों के विषय म कुछ जानकारी मिलती है। इन्होने बिसाऊ की बडी-बडी हवेलियों का निर्माण तो किया ही, इसके साथ साथ भित्तिचित्रो का अकन भी बरसों तक

करते रहे। इनमे से कुछेक के नाम यहां दिए जा रहे हैं — (१) जगराम जी (२) जीवणराम जी (३) दलूराम जी (४) जयदेव जी (५) सादूराम जी (६) हुक्माराम जी (७) सूरजमल जी (८) सुखदेव जी (९) भजूराम जी (१०) म्हासाराम जी (११) रामचन्द्र माली (१२) बलदेव जी (सेठ नागरमल जी कानोडिया की हवेली के भित्तिचित्र बनाये) (१३) जेमाराम जी (१४) भूरामल जी (१५) पन्नाराम जी (१६) किशनलाल जी (१७) रामदेव जी आदि। आधुनिक चित्रकारों मे स्व हनुमान जी चेजारा अच्छे कारीगर गिने जाते थे।

उक्त चित्रकार स्वय द्वारा तयार किये हुए रगो का प्रयोग करते थे। वे मुख्यत पीला, हरा, लाल व काला रग काम मे लिया करते थे। पीले रग हेतु केशुला के फूलों को पानी मे उबाल कर उनकी प्यावडी बनाई जाती, तत्पश्चात् खरल मे घोट कर रग तयार किया जाता। हरे रग के लिए एक खनिज पत्थर को पीस कर घुटाई की जाती। लाल रग पक्की हिरमच को पीस कर घुटाई करके तयार किया जाता। तिलो के तेल से 'काजल उपाड कर' काला रग तयार किया जाता।

इन रगो का प्रयोग गीली आरायश की हुई दीवार पर करते थे, जिससे दीवार के साथ साथ ये भित्तिचित्र भी गहरे पक्के हो जाते थे। फिर वर्षा या सील से उनको कोई हानि नही होती। इसे आलागीला, आरायश, फ्रेस्को तकनीक या मोरोक्सी कहते हैं। ये हमेशा अपनी मौलिक रगत एव आभा को बनाये रखने में सक्षम हैं।

बिसाऊ में पाए जाने वाले भित्तिचित्रा पर अभी विशेष अध्ययन की आवश्यकता है। यहा की प्रत्येक प्राचीन हवेली भित्तिचित्रा की दृष्टि से अपनी उपादेयता रखती है।

५ अन्य कलाए एव उनके कारीगर

उन्नीसवी शताब्दी मे बिसाऊ के सेठो का व्यापार देश के बड़े-बड़े नगरो म पनपने लगा था। वे अपनी कमाई का एक भाग अपनी जन्मभूमि के विकास कार्यों पर व्यय करते थे। उन्होने अपने गावा मे बडी-बडी हवेलिया, कुए, बावडी, धर्मशालाए, औषधालय, विद्यालय, जोहड, तालाब, बगीची आदि बनवाए। इसस वास्तुकला एव काष्ठकला मे निखार आया तथा अन्य क्षेत्रा के कारीगर भी यहा आकर बस गए।

लकड़ी का मुख्य काम उस समय चौखट, किवाड, बड़े दरवाजे, छोटे मोरिया, अलमारी, मजूषा, पलग, पाये, तख्त, हटड़ी के किवाड, पीढ, चौकी, खू टिया बनाना आदि होता था। बाद म चल कर फर्नीचर भी बनवाया जाने लगा।

काठ के काम म उस समय के कारीगरो के द्वारा की गई कोरतीकला की कृतियो का बहुत महत्व बढ गया है क्योकि उक्त कृतिया का काम विदेशी कलाप्रेमियो के आकर्षण का केन्द्र होगया। चौखट के चारो ओर बेल बूटो एव पत्तियो का बाडर लोहे या पीतल से जडित किवाडो की जोडी जिसके प्रत्येक दल्लो पर कोरणी कला के अनुपम एव आकर्षक प्राकृतिक दृश्य उकेरित हैं काष्ठकला के उत्कृष्ट नमूने कहे जासकते हैं।

बिसाऊ म पोद्दारो, सिगतियो, रु गटा, टीबड़ेवालो, कानोडिया, मिहानिया, गाडोदिया, रामगढिया, महनसरिया बजाज, बावरी, बयाल, जगिया, केडिया, सुरेका, आदि महाजनो की हवेलिया कला की दृष्टि स देखने योग्य हैं। इन सब हवेलियो मे काठ का काम बिसाऊ के जागिड परिवारों के अलावा आसपास के कारीगरो के द्वारा भी किया गया है। बिसाऊ मे कोरतीकला के कारीगर मुख्यत निम्नलिखित हुए है —

(१) जोहरीराम (२) खूबाराम धामू (३) आसाराम (४) नानूराम (५) चन्द्राराम राजोतिया (६) बीजराज नारायणराम ठाठवाडिया (७) जनाराम भोलाराम ठाठवाडिया।

लकडी के दरवाजे - चौखट आदि के काम मे श्री नारायणराम भगवानाराम लिछमण भोलाराम ठाठवाडिया, भूधाराम लीलाराम दाड़ियाळा, राजूराम टारमल, जनाराम राजोतिया, महादेव जी बरवाडिया, नथू जी बल्लू जी धामू, जगदेव धामू, दयालाराम कुम्भाराम धामू, रामेश्वर धामू आदि प्रसिद्ध हुए। लोहे के काम म कुम्भाराम तोलाराम धामू, सेताराम लिछमणराम धामू, गोकल, रामकुमार, दुर्गादत्त धामू आदि अच्छे कारीगर हुए हैं।

स्व घडसीराम मिस्त्री बिसाऊ ठिकाने के राजमिस्त्री थ। वे सोने चान्दी के आभूषण, लकडी का काम बन्दूको, घडियो एव अन्य मशीनों के पारखी थे। उस समय आपकी बडी धाक थी। आपके माध्यम से ही कारीगरों को बुलवा कर कलाकृतिया तयार करवाई जाती। स्व खूबाराम जी ने उस वक्त एक भैंसा चाकी बनाई थी जिसकी लोगो ने काफी प्रशंसा की थी।

ौर बन्दूकों की मरम्मत करने वाले एक मात्र अच्छे कारीगर थे। स्व०
ाराम जी के द्वारा एक ऐसा दीपक बनाया हुआ है जो खुले मे गेंद की तरह
ढ़ला जासकता है तथा आंधी बरसात मे भी बराबर जलता रहता है। वह
क श्री बालमुकुन्द दरोगा के पास सुरक्षित रखा हुआ बताते हैं।

भगवानदास के पुत्र मौला (महावीर प्रसाद) ने रेल का इंजिन छोटा
ार करके नन्ही न हो पटरियों पर दौड़ा कर दिखाया था। वह अपने पिता
तरह बड़ा हुनोद था। खेद है, उस उदयमान कलाकार का युवावस्था मे ही
गवास होगया। इनके अलावा अनेक कारीगरों द्वारा निर्मित ठापे, मुकुट,
नर, चांदी पीतल जड़ी जोड़िया विसाऊ मे देखने लायक हैं। वर्तमान में श्री
देव जी बरवाड़िया एवं गोपालजी राजोतिया पटन मेकर हैं और श्रेष्ठ
रीगर हैं। स्व० घड़सीराम मिस्त्री का पोता श्री बनारसीलाल मेकेनिकल
र्यों के विशेषज्ञ हैं। श्री नरदेव जांगिड सिंथेटिक्स मिल मे उच्च पद पर
ार्यरत हैं तथा वंशीधर जांगिड सिमेंट फैक्ट्री सवाईमाधापुर मे फोरमेन
हे है।

श्री तोलाराम धामू की जयपुर मे अनेक वर्कशाप चलती हैं जिनमे
शीनों की मरम्मत एवं निर्माण होता है। कुछ मशीनें जो पहले विदेशों से
ायात की जाती थी, अब उनके कारखाने मे बनने लगी हैं। इस उपलब्धि के
लए आपकी सारे भारत मे प्रशंसा की गई। कुछ मशीनों के यहां नाम दिये
ारहे हैं जिनसे आपको विशेष ख्याति मिली —

(१) क्लोज सर्किट ड्राई ग्राइंडिंग मशीन (२) कण्टीन्यूअस कार्म्बिग व रोलिंग
मिल (गुजरात के सेठ लल्लू भाई को तयार करके दी)। आपके पुत्र श्री योगेश
एक कुशल प्रबन्धक एवं होनहार कारीगर थे।

इन लोगो ने लकड़ी का काम छोड़ कर चांदी के आभूषण बनाने का
कार्य अपने हाथों मे लेलिया। इनका उद्यम सही, सच्चा व ईमानदारी के लिए
प्रसिद्ध रहा है। चांदी के गहने, बरतनों मे थाली, लोटा, गिलास, प्याला,
पानसागर, कलश, [illegible]नी, चौपड़ा, चम्मच आदि तथा हाथी के ओहदे की चांदी
से मण्ढ़ाई, दरवाजों व मूर्तियों की मण्ढाई, पलग के पाये, चौकी आदि कला
कृतियों के निर्माण मे इन्होंने काफी यश कमाया। इनको ढलाई, खुदाई, कटाई,
घिसाई, चिलाई तथा ओपनी करने मे कमाल हासिल रहा है। इस कार्य को
करने वाले निम्नलिखित घराने हुए हैं —

(१) सूवाराम घड़सीराम मिस्त्री (२) भींवराज शिवलाल जांगिड़ (३) शिवनाथराय जांगिड़ (४) मन्नालाल जांगिड़ (५) चिमनलाल जांगिड़ (६) मालीराम केशरदेव जांगिड़ आदि।

स्व० शिवलाल जांगिड़ के चांदी के काम की कला की दृष्टि से सेठ सूरजमल चिमनराम पोद्दार द्वारा निर्मित श्री गोविन्द देव मन्दिर के मण्डप के चांदी चढ़े किंवाड़ व छत्तर तथा रामलीला के चांदी रूपी के मुकुट आज भी देखने लायक हैं। इनकी रांची में बड़ी दुकान थी। स्व० मन्नालाल जांगिड़ की दरभंगा में बड़ी दुकान है जिसमें अब स्व० शिवलाल के पुत्र इन्द्रचन्द्र कार्य करते हैं। स्व० मन्नालाल की कारीगरी के साथ-साथ शुद्धता व ईमानदारी भी प्रसिद्ध रही है। आज भी उनकी बनाई कलाकृतियों को शुद्ध चांदी के भाव में मोल लेने में किसी को अविश्वास नहीं होता। दरभंगा महाराज ने उनसे एक हाथी का ओहदा चांदी का तयार करवाया था जिस पर बेलबूटों की चिताई देखने योग्य है। यह ओहदा पिछले वर्षों तक कलाकृति के रूप में रखा हुआ था। स्व० मालीराम चांदी के साथ साथ सोने के काम के भी अव्वल दर्जे के कारीगर थे। स्व० चिमनलाल के जैसी चिताई एवं छिलाई का काम अन्य कारीगरों से नहीं हो पाता था। स्व० शिवनाथराय मुस्लिम गहनों के बेजोड़ कलाकार थे। श्री डोलाराम जगतपुरा भी चांदी के गहने बनाने के कारीगर हैं।

लुहारों का एक घर हकीम जी के डेरे के पास था। वे चांदी के आभूषण बनाया करते थे। वे चांदी की गलाई एवं ढलाई के अच्छे कारीगर थे। बाद में वे पाकिस्तान चले गए। लुहारों का एक घर वर्तमान में भी आभूषण बनाने का काम करता है। उस समय चांदी गलाई का कार्य विशेषतः न्यारिया करते थे जिनमें चिड़िया न्यारिया प्रसिद्ध रहा है।

बिसाऊ में आभूषण बनाने वाले कारीगरों में सुनार, खाती एवं लुहार हैं। सुनार व खाती सोने चांदी दोनों धातुओं के गहने, बर्तन आदि बनाते हैं तो लुहार केवल चांदी का ही काम करते हैं। यहां के श्रेष्ठ कारीगर कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े नगरों में उद्यम करके अपना अर्थोपार्जन करते हैं तथा अपनी कला का प्रदर्शन कर यश कीर्ति भी अर्जित करते हैं।

यहां के स्वर्णकारों के बनाए हुए गहनों के बेजोड़ नमूने अब भी मिलते हैं जिनसे उनकी जड़ाई, मीनाकारी कटाई, छिलाई, खुदाई, पालिश आदि कारीगरी की उत्कृष्टता प्रकट होती है। ऐसे कतिपय कारीगरों के नाम

प्रयाकिन हैं — नथूजी सावरमल बूकरा, गुरुमुख मोती सुनार, झावर सुनार, बिडदो सुनार, शिम्भुदयाल सुनार आदि के नाम प्रमुखता से लिए जासकते हैं।

यहां के नीलगरों के द्वारा रंगाई, छपाई एव बन्धेज आदि काय एक कुटीर उद्योग के रूप मे किया जाता है। यहा के ओढणे, पीले, पोमचे, चूनडी आदि कलकत्ता, बम्बई जसे महानगरा मे भेजे जाते हैं। मारवाडी समाज की ओर से इनकी मांग बराबर बनी रहती है। यहा के निम्नलिखित नीलगरो एव छीपो के घराने प्रसिद्ध हैं — करीमो नीलगर, भूरा नीलगर, दीना नीलगर, रहीमा नीलगर, बदरु पीर छीपा, नसरु छीपा, महमदा छीपा आदि।

यहा विभिन्न व्यावसायिक कलाग्रो म, जो लोग उस्ताद माने गए, उनका सक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है —

१ हलवाई एव चाटवाले — (१) भोलाराम खत्री (२) ब्रजलाल लाटा (३) भगवाना स्वामी (४) नानू स्वामी (५) तेजपाल दायमा (६) बीजराज स्वामी (७) महादेवा तोतिया (८) मुखजी खत्री (९) जुगल जी खत्री (१०) नागर खत्री (११) रामाकिशन (१२) निरजनलाल लाटा (१३) मरजी चाटवाला (१४) दुलाराम चाटवाला (१५) मता महाराज।

२ पान (सपदस) का भाडा देने वाले — (१) सूदराम जी दायमा (२) रामनारायण (३) गीदाराम इन्दोरिया (४) चूनाराम पुरोहित (५) डेडराज पनवाडी (६) ग्रजर हुसैन वकील (७) बदरु दायमा (८) ब्रजलाल पुरोहित (९) केसरदव पोद्दार (१०) मूनदास स्वामी।

३ मोची रगर — (१) गोपीराम (२) अर्जुन (३) किसनो (४) बालमुकन्द (५) पीरु (६) गुलाब व पन्नालाल रगर।

४. पतग निर्माता व उडानेवाले — (१) मणु सिहानिया (२) खुसाल टकिया (३) गणपत भाट (४) गीगा छीपी (५) करीमा (६) दीना (७) चनो छीपी (८) बशीधर झुझुनूवाला का पुत्र मुरलीधर झुझुनूवाला।

५ बूंजडा — (१) बजीरा (२) रगीली (३) बातो (४) दूलो (५) छोटू

६ दारुगरिया — (१) इसमाइल (२) इब्राहिम

७ खरादी — (१) ताजू खा (२) अलादीन

८ मणियार — (१) इमामुद्दीन (२) पीरु (३) भूरा

९ सिकलीगर — (१) फनू (२) मालीराम (३) मोहनलाल

१० दर्जी – (१) गोरधन (२) जीवणराम (३) चुन्नीलाल (४) सावर (५) लिछमा (६) चांदमल (७) मूळजी (८) ओंकार (घोड़ा, चिड़िया, मयूर सिलाई कर्ता) (९) इब्राहिम काजी (१०) महोम्मद काजी

११ नाई — (१) टारजी (२) ओंकारमल जी मालीराम जी भाटी (३) रीढा राम जी बींजाराम जी (ऊँट कतरने में प्रख्यात) (४) दुर्गाप्रसाद (५) गणपतराम (६) शुभकरण (७) सुरजा नाई (८) मालीराम (हवा-धार)

१२ कुंभकार – (१) भींवाराम (२) जीताराम (३) गीगाराम (४) परसाराम

१३ तेली — (१) वजीरा तेली

१४ बारी — (१) चौथमल (२) जनाराम (३) धनसिंह

१५ भाट — (१) म्हालजी भाट (२) सन्तराम (३) ऊकार (४) बलजी

१६ धोबी — (१) नीनमोहम्मद खां (२) कालू खां (३) मलीमुद्दीन

१७ मीणा — हरजी, कानां

१८ माळी — गाह, गणपत

१९ पनवाड़ी — इंद्रराज, सदाराम पूरणमल, राधेश्याम

संस्कृति के तत्व

१ रामलीला

बिसाऊ को शेखावाटी का राम नगर कहने मे किसी प्रकार की हिचक नही होनी है। वाराणसी के पास रामनगर की रामलीला संसार की सर्वाधिक प्रसिद्ध लीला कही जाती है।

रामनगर की लीला स्थली के रोमांचिक दृश्यों का अवलोकन करके शायद किसी साध्वी ने मन ही मन यह दृढ प्रतिज्ञा की होगी कि उसे इस प्रकार की लीला अन्यत्र भी मचित करनी है। उसने सारे भारत का भ्रमण करके अन्त मे शेखावाटी के बिसाऊ कस्बे के बाहर एक जोहड पर अपनी साधना का स्थल बनाया। धीरे धीरे लोगों का उसके स्थान पर आना-जाना प्रारम्भ होगया और उसने उनमे रामकथा की ओर भक्तिभाव पैदा किया। उसने उसी स्थान पर बालको के मुखौटे लगा कर आज से करीब १५० वर्ष पूर्व रामलीला का प्रारम्भ किया। वह स्वयं चौपाइयां गाती और रूपों द्वारा सारे संस्कार पूर्ण कराये जाते अर्थात् लीला मूक चलती जिसकी परम्परा आज भी कायम है।

यह स्थान आज 'रामाणा जोहड' के नाम से प्रसिद्ध है। उस साध्वी का नाम बड़े-बूढ़ा ने 'जमना' बताया। लीला का प्रारम्भ आसोज मास के शुक्ल पक्ष की ... को होता तथा समाप्ति आसोज शुक्ला १० (दशहरा) को होती।

डा० महेन्द्र भानावत के आलेख,[1] जो साप्ताहिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित हुआ है में बिसाऊ के स्व० सदाराम जी गुरु से भेंट करके जो तथ्य प्राप्त किए थे, उनका विवरण देकर बताया है कि "सौ वर्ष पूर्व एक बुढ़िया ने बच्चों के माध्यम से इस लीला का श्रीगणेश किया। यह लीला तब से वहा अभिनीत होती आरही है।" यह सूचना अपूर्ण ही है। काफी वर्षों तक रामाणे जोहड पर लीला होती रही। उसके बाद मुणोजी के टीले पर आयोजित होने लगी। टीले पर लीला कुछ विस्तार से होने लगी। गाव के सेठ साहूकारो की ओर से आर्थिक सहायता मिलने लगी थी तथा आम जनता सोल्लास भाग लेने लग गई थी। दो-तीन दशकों के बाद कस्बे के पश्चिमी बाजार का वह भाग जहां अब बोयतराम जी की धर्मशाला बनी हुई है, खाली मैदान था, वहा पर यह प्रदर्शित होने लगी थी। इस लीला स्थल की अवधि कम ही रही। उसके बाद तत्कालीन ठाकुर श्री जगतसिंह जी का सरक्षण प्राप्त करके सवत् १९४६ वि में गढ के पास वाले बाजार म इसका आयोजन प्रारम्भ हुआ[2]। तब से प्रतिवर्ष उक्त स्थान पर यह लीला होती आरही है।

लीला का प्रारम्भ किस तिथि व सवत् मे हुआ यह निश्चित रूप से नही बताया जा सकता। इसका कोई तथ्यात्मक प्रमाण नही मिलता है। रामलीला कमेटी ने अपनी रसीदो पर सस्थापित सवत् १९३६ वि छाप रखा है। प० तुलाराम जोशी से मालूम हुआ कि उनके पिता श्री नेताराम जी शास्त्री ने गढ के पास वाले लीला स्थल पर राम का किरदार निभाया था। प० तुलाराम जोशी की इस समय आयु ७० वर्ष की है। निश्चित ही उनके पिताश्री ने आज से ९० वर्ष पूर्व राम का पट ग्रहण किया होगा। इससे यह सिद्ध होता है कि करीब १०० वर्ष पूर्व से तो यह लीला गढ वाले स्थल पर ही आयोजित होती आरही है। इससे पहले तीन स्थानो (रामाणा जोहड, टीला, बोयतराम

1 विजय दशमी विशेषाक (२ १० से २ ११) १९८५— डा० महेन्द्र भानावत लेख— सौ वर्ष पूर्व बुढ़िया ने प्रारम्भ की बच्चो की रामलीला

2 राजस्थानी समाज वर्ष १७ अक ८ १० लेखक श्री श्रीलाल मिश्र लेख— बिसाऊ की रामलीला

की धमशाला वाला स्थान) पर यह लीला होती रही है । इससे ज्ञात होता है कि उक्त रामलीला अनुमानत १५० वष पूव से नगर म मचित होती आई है तथा सस्थापित सवत् १९३६ वि सही प्रतीत होता है ।

एक यह प्रसग भी विचारणीय है । १८५७ ई के स्वतन्त्रता सघष में अग्रेजो से पराजित होकर बहुत से क्रान्तिकारी भूमिगत होगए थे । उस समय एक क्रातिकारी ने आकर पश्चिमी द्वार के बाहर एक ऊँचे स्थान पर साधु वेश मे अपना डेरा जमाया था । वह स्थान आज 'तपसी जी के डेरे' के नाम से प्रसिद्ध है । हो सकता है, उस समय किसी क्रान्तिकारी की पत्नी साध्वी के वेश मे यहां आकर रही हो । उस समय देश मे सगठन की आवश्यकता थी धर्म के प्रति आस्था जागृत करके ही देशप्रेम की लहर उठाई जा सकती थी। यदि जमना का बिसाऊ कस्बे म पधारना सन् १८५८ ई के लगभग माने तो लीला का प्रारम्भ १२७ वर्ष पूर्व ठहरता है ।

यह लीला सारे भारत मे होने वाली लीलाओ से अनोखी है । वतमान मे यह आसोज शुक्ला १ से १५ पूर्णिमा तक (पन्द्रह दिन तक) चलती है। गढ के पास वाले मैदान के उत्तरी भाग मे लकडी की बनी हुई अयोध्या तथा दक्षिणी भाग मे लका रखी जाती है । बीच के भाग मे पचवटी रखी जाती है । दशको के लिए सेठ साहूकारो की ओर से दुकानो के सामने तख्ते लगाए जाते हैं और सुरक्षा हेतु चारो ओर रस्से बाधे जाते हैं । मैदान मे पानी का छिडकाव किया जाता है । ऊपर ब धनवार बाधी जाती है । उत्तर व दक्षिण की ओर दो दरवाजे बाधे जाते है । दरवाजो के परदो पर रामायण की चौपाइया लिखी होती हैं ।

रामलीला का स्थाई कार्यालय सेठ जे के सिंहानिया की हवेली में स्थापित है, जहा उसका सारा सामान पडा रहता है तथा स्वरूपो का श्रृगार वहा पर ही किया जाता है । वहा से पूर्ण तैयारी करके स्वरूपों को गाजेबाजे के साथ लीलास्थल पर जुलूस के रूप मे लाया जाता है । सेठ जे के सिंहानिया की हवेली अब रामलीला की हवेली के नाम से प्रसिद्ध है ।

लीला के प्रमुख पात्रा वानरो एव राक्षसो की पोशाकें रामलीला हवेली मे दर्जियों को बठा कर विशेष प्रकार से सिलवाई जाती हैं । स्वरूपो की पोशाकें हर वष नई सिलवाई जाती हैं । पोशाको का विवरण निम्न प्रकार से है —

राम लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न— पीली धोती, वनवास मे पीला कच्छा, पीला अगरखा, सिर पर लम्बे बाल व चांदी के मुकुट, पीठ पर बन्धा हुआ तरकस व हाथ मे धनुष-बाण । तरकस मे सरकण्डो के बनाए हुए सजीले तीर भरे होते हैं । मुख पर सलम-सितारे चिपका कर बेल बूटे बनाए जाते है जिससे स्वरूपो का गौरवमय आकर्षण प्रदर्शित होता है ।

हनुमान— इस स्वरूप की पोशाक लाल कच्छा, लाल अगरखा व लाल रग का ही मुखौटा होता है । हाथ मे गदा होती है । पीडलियो पर पीली माटी रेखांकित की जाती है ।

बाली सुग्रीव— हरे रग का कच्छा व अगरखा होता है । मुख पर हरे रग का ही मुखौटा होता है । हाथ मे गदा होती है बाली सुग्रीव द्वारा युद्ध म पटटे लडाना, दण्ड बठक निकालना, कुश्ती लडना व गदा प्रहार के पैंतरो का प्रदशन आदि किया जाता है । अगद की भी हरी पोशाक होती हैं ।

नल-नील एव जामवत— नल-नील की नीली पोशाक व जामवत की पीतवर्ण की पोशाक होती है । परो म घुघरू बधे हाते हैं तथा हाथ मे गदा होती है । पीतवर्णी मुखौटा मुख पर लगा होता है । सभी वानरा की पोशाकें लाल रग की होती है ।

जटायु— मटिया रग की पोशाक व पखो से बना मुखौटा जिसकी आगे निकली लम्बी चोच होती है । पखा का फैलाव व सकोचन इस प्रकार किया जाता है, जिससे वह उडते हुए अपनी चोच से आक्रमण करता हुआ सा प्रतीत होता है ।

स्वण मृग— पीतवर्ण की पोशाक व पीले रग का ही मृग का मुखौटा । दोनो हाथो मे लकडी लेकर टागो की तरह काम मे लेते हुए उसके द्वारा कुलाचे भरने का शानदार प्रदर्शन किया जाता है ।

परशुराम— पीला कच्छा एव पीला अगरखा होता है । सिर पर लम्बे बाल, एक हाथ में फरसा व दूसरे हाथ म मृगछाला होती है । इनका कोई मुखौटा नही होता ।

दधिमुख - नारायणांतक— इनकी श्वेत पोशाक होती है— श्वत कच्छा व अगरखा, हाथ मे गदा । वालि सुग्रीव की तरह इनके द्वारा भी युद्धकौशल प्रदर्शित किया जाता है ।

मकरध्वज— इसकी पोशाक ठीक हनुमान जी की तरह होती है ।

१० रावण, कुम्भकरण विभीषण, मेघनाद आदि—

राक्षसो की काली पोशाक होती है। काला चूडीदार पायजामा, गोटा किनार लगाए हुए चमकदार अंगरखा, दस सिरो का मुखौटा, गले मे तलवार पीठ पर तरकस, हाथ मे धनुष, बाण आदि रावण की सज्जा। इसके अलावा अन्य पात्रो को भी ऐसी ही पोशाक होती है। कुम्भकरण के दो प्रकार के मुखौटे होते हैं – (१) नींद से जागने के बाद रावण द्वारा युद्ध के लिए प्रेरित करने पर कुम्भकरण का गोल बडा मुखौटा होता है, जो उसके भीमकाय शरीर को प्रदर्शित करता है। उस समय वह जल से भरे घड़े उछाल कर अपने सिर से फोड़ता है तथा युद्ध स्थल के लिए रवाना होता है। (२) युद्ध स्थल मे दूसरा मुखौटा लगा कर युद्ध करते हुए दिखाया जाता ह।

मेघनाद के भी दो मुखौटे होते हैं। एक युद्ध करते हुए तथा दूसरा सुलोचना के सती होते समय रखा जाता ह। विभीषण, अहिरावण व नारायणातक की भी इसी प्रकार की पोशाके होती हैं। खरदूषण व त्रिसिरा के तीन सिर वाला मुखौटा बाधा जाता है। बाद मे युद्ध करते समय एक मुखी मुखौटा सिर के तथा तीन मुखी मुखौटा पेट के बाधा जाता ह। सूपनखा के दो स्वरूप दिखाये जाते हैं— (१) एक सुन्दरी के रूप म व (२) दूसरा नाक कटी हुई कुरूप व भयानक राक्षसनी के रूप मे। ताडका के बडे बडे दातो वाला मुखौटा बाधा जाता ह। उस समय वह गदा लिए हुए युद्ध करते हुए दिखाई जाती ह।

११ विदूषक— लीला के समय एक दो विदूषक पात्र भी होते हैं जिनके सीगावाला व बाकेमुँह वाला मुखौटा लगा होता ह। वे लीला के बीच में दर्शको को अपने अभिनय से हसाते रहते हैं।

ऋषि-मुनियो के पीले रग का चोला व धोती मुख्य पोशाक होती ह। सिर पर लम्बे बाल व श्वेत दाढी-मूछे लगी होती हैं। हाथ में मृगछाला होती ह। इनके कोई मुखौटा नही लगाया जाता ह।

लीला आसोज शुक्ला १ से १५ (पूर्णिमा) १५ दिनों तक होती ह। इस लीला का प्रतिदिन का विभाजन निम्नप्रकार से होता ह—

(१) रामजन्म एव ताडका वध (२) अहिल्या उद्धार, धनुष भग, परशुराम लक्ष्मण सवाद एव राम विवाह (३) राम बनवास, दशरथ का स्वर्गवास, रामभरत मिलन (४) सूपनखा का नाक-कान काटना, खरदूषण त्रिसिरा वध

(५) सीता हरण, सुग्रीव व हनुमानादि से राम की भेंट (६) बालि-सुग्रीव-युद्ध व बालि वध (७) हनुमान द्वारा सीता की खोज व लंका दहन (८) समुद्र लंघन, विभीषण को शरण (९) लक्ष्मण मेघनाद युद्ध, हनुमान का संजीवनी बूटी लाना (१०) मेघनाद वध एवं सुलोचना सती (११) कुम्भकरण वध (१२) अहिरावण वध, हनुमान मकरध्वज युद्ध (१३) नारायणांतक-दधिमुख युद्ध, नारायणांतक वध (१४) राम-रावण युद्ध, राम की विजय (१५) राम-सीता का अयोध्या आगमन एवं राम भरत मिलाप।

प्रत्येक दिन की लीला में तरह-तरह के स्वांग भी लाए जाते हैं, जिनसे दर्शकों का विशेष मनोरंजन हो जाता है। कुछेक को छोड़ कर प्रत्येक वर्ष परम्परानुसार स्वांग प्रदर्शित होते रहते हैं। उनमें मुख्य-२ इस प्रकार से हैं—

(१) शिकारियों का शिकार करते हुए प्रदर्शन, (२) चौबियों का स्वांग (३) सेठों का स्वांग (४) बन्दरों का स्वांग (५) लोक-नृत्यों का स्वांग आदि।

राम-लीला की भावना में जीते हुए कतिपय पुराने पात्र—

इस लीला के अभिनयकर्त्ताओं के शेष जीवन को दूसरे कोण से भी देखा गया है। इन लोगों का शेष जीवन अपने द्वारा अभिनीत पात्रों का चरित्र चोगा ओढ़े हुए बीतता है। वे उन व्यतीत क्षणों में खोये-खोये से रहते हैं। उनके दैनिक जीवन की अभिव्यक्ति भी पात्रानुकूल होती है। उदाहरण के लिए राम का किरदार जिन लोगों ने निभाया था, उनका जीवन प्रायः शान्त एवं गम्भीर रहा है। लक्ष्मण की भूमिका निभाने वाले लोगों ने अपने जीवन में वाक् चातुर्य एवं अदम्य साहस के गुण ग्रहण किये।

स्व० गुरुदेव घनश्यामदास जी मिश्र ने हमेशा परशुराम का अभिनय प्रदर्शित किया। वे प्रेम, दया, सहानुभूति की प्रतिमूर्ति थे। उनके चेहरे पर ऋषितुल्य गाम्भीर्य सदैव बना रहता था। लेकिन कभीकभार आने वाला क्रोध भी परशुराम से कम नहीं होता था। शय्या पर लेटे अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी उनकी मुखाकृति पर परशुराम का सा तेज टपकता था। वस्तुतः उन्होंने अपना जीवन शिवभक्त परशुराम के चरित्र में ढाल कर जीया, ऐसा कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

उनके पुत्र स्व० श्री नन्दकिशोर जी मिश्र भी अपने पिताश्री के चरण-चिह्नों पर चलते हुए परशुराम का अभिनय करते रहे। वे भी जीवनभर इस

चरित्र का चोला पहन रट् और उसका सहजढंग से अनुकूलन बनाये रखा। इस प्रकार वंशानुगत परम्परानुसार गुणावतार भी होता रहता है।

हम सन् १६६७ ई मे दूधवाखारा (चूरू) की स्टेशन पर प्याऊ मे बैठे हुए एक व्यक्ति जो पानी पिला रहा था, को देख कर दंग रहगए। उसके सिर पर श्वेत लम्बे बाल, श्वेत दाढी जो सीने से उदर तक आई हुई थी, श्वेत बिखरी-बिखरी मूछे, बिन बांहों का लाल अंगरखा तथा वह नीचे लाल रंग का लंगोट कस हुए था। सारे शरीर पर श्वेत बालों का आवास था। इन सब वह एक वयोवृद्ध वानर स्वरूप में दिखाई दे रहा था। जल पीने के पश्चात् हम उस स्थान से हटे नहीं। हमारी निगाहें उनके चेहरे पर सतत टिकी हुई थी। आखिर बाबा पूछ ही उठा— "क्या बात है, बेटे ? क्या देख रहे हो?" हमने विनम्रता के साथ कहा— "बाबाजी! हम भ्रम सा हो रहा है। हमारे गांव की लीला मे डालूराम जी 'हनुमान जी' की भूमिका अदा किया करते थे। आपकी सूरत उनसे -- ---।"

"मैं वही डालूराम हूँ।" उनका सीधा-सपाट उत्तर था।

फिर तो स्मृतियों मे घटनाओं के पृष्ठ पर पृष्ठ खुलते रहे। उनसे बातचीत पूर्ण होने पर मूलत वही स्पष्ट हुआ जो हमारे अ तरमन पर अंकित था। स्व० डालूराम जी का पूरा जीवन राममय होगया था। अंतिम दिनों में वही हनुमान के स्वरूप मे व उनके चरित्र मे वे श्वास ले रहे थे। कि विशालता उनके जीवन मे थी कि वे अन्तिम क्षणों तक समाज की सेवा में रत रहे। सच्चे अर्थों मे वे राम के सेवक थे और उसी बाने म बने रहकर स्वर्ग सिधारे। धन्य है, ऐसे पात्रो का जीवन जिन्होंने यथार्थ मे दिखाया।

यहा रामकथा के प्रमुख पात्रो का किरदार निभाने वाले कला- की एक सूची दी जारही है जिनकी सेवाए इस नगर व लीला आयोजन मे सदा स्मरणीय रहगी —

१ चारों स्वरूपों का अभिनय —

(१) गजाधर मिश्र (टीले पर हुई लीला मे) (२) प० खेतसीदास जी (३) प० श्रीलाल जी मिश्र (४) प० रामदत्त जी पुजारी (५) श्रीलाल जोशी (६) सीताराम जी लाठ (७) सीताराम व्याकारण (८) काका वल्लभ (६) निवास पुजारी (१०) बाबूलाल बजानेवाला (११) गोरु मिश्र (१२) वासुदेव पुजारी

(१३) जुगलकिशोर दायमा (१४) सत्यनारायण मिश्र (१५) महावीर मिश्र (१६) गजानन्द मिश्र (१७) हरिराम मिश्र (१८) जीतमल (१९) गौरीशंकर पुजारी (२०) शुभकरण मिश्र (२१) पुरुषोत्तम मिश्र (२२) रामा जोशी (२३) रघुनाथ माटोलिया (२४) ताराचन्द पुजारी (२५) दामोदर मिश्र (२६) रामावतार मिश्र (२७) सीताराम जोशी आदि प्रमुख है।

२ सीता का अभिनय —

(१) भूमजी मिश्र (२) मुरन्द जी (३) नन्दा जोशी (४) विदार मिश्र आदि विशिष्ठ हैं।

३ हनुमान का अभिनय —

(१) रामेश्वर जी पुजारी पुरोहित (२) लच्छूराम जी तिवाड़ी (३) हनुमान जी मिश्र (४) विलास राणासरिया (५) डालूराम जी राणासरिया (६) नन्दकिशोर मिश्र (७) मदनलाल शर्मा जगतपुरा (८) जवाहर बालासरिया (९) वल्लभ जी माटोलिया आदि।

४ नारद का अभिनय —

(१) बजनाथ जांगिड़ (२) गोमराज जी दायमा (३) मीडका वापड़ी (४) लड्डाक ब्राह्मण (५) मालजी पुजारी आदि।

५ इन्द्र का अभिनय —

(१) ठा० गणपतसिंह (२) ठा० रीडमलसिंह (३) ठा० गोपालसिंह (४) काका वल्लभ मिश्र (५) वद्य पुरुषोत्तम शर्मा (६) प्रमाद मिश्र आदि।

६ बालि-सुग्रीव जोड़ी —

(१) शिर जोशी - श्रीलाल मिश्र (२) शिर जोशी - प्रहलाद मिश्र (३) वासुदेव पुजारी - काका वल्लभ मिश्र (४) निरंजन पुजारी - वासुदेव पुजारी

७ रावण, कुम्भकरण, मेघनाद आदि —

(१) नानू स्वामी (२) प्रहलाद दरोगा (३) गजानन्द मिश्र (४) जयसियाराम (५) मुरली दरजी (६) दुर्गादत्त रिजानी वाला (७) पन्नालाल दायमा (८) रघुनाथ माटोलिया (९) नारायणसिंह भाटी आदि।

८ गिद्ध जटायु —

(१) दुरगा जोशी (२) सीताराम जोशी आदि।

९ माया मृग —

(१) शिर जोशी (२) निवास पुजारी (३) वासुदेव पुजारी (४) माणजी नाई (५) शंकरलाल पुजारी आदि।

१० रामायण पाठकर्त्ता —

(१) कालूराम जी पुजारी (२) पूरणमल जी मिश्र (३) लक्ष्मीनारायण पुजारी (४) महादेव जी मिश्र (५) जेसराज जी सेवदा (६) कन्हैयालाल जी टाईवाला आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

११ सगीत देने वाला — हाजूमीर सरगिया। इनायत खां आदि।

रामलीला के लिए आवश्यक सामान एव आभूषण आदि प्रदान करने मे जिन दानवीर सेठो का सहयोग रहा, उनकी सूची सक्षेप मे दी जारही है —

१ चारो स्वरूपा के लिए चादी के मुकुट तैयार करवा करके स्व० सेठ लक्ष्मी नारायण जी पौद्दार की ओर से प्रदान किए गए।

२ सेठ श्री श्रीराम रामनिरजन झुनझुनू वाला की ओर से चारो स्वरूपों के लिए आभूषण (चादी के) बनवा कर प्रदान किए गए।

३ सेठ पूरणमल जी बुवालिया की ओर से 'गले की गोप' अर्पित की गई।

४ स्व० सेठ बिहारीलाल जी पौद्दार की ओर से 'कवच' तैयार करवाकर अर्पित किए गए।

५ स्व० सेठ गोविन्दराम बजाज की ओर से 'लकडी की लका' बनवा कर प्रदान की गई।

६ स्व० सेठ चेनराम जी खेमका की ओर से 'पचवटी' लकडी की बनवा कर प्रदान की गई।

७ सेठ भरामल गोपीराम भुमट्टी की ओर से 'लकडी की अयोध्या' बनवा कर अर्पित की गई।

८ स्व० सेठ मणूराम जी सिहानिया की ओर से 'लकडी का रथ' (गाडूला) बनवा कर अर्पित किया गया।

९ नगर के दानवीर सेठो की ओर से आर्थिक सहयोग सदा मिलता रहा है। इसमें बिसाऊ ठिकाने का सहयोग अग्रणी रहा है।

२ देव-स्थान व शिला-लेख

शेखावाटी क्षेत्र के सेठ साहूकारो मे धार्मिक प्रवृत्ति का पाया जाना एक विशेष गुण माना जाता है। वे अपनी कमाई का एक भाग धार्मिक कार्यों मे व्यय करते हैं। यह नियम वर्तमान में भी निर्बाध गति से चल रहा है। इनका जीवन इसी पुरातन धर्म पर आधारित है। बिसाऊ के सेठ भी इसी धार्मिक आस्था

राजस्थान प्रसिद्ध बिसाऊ की रामलीला की
कतिपय झलकियां



बिसाऊ मे आयोजित समारोह (रवी द्र उपनिषद) मे
डफ पर नृत्य करते हुए नगर का लोकप्रिय कलाकार
श्री भूरामल दरोगा ।

के साथ अपनी आय के एक भाग को धार्मिक कार्यों म व्यय करते रहे हैं। इन्हीं कारणों से कस्बे में अनेक भव्य व सुन्दर देव मन्दिरों का निर्माण हुआ। यहा के प्रमुख देवमन्दिरों का संक्षिप्त विवरण दिया जारहा है —

(१) बूढिया महादेव —

यह मन्दिर बाजार के बीच म स्थित है। इसको ही कस्बे का प्राचीनतम मन्दिर बताया जाता है। इसके निर्माणकाल व तिथि का कोई तथ्यात्मक प्रमाण नहीं मिलता। बुजर्गों के मुख से सुना जाता रहा है कि यह गाव प्रारम्भ म 'बिशाले की ढाणी' कहलाता था। उक्त स्थान पर एक बडा भारी जोहड था। जोहड की चौभी (मध्यस्थान) पर उक्त शिव मन्दिर का निर्माण बाद मे हुआ। यह बात काफी अशो तक सही मालूम देती है। बिसाऊ के चारो ओर का भाग ऊचे ऊचे टीलो से घिरा हुआ है और पूरा कस्बा खडडे म बसा हुआ है। बाजार वाला भाग तो पूरा का पूरा नीची भूमि पर स्थित है। इससे एक बडे तालाब के होने की स्थिति स्पष्ट नजर आती है। आज इतना भराव आगया है कि उक्त मन्दिर की अनेक सीढियां उतरने के बाद ही भीतर शिवलिंग के दर्शन होते हैं। इसस अनुमान लगाते हैं कि उक्त मन्दिर ३०० वर्ष पुराना अवश्य है।

कहा जाता है कि पहले चौभी वाले स्थान पर ही यह छोटा सा शिवलिंग (शिवस्थान) बना हुआ था जिसका मुख्य दरवाजा जाट[1] (लिजडा) के पास दक्षिण की ओर खुलता था। बाद मे ठिकाने के किसी कामदार या ठाकुर की शिव पूजा व ध्यान साधना पर प्रसन्न होकर भगवान शकर ने उसकी मुराद पूर्ण करने की कृपा की। कहते हैं कि उसी दिन से ठिकाने की ओर से शिवालय को एक भव्य मन्दिर का रूप देने का निर्माण कार्य प्रारम्भ होगया। वर्तमान मे इस मन्दिर का मुख्य दरवाजा उत्तर की ओर है। मन्दिर काफी ऊचा है तथा दोनो ओर दुकानें खुलती हैं जिनके किराये की आय को मन्दिर की व्यवस्था पर व्यय किया जाता है। इस मन्दिर की अनेक सीढियां चढ कर नीचे उतरने पर शिवलिंग का सभामण्डप आता है। मण्डप के मध्य गर्भाशय के आगन म लिंगोद्भव जलेरी सहित स्थित है।

(२) पचायती मन्दिर —

बिसाऊ गढ स उत्तर की ओर बाईं मोड पर पचायती मन्दिर स्थित है। यह कस्बे का अति प्राचीन मन्दिर है। गाव के बसने के समय से ही इस

१ उक्त जाट शिवालय के समय का ही बताया जाता है।

मन्दिर को बना हुआ बताते हैं । इसका मुख्य द्वार पूर्वाभिमुख है । इसके उत्तरी भाग में एक कुई एक शिवालय तथा एक पीपल का वृक्ष सब मटके के था। आज य सब ध्वस्त होगये हैं तथा मरम्मत के अभाव में उदासीन लगते हैं। मन्दिर के भीतर चारो ओर तिबारियां बनी हुई हैं। सामने सभा-भवन पूर्वाभिमुख है जिसमें एक छोटा गर्भगृह है। उसके भीतर ठीक सामने बंशी धारण किए हुए त्रिभंगीलाल (गोविन्ददेव) की मूर्ति प्रतिष्ठित है। उसके बाईं ओर राधा की मूर्ति विराजमान है। उसके चारो ओर फिरनी (परिक्रमा) बनी हुई है। उसके दाहिनी दिशा की ओर एक दरवाजा उत्तर की ओर खुलता है जिसमें अनेक मकान बने हुए हैं। उनमें मन्दिर का पुजारी सब परिवार के रहता है। इन मकानों का मुख्य दरवाजा पश्चिम की ओर सड़क पर खुलता है।

यह गोविन्ददेव का मन्दिर कहलाता है। किसी भी शुभ कार्य पर इस मन्दिर में पूजन-अर्चन करना फलदायक मानते हैं। यहीं पर गांव के गणमान्य प्रतिष्ठित लोग बैठ कर पंचायत करते थे व न्यायपूर्वक निर्णय दिया करते थे। मन्दिर का सम्पूर्ण व्यय भार सामूहिक रूप से नगर के पंचों के द्वारा उठाया जाता था। इसी कारण इसका नाम पंचायती मन्दिर पड़ा। इसी मन्दिर में पं० तुलाराम जोशी ने आमरण-अनशन पर बैठ कर नष्ट होते बीड़ को बचाया था तथा बालमुकुन्द दरोगा ने होली पर डफो का जुलूस रोके जाने पर आमरण अनशन पर बैठ कर सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा की थी।

बूढ़िया महादेव व पंचायती मन्दिर की प्रतिष्ठा का काल एक ही लगता है। दोनों का पुजारी परिवार एक ही रहा है। प्राचीन बहियों में दोनों की जमीन व आय के स्रोत एक ही हैं। सम्बन्धित पट्टा की नकल देखिए—

(१) ○ म्होर

श्रीराम जी (श्री रघुनाथ जी के भोज का)

सिध श्री राज श्री हणुवंत सघ जी राज श्री सूरजमल जी बचनात कसबा बिसाऊ का चबूतरा का मु मफी दसे अपरन्च निरभाराम बिठी रोजाना) मके पसा ३ देवोकरो। मिती सावण सुदी १५ स १८३७ का, ग्यारम की नागा।

(२) ○ म्होर

श्रीराम जी

म्हारो सदा सोजी को

सिंघ श्री राज श्री स्यामसिंघ जी राज श्री रणजीतसिंघ जी वचनात। कसवा बिसाहू में कूवा बोचला ऊपर हुवो-जकी पूजा निरभाराम करसी सो सामद करवो करो। मिती भादवा वदी १३ स १८४८।

(३) बिहारी जी का मन्दिर —

गढ के ठीक सामने बाजार की मुख्य सडक पर यह विशाल मंदिर स्थित है। यह मन्दिर काफी ऊचा बना हुआ है। इसकी लम्बी चौडी सीढिया चढने पर मंदिर का मुख्य दरवाजा आता है जो पूर्वाभिमुखी है। दरवाजे के दोनो ओर दो गोखे हैं। दरवाजे के किवाड बडे मजबूत एव जडे हुए हैं। चारो मोर चौखट पर कोरणी की हुई है, जिसमे बेलबूटे आदि का उकेरण बडा कलापूर्ण एव आकर्षक है। मुख्य द्वार के मध्य ऊपर एक आलय मे गणेश जी की पाषाण प्रतिमा विराजमान है। मंदिर के भीतर चारो ओर कमरे व तिबारिया बनी हुई हैं। सामने सभामण्डप स्तम्भो पर आधारित है। सभामण्डप के मध्य गर्भगृह बना हुआ है जिसमे श्री वैंकट विहारी की कलात्मक मूर्ति प्रतिष्ठित है। गर्भगृह के चारो ओर परिक्रमा बनी हुई है। बीच के चौक मे तुलसी का पौधा गोल बडे गमले (थावळा) मे लगा हुआ है। मुख्य द्वार के भीतर की पोल के सामने हनुमान जी का छोटा सा देवालय बनाया हुआ है। मन्दिर का दूसरा द्वार गढ की ओर दक्षिणाभिमुख खुलता है।

मन्दिर के ऊपर चारो ओर गुम्बजें बनी हुई है। गुम्बजो के चारो ओर महराबो का कलात्मक कटाव देखने योग्य है। छज्जो के ऊपर व नीचे भित्तिचित्र है जिनके विषय मे प्रनग से शोध-खोज करने की आवश्यकता है।

यह मंदिर राजकीय मन्दिर कहलाता है। ठिकाने के पुराने रिकार्ड के अनुसार सवत् १९११ (१८५४ ई) मे ठाकुर हमीरसिंह जी की पासवान जी ने बिसाऊ मे उक्त मंदिर बनवाया था। ठाकुर साहब ने साढ बदी १ को मन्दिर के देवपूजा के लिए मोहनराम को अधिकारी मुकरर करके पट्टा प्रदान किया जिसमे मन्दिर की आय की व्यवस्था की गई।

(४) नृसिंह देव का मन्दिर —

यह मन्दिर बाजार के मध्य मे बबेरवाल ब्रान्स के ठीक सामने स्थित है। यह बिसाऊ के विशाल मन्दिरो मे से एक है। पन्द्रह-बीस सीढियां चढने के बाद मंदिर का मुख्य द्वार आता है। सीढियो के दोनो ओर गोखे बने हुए हैं। ऊपर के दोनों ओर के गोखो पर पत्थर की घडाई करके हाथी बनाये हुए हैं

जो बड़े सुन्दर व कलापूर्ण हैं। मुख्य द्वार की जोड़ी जड़ी हुई है और बड़ी अच्छी कारीगरी के साथ बनाई हुई है। ऊपर के आलय में गणेश की मूर्ति विराजमान है तथा चारों ओर गवाक्षों से चित्रविचित्र हैं। ऊपर चारों ओर बहुत सुन्दर व कलात्मक ढंग से गुम्बजें व बारहदरियां बनी हुई हैं। मन्दर चौक में प्रवेश करने के बाद ठीक सामने बांई ओर सभामण्डप है और उसमें भगवान नृसिंह देव की बहुमूल्य मूर्ति प्रतिष्ठित है।

यह मन्दिर झुंझुनू वाले सेठों की ओर से निर्मित कराया गया था। किन्तु इसका विशेष विवरण उपलब्ध नहीं हो पाया। इसके कीर्तिस्तम्भ का लेख काफी धुंधला गया है किन्तु जो पठन से स्पष्ट हुआ, उसके अनुसार यह मन्दिर जेठ वदी १० सोमवार संवत् १६२१ शाके १७८६ को निर्मित हुआ प्रतिष्ठित हुआ।

(५) श्री लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर —

यह मन्दिर पंचायती मन्दिर के ठीक सामने मध्य बाजार में स्थित है। इसका मुख्य द्वार पूर्व की ओर खुलता है। सामने सभामण्डप के केन्द्र में श्री लक्ष्मीनारायण जी की मूर्ति स्थापित है तथा चारों ओर फिरनी बनी हुई है। शेष दायें बायें भाग में तिबारियां बनी हुई हैं। इस मन्दिर को भी राज्याश्रय मिला हुआ था। बिसाऊ ठिकाने के वकील श्री अजरहुसैन के लिखे के अनुसार उक्त श्रीजी का मन्दिर संवत् १६३० में प्रतिष्ठित हुआ। मन्दिर के लिए जमीन देकर व सरकार की ओर से भोग आदि के लिए मासिक राशि देकर एक निश्चित आय मुकरर की गई। इस मन्दिर के पुजारी मालीराम जी पुजारी थे। वर्तमान में श्री गीगराज पुजारी हैं।

(६) बागलों का मन्दिर —

बिसाऊ में बागलों के दो मन्दिर थे। एक मन्दिर सेठ श्रीराम जी झुंझुनू वालों के बगीचे के ठीक सामने था जो अब खण्डहर मात्र है। दूसरा मन्दिर झुंझुनू वालों की हवेली के सामने स्थित है और इसके पास एक कुंआ बनाई हुई है। यह मन्दिर काफी अरसे से बन्द पड़ा हुआ है। इसलिए इसके भीतरी भाग के विषय में कुछ बताया नहीं जा सकता। किन्तु इस मन्दिर के मुख्य द्वार के ऊपर एक अस्पष्ट सा आलेख है जिसके अनुसार उक्त मन्दिर श्री बागला ने संवत् १६०६ वि० में निर्मित कराया था। मूल लेख का सुपाठ्य अंश इस प्रकार है—

। श्री महागणाधिपतेनम " " " प्रत्यवदने सवमाग्रे प्रसोतये अचिरया पान सु " गुणाय गणाय नमने " " समस्त ब्राह्मणे नम प्रथास्मिन शुभ सवत् १६०६ शाके १७६४ प्रवनि मात प्रसाद मति प्रतिपदा वृहस्पतिवार " " मूल नक्षत्रे घडी ५२ सुघडी श्री विश्वेश्वर " कराये " " परमेश्वर जी " बागला बणाया ज वास्ये तिक रुपये लागा कुप सुमर ११५१) श्री विस्वेसर जी अपणे हाथ सू मडाया ।

(७) गोविन्द देव का मन्दिर —

यह मन्दिर दक्षिणी बाजार के पश्चिम की ओर की दुकानो की कतार म स्थित है। इसका मुख्य द्वार पूव की ओर खुलता है। सामने सभामण्डप मे गोविन्द देव की मूर्ति स्थापित है। बडे बूढो से सुना गया है कि उक्त मूर्ति सव प्रथम भरदास महाराज ने जयपुर से जयपुर-राजाज्ञा प्राप्त करके प्रतिष्ठित की थी। इससे पूव जयपुर राज्य की ओर से गोविन्द देव की मूर्ति को जयपुर से बाहर लेजाने पर प्रतिब ध लगा हुआ था। मण्डप के ऊपर दीवार मे एक लेख लोह-पट्टिका म इस प्रकार स दिया हुआ है —

'श्री गोविन्द देव जी का मन्दिर

श्री राज राजेश्वर मानसिह क्षोणीपति नाथ कुलेक सूय धन्य शुभ दागमन वन्दीयम् पादापणादवम् कृतार्था ।

स्वामी भरदास जी महाराज ।

(८) काली जी का मन्दिर —

बूढिया महादेव के पूव की ओर काली जी का भव्य मन्दिर बना हुआ है। यह मन्दिर सगमरमर के पत्थर से निर्मित है। इसकी धवल आभा सबके मन को मोह लेती है। मुख्य द्वार पश्चिमाभिमुखी है। यह द्वार बहुत सुन्दर पीतल की फूल पत्तियो से जडा हुआ है। सामने सभामण्डप व गभ द्वार है जिसका द्वार भी पीतल की कलाकृतियो से अलकृत है। गभगृह के मध्य काले पाषाण की महिषासुर मर्दिनी काली देवी की बडी मूर्ति प्रतिष्ठित है। काली माई का ओजस्वी मुखमण्डल हाथ मे फरसा, काली वेशभूषा मे आगे बढा हुआ कदम आदि ने प्रतिमा के कला सौष्ठव को ऊभारने म निसदेह चार चाँद लगा दिए है।

मुख्य द्वार के दोनो ओर दो गोखे है जिनके कटावदार तोरण सुन्दर लता पत्रादियुक्त हैं। ऊपर आलय म गणेश जी की मूर्ति विराजमान है। उसके दाइ ओर एक छोटा लेख मण्डित है —

'श्री राम प्रसाद जी पोद्दार के पुत्र भगवानदास जी सीताराम जी।
मिति जेठ सुदी ५ सवत् १६७७
नागरमल पोद्दार'

इससे स्पष्ट है कि इस मन्दिर को रामप्रसाद जी पोद्दार के पुत्रों ने निर्मित कराया और उक्त सवत् मे प्रतिष्ठा हुई। यह आधुनिक मन्दिरा म एक श्रेष्ठ मन्दिर है।

(६) श्री गोविन्द देव जी का मन्दिर —

श्री काली जी के मन्दिर के ठीक सामने यह मन्दिर स्थित है। यह एक आधुनिक ढग स निर्मित सगमरमर का विशाल मन्दिर है। इसक पूर्वाभिमुखी मुख्य द्वार के दोना ओर सुन्दर कमरे बने हुए हैं तथा बरामदा है। मुख्य द्वार की जोडी बहुत सुन्दर व पीतल के बेलबूटो व चौफूलों से जडी हुई है। इस दरवाजे की कलाकारी देखने योग्य है। दोनो ओर गवाक्ष हैं तथा ऊपर का ताक म गणेश मूर्ति विराजमान है। दायें गोखे के ऊपर के भाग में अभिलेख पत्थर जडा हुआ है जिससे प्रमाणित होता है कि यह मन्दिर सवत् १६८४ में बनकर तयार हुआ था। अालेख इस प्रकार स है —

'श्री गोबिन्द देव जी का मन्दिर सूयमल बिमनराम पोद्दार के पुत्र रामकुमार, लक्ष्मी नारायण, शिवचन्द राय ने बनवाया मिति आषाढ शुक्ला १० सवत् १६८४'

मुख्य द्वार के सामने पूर्वाभिमुखी सुन्दर सभामण्डप बना हुआ है। मध्य मे गर्भगृह स्थित है जिसके चारों ओर परिक्रमा बनी हुई है। गर्भगृह के मध्य मे उच्च आसन पर चादी से अलकृत गोविन्द देव की भव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है। गर्भगृह के पट पूरे चादी से मण्डे हुए हैं। उन पर स्व० शिवलाल जांगिड की देखरेख मे कारीगरो द्वारा सुन्दर कलापूर्ण चित्ताई की हुई है। फूल पत्तियों के उभार बहुत आकर्षक एव स्वाभाविक मालूम देते हैं। प्रतिमाओ के ऊपर स्वर्ण एव रजत से निर्मित कलात्मक छत्तर शोभित हैं।

इसकी मुख्य विशेषता यह है कि यह सम्पूर्ण मन्दिर बहुमूल्य सगमरमर के पत्थरो से निर्मित है जिसकी धवल आभा सौन्दर्य को द्विगुणित कर देती है।

(१०) श्री सत्यनारायण जी का मन्दिर —

यह मन्दिर गढ के पीछे दक्षिण की ओर बस स्टण्ड जाने वाली सडक पर राज के कुए के ठीक सामने स्थित है। इसका मुख्य दरवाजा पूर्व की ओर

खुलता है । इसके दोनों ओर दो दुकानें बनी हुई हैं । भीतर सामने सभामण्डप है जिसके गर्भद्वार के भीतर भगवान सत्यनारायण की मूर्ति स्थापित है । इसके चारों ओर फिरनी बनी हुई है ।

यह मन्दिर ठिकाने की ओर से बनाकर संवत् १९३९ वि० में राज के मिश्र परिवार को दिया गया । पुराने पट्टों से मालूम होता है कि उक्त मिश्र परिवार को ठाकुर श्यामसिंह जी के काल में मिसरात का काम सौंपा गया था । इनके शासन काल में ही उनको लाकर बसाया गया प्रतीत होता है । एक प्राचीन पट्टे से प्रमाणित होता है कि हरिनारायण मिश्र को जमीन मिति चैत बदी २ संवत् १८८१ में प्रदान की गई । इसके बाद ठाकुर हमीरसिंह जी ने मिति बसाख बदी १ संवत् १९११ में एक पट्टा देकर मिसराई का पट्टा जानकी दास व उसके बेटे चतुर्भुज और हरनारायण में बराबर का बटवारा कर दिया था । माजी उदावत जी ने बीझराज देवकरण मिश्र को २०० बीघा जमीन ठींचोली में मन्दिर को मिति कार्तिक बदी ५ सं० १९४४ में प्रदान की थी । यहां मन्दिर प्रदान करने की एक पट्टे की नकल दी जाती है —

O म्होर

सीध श्री राजे श्री जगतसीघ जी वचनात । माजी साहब उदावत जी मन्दर करायो बीजराज जी देवकरण मीसर न दीयो जके भोग वास्ते जमी बीसाहू की माजी क बाढ की बीघा ५१ ठीचोनी की २०० दोयस बीघा पकी सिंवाणा बाढ की मणास की सीव मे कोठी १ ब्याव लाग रीपियो १) सिकर को चुरीनिकासी को म्हाजन को विदपरी को १) रिपियो मोकर को सतनारायण को लगायो सिरकार की माळा फेरेगी ब्रवदत्त परदत्त तयो ग्राहिते वसुधरा । ते नरा नरक मे जायते यावत् चन्द्र दिवाकरा । मिति जेठ बदी १३ संवत् १९३९ का । देळी ४, नावा ८ द काजी असरफ हुसेन

वर्तमान में इसी वंश में स्व० हनुमान जी मिश्र के दो पुत्र श्री सत्यनारायण व श्री महावीरप्रसाद हैं । श्री सत्यनारायण मिश्र इस मन्दिर की पूजा पाठ करते हैं और भगवान की सेवा में रत हैं ।

(११) नाथजी का मन्दिर —

नगर के दक्षिणी दरवाजे बाहर खातियों के मोहल्ले में श्री नाथजी का मन्दिर स्थित है । इसका बाहरी मुख्य द्वार पश्चिम की ओर खुलता है तथा भीतर का उत्तर की ओर । इसके भीतर बड़ा चौक है तथा सामने नाथजी के

विश्राम के लिए बडा कमरा है जहा वे बैठकर भक्तो के दुखदर्द की बातें सुनते हैं। उक्त कमरे के दायी ओर विशाल बरामदे के बायें भाग के एक कमरे मे योगीराज गणेशनाथ जी, चम्पानाथ जी व भैरूनाथ जी के समाधिस्थल बने हुए हैं। इनमे तीनो के चरण चिह्न प्रतिष्ठित किए हुए हैं। इनके चारों ओर परिक्रमा के लिए फिरनी भी बनी हुई है। बरामदे के ठीक सामने श्री अमृतनाथ जी का भव्य चित्र अंकित है। इनके ऊपर भव्य शिखिर बना हुआ है जिसके चारो ओर महान् अवधूतो की मूर्तिया उकेरी गई हैं।

मन्दिर के पूर्वी भाग मे दो शिखिर बहुत सुन्दर व आकर्षक हैं। प्रथम शिखिर मे गोरक्षनाथ व शिव की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं तथा द्वितीय शिखिर घडीनाथ जी महाराज की समाधि पर बना हुआ है।

आज से करीब दो सौ वर्ष पूर्व चचलनाथ जी के प्रसिद्ध शिष्य गणेशनाथ जी ने १६ वर्ष की अवस्था मे बिसाऊ आकर उक्त स्थान पर अपनी साधना स्थली बनाई। उस समय यहा एक झोपडा था जिसके आसपास झाड़ के वृक्ष तैयार किए गए थे। आश्रम के चारो ओर ऊंची बाड बनादी गई थी। ८० वर्ष की अवस्था तक बिसाऊ आश्रम मे ही साधनारत रहे। इनके बाद इनके ही गुरुभाई क्षमानाथ जी के प्रिय शिष्य चम्पानाथ जी यहां कम वर्षों तक साधना करते रहे। चम्पानाथ बहुत प्रसिद्ध एव वचन सिद्ध हुए। इन्हीं के शिष्य अमृतनाथ जी महाराज बहुत चमत्कारी नाथ हुए जिन्होंने फतेहपुर में बड़े आश्रम की स्थापना की। अमृतनाथ के शिष्य ज्योतिनाथ जी हुए और इन्ही के शिष्य घडीनाथ जी महाराज ने बिसाऊ आश्रम को सवत् १९८४ से अपनी साधना स्थली बनाया और अपने सरल स्वभाव व सिद्धि से वे शेखावाटी क्षेत्र में बड़े सम्माननीय रहे। इन्होंने आश्रम के चारो ओर चारदीवारी, अनेक कमरे व तीन शिखिरो का निर्माण कराया। कुए व कुण्ड के अलावा जल की टूटिया व विद्युत लेकर आश्रम मे आधुनिक सुविधाए भी प्रदान कीं। आपने हरिद्वार में लक्ष्मणझूला के पास एक विशाल आश्रम का भी निर्माण कराया जो 'अमृतधाम' के नाम से प्रसिद्ध है। सखेद लिखना पडता है कि आपका स्वर्गवास गत वर्ष ४ मगलवार ता २०३६ को होगया। वर्तमान में इस आश्रम के महन्त भतिनाथ जी हैं।

(१) राटोको की मस्जिद —

नगर के शहरपनाह के भीतर सराफा की गली के दक्षिण की ओर राटौ, जिन्हें मुसलमान राठौडों की मस्जिद सबसे प्राचीन बताते हैं। इसे

निर्माण करीब ३०० वष पूव का बताते हैं। वतमान मे इसकी इमारत को नए सिरे से बना कर सुन्दर रूप देदिया गया है।

(२) मस्जिद कायमखानियान —

यह मस्जिद नगर के पूर्व में स्थित है। इसका निर्माण वि स १६४७ म हुआ बतात हैं। निर्माण मे साजद खा शाह मोहम्मद का महत्वपूण योगदान रहा था। इस मस्जिद क लिए ठा० जगतसिंह ने $17\frac{1}{4} \times 18\frac{3}{4}$ हाथ जमीन का पट्टा पीर वजीरुद्दीन हासीवाला के नाम करके प्रदान किया था। मस्जिद की तामीर मोहल्ले के कायमखानी भाइयो के चन्दे से हुई थी। साजद खा ने ही इस मस्जिद म सबसे पहले अपने भाइयो को साथ लेकर नमाज पढी थी। इसका पहला पेशइमाम काजी असरफ थे जि होने ६५ वष तक इमामत की। बाद मे उनका पोता काजी हमीदुल्ला पेशइमाम रहा।

(३) ईदगाह मस्जिद —

यह मस्जिद पश्चिमी दरवाजे के बाहर स्टेशन रोड के उत्तर की ओर स्थित है। इसकी तामीर के लिए जमीन ठिकाने की ओर से दी गई। इस पुनीत काय में इमदाद अली खा दायमखानी वकील ठिकाना बिसाऊ का भरपूर सहयोग मिला। इसके निर्माण मे सालू धोबी ने पर्याप्त आर्थिक सहायता प्रदान की थी। इसकी देखभाल अवला पुत्र ननूशाह फकीर करता था। इस मस्जिद का प्रथम इमाम काजी गुलाम रसूल थे। इसके बाद काजी रहीम बक्स, काजी मोहम्मद इब्राहिम व काजी हमीदुल्ला रहे। इस मस्जिद मे मुख्यत रूप मे दो बार (ईद-उल-फित्तर व ईद-उल जुहा पर) सामूहिक नमाज अदा की जाती है।

(४) झगडा मस्जिद —

यह मस्जिद उत्तरी दरवाजे के बाहर पश्चिमी गली के मोहल्ले तेलियान में स्थित है। इसके लिए जमीन वजीरा धोबी ने दी थी और तामीर तेलियों ने करवाई थी। इसके निर्माण मे अनक बाधाए आई और झगडे हुए, इसलिए इसका नाम झगडा मस्जिद पड गया।

(५) मस्जिद व्योपारियान —

यह मस्जिद नगर के पश्चिम मे व्योपारियो के मोहल्ले मे स्थित है। यह भी काफी पुरानी मस्जिद है और इसकी इमारत विशाल और आकर्षक है। इसमे सभी आधुनिक साधन उपलब्ध हैं। इसकी देखरेख व्योपारियो की एक कमेटी करती है।

(६) मस्जिद गोरियान —

यह नगर के पूर्व मे गोरियो के मोहल्ले में स्थित है। उस वक्त गोरे ठिकाने मे बड़े-बड़े ओहदो पर आसीन थे। इसलिए गोरियो ने इसका निर्माण कराया तथा इसकी स्थायी आय के लिए उन्होंने एक खेत भी प्रदान किया था।

इनके अलावा वर्तमान मे स्टेशन पर नई मस्जिद व यतीमखाना भी बनाया गया है जिसमे गरीब बच्चो पर होने वाला व्यय संस्था द्वारा वहन किया जाता है।

इन धार्मिक स्थलों से प्रेरणा पाकर कुछ उत्साही लोग इसके मदरसे भी चला रहे है। इनमे 'मदरसा तालीमुल कुरआन' है जिसकी इमारत का निर्माण जनसहयोग से हुआ। इस पावन कार्य मे श्री मस्तअली खा, इब्राहिम खा, अली बहादुर, अलादीन खा आदि लोगो का प्रशसनीय योगदान रहा। इसमे विशेषत लडकियो को शिक्षा दी जाती है।

इसी प्रकार 'मदरसा कायमखानियान' ऊपर वाले मोहल्ले मे चलता है, जिसम लडकियो को शिक्षा दी जाती है। इसके निर्माण मे मोहम्मद ... व्योपारी ने काफी आर्थिक सहायता प्रदान की।

जैन मन्दिर —

१८ वी शताब्दी म जैन - साधु बीकानेर-चूरू झुंझुनू मार्ग से ... करते समय बिसाऊ के उत्तरी ऊंचे भाग को अपना विश्राम स्थल बनाया करते थे। उस समय बिसाऊ का उत्तरी भाग ही घना बसा हुआ था। इसी के कारण करीब ४० दिगम्बर जैन परिवार पुराने समय स बिसाऊ के उत्तरी भाग मे ही बसे हुए हैं। विष्णु नाट्य परिषद संस्था का भवन पहले जैनाजी ... ही था। बताया जाता है कि सबसे पहले श्री हरसूदास जी सरावगी को ... या फतेहपुर से साथ लाकर यहां बसाया गया था। उनके नाम से अब भी ... बाडी आदि प्रसिद्ध हैं।

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर —

पश्चिमी बाजार म उत्तर की ओर जाने वाली जटिया गली में ... सामने श्री आमने-सामने दिगम्बर जैन समाज के दो मन्दिर बने हुए हैं। ... जैन पुस्तकालय से सटा हुआ मन्दिर सबसे प्राचीन बताते हैं। इसका निर्माण बिसाऊ नगर की संस्थापना के समकालीन बताया जाता है। करीब दो सौ ... पुराना होने के कारण यह जीर्णावस्था को पहुंच गया था। सन् ११०१ ...

श्री परमानन्द जटिया की देखरेख में इसका जीर्णोद्धार प्रारम्भ हुआ और आज यह मन्दिर अपने नवीन रूप में नगर का आकर्षक पावन स्थल बन गया है। इसमें अनेक प्राचीन मूर्तियां हैं, जिनके अध्ययन एवं शोध की आवश्यकता है।

श्री पंचायत दिगम्बर जैन मन्दिर —

पुराने जैन मन्दिर के सामने यह मन्दिर स्थित है। इसका मुख्य दरवाजा पश्चिमामुखी है। इसका दूसरा दरवाजा उत्तर की ओर खुलता है। इसका निर्माण-काल संवत् १९१३-१४ के आसपास मालूम होता है, क्योंकि स्व० श्री हरूपदास परिवार ने मिति आसोज बदी १२ संवत् १९१३ को जमीन क्रय करके मन्दिर बनाने हेतु प्रदान की थी। उक्त मन्दिर की जमीन के पट्टे की नकल यहां दी जा रही है —

O (म्होर)

पारसनाथ

श्रीराम जी

सिद्ध श्री राज श्री हमीरसघ जी वचनात हरूप दास जी सरावगी का बेटा पोता वसे अठे क बिसाहू माहू जथा एक जगरूप दास पारख का बेटा पोता की पे मोल रुपिया ३५१) अके तीन सौ इकावन म श्री जी का मंदिर तालमे लीनी जिका मोहराना का रुपया ४३।।।=) अके तियालीस आना चौदहा पासू राज माय लीना सो थ जथा मजकूर माफीक लिखावट पारख क नीव सीव मुग खातिर मु बणावो मिति आसोज सुदी १२ संवत् १९१३ का दसखत काजी गुलाम हुसन हुक्म हजूर मुकाम बसउ बिसाऊ के निवा १६।।।=) छाड़ा।

उक्त मन्दिर को उत्तरी दरवाजा के बाहर जतीजी का कुवा व बाड़ी भी प्रदान कर दिये गए। उक्त कुए को स्व नेमचंद जी जती (पांडे) के पुत्र श्री लालचन्द जी ने बनाया था। बाद में इन्हें पौह सुदी ७ संवत् १९२१ को प्रदान किया गया।

इनके अलावा नगर में अनेक मन्दिर और हैं जिनके नाम अग्रांकित हैं — १ उत्पमदास जी का मन्दिर २ बूमदास जी का मन्दिर ३ कालीदास जी का मन्दिर ४ पूरणदास जी का मन्दिर ५ नानूराम स्वामी का मन्दिर ६ सीताराम स्वामी का मन्दिर ७ दादूदयाल जी का स्थान ८ रामदास जी का मन्दिर ९ परमेश्वरदास जी का मन्दिर १०. लच्छू महाराज का मन्दिर ११ गुसाईं जी

का शिवालय १२. रामदेव जी का स्थान १३ जती जी का पागुरा १४ मढ़जी १५ माताजी का मन्दिर १६ महामाया का मन्दिर १७ शीतलाजी का मन्दिर १८ राणीसती दादी का मन्दिर १९ सावोजी का मन्दिर २० शनिश्वर जी का मन्दिर २१ ब्रह्मा जी का मन्दिर २२ साईं जी का मन्दिर २३ रामचन्द्र जी का मन्दिर २४ जीवण माता जी का मन्दिर २५ भोमिया जी का मन्दिर आदि। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक छोटे मन्दिर और भी हैं।

बिसाऊ की धार्मिक संस्कृति ने समन्वय भाव से सभी का सम्मान करते हुए अपनी प्रगति की है। धार्मिक एकता एवं अखण्डता नगर की सांस्कृतिक परम्परा का एक उज्ज्वल पक्ष है। इससे नगर गौरवान्वित हुआ है।

शिलालेख —

उत्तरी दरवाजे के बाहर पोद्दारों की छतरियां हैं। उनके सामने जैनाचार्यों के समाधि-स्थल हैं तथा उनकी स्मृति में छोटी छोटी छतरियां बनी हुई हैं। इनमें से दो छतरियों के भीतरी भाग में आलेख उत्कीर्ण हैं जो बिसाऊ के प्राचीनतम भित्तिलेख हैं। बिसाऊ दुर्ग के संस्थापक ठाकुर केसरीसिंह जी के काल में जैनमुनि मेहाचन्द, देवकीर्ति, उगमकीर्ति व दीपचन्द की स्मृति में उक्त छतरियां सेठ हररूपदास ने बनवाई थी। इनमें से एक मुख्य व प्राचीन आलेख इस प्रकार है —

(१) श्री अहरतदेवा नम श्री गणेशायनम संवत् १८२० वर्षे शाके १६८६ प्रवतमाने मासोत्तममासे आसाढ मास कृष्ण पक्षे बुधय तिथ्यो त्रियोदशी। श्री कास्टसिद्धि मा सुरग बिमोह कर गणे भटारक श्री १०८ मेहाचन्द देवातदेव तस्य पट्टो भट्टारक श्री १०८ श्री देवेईकीर्ति तद पट्टे भट्टारक श्री १०८ श्री उगमकीर्ति जी श्री मनाय आह्मनाय श्री १०८ श्री दीपचन्द जी देवाश्रम यथा जीन पर छत्री कराई म शिष्य सूयभान प्रतिष्ठितम् संवत् १८२१ आषाढ वदी त्रयोदसी मगलवारे श्रावक पुत्र श्री भावविक शाह जी श्री उनमती जी तस्य पुत्र शाह जी श्री हररूपदास पुत्र परउपगार करावते श्री कहमहाराज की उगमदेव श्री की गोद म रहेग जिनका श्री कल्याण उपगार करया जिण नै सगुणेह नाम वधे ॥ राज श्री बहरसिंघ जी सूरजमल पुत्र श्री केसरी सिंघ के वसे सरण प्रतिपालक बाचे जैने राम राम ॥

(२) इसी छतरी के भीतरी भाग में एक छोटे से लेख में यहां जयपुर के हरिराम जी का आसण होना बताया है— 'हरीराम जी जपर का को आसण या छतरी म छो।' (आसण जतीजी का)

(३) उत्तरी दरवाजे बाहर पोद्दारो की छतरी पर एक पट्टिका लगी हुई है जिस पर लेख है— 'सेठ जी श्री जोरावरमल चैनीराम जी पोद्दार की छतरी मु० बिसाऊ सन् १६२१ ई० ।'

इसके सामने एक नोहरा है। उस पर भी एक पट्टिका मे लेख उत्कीर्ण है— 'श्रीमान् धार्मिक स्व० सेठ सूयमल जी पोद्दार तत्पुत्र सेठ चिमनलाल जी न इस श्मसान क्षेत्र का डडा बनवाया मिति चैत्र कृष्णा ११ स० १९७६ ।'

(४) बूढिया महादेव के सामने कबूतरो को दाना चुगाने के लिए एक कबूतर खाना बनाया हुआ है जिस पर यह लेख दिया हुआ है— 'यह कबूतर-खाना सेठ राधाकृष्ण दास जी पोद्दार के सुपुत्र लाला बिहारीलाल जी जमनादास जी ने कबूतरो के उपकाराथ सवत् १९७५ म निर्माण कराया। हस्ताक्षर केदारनाथ शर्मा दि० १ १ १९१९ ।

(५) बस स्टैण्ड वाली जमीन 'कला-मदिर' को प्रदान की हुई है। उसके दरवाजे पर लगी पट्टिका पर यह लेख अकित है— 'यह भूमि स्व सेठ श्री चेनराम जी खेमका की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्री सत्यनारायण व कृष्णकुमार ने श्री रघुवीर कला-मदिर, बिसाऊ को प्रदान की दिनाक २४ ११ १९६० ई० ।'

इनके अतिरिक्त पोद्दारा की छतरी के ठीक सामने वाली धमशाला (वि स १९४५), पिंजरापोल के ठीक सामने वाले कुए (वि स १९५६) तथा गऊशाला की पाच सौ बीघा जमीन के गट पर (वि स १९७१) शिलालेख लगे हुए हैं। इसी प्रकार गोशाला के बाढ के द्वार (वि स २०२६), नन्दपुरा बालाजी के स्थल (वि स १९९६) उस पर बने नए कमरे (वि स. २०१६) श्री रामदेई स्मृति भवन (वि स १९९०), रामदेई कूप (वि स १९८६) गुगामेडी स्थल (वि स १९८७), गूगाणा के पास वाली छतरी (वि स १९७९) सूरसागर (वि स १९७२), सूरसागर के पास गऊशाला की गाया को चरने का स्थान (वि स २०२९), गूगाणा से कुछ दूर बनी श्यामा कुटीर तथा दौलतराम जी की धमशाला जो वि स १९५९ मे श्री बैजनाथ जी टीबडेवाला की देखरेख म निर्मित हुई, लक्ष्मी भवन (वि स १९९१) मुसद्दी विवाह भवन (वि स २०४४) आदि पर भी छोटे-बडे शिलालेख लगे हुए हैं। इन सब शिलालेखो म जिनकी स्मृति मे बनाए गए हैं उनके नाम, निर्माताओ के

नाम तथा अन्य महत्वपूर्ण या सामान्य सूचनाएं अंकित हैं। इन सबका भी अपना एक महत्व है। ये सभी नगर के सांस्कृतिक इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ियां हैं।

(३) सांस्कृतिक स्थल

(१) धवळपाळिया —

गांव के पूर्वी दक्षिणी कोने पर 'धवळपाळिया' जोहड़ बना हुआ है। इसके दक्षिण की ओर से चूरू-झुंझुनूं सड़क जाती है। इसके मैदान में श्वेत भाटा (मोरीडा) की खानें हैं। इसलिए इसका बाहरी भाग सफेद दिखाई देता है। इसी कारण इसे धवळपाळिया नाम से पुकारते हैं। इसको स्व सेठ भागीरथदास जी केडिया ने संवत् १९०३ में बनवाया था। यह जोहड़ उत्तर दक्षिण में ७७ हाथ (११५'-६") पूर्व पश्चिम में ८० हाथ (१२०') है। गौघाट ४६॥ हाथ लम्बा व २८ हाथ चौड़ा है। जनाना घाट गौघाट से हट कर ही बना हुआ है, जो १०॥ हाथ लम्बा व ५ हाथ चौड़ा है। जनाना घाट के पास ही एक तिबारा जो १६॥ हाथ लम्बा और ११ हाथ चौड़ा बना हुआ है। इसी के आगे १६॥×५ हाथ का एक चबूतरा बनाया हुआ है। यहां हनुमानजी का एक बंगला है। चारों ओर कोनों में चार छतरियां हैं, जो ८॥ हाथ लम्बी-चौड़ी हैं। चार सुन्दर घाट है। उसी स्थान में मुसद्दियों की माताजी का मण्डप, तिबारा और परिक्रमा के लिए चबूतरा जोहड़ के साथ ही साथ बनवाया गया था। तत्कालीन बिसाऊ नरेश हमीरसिंह जी ने १५०० बीघा बीड़ जोहड़ के पास में तथा ६०० बीघा जोहड़ के पायतन के लिए कुल २१०० बीघा जमीन धर्मार्थ दी। संवत् १९३७ वि में स्व सेठ गुलराज जी ने १३० हाथ लम्बी व १ हाथ चौड़ी पक्की नहर जोहड़ के पूर्वी घाट की ओर जलापूर्ति के लिए बनवाई तथा स्व सेठ तेजपाल जी ने मंदिर के दक्षिण में स्थित 'शिम्भुनाथ जी की धूनी' के स्थान को पक्का बनाया व स्व सेठ अमरदयाल जी केडिया ने सं १९७५ में इसका जीर्णोद्धार भी कराया।[1]

इसी धवळपाळिया स्थान पर हर वर्ष श्रावणी तीज पर 'तीजों का मेला' लगता है जिसमें नगर के हजारों नर-नारी भाग लेते हैं। पहले उक्त मेले

1 उक्त विवरण 'कडिया जातीय इतिहास' ले हरमुख (सं १९७८) से उद्धृत है।

में ऊँटों व घोड़ो की दौड़ हुआ करती थी, आजकल बॉलीवाल व कबड्डी आदि के मैच हुआ करते हैं। मेला केवल एक दिन का ही होता है। इस मेले मे औरतें अधिक भाग लेती है और सावण के गीतो के मधुर स्वर सुनाई देते हैं।

स्व महानन्द राम जी ने दक्षिणी दरवाजे बाहर स १६०० वि मे एक शिवालय, हनुमान जी का एक बगला, तिबारा, कुण्ड, बाड़ी, रसोई घर आदि बनवायें तथा एक कुआ बनवाया जिसके नीचे २५ बीघा जमीन बाड़ी रखी गई।

(२) सूरसागर —

बिसाऊ के पूर्वी भाग मे गूगामेडी से आगे जहा ठिकाने का छोड़ा हुआ 'बीड' है, उसके दायें भाग की ओर सूरसागर तालाब बना हुआ है। उसके दक्षिण की ओर गागियासर का माग जाता है। इसके उत्तर मे गौघाट बना हुआ है तथा दक्षिण म एक तिबारी, रसोई और एक कुई बनी हुई है। कुई के ऊपर एक भाग मे बालाजी का थान है। इन सब का निर्माण सेठ घड़सीराम जी भानीराम जी रूगटा ने सवत् १६७२ मे कराया था। तिबारे पर इसका लेख उत्कीर्ण है— 'सेठ घड़सीराम जी भानीराम जी रूगटा ने यह तालाब गौघाट कुआ, तिबारा, रसाई तैयार करवाया है धर्मार्थ मिति कार्तिक सुदी १ सवत १६७२।' गौघाट के दाईं ओर की दीवार पर कीर्तिस्तम्भ लगा हुआ है जिसके लेखानुसार भी इसका निर्माण स १६७२ मे पूरा हुआ प्रमाणित होता है।

ठिकाने के इस 'बीड' मे शूर (सूकर सूवर) रहते थे जिनका शिकार खेलने ठाकुर साहब जाया करते थे। यह शिकारगाह बहुत भयानक था। इस बीहड मे झाड़िया, खेजडी, ककेडा, फोग, जाळ, कीकर, खरी, खीप, रोहिड़ा आदि पेड पौधो की सघनता इतनी अधिक थी कि साधारण व्यक्ति भीतर जाने का साहस नही कर पाता था। स्वतत्रता के बाद मे इसे गौशाला सस्था को प्रदान कर दिया गया। किन्तु सखेद लिखना पडता है कि बहुत बडी सख्या मे इसके पेड़ काट डाल गए जिससे वह बीड, बीड नही रहा, मदान जसा खाली स्थान हो गया। अब वहा गौशाला की गायें चराई जाती है। सूरसागर के पास एक ऊँचे टीले पर गौशाला की गायो के लिए पक्के मकान (ठाण) बनाये हुए हैं। इन मकानो को 'श्री बिसेसरलाल जी बिरमीवाला द्वारा सवत २०२६ म बनाया गया।'

इस थोड से गूगामेडी जाने वाले मार्ग पर 'श्याम बाबा का मन्दिर' है। उसके पास म तपस्विनी दादीजी की कुटिया बनी हुई है। चारों ओर बाड है और भीतर अनेक पेड लगे हुए हैं। इसके पश्चिम मे एक कुआ है। श्याम मन्दिर के पास की कुटीर आदि श्री मालीराम जी राधेश्याम जी नौवाल ने मिति पो वदी ६ स २०३५ को बनवा कर प्रदान किए।

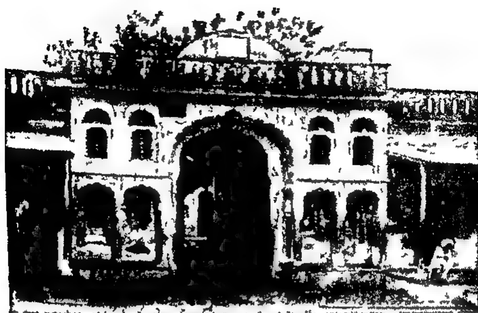
(२) गूगामेडी (टीला) —

गाव के पूव मे एक बहुत ऊँचे टीले पर गूगाजी की मेडी स्थित है। यह गाँव का सबसे ऊँचा स्थान है। हर वष भादवा सुदी ६ को यहाँ बडा भारी मेला लगता है। उक्त अवसर पर हजारों नर-नारी भक्तगण आते हैं और श्रद्धा से नारियल चढ़ाते हैं। शहर की मुख्य सडक से नाचते व गाते हुए दो दलो के निशान आते हैं— एक चमारो का व दूसरा भगियो का। दोनों दलों के निशान मेडी स्थल पर घण्टों अपना नृत्य प्रदशन करते हैं। इनका मुख्य वाद्य डेरू, कासी का बाटका, ढोल आदि होते हैं। ये लोग नृत्य करते हुए लोह साकलें अपने सिरो पर मारते हैं तथा दोना गालो के आर पार त्रिशूल चुभा लेते हैं। पहल नगी तलवार पर भी नृत्य करते थे। इनको गूगोजी की छाया भी आती है। छाया की स्थिति मे निसृत उनके वचन सत्य सिद्ध होते हैं।

गूगा मेडी का निर्माण कब हुआ और किसने करवाया, इसका अभी कोई प्रामाणिक विवरण प्राप्त नही हुआ है किन्तु मेडी के पूव एव दक्षिण की ओर बहुत सुन्दर कुवा, कोठी व विश्राम स्थल बने हुए हैं जिनका विवरण मकान के ऊपर दीवार पर लिखा हुआ है— 'श्री १०८ बाबा काली कमली मखनान द व बिसाऊ नरेश श्री विष्णुसिंह की आज्ञा से यह कोठी मखनान द जी ने बनवाई सवत् १६८७।'

मेडी के उत्तर की ओर एक कुण्ड बनी हुई है जो अब रेत के टीन्हे दब गई है। सुनने में आता है कि इस मेडी और कुण्ड को श्री केदारजी के पूवज स्व जालीराम जी नौवाल ने बनवाया था। इसी कारण स काफी वर्षों तक यह स्थान 'जालीराम जी का टीबा' के नाम से प्रसिद्ध रहा था। यहाँ कई वर्षों तक 'रामलीला' का आयोजन भी हुआ था।

यह गांव की सबसे ऊँचाई वाला स्थान होने से यहाँ पानी आपूर्ति हेतु टकी बनी हुई है तथा वाटर वक्स कार्यालय स्थित है। नगर की जल आपूर्ति यहीं से होती है।



श्री बोयतराम जी की धर्मशाला
(गोशाला अतिथि भवन)

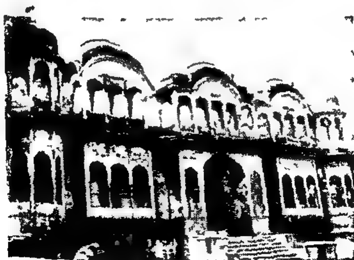


बिसाऊ के किले का प्रवेश द्वार

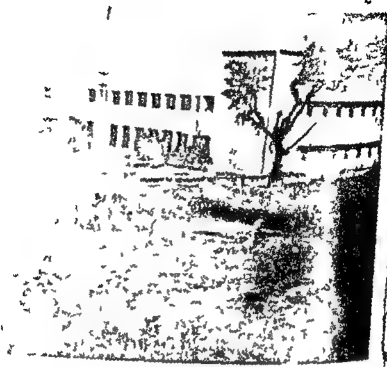


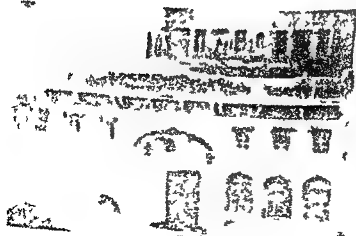
श्री पिंजरापोल गौशाला बिसाऊ

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर



श्री बिहारी जी का मन्दिर







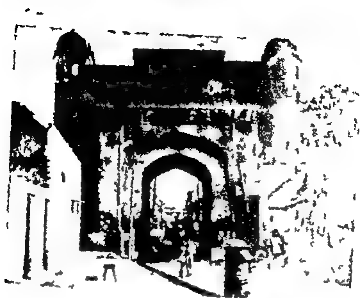


श्री चन्द्रसागर दिगम्बर जैन पुस्तकालय



राज की छतरी


SHRI RAMGOPAL JATIA



नगर का पश्चिमी द्वार



तपसी जी का डेरा



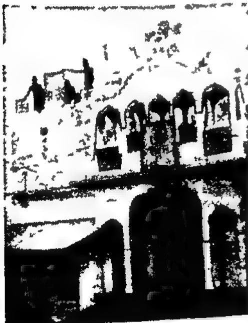
श्री नृसिंह जी का मन्दिर
(झुंझुनूवालों द्वारा निर्मित)



श्री नन्दपुरा वालाजी



श्री काली जी का मन्दिर



श्री बूढिया महादेव



टीला (गूगाजी का स्थान)



धवलपालिया जोहड

(४) नन्दपुरा बालाजी[1]

बिसाऊ के पश्चिम में नन्दपुरा का बालाजी देवस्थान बहुत प्रसिद्ध है। यहां एक कुआ, बालाजी का थान, एक विश्राम स्थल व एक प्याऊ बनी हुई है। केडिया जातीय इतिहास से मालूम होता है कि स्व. सेठ नन्दराम जी केडिया ने संवत् १९०० के आसपास यह कुआ और एक धर्मशाला बनवाई थी। धर्मशाला संवत् १९७८ तक गिरकर नष्ट हो चुकी थी। कुआ वर्तमान में चालू हालत में है। इस कुए का बालाजी ही आज एक प्रसिद्ध देवस्थान बना हुआ है। उक्त बालाजी स्थल पर एक कमरा स्व. नोपतराम जी पुजारी की धर्मपत्नी मणीदेवी ने मिति आसाढ सुदी पूर्णिमा संवत् २०१६ वि. में बनवाकर बालाजी के निमित्त अर्पण किया। अब एक संस्था ने इसका प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया है तथा बिजली व पानी की पूर्ण सुविधा होगई है। इसकी प्याऊ वाले कमरों को स्व. सेठ गोविन्दराम बजाज ने निर्मित कराया था। इस पर जो लेख अंकित है, वह यहाँ दिया जारहा है— 'यह प्याऊ सेठ गोविन्दराम जी बजाज ने स्थापित किया मिति कार्तिक शुक्ला १ संवत् १९९६।'

इसके पश्चिम में ठिकाने का एरोड्रम (अड्डा) था जो अब हटा दिया गया है। इसके ठीक सामने से रेलवे लाइन जाती है व रेलवे फाटक है। नन्दपुरा बालाजी के यहां मंगलवार और शनिवार को भक्तगण आते रहते हैं। वर्ष में एक बार चैत्र पूर्णिमा (हनुमान जयन्ती) को मेला लगता है, जिसमें हजारों भक्त इकट्ठे होते हैं और जात देते हैं। वर्तमान में इस मंदिर का पुजारी बिहारीलाल बजाजे वाला का पुत्र श्री पूर्णमल शर्मा है। इनके पूर्वज ही यहां पूजा सेवा करते आये हैं।

(५) तपसी जी का डेरा —

तपसी जी का डेरा (आश्रम) नगर के पश्चिमी दरवाजे के बाहर स्टेशन रोड पर एक ऊँचे स्थल पर स्थित है। पास में एक कुंई है जिसका जल सबसे मीठा है। यहां भजन कीर्तन सदैव होते रहते हैं।

इस स्थान को सिद्धस्थल बनाने वाले प्रथम संत 'तपसी जी' थे। कहा जाता है, सन् १८५७ के स्वाधीनता संग्राम के विफल होजाने के कारण

---

1 स्व. सेठ नन्दराम जी केडिया का विचार उक्त स्थल पर एक गांव बसाने का था जिसका नाम नन्दपुरा रखने की योजना थी। किन्तु ऐसा नहीं हो सका। बाद में उन्होंने चूरू के निकट मिति ज्येष्ठ कृष्णा ८ सं. १९१७ वि. को रतन नगर बसाया।

अनेक क्रांतिकारियों को भूमिगत होना पड़ा था। उनमें से कोई एक इस नगर मे घोड़े पर सवार होकर आया था। वह कौन था और कहां से आया था, कोई नही जान सका। पर तु विश्वास है कि यह स्वाधीनता संग्राम का सेनानी था। बिसाऊ म आकर उ होंने उक्त स्थान को अपना आश्रम बनाया। यहां की जनता ने भी उनको काफी सम्मान दिया। अपने संत जीवन के कारण नगर म 'तपसी जी' के नाम से लोकप्रिय हुए। उनके साथ भजन मण्डली रहती थी। वे स्वयं भजन बनाते थे। उ होंने श्रावण कृष्णा १२ सं १९६३ के दिन मोक्ष प्राप्त की।

इनके शिष्य जैतगिरि जो एक पहुंचे हुए संत थे, ने आश्रम व्यवस्था को सम्भाला। आपका ज म धांधू (चूरू) मे हुआ था। आपका बचपन का नाम ताराचन्द था। कई वर्षों तक पुलिस की नौकरी करने के बाद इन्हें विराग होगया। इनके गुरु का नाम कान्हगिरि था। बाद मे आप तपसी जी के शिष्य हुए और आश्रम मे ही रहने लगे। तपसी जी के स्वर्गवास के बाद आप आश्रम के अधिकारी हुए। इनकी भानजी सजना ने भी संन्यास ग्रहण कर लिया था। वि सं १९८१ की भादवा बदी ६ को ९७ वर्ष की आयु म उन्होंने अपना पार्थिव शरीर मण्ड्रेला म त्याग किया। उनकी स्मृति मे वहां एक छतरी बनी हुई है।

इनके शिष्य तेजगिरि हुए। इसके बाद यह शिष्य परम्परा आगे नही चल सकी। लेकिन जैतगिरि जी की शिष्य मण्डली मे बिसाऊ के श्री जसराज जी बालासरिया प्रमुख थे। व स्वयं अच्छा गाया करते थे। ये बिसाऊ नगर पालिका के भू पू चेयरमेन श्री बिहारीलाल जी शर्मा के पिताश्री थे। जैतगिरि जी निर्गुणोपासक संत थे। उनके पदों को आज भी भक्त रस लेकर गाते व सुनते हैं।

कुछ वर्षों पहले यहां 'जयसियाराम' संत ने अपनी साधना स्थली बनाई थी। बाद म चलकर उ होंने अपना आश्रम 'धीराणी' के निकट अलग से बना लिया था। वर्तमान मे उक्त विश्राम स्थल पर एक पक्का मकान, पेड़ व जल की व्यवस्था है। इसी प्रकार कुछ वर्षों तक एक महिला संत प्रेमकवर भी यहां भक्ति साधना करती रही। बाद मे यहां से चल कर गांव के दक्षिण म 'श्री नाथजी के मंदिर' के ठीक पीछे अपना अलग भक्ति स्थल बनाया और वर्तमान म वहीं रहती हैं।

वर्तमान में तपसी जी के आश्रम में बरफानी बाबा रहते हैं। इनके प्रथक प्रयत्नों से यहां यज्ञ, ब्रह्मभोज आदि पुण्यकार्य सम्पन्न हो चुके हैं। इस तरह यह सिद्धस्थल कभी भी सिद्धों से रहित नहीं रहा।

भोमिया जी —

सेठ मगरमल गोपीराम की हवेली के पास व रामलीला की हवेली के आगे भोमिया जी का थान स्थित है। यह गली 'भोमिया की गली' के नाम से प्रसिद्ध है। भोमिया जी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विषय में प्रमाणों के अभाव में कुछ बताया जाना मुश्किल है। किन्तु इतना अवश्य है कि किसी वीर ने किसी क्षेत्र विशेष की रक्षा करते हुए प्राणोत्सर्ग किया होगा। इस थान से सट कर एक जांट (खेजड़ा) वृक्ष खड़ा है जो काफी पुराना मालूम देता है। बड़े बूढों ने भी इस थान की मानता सैंकडों वर्ष पुरानी बताई है। कुछ भी हो, बिसाऊ में उक्त भोमिया जी को काफी वर्षों से जनता पूजती आरही है।

झूंझार जी —

'डाकोतों की गली' में एक 'झूंझार जी' का थान है। बताया जाता है कि जोशियों के किसी पूर्वज ने आक्रामक डाकुओं से मुकाबला किया था और सर कटने पर भी लड़ते रहे थे। अतः उनकी स्मृति में जोशी परिवार की ओर से उक्त थान का निर्माण कराया गया था। जोशियों की मानता है कि रात्रि में घोड़े पर सवार होकर घूमते हुए 'झूंझार जी' को अनेकों बार बुजुर्गों द्वारा देखा गया है। उक्त थान का पूजन अर्चन जोशी परिवार ही करता है।

पीर —

शमस खां पीर की दरगाह पश्चिमी बाजार में बोयतराम जी की धर्मशाला से सट कर दक्षिण की ओर जानेवाली गली में स्थित है। इनका छत्तर स्वर्ण निर्मित बताया जाता है। बिसाऊ में यह स्थान धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है। हिन्दू-मुसलिम भाई बड़ी श्रद्धा से दरगाह में जाकर सिर नवाते हैं।

बताया जाता है कि आप जनरक्षा हेतु आक्रमणकारियों से युद्ध करते हुए शहीद होगए थे। आपको रुहानी ताकत प्राप्त थी। जब जयपुर की फौज ने बिसाऊ पर घेरा डाला था तब ठा० श्यामसिंह को शमस खां पीर के दर्शन हुए और उनको विजय-वरदान दिया।

उक्त दरगाह की देखभाल पीरजादो को सुपुर्द की गई तथा ठाकुर की ओर से सौ बीघा जमीन दरगाह के नाम से उनको दी गई थी। बाद में इस दरगाह के मकानात (आहाता, गुम्बज आदि) ठा० हमीरसिंह ने बनवाए थे।

इन्हीं के समकालीन जतवार खां पीर हुए। ये भी युद्ध म शहीद हुए थे। इनकी दरगाह बेसालो की मोरी के पास स्थित है जहा अब भी नव विवाहित जोडो की जात दी जाती है।

गौशाला माग पर गौशाला से करीब दो सौ गज पश्चिम की ओर अरड्शाह पीर का स्थान है। वहा एक अरड् का विशाल पेड है। इसलिए वत्तमान म 'अरड्शाह पीर' नाम लोक मुख पर प्रचलित है। किन्तु वहा किसी अज्ञात फकीर की कब्र बताते हैं, जो बाद मे भक्त लोगो का पावन-स्थल बन गया। उक्त स्थान पर अनेक चमत्कारी फकीर रहे है।

(४) अजब ए सास्कृतिक कथाए

बिसाऊ के बहुत से नागरिक ऐसे हुए हैं जिन्होने अपने चातुर्य, बलविक्रम एव साहसिक कार्यों - विचारो से प्रसिद्धि प्राप्त की और उनके नाम जनता मे बडे चाव से याद किए जाते हैं। उनके कार्यों की कथा पीढियों से कही सुनी जाती रही है। इसलिए लोकमुख पर रह कर इन अजब कथाओं ने स्थायित्व ग्रहण कर लिया है जिनके बिना बिसाऊ का सास्कृतिक रग फीका ही कहा जा सकता है—

(१) साढे तीन लाठियां —

बहुत पहले नगर मे जो व्यक्ति समाज मे अपनी सगठनशक्ति का पूरा प्रभाव रखते थे और शासक के जुल्मो का प्रबल विरोध ही नहीं करते थे बल्कि उनका मुकाबला भी करते थे। ऐसे लोगो को लाठी से पुकारा जाने लगा जो शक्ति का प्रतीक है।

साढे तीन लाठियो मे पूरी तीन लाठियो के लिए— (१) श्री सूरजमल मेडतिया (२) श्री नानूराम पोद्दार (३) श्री वैद्य परमेश्वरदास के नाम प्रसिद्ध हैं तथा आधी लाठी मे श्री मेघराज रुइया को बताया जाता है। नामो मे समय पाकर कुछ फेर बदल होना सम्भव है लेकिन इन लोगो के काय निसन्देह बहादुरी के थे। एक का स्थान रिक्त होने पर दूसरे साहसी व्यक्ति ने उसका

स्थान ग्रहण कर लिया है। इसी कारण इन व्यक्तियों के नामों में विभिन्नता पाई जाती है। स्व सूरजमल मेडतिया के नेतृत्व म कुछ साहसी लोग सगठित हुए और जनता में आजादी के लिए नव चेतना लाने मे जुट गए। परिणामत इन्हें ठिकाने से सघर्ष करना पड़ा। सूरजमल मेडतिया व मुकारब खा को लाठियां खानी पडी और कई दिनों तक उनका गढ मे तलब किया गया। बताते हैं कि स्व नानूराम पोद्दार अनेक वर्षों तक जुल्मो के विरुद्ध सघर्षरत रहे और मुकदमे लडते रहे। स्व परमेश्वरदास स्वामी एक प्रसिद्ध वैद्य थे। उनका स्वभाव अडियल था। उन्होने किसी को बख्सा नहीं। उम्रभर ठिकाने से सघर्ष करते हुए मुकदमा लडते रहे। उस समय उनकी टक्कर का कोई मुकदमेबाज न था। रोगी को स्वस्थ करने की चुनौती को आप आत्मविश्वास के साथ स्वीकार करते और गारण्टी के साथ रोगी को चगा भी कर देते थे।

एक बार एक सुनारी के स्वर्ण आभूषण चोरी होगए। बहुत चेष्टा करने पर भी चोरी का पता नही लगा। एक दिन ठाकुर साहब उदर शूल से व्याकुल हो उठे। मजबूर होकर परमेश्वरदास जी वैद्य को बुलवाना पडा। स्वामी जी ने पहल सुनारी के चोरी गये गहने लाने की शर्त रखदी। तुरन्त मीणों को बुलाकर चोरी का माल बरामद कराने का आदेश दिया गया। परिणामत सुनारी को उसके सारे गहने मिल गए और ठाकुर साहब का उदर शूल एक खुराक मे ठीक कर दिया गया।

(२) रेळिया —

बिसाऊ म रेळिया नाम का व्यक्ति रेल की भांति बहुत तेज दौडने वाला एक सदेशवाहक था। वह कब हुआ, इसका कोई प्रमाण नही मिलता है लेकिन उसके वर्षों की कहानी अब भी लोकमुख पर है। शायद सबसे पहले लोगो ने रेल का नाम सुना होगा तो इस तेज धावक को भी रेळिया कहने लग गए होंगे। कुछ भी हो, रेळिया उस समय का सबसे शीघ्र डाक लेजाने व लाने वाला कासीद (डाकिया) था। उसके परो मे घुघरु व धे रहते थे। कहते है कि वह अपने घर बिसाऊ में खिचडा चढा कर जाता और उसके पकने से पूर्व ही भिवानी जाकर डाक भुगतान करता और आते समय वहा से नमक सिर पर लाद कर लाता। वही नमक खिचडे मे डाल कर थोडा विश्राम करता। उसके बाद खिचडा पकने पर भोजन करता। उसकी तेज गति से मार्ग की धूल ऊपर को उठ जाती थी और आंधी का सा रूप ग्रहण कर लती थी मानो कोई काफी नीचे से यान गुजरा हो। इसीलिए उसका नाम 'रेळिया' था।

पोकर जी और उनके भाई बजनाथ जी मे जीवनभर मुकदमा चलता रहा था। उनके द्वारा कोर्ट मे दिए गए बयान की तुकबन्दी देखिए —

मैं खाया दो रोट,
बैजिये के मारया दो सोट।
चुगल गाव पुडेलो,
जामे झुझनू को गेलो।
बठै खडया कर'ई कर,
बा मे निकडया भाया का बैर,
लाठी बाजी सवा पर।

पिता-पुत्र दोनो आचलिक कवि थे। यदि इनकी तुकबन्दियों का सग्रह किया गया होता तो अपने ढग का एक अनोखा काव्य ग्रथ तयार हो जाता।

(६) भगवानदास खाती —

भगवानदास खाती सेठ श्रीराम जी झुझनू वाला के मिस्त्री श्री नारायण जी का छोटा भाई था। वह कारीगर तो था ही मजाकिया भी कम न था। उसका पहनावा भी विचित्र था— कमर मे कसी हुई गोडो तक की मोटी धोती, नगी पीठ और सिर पर दोनो कानो की ओर ओढे गाधी टोपी। वह सेठ डालमिया, चिडावा का मिस्त्री था और सेठ का मुहलगा होने के कारण उसकी हसोड प्रकृति का बुरा नही माना जाता था।

एक दिन एक मालिन सेठ की हवेली मे हरा शाक देने के लिए आई। वह नया चूडा पहने थी। भगवानदास ने देख लिया। वह काम छोड कर जमीन पर पसर गया और बुरी तरह कराहने लगा। अचानक मिस्त्री की हालत खराब देख कर बेचारी मालिन उसके नजदीक आई और गडबड के विषय मे पूछने लगी। भगवानदास ने लम्बी सासे लेते हुए कहा— "पहले मेरी बात का उत्तर दो। तुमने यह नया चूडा कितने पसो मे खरीदा?" मालिन का उत्तर था— "आठ आना।" भगवानदास ने अपनी अण्टी से एक अठन्नी निकाल कर उसको देते हुए कहा— 'मेरे प्राण पखेरु उडने वाले हैं। इस आखिरी वक्त मे महावीर की मा यहा नही है। इसलिए तुम मेरे ऊपर चूडी फोड देना।"

एक दिन श्री नारायण जी मिस्त्री दोपहर के समय हवेली से भोजन करने के लिए अपने घर चल गए। पीछे से भगवानदास सेठ श्रीराम के पास

आये। आखो मे आंसू और हिचकिया ब धी हुई थी। सेठ जी ने पूछा— "भगवानदास रोता क्यों है ? क्या बात हुई ?" उसने रोते हुए कहा— "भाई नारायण नही रहा।" सेठ जी को विश्वास नही हुआ। उ होने साश्चय कहा— "अभी-अभी वह मेरे यहा से खाना खाने के लिए घर गया था।" "सेठ साहब ! घर पहुचते ही एक उल्टी और एक दस्त लगा और प्राण निकल गए। ईश्वर की यही मरजी थी।"

शोक मे डूबे हुए सेठ जी ने कहा— "यह तो बहुत बुरा हुआ।" भगवानदास ने धय देते हुए कहा— 'सेठजी ! होनी के आगे किसका बस चलता है। अब तो लकडियो की व्यवस्था करावो। दिन ढलता जा रहा है।"

सेठजी ने नोहरे मे से लकडी का गाडा भर कर लेजाने का आदेश देदिया।

थोडी देर बाद नारायण मिस्त्री सेठ जी की हाजरी मे तयार थे। उसको देख कर सेठजी तो सकते मे आगए। उनकी आखें खुली की खुली रह गई। नारायण सेठ जी की यह हालत देख कर बोले— "सेठ जी ! ऐसे क्से देख रहे हैं ? क्या बात है ?"

सेठ जी ने नारायण को सारी बातें बताई। नारायण मिस्त्री ने हसी के ठहाके के साथ कहा— "सेठ जी ! उसके घर मे जलान को लकडी नही होगी। लेगया होगा गाडा भराकर।"

उसका पुत्र महावीर जो गाँव म 'भोला' नाम स प्रसिद्ध था, अपने पिता की तरह हास्य परम्परा को बनाये रखा था। उसमे थोडे शब्दों म बहुत कुछ कहने की सामथ्य थी। एक दिन किसी ने उससे पूछ लिया— 'काम ध धा कसा चल रहा है ?" उसका उत्तर था— "जहा रातदिन मसाण जले, वहा रातदिन ध धा चले।"

(७) अलखिया —

अलखिया एक सनकी व जिद्दी बाबाजी था। वह ठाकुर विष्णुसिंह जो क काल मे हुआ था। वह प्राय कुओ मे लटक कर अलख अलख की आवाज लगाया करता था। कुए से आने वाली प्रतिध्वनि सुन कर वह और भी जोश म आकर बोला करता था। लोग उसके मरने के भय से उसकी अल्प मागो को मजूर कर लेते थे, तत्पश्चात उसे बाहर निकाला जाता था। उसने अनेक

बार सांडो से लडाई लडी थी। गाव के लोग बडी सख्या में इकटठे होजाते थे और उसका वह तमाशा देखा करते थे। वह सांड के समक्ष अपनी गदन टेढी करके साड की तरह अपने परो से धूल पीछे फैंकते हुए हू हू की हुकार भरते हुए साड से मुकाबला करता था। कि तु न जाने कौनसी अलौकिक शक्ति का प्रभाव था कि उसे साड ताकत से टक्कर नही मारता था। ऐसा लगता था मानो उसका समझौता किया हुआ हो और मात्र कला का प्रदशन ही किया जारहा हो।

(८) फुटकर पद्य —

गीगो चमार जूती गाठै, फळव तोडी चालण न।
का हो खाती हळियो ठाठै, डगमग डगमग हालण न।
हरजी कुम्हार घडा घड, रई चूखो घालण न।

× × × ×

कदे न खाई गिवा की रोटी, घी स चुपडाय क
कदे न सोया सुख की सेजा, गादी-तक्या लगाय क
आयो जियाँई जाणो ताजिया, इसीतिसी कराय क।
(ताजू खा मराशी)

× × × +

बूढळी दादी अलादीन चराडी
मुरलो नाई, गगाबिशन हलवाई
गूटू सुनार, तुफेल मदार

+ × ×

रामधन कै लागी लाय,
गु साई गु साई करतो जाय,
गु साई मारी क्लिकी
जा नाथ जी क चिलकी,
नाथ जो मारी माळा की,
घर घर होगी साळा की,
साळगी धाल्यो पीढो,
या ही लाय को टीडो।

× × ×

सोवतडी आगँ नही जागतडी होगी बोळी ।
घर्मा हाळा कानिया (तेरी) कुण खोलगो पोळी ।।
(कानो खाती)

× × × ×

हुणतपरो है हर की नगरी, नित उठ बरसो मेह ।
हरिसिंह न कँवर हामी, ठेलासर को थेह ।।
(चैना खाती)

× × × ×

पोकर मिस्त्री ठनमठ्ला, सतू ताल मजीरा की ।
नाहरु मिस्त्री यू फिरै जाणी कुत्ती फिर फकीरा की ।।
(पोकर खाती)

× × × ×

रामधन न पच बणायो भर भर कुडा दाळ को ल्यायो ।
खोली नँ लाग, होया न नीचा
धानी तेर ब्याह म, राजू कू गा भीच्या ।।
(कानो खाती)

(५) खेल एव खिलाडी

शेखावाटी क्षेत्र म देशी खेलकूदा का अच्छा प्रचलन रहा है । क्योंकि इन खेलो को ग्राम ग्रादमी का बालक बिना टके पसे क आसानी से खेल सकता है । इन खेलों को दो भागो में विभक्त किया जा सकता है — (१) आतरिक (२) बाह्य । यहा कुछ खेलो के नाम दिए जारहे हैं —

(१) आतरिक — कोडी गडा, चरभर, लट्टूफिरकी, राजा मत्री चोर सिपाही, ताश, चौपड फिरकी आदि ।

(२) बाह्य — चम्पो फूल गुलाब को, कुरकाय डण्डा, चाद गुत्या, छोटा गुत्या, हरदडा, सात ताळी, उतर ढीचा मेरी बारी, लुक मिचणी, खुडियो खाती, डबक मीगणा, बोल म्हारी मच्छी, गुच्ची, गुल्ली डण्डा, लूणक्यार, लट्टू गुत्या, सूटा ककर गेंद, कोट कोकरा, आधा भैसा कबड्डी आदि ।

वत्तमान मे विदेशी प्रभाव बढ जाने से अनेक प्रकार के आधुनिक खेल प्रचलित होगए हैं जि हें विद्यालयो एव महाविद्यालयो म नियमानुसार खेरा

जाता है। इनमे प्रमुख खेल फुटवाल, वॉलीवाल, टेबलटेनिस, हाकी, क्रिकेट आदि गिने जाते हैं।

बिसाऊ मे सवप्रथम इन खेलो की ओर श्री मानसिह प्र ग्र ने विशेष ध्यान दिया। आप आज से ५०–६० वप पूव मे मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक रहते हुए खेलो को नियमित रूप से चलाते रहे थे जिससे विद्यार्थियो म रुचि जाग्रत हुई और खेलो की स्वस्थ परम्परा पडी। श्री विष्णुदत्त जी शर्मा प्र ग्र जेड ग्रार स्कूल व श्री मन्नालाल शर्मा (पिलानी) ने भी खेलो को प्रोत्साहन दिया।

श्री गिरीशच द्र शर्मा वालीबाल के एक श्रेष्ठ खिलाडी रहे हैं। आपकी वाली मारने की कला पर दशको ने करतल ध्वनि से प्रशसा की है। उस समय आपकी राज्य स्तर पर चोटी के खिलाडियो म गणना की जाती थी। आप राजकीय सेवा मे रहकर विद्वान ग्रध्यापक तथा हायर सैकण्डरी के कुशल प्रधानाध्यापक रहे और इसी पद पर रहते हुए सेवानिवृत हुए। राजकीय सेवा मे कायरत बिसाऊ के प्रथम प्रधानाध्यापक आप ही रहे हैं। आपने अंग्रेजी विषय से एम ए की उपाधि प्राप्त की। आपने समाज सेवा मे रत रहकर नगर विकास मे भी अच्छा योग दिया। जटिया हायर सकण्डरी स्कूल भवन के निर्माण मे आपकी प्रेरणा विशष रूप से कारगर सिद्ध हुई। आपके सुपुत्र भी अच्छे विद्वान हैं तथा साहित्य, कला व भित्ति चित्रो मे भी रुचि रखते हैं।

बिसाऊ मे वॉलीबाल खेल का विशेष प्रचलन रहा है। इसके लिए यहां अनेक क्लबो एव सस्थाओ का ज म हुआ। इनके माध्यम से नियमित अभ्यास चलता और टूर्नामे ट्स भी आयोजित होते रहते। यहा प्रमुख सस्थाओ के नाम गिये जाते हैं— जयहि द क्लब, रघुवीर क्लब, शिव क्लब, मित्र मण्डल सूय मण्डल आदि।

बाद म श्री बालमुकु द दरोगा, श्री शुभकरण मिश्र, श्री गजान द मिश्र, श्री मालीराम मुसद्दी, श्री जोरजी मिश्र, श्री महावीर शर्मा, श्री अमोलक च द मिश्र, श्री श्रीलाल पोद्दार आदि वालीबाल के प्रसिद्ध खिलाडी हुए। इनमे श्री बालमुकु द शुभकरण मिश्र व गजान द मिश्र ने वाली मारने का अभ्यास किया था कि तु पूण दक्षता हासिल नही कर पाये। फिर तो सोटिग गेम अधिक लोकप्रिय होता गया और उसमे बहुत से अच्छे खिलाडी बने। श्री गजान द मिश्र का करारा वार और श्री भागीरथ स्वामी का 'बाजर सोट' दशको का बराबर

आकर्षित करते थे । इन पुराने खिलाडियो को युवा खिलाडियो ने टक्कर लेकर वही रोक दिया और तेजी से आगे बढे । इन युवा खिलाडियो मे श्री अलादीन खा, गोविन्द माटोलिया, रघुनाथ माटोलिया, देवीसिह, रामावतार मिश्र, विश्वनाथ मिश्र, रामावतार कानोडिया, गोविन्दप्रसाद रिजानीवाला, प्रहलाद सिगतिया, इन्द्रचन्द दायमा, नन्दलाल महनसरिया, बनवारीलाल शर्मा, मवर खा, सुरेन्द्रसिह, सुगनसिह आदि प्रसिद्ध खिलाडी हुए ।

यहा कबड्डी खेल का भी परम्परानुसार बराबर प्रदर्शन होता रहा है । यह खेल आधुनिक नियमो में बधकर निराले ढग से लोकप्रिय हुआ तथा दर्शको का भी प्रिय खेल बना ।

बिसाऊ हाईस्कूल की कबड्डी की टीम बहुत बार जिला स्तर पर विजयी हुई तथा यहा के कुछ खिलाडियो ने राज्य स्तर पर विजयी होकर अपना शानदार प्रदर्शन किया । इनमें श्री घनश्याम शर्मा व श्री रामावतार मिश्र ने राज्य स्तर पर श्रेष्ठ खिलाडियो के रूप मे ख्याति प्राप्त की । इनके अलावा श्री हाफिज खा हबीब खा जुडवा भाई व श्री ओ३मप्रकाश व राधेश्याम ने भी कबड्डी में अच्छा यश कमाया ।



जाता है । इनमे प्रमुख खेल फुटबॉल, वॉलीबाल, टेबलटेनिस हाकी, क्रिकेट आदि गिने जाते है ।

बिसाऊ मे सवप्रथम इन खेलो की ओर श्री मानसिंह प्र म ने विशेष ध्यान दिया । आप आज से ५०–६० वष पूव मे मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक रहते हुए खेलो को नियमित रूप से चलाते रहे थे जिससे विद्यार्थियो मे रुचि जाग्रत हुई और खेलो की स्वस्थ परम्परा पडी । श्री विष्णुदत्त जी शर्मा प्र म जेड आर स्कूल व श्री मन्नालाल शर्मा (पिलानी) ने भी खला को प्रोत्साहन दिया ।

श्री गिरीशच द्र शर्मा वॉलीबाल के एक श्रेष्ठ खिलाडी रहे हैं । आपकी बाली मारने की कला पर दशको ने करतल ध्वनि से प्रशसा की है । उस समय आपकी राज्य स्तर पर चोटी के खिलाडिया म गणना की जाती थी । आप राजकीय सेवा मे रहकर विद्वान अध्यापक तथा हायर सकण्डरी के कुशल प्रधानाध्यापक रहे और इसी पद पर रहते हुए सेवानिवृत हुए । राजकीय सेवा मे कायरत बिसाऊ के प्रथम प्रधानाध्यापक आप ही रहे हैं । आपने अग्रजी विषय से एम ए की उपाधि प्राप्त की । आपने समाज सेवा मे रत रहकर नगर विकास मे भी अच्छा योग दिया । जटिया हायर सकण्डरी स्कूल भवन के निर्माण म आपकी प्रेरणा विशेष रूप से कारगर सिद्ध हुई । आपके सुपुत्र भी अच्छे विद्वान है तथा साहित्य, कला व भित्ति चित्रो मे भी रुचि रखते हैं ।

बिसाऊ मे वॉलीबाल खेल का विशेष प्रचलन रहा है । इसके लिए यहाँ अनेक क्लबो एव सस्थाओ का ज म हुआ । इनके माध्यम से नियमित अभ्यास चलता और टूर्नामे टस भी आयोजित होते रहते । यहा प्रमुख सस्थाओं के नाम दिये जाते हैं— जयहि द क्लब, रघुवीर क्लब, शिव क्लब, मित्र मण्डल सूय मण्डल आदि ।

बाद मे श्री बालमुकु द दरोगा, श्री शुभकरण मिश्र, श्री गजानन्द मिश्र, श्री मालीराम मुसद्दी, श्री जोरजी मिश्र, श्री महावीर शर्मा, श्री अमोलक चन्द मिश्र, श्री श्रीलाल पोद्दार आदि वॉलीबाल के प्रसिद्ध खिलाडी हुए । इनम श्री बालमुकु द शुभकरण मिश्र व गजानन्द मिश्र ने बाली मारने का अभ्यास किया था कि तु पूण दक्षता हासिल नहीं कर पाये । फिर तो सोटिंग गेम अधिक लोकप्रिय होता गया और उसम बहुत से अच्छे खिलाडी बने । श्री गजानन्द मिश्र का करारा वार और श्री भागीरथ स्वामी का 'बाजर सोट' दशको का बराबर

आकर्षित करते थे। इन पुराने खिलाडियो को युवा खिलाडियो ने टक्कर लेकर वही रोक दिया और तेजी से आगे बढे। इन युवा खिलाडियो मे श्री अलादीन खा, गोविन्द माटोलिया, रघुनाथ माटोलिया, देवीसिंह, रामावतार मिश्र, विश्वनाथ मिश्र, रामावतार कानोडिया, गोविन्दप्रसाद रिजानीवाला, प्रहलाद सिगतिया, इन्द्रच द दायमा, नन्दलाल महनसरिया, बनवारीलाल शर्मा, भवर खा, सुरेन्द्रसिंह, सुगनसिंह आदि प्रसिद्ध खिलाडी हुए।

यहां कबड्डी खेल का भी परम्परानुसार बराबर प्रदशन होता रहा है। यह खेल आधुनिक नियमो में बधकर निराले ढग से लोकप्रिय हुआ तथा दर्शको का भी प्रिय खेल बना।

बिसाऊ हाईस्कूल की कबड्डी की टीम बहुत बार जिला स्तर पर विजयी हुई तथा यहा के कुछ खिलाडियो ने राज्य स्तर पर विजयी होकर अपना शानदार प्रदशन किया। इनमे श्री घनश्याम शर्मा व श्री रामावतार मिश्र ने राज्य स्तर पर श्रेष्ठ खिलाडियो के रूप मे ख्याति प्राप्त की। इनके अलावा श्री हाफिज खा हबीब खां जुडवां भाई व श्री ओ३मप्रकाश व राधेश्याम ने भी कबड्डी म अच्छा यश कमाया।



पाँचवा अध्याय

जन-जागरण एवं नगर-विकास

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बाद देश में आजादी के लिए संघर्ष एवं नव-जागरण की लहर आई। धीरे-धीरे यह लहर बंगाल, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश से होती हुई राजस्थान में पहुंची। रजवाड़ों के शोषण के विरोध में कुछ लोग आगे आए, जिनमें झुंझुनू जिले के सरदार हरलालसिंह, ताड़केश्वर शर्मा व नरोत्तम जोशी प्रमुख थे। इनके नेतृत्व में किसान एवं मजदूर वर्ग ने संगठित होकर संघर्ष किया। बिसाऊ भी इन सब से अछूता नहीं रहा।

सन् १९२० ई० के आसपास प० श्रीराम शर्मा ने बिसाऊ के नागरिकों में नव-जागरण का शंख फूंकना प्रारम्भ कर दिया था। वे नवयुवकों में आजादी के लिए संघर्ष और राष्ट्रीयता की भावना शिक्षा के माध्यम से जगाने लगे। आपने बिसाऊ में संवत् १९७० में हिन्दी पुस्तकालय की नींव डाली और देशप्रेम का साहित्य पढ़ने के लिए उपलब्ध कराया। जब ठिकाने के विरोध में स्वर फूटने लगे तो शासक के कान खड़े हो गए। परिणामतः प० श्रीराम शर्मा व उनके सहयोगी प० दयाराम, आशाराम राणासरिया व बजराज झुंझुनूवाला के लिए ठिकाने की सीमा में प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

श्री सूरजमल मेड़तिया, बिसाऊ की साढ़े तीन लाठियों (शक्ति) में से एक लाठी के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने ठिकाने के शोषण के विरुद्ध नवयुवकों को संगठित कर लिया था। वे स्वयं ठिकाने के लठैतों से मुकाबला करते हुए पकड़े गए थे। बाद में उनको अनेक यातनाएं भी झेलनी पड़ी थी।

महादेव चेजारा पक्के आर्यसमाजी थे। उनका सम्पर्क मण्डावा के क्रांतिकारी सेठ देवीप्रसाद सराफ व टाई के साहसी वीर ठा० छत्तूसिंह से था। उनके सहयोग से वे आजादी के लिए नवयुवकों में जागृति लाने का अनवरत प्रयास करते रहे। उन्होंने ठिकाने की ज्यादतियों के खिलाफ खुल कर विरोध

किया जिसके परिणाम स्वरूप उन पर अनेक झूठे मुकदमे चला कर उनको तंग किया गया।

मतुराम जांगिड ने बेगार प्रथा के विरोध में मजदूर वर्ग को संगठित करने का प्रयत्न किया। जब जब भी खातियों को बेगार के लिए बुलाया जाता था, मतुराम असहयोग करने के लिए 'धीमी गति से काम करना' या 'औजार डाल कर विरोध प्रदर्शन करना' ये दो तरीके काम में लेते थे। उन्होंने अपने सहकर्मियों के साथ अनेक बार बेगार करने से इनकार किया अथवा वे काम के बदले उचित पारिश्रमिक देने की मांग उठाते रहे। इस संघर्ष में उनको कई बार 'काठ' में दिया गया।

सन् १९४२ ई के आन्दोलन का प्रभाव शेखावाटी की जनता पर भी पड़ा और वह अंग्रेजों एवं जागीरदारों के खिलाफ खुल कर संघर्ष करने लगी थी। ऐसे समय बिसाऊ मे स्व दुर्गादत्त हारीत ने जनान्दोलन की बागडोर सम्भाल ली थी। आपका भू पू मुख्य मन्त्री हीरालाल शास्त्री से अच्छा सम्पर्क था। आपके कर्मठ सहयोगियों मे श्री धनसुख जी पोद्दार व श्री महावीरप्रसाद जी धानुका प्रमुख थे जिनके हृदय में स्वतन्त्रता के लिए अथाह प्रेम और त्याग भरा हुआ था। उन्होंने ही बिसाऊ में 'महात्मा गांधी की जय' व 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे खुलकर लगाए थे। उस समय युवावर्ग में श्री रतनलाल जी जोशी, विश्वम्भरलाल जी रूंगटा कांग्रेस के कर्मठ सदस्य बन कर आगे आए और जनजागृति के पावन काम में जुट गए। आपने दूर-दूर के गाँवों में जाकर हरिजन बस्तियों में शिक्षा का प्रसार किया तथा जन चेतना लाने में पूरा योग दिया।

श्री दुर्गादत्त हारीत के ही सद्प्रयत्नो से बिसाऊ मे सन् १९४४ ई मे प्रजामण्डल की स्थापना हुई थी। उस समय नगर मे एक नये जोश की लहर आई थी। सीकर के श्री लादूराम जोशी को घोडे पर बठा कर शानदार जुलूस निकाला गया था जिसमे नगर के नागरिको एवं विद्यालय के विद्यार्थियो ने बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ भाग लिया था। जलसा वर्तमान मंहनसरिया विवाह भवन के सामने वाले नोहरे मे आयोजित किया गया था। नोहरे की दीवार पर राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की, 'हम कौन थे, क्या होगये और क्या होंगे अभी ' पंक्तियां पिछले दस बारह वर्षों पूर्व तक लिखी हुई थी।

दूसरी ओर श्री भोलाराम आर्य, श्री कन्हैयालाल पोद्दार एवं श्री पीरामल आर्य ने इनको संघर्ष में सहयोग देने के अलावा यहां आर्य समाज संस्था की स्थापना आश्विन कृष्णा ४ सं २००२ वि को की और उसके माध्यम से हरिजनो को साक्षर करने के लिए रात्रि पाठशालाएं खोली। ठिकाने का भय व बुजुर्गों लोगो का दबाव भी उनको अपने मार्ग से विचलित नही कर सका।

धीरे-धीरे जनांदोलन तेजी पकडता जा रहा था। नगर के बहुत से शिक्षित लोग इससे जुड चुके थे। श्री गजानन्द चोडिया, प श्रीलाल मिश्र, श्री दुर्गाप्रसाद दाधीच, श्री जीवनलाल सिंगतिया, श्री भगवतीप्रसाद टीबडेवाला आदि कार्यकर्त्ताओं ने जनजागरण मे नव शक्ति का संचार किया। श्री दुर्गाप्रसाद दाधीच के भाषण बहुत जोशीले होते थे जिनको लोग बडे चाव से सुना करते थे। प श्रीलाल मिश्र ने ठिकाने की नौकरी करते हुए भी जागीरदारो का विरोध करने का साहस किया। उन्होंने जीवनभर खादी धारण करने के व्रत का पालन किया।

श्री तुलाराम जोशी का नाम जनजागरण की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। आपने अपने त्याग - बल से ठिकाने के शासक का दिल भी जीत लिया था। आपने गोचर भूमि की सुरक्षा के लिए तत्कालीन ठिकाना बिसाऊ के गलत निर्णय के विरोध मे आमरण अनशन किया तथा अपने उद्देश्य में सफल रहे।

इन सब प्रयत्नो से जो जन जागृति आई, उसके परिणाम स्वरूप ही ठिकाने की ओर से दिनांक ११ १-१९४७ ई० को बेगार प्रथा सदव के लिए समाप्त करदी गई। बाद मे ठिकाने का प्रजामण्डल के साथ बराबर सहयोग बना रहा।

प्रजामण्डल के सक्रिय कार्यकर्त्ताओ मे दुर्गादत्त जी हारीत, महावीर प्रसाद जी धानुका, विश्वम्भरलाल जी रूगटा, दलसुख जी पोद्दार व बिहारीलाल जी कानोडिया प्रमुख थे। श्री बिहारीलाल कानोडिया प्रजामण्डल के कोषाध्यक्ष रहे। इनके साथ श्री भोलाराम बजाज का नाम भी उल्लेखनीय है।

प्रजामण्डल के साथ साथ ही नगर की सुव्यवस्था हेतु संवत् २००२ वि म नगरपालिका की स्थापना हो चुकी थी। इसके कार्यालय हेतु ठा० रघुवीरसिंह ने बाजार के मध्य स्थित इमारत 'चबूतरा' (बिसाऊ तहसील कार्यालय) दिनांक १२ २-४८ को महात्मा गाधी की 'तेरवीं' के रोज शोक सभा में भाषण देते

समय प्रदान करने की घोषणा की। उक्त इमारत के स्थान पर 'महात्मा गाधी मंदिर' नगरपालिका की निगरानी मे बनवाना तजवीज किया गया था, जो नही बन सका।

नगरपालिका के प्रथम चेयरमेन स्व दुर्गादत्त हारीत बनें। उस समय युवावर्ग म श्री मक्खनलाल दाधीच कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बन कर आगे आए। वे नगरपालिका क मेम्बर मनोनीत हुए। श्री हारीत अनेक बार निर्विरोध चेयरमेन चुने गए थे। उनके कार्यकाल मे नगर मे रोशनी एव सफाई की व्यवस्था की गई। व नगर की अनेक समस्याओ का समाधान करने म संघर्षरत रहे।

आजादी के बाद धीरे-धीरे नगर मे राजनतिक दलो का प्रभाव बढता गया। परिणामत स्थानीय स्तर पर दो दल बन गए थे। स्व० हारीत जी के विरोध म अनेक नवयुवको न मिल कर नया सगठन बनाया। सन् १६५८-५६ म नगरपालिका के चुनाव परिणाम नवदल के पक्ष म गए। उनके सव सम्मत नेता श्री दुलाराम जोशी नगरपालिका के चेयरमेन चुने गए।

सन् १६६०-६१ ई मे नगरपालिका टूट कर पचायत बन गई थी। किन्तु यह स्थिति अल्पकाल तक ही रही। बाद म पुन नगरपालिका कायम होगई। उस समय में श्री नृहसिंहदेव स्वामी, श्री शुभकरण मिश्र, श्री ब्रजलाल स्वर्णकार, श्री जयनारायण जोशी, श्री दीने खां राजाजी, श्री पूर्णमल पनवाडी, श्री हनुमान पोशाकी, श्री गोपीराम चेजारा, श्री लोढाराम चमार, श्री बालूराम नायक, कैलाश नाई आदि व्यक्तियो ने राजनीति मे सक्रिय भाग लिया। इनमे से कुछ व्यक्ति नगरपालिका के सदस्य भी रहे।

बाद के चुनाव म श्री बाबूलाल पुरोहित चेयरमेन चुने गए तथा श्री अब्दुल जब्बार वायस चेयरमेन रह। श्री दीने खां 'राजाजी' नगरपालिका के मेम्बर रह। इस समय तक नवदल शिखर पर था कि तु बाद मे बिखरने लग गया और पुरानो के स्थान पर नय चेहरे दिखाई देने लगे। श्री भूरामल माळी व श्री बलजी भाट अपने-अपने वार्डों म प्रभावी हो गए थे। श्री शिवकुमार पुजारी सक्रियता से आगे आए तो श्री अस्तअली खा 'सदर' ने भी छलाग भरी। श्री बालमुकुन्द 'हेकडी होटल' घोडे की 'ढाई घर चाल' से 'वजीर' को मात देने मे नहीं चुके।

श्री बिहारीलाल उस समय स्व० हारीत के उत्तराधिकारी के रूप में उभर कर सामने आ रहे थे। स्व० हारीत जी से राजनैतिक ताबीज व चढावर ही चुनाव क्षेत्र में कूदे और सफलता भी प्राप्त की। आप बहुमत से चेयरमैन चुने गए। इसके बाद श्री वासुदेव पुजारी, श्री रमजान तेली, श्री अब्दुल करीम आदि नगरपालिका के चेयरमैन बने तथा नगर विकास के कामों को आगे बढ़ाते रहे।

श्री गोविन्दप्रसाद दाधीच नगर प्रशासन पर परोक्षरूप से अपनी पकड़ मजबूत रखते हुए अपनी भूमिका को चलाते रहे। आप नगर की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। जिनमें सन् १९६१ ई० में राजस्थान साहित्य समिति द्वारा आयोजित रविन्द्र उपनिषद् तथा वरदा प्रकाशन में सहयोग एवं रामलीला आयोजन में सक्रियता से भाग लेना उल्लेखनीय है। श्री शिवकुमार पुजारी, श्री शुभकरण जांगिड़, श्री रामगोपाल टाईवाला, श्री रामावतार जोशी आदि कार्यकर्ता नगरपालिका व अन्य साधना से नगर की उन्नति में कार्यरत हैं।

बिसाऊ ठिकाने की शासन व्यवस्था अन्य ठिकानों से अधिक उदार, सरल और सुसचालित थी। विशेषतः ठा० विष्णुसिंह के काल में नगर विकास एवं प्रजा हित में नगर श्रेष्ठियों के सहयोग से अनेक कार्य हुए। श्री रघुवीरसिंह का युवराज पद तथा बिसाऊ सूरजगढ़ ठिकाने का एकीकरण के उत्सव पर आपका दिया गया भाषण इस बात का द्योतक है।

सर्व प्रथम आपने सन् १९२० ई० में श्री सावलराम जोशी को कलकत्ता भेजा तथा वहाँ श्री ओंकारमल जटिया से नगर विकास हेतु बातचीत की गई। बाद में श्री जटिया जी के निमंत्रण पर आप कलकत्ता गए और वहाँ वायसराय से भेंट करने में जटिया जी ने पूरा योगदान किया। आप दिनांक १२-४-२४ ई० को बम्बई पधारे थे। वहाँ सेठ जी श्री पीरामल व घनश्यामदास ने आपका शानदार स्वागत कर नजरें की।

व्यवस्था में रुचि रखने वाले नगर के लोगों को ठिकाने की ओर से विशेष दर्जा दिया गया। उनको पंचायती में पंच नियुक्त किया गया और उनकी चुंगी माफ की गई। ऐसे लोगों में से कुछेक के नाम अग्रांकित हैं — नानूराम जी पोद्दार, सर ओंकारमल जटिया, रामकुमार चिमनराम पोद्दार, बद्रीनाम काबड़िया, स्योप्रसाद बजनाथ पोद्दार, जयनारायण लिछमनराम पुजारी, बिरमादत्त बजाज, बिहारीलाल जमनालाल पोद्दार आदि।

दिनांक ५ दिसम्बर १६३१ ई को श्रीमान् हिजहाईनेस महाराजाधिराज सर सवाई मानसिंह रियासत जयपुर, बिसाऊ पधारे थे। उनके हवाई जहाज के उतरने के लिए नन्दपुरा वालाजी के पास हवाईअड्डा बनाया गया जो बाद में भी कई वर्षों तक बराबर चालू रहा।

ठा विष्णुसिंह जी के प्रयत्नों से दिनांक १४-१-१६३६ ई को रियासत जयपुर से जे पी एम रेलवे लाइन सीकर से बिसाऊ तक लाने का काम शुरू हुआ। स्टेशन पिजरापोल के पीछे तजवीज होकर मिट्टी साफ करके गोला बनाना शुरू कर दिया। जनता को श्मशान भूमि 'धीरानी' का रेलवे हद में आने का संदेह हुआ जिसके लिए आपत्ति उठाई गई। बाद में काम बंद हो गया। सन् १६३३ ई मे आसपास ठिकाना बिसाऊ ने झुंझुनू म जाट छात्रावास के लिए २५ बीघा जमीन प्रदान की जिससे शासकों की जनसहयोग मे उदारता प्रकट होती है।

संवत् १९७३ म श्रीराम झुंझुनू वाले ने ठिकाने को दो हजार रु० जमा कराकर बाजार म रोशनी का अच्छा प्रबंध किया। स्व श्रीलाल जी मिश्र और कन्हैयालाल जी पोद्दार के प्रयत्नों से दिनांक २६ अप्रेल १६३६ ई में धवलपालिया जोहड पर 'रघुवीर क्लब' बनवाया गया।

सेठ रामकुमार जी लक्ष्मीनारायण जी पोद्दार ने अपने कुए पर, जो उत्तर की ओर राणासर के मार्ग पर स्थित है तथा वहां से कस्बे के आम रास्तो पर पानी की टूटियां लगाई और एंजिन का पावर हाऊस अपने नोहरे में लगा कर नगर के मुख्य मुख्य स्थानो पर बिजली की रोशनी का प्रबंध किया। यह आदेश ठिकाने की मिसल नं० १८५/१८६/१६६८ दिनांक १५ २-१९८२ को जारी हुआ।

नगर की आम जनता के स्वास्थ्य लाभ के लिए अनेक अस्पताल एव औषधालय नगर श्रेष्ठियों की ओर से खोले गए। श्री नाथूराम रामनारायण पोद्दार की ओर से वि स १६६६ मे 'पोद्दार औषधालय' खोला गया। श्री सूरजमल चिमनराम पोद्दार ट्रस्ट की ओर से वि स १६७२ में 'श्री धन्वतरि दातव्य औषधालय' खोला गया। श्री श्रीराम रामनिरजन पोद्दार की ओर से वि स २० ३ मे 'श्रीराम रामनिरजन अस्पताल' खोला गया।

आजादी के बाद विकास कार्यों मे और भी तेजी आई तथा अनेक काम सार्वजनिक हित मे होते गए। सेठ जी श्री सूरजमल चिमनराम पोद्दार ने

सन् १९६८ ई० मे 'राजकीय पोद्दार मातसेवा मदन' का भवन तैयार कराके राज्य सरकार को प्रदान किया। श्री दुर्गादत्त रामकुमार जटिया की ओर से सन १९७२ मे 'श्री जटिया होम्योपथी ओषधालय' खोला गया। जटिया परिवार की ओर से सन १९८५ मे ३० शया वाले अस्पताल का भ य भवन निर्माण कराके राज्य सरकार को प्रदान किया गया जो 'श्री रामगोपाल जटिया राजकीय अस्पताल' के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री भगवती प्रसा टीबडेवाला नगर के युवा वग में एक कमठ कायकर्त्ता रहे। उनके प्रयत्नो से सवत २००५ मे 'नगर विकास मण्डल' की स्थापना हुई जिसके माध्यम स अनेक विकास काय सम्पन्न हुए जिनमे से कुछ के नाम अग्राकित हैं— (१) मिडिल से हाई स्कूल खुलवाना (१९५२ ई), (२) चूरू झु झुनू वाया बिसाऊ सडक निर्माण, (३) सावजनिक बिजली एव जल व्यवस्था (१९६२ से १९६६ के मध्य) (४) बाजार की सडको का निर्माण १९६५) (५) फतेहपुर से चूरू वाया बिसाऊ रेलवे लाइन प्रारम्भ (१-४ १९५७ ई०) आदि।

यहा के सभी-सजग नागरिक और जन-सेवी जन जागरण एव नगर विकास के लिए सदव सक्रिय तथा उत्साही रहे हैं जिसका प्रभाव यहा की सभी सास्कृतिक, सामाजिक, व्यापारिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, धार्मिक, राजनतिक तथा ▪ य समस्त जन सवी सस्थाए हैं।



छठा अध्याय

सेठ-साहूकार और व्यापारिक प्रतिष्ठान

बिसाऊ के सेठ साहूकारो न नगर बिसाऊ मे सदा भरपूर योग दिया। उन्होने नगर मे धमशालाए, कुए, कुण्ड, बगीची, प्याऊ, सडकें, स्कूलें, अस्पताल, अतिथि भवन, जोहड तालाब, पानी - बिजली आपूर्ति आदि अनेक विकास काय जी खोल कर किए। उनके आर्थिक सहयोग से ही बिसाऊ एक कस्बे का रूप धारण कर सका। उनके दान-पुण्य से नगर का कण-कण सुवासित है। आगे एसे मुख्य मुख्य परोपकारी दानवीर एव नगर-प्रिय सेठो का सक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है —

१ केडिया परिवार

ठा० श्यामसिंह ने सवत् १८२८ मे श्री पीरामल केडिया को झुन्झुनू से बिसाऊ लाकर बसाया था। इनक वश मे महान दरामजी व नन्दरामजी केडिया बहुत ख्याति प्राप्त हुए। उ होने नगर म जोहड, तालाब, कुए, धम शालाएँ आदि बनवाए। वतमान मे भी इनका कुआ नन्पुरा बालाजी के नाम से प्रसिद्ध है।

२ पोद्दार परिवार

सठ धनीराम जैसराज नाथूराम जीवराज, रामनारायण, सीताराम, घनश्यामदास यशस्वी दानवीर हुए। उक्त परिवार ने कुए, धमशालाए, छतरियाँ औषधालय, स्कूलें आदि बनवाए। इनकी प्राथमिक शाला (जड०आर० स्कूल) पुरानी स्कूलों म प्रसिद्ध रही है तथा एक वाचनालय व्यवस्थित ढग से चल रहा है। उक्त परिवार का दवाखाना बहुत प्रसिद्ध हुआ जिसम डा० केशवलालजी की सेवाए सदव स्मरणीय रहगी। श्री भोगीलालजी का 'मिक्स्चर' अब भी याद किया जाता है। नगर में घनश्यामदासजी द्वारा निर्मित 'श्रीमती रत्नी देवी पोद्दार विवाह भवन' आधुनिक साजसज्जा एव सुविधाओ से परिपूण साव-जनिक उपयोग म आता है।

स्व० घनश्यामदासजी व्यावसायिक प्रतिभा के साथ-साथ सामाजिक, शक्षणिक एव साहित्यिक कार्यों मे भी अभिरुचि रखते थे। आपके बम्बई में सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय, ठाकुर द्वार, नाथूराम पोद्दार बाग, घनश्यामदास रोड आदि प्रसिद्ध हैं। आपके नाम से रींगस (सीकर) में 'श्री घनश्यामदास पोद्दार बहुद्देशीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय' है। आपको ब्रिटिश सरकार से बम्बई मे जे० पी० की उपाधि प्राप्त थी। वर्तमान में आपके सुयोग्य पुत्र श्री कलाशपति पोद्दार भी सामाजिक कार्यों मे भाग लेते हैं।

सेठ चिमनराम, रामकुमार, लक्ष्मीनारायण, स्योचन्दराय परिवार ने नगर के विकास कार्यों म विशेष योगदान किया। इन्होने बिसाऊ मे पानी व बिजली का प्रब ध किया तथा कुए, बाग, मन्दिर, औषधालय आदि बनवाए। स्वाधीनता आ दोलन मे राजस्थान के साहूकारो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनमे स्योचन्दरायजी का नाम उल्लेखनीय है। बगाल के उच्च सुरक्षा अधिकारी ए एच गजनवी ने वायसराय के प्रतिनिध कनिंघम को कई सूचिया भेजी, जिनमे उन सेठ साहूकारो का उल्लेख मिलता है जो गाधीजी के आन्दोलनो म सक्रिय थे। एक सूची के अनुसार जिन राजस्थानी प्रवासियो को गिरफ्तार कर उनके बही खाते जब्त किए गए, उनमे सेठ रामकुमार स्योचन्दराय के नाम भी उल्लिखित हैं।[1] उक्त परिवार ने ही मातृसेवा चिकित्सालय का भवन बनवा कर राज्य सरकार को अर्पित किया।

श्री बिहारीलाल जमनाधर पोद्दार प्रसिद्ध सेठ हुए हैं। आपने कुए, धमशाला छतरी, बगीची आदि बनवाए। आपकी एक धमशाला मे बरसो मिडिल स्कूल चली जिसके आप ही सचालक थे। बाजार में आपका रामेश्वरदास पोद्दार पुस्तकालय भी प्रसिद्ध रहा है। आपकी मथुरा वृन्दावन में धर्मशाला बनाई हुई है।

श्री रामप्रसाद भगवानदास गूदीवाले पोद्दारो के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्होने नगर में एक कालीमाई का मन्दिर बनवाया। इनका पश्चिम में एक बगीची और एक कुआ भी है।

नगर मे पोद्दारो का मोहल्ला व उनकी सातहवेलियां अभी भी प्रसिद्ध हैं। सेठ पोकरमल पोद्दार की ओर से आयुर्वेद दवाखाना बरसो रोगियो की सेवा करता रहा। आप शतरज के प्रसिद्ध खिलाडी थे। आपके वश मे भिर्जामल रामनारायण, मोतीलाल, मुन्तानमल, जोरावरमल आदि प्रसिद्ध हुए।

---

१ 'स्वाधीनता आ दोलन और राजस्थान के साहूकार' लेखक शुभ पटवा नवभारत १६ ८-८।

श्री भजनलाल पोदार व उनके पुत्रो की बाजार मे किराने की दुकान है। आप अनाज के बडे व्यापारी हैं । आपका पुत्र श्री ओ३म्प्रकाश एक उत्साही युवक है जो सदैव सामाजिक सेवा मे सलग्न रहते हैं।

३ झुन्झुनूवाला परिवार—

सेठ श्रीराम रामनिरजन झुन्झुनूवाला नगर विकास की दृष्टि से ख्याति प्राप्त हुए। उक्त परिवार ने नगर मे जब बिजली नही आई थी, तब रोशनी का प्रब ध कराया। आपका कुआ और बगीचा बहुत प्रसिद्ध है। आपने कुए पर इ जिन लगाकर बरसो से जनता के लिए जल की व्यवस्था कर रखी है। आप बडे दानीमानी सेठ हुए। आपने कई बार पूरे बिसाऊ वासियो को भोजन करा कर 'शहर सीरणी' की। आपका 'श्रीराम रामनिरजन अस्पताल' काफी सालो से सेवारत है जिसमें डा० म नूभाई शाह की सेवाए अविस्मरणीय हैं। ठिकाना की मिसल न० ३४/७-११ ४६ के अनुसार आपने गोरीर गाव मे मिडिल स्कूल और एक अस्पताल का भवन निर्मित कराया। इस परिवार मे श्री ताराच द झुन्झुनूवाला एक कमठ कायकर्ता है।

४ जटिया परिवार

उक्त परिवार मे सरनाइट रायबहादुर ओकारमल जटिया का कलकत्ते मे वाइसराय से घनिष्ठ सम्ब ध था। उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था।

सेठ दुर्गादत्त रामकुमार जटिया तथा सेठ रामगोपाल जटिया के सुपुत्र सत्यनारायण गणेशनारायण मोहनलाल व रामनिरजन की ओर से नगर मे अनेक सावजनिक काय कराये गए हैं। उक्त परिवार की ओर से स्थापित ट्रस्ट ने नगर के उत्तरी दरवाजे बाहर हायर सकण्ड्री स्कूल का विशाल भवन बनाकर राज्य सरकार को सौंपा जिसका उद्घाटन भारत के तत्कालीन गृहमत्री श्री उमाशकर दीक्षित ने दिनाक १८-२ ७३ को किया। श्री जटिया होम्योपथी औषधालय की स्थापना सन् १९७२ ई० मे की गई जिसमे रोगियो को मुफ्त दवा दी जाती है तथा उसमे डा० रामान द जी काय कर रहे हैं। इनके द्वारा जन म दिर के एक भाग मे 'गीगी बाई आयुर्वेदिक औषधालय' का नया भवन बनाकर राज्य सरकार को अर्पित किया गया। श्री रामगोपाल जटिया ट्रस्ट की ओर से 'श्री रामगोपाल जटिया राजकीय अस्पताल' का भ य भवन बनवाया गया जिसका उद्घाटन दिनांक ११ ४-८५ को राज्य के मुख्यमत्री माननीय हरिदेव जोशी ने किया। अस्पताल के अलावा स्टेशन पर इनकी एक कोठी और एक सु दर बगीचा भी है। यह परिवार सदा ही अपनी सस्थाओ के विकास मे योग करता रहता है।

जटिया परिवार का नगर के उत्तर पश्चिम की ओर एक कुआ और बगीचा है। इनका नगर की अन्य संस्थाओं को भी बराबर आर्थिक सहयोग मिलता रहता है। श्री दुर्गादत्त रामकुमार जटिया की ओर से उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन के पास ही बालिका माध्यमिक विद्यालय का शानदार नया भवन निर्मित करवाया गया है। इनके देश विदेश में अनेक प्रतिष्ठान हैं। ऐसे दानवीर सेठों से नगर को काफी आशाएं हैं।

५ सिंघानिया परिवार

उक्त परिवार में सेठ समरथराय हरमुखदास हुए तथा रायबहादुर सेठ जुगीलाल कमलापत सिंघानिया (जि० के०) तो कानपुर के किंग नाम से ख्याति प्राप्त है और देश के बड़े उद्योगपतियों में से एक हैं। सेठ स्योदयाल सिंघानिया ने जनता की सुविधा के लिए परकोटा तुड़वाकर दक्षिण की ओर मोरी निकलवाई। मोरी के बाहर ही इनकी एक धर्मशाला व कुआ बनवाये हुए हैं। धर्मशाला विद्यालय हेतु प्रदान करदी गई है।

सेठ मनीरामजी हरजीमलजी बोयतरामजी सिंघानिया की ओर से नगर में एक बड़ी धर्मशाला कार्तिक बदी ७ संवत् १९५६ में बनवाई गई जो बोयतरामजी की धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है। वर्तमान में इसे गौशाला को प्रदान करदी गई है।

६ सिंगतिया परिवार

सेठ मोतीराम जमराज की दो बड़ी हवेलियां दक्षिणी दरवाजे के पास स्थित हैं जो भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। उक्त परिवार के दक्षिण दरवाजे बाहर छतरी, कुआ, बाड़ी व नोहरे हैं। इनके वंश में स्व० बंशीधर सिंगतिया सामाजिक कार्यों में भाग लेते थे और आर्थिक सहायता भी करते थे। इनकी नगर में अपनी एक लोकप्रियता थी।

७ बजाज परिवार

उक्त परिवार में सेठ बालमुकुन्द रामजसराय, बद्रीदास आदि हुए किन्तु सेठ गोविन्दराम का नाम विशेष प्रसिद्ध हुआ। इनकी गौशाला मार्ग पर कुई व धर्मशाला है। आपके नाम पर गोविन्दपुरा बसा हुआ है। गौशाला की व्यवस्था और आर्थिक सहयोग में आपका विशेष स्थान है।

८ रूंगटा परिवार

सेठ घड़सीराम नयनसुखदास व इनके वंशजों का नगर विकास में बड़ा

योगदान रहा है। इनका सूरसागर प्रसिद्ध है। सेठ भानीरामजी की स्मृति मे भानीपुरा बसा हुआ है। मूगामेडी के पास इनके कुआ, धर्मशाला, बगीची आदि बनाये हुए हैं। श्री विश्वम्भरदयाल जी रूगटा ने उक्त धर्मशाला को आधुनिक साधनों से युक्त करके इसका नवीकरण करा दिया है।

९ टीबड़ेवाला परिवार

इस परिवार में सेठ दुलीचन्द टोरमल हुए। इन्ही मे सेठ रामलालजी का झुन्झुनू में पुराना अस्पताल, तिलोकदास वाला कुआ, गाधी पार्क इन्ही के हैं। इस परिवार के विसाऊ मे कुआ, धर्मशाला, छतरी आदि बनवाये हुए हैं। श्री भगवतीप्रसाद टीबड़ेवाला नगर के एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता है। आपने नगर विकास मण्डल संस्था की स्थापना की।

१० बुवासिया

सेठ रूपाराम, बालमुकुन्द के वंश मे पूरणमल जी, नागरमल, गजानन्दजी नामी सेठ हुए हैं। इनका रानीगंज मे कोयला की खानो पर बड़ा व्यापार था। आप ख्याल के बड़े शौकीन थे। आपके वंशजो ने ही नाथजी का कुआ बनवाया। इस परिवार मे श्री उमाशंकर बुवासिया एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं।

११ मन्त्री

श्री कन्हैयालाल रामनारायण मन्त्री की ओर से नगर म कुआ, कुण्ड, बगीची आदि बनवाये गए। तपसीजी की कुई इन्ही के द्वारा बनवाई गई है। इनका कारोबार किसनगंज (बिहार) मे है।

आगे प्रसिद्ध-प्रसिद्ध परिवारो की एक संक्षिप्त सूची दी जा रही है—

१ जोहरीमल जालीराम रूइया २ पालीराम मंगलचन्द सर्व्फ ३ धमचन्द, स्योजीराम, गोरखराम सराफ ४ हजारीमल, बोयतराम, अमरचन्द सूरेका ५ गंगाराम चन्दूराम सरावगी ६ भोजराज, ताराचन्द, हरनारायण, रामदयाल राजपुरिया ७ मनीराम, रामकरणदास घासीराम खेमका ८ डेडराज, रूपचन्द, सुन्दरमल, गोपीराम जेजानी ९ मनसाराम श्योकिसनदास बंयाल १० नाथूराम चोवानी ११ श्रीलाल रामदयाल फतेहपुरिया १२ मुकुन्दराम हरजीमल वागला १३ पालीराम गोयनका १४ शिवलाल शम्भुराम धानुका १५ देवीदत्त आशाराम जालान १६ बालमुकुन्द रामजसराय खेतान १७ रघुनाथराय वगड़िया १८ चनीराम अमरचन्द कसेरा १९ सरदारमल गंगाराम चमड़िया २० धमचन्द, गुलाबराय, सूरजमल मेढतिया २१ सदाराम

हरमुखराय बाजोरिया २२ धमचन्द, मनसुखदास लोहिया— इनके वंश में ही सोशियलिस्ट नेता डा० राम मनोहर लोहिया हुए। २३ तेजपाल नरसिंहदास मरतिया २४ रामचन्द्र स्योदत्तराय सेमका २५ केशोराम गंगाधर गाडोदिया इनके वंश में श्यामसुन्दर गाडोदिया के पुत्रों का कलकत्ता में अच्छा व्यापार है। २६ खेतसीदास चोखराम सांखूवाल २७ समरथराय माणकराम बावरी २८ स्योनारायण भौतिका २९ ताराचन्द गुरुमुखराय कुञ्जीलाल माहश्वरी ३० महालीराम हरमुखराय थानोडिया ३१ रामकिशनदास भगवानदास केडिया

वर्तमान में नगर में संचालित व्यापारिक प्रतिष्ठानों का संक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है—

१ बयाल परिवार

श्री बजनाथ बयाल के सुपुत्र श्री नन्दलाल बयाल व रघुनन्दन बयाल की बाजार में दो तीन बड़ी दुकानें हैं तथा ये गल्ले के थोक व्यापारी हैं। इनकी फर्म का नाम 'नन्दलाल एण्ड कम्पनी' है। आप सीमेंट के थोक व्यापारी भी हैं। श्री बंशीधर बयाल एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। श्री श्याम सुन्दर बयाल नन्दपुरा बालाजी के प्रबन्ध में सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

२ जेजानी परिवार

श्री मानकचन्द जेजानी के सुपुत्र श्री बाबूलाल व श्री नेमीचन्द की बाजार में थोक व खुदरा की दुकानें हैं। आपकी फर्म क्रमश: बिलासराय श्रीराम एवं श्रीराम मानकचन्द हैं। श्री बाबूलाल वर्तमान में श्री पंचायत दिगम्बर जैन मन्दिर एवं श्री चन्द्रसागर दिगम्बर जैन पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं। श्री नेमीचन्द भी सार्वजनिक कार्यों में रुचि के साथ भाग लेते हैं। इनके परिवार में श्री मोतीलाल और उनके भाइयों के नागपुर में व्यापारिक प्रतिष्ठान हैं।

३ बिरमीवाला परिवार

स्व० भजनलालजी के पुत्र श्री सोहनलाल, श्री मोहनलाल एवं श्री सत्यनारायण की बाजार में दुकानें हैं। इनकी फर्म क्रमश: श्री रामबक्स राम भजनलाल, मैसर्स जगदीश जनरल स्टोर एवं भजनलाल सत्यनारायण हैं। श्री सत्यनारायण बिरमीवाला विश्व हिन्दू परिषद्, बिसाऊ के अध्यक्ष हैं।

श्री बिसेसरलाल बिरमीवाला के पुत्रों में श्री सीताराम, बनवारीलाल, विश्वनाथ एवं बजरंगलाल ने बिसाऊ में सीताराम फ्लावर डाल एण्ड आयल

मित' की स्थापना की। वर्तमान में श्री सीताराम और श्री विश्वनाथ इसे संभालते हैं ।

४ कसेरा परिवार

उक्त परिवार में 'भगवानदास कालूराम' फर्म बिसाऊ के पुराने फर्मों में से एक रहा है। स्व० भगवानदास के सुपुत्र श्री गोरधनदास भी दुकान चलाते रहे। इनके पुत्र श्री नन्दकिशोर, सीताराम, रामावतार एवं विश्वनाथ हैं। इनके व्यापारिक प्रतिष्ठान कलकत्ता एवं बम्बई में हैं। श्री रामावतार कसेरा कुशल व्यक्तित्व के धनी, उदार हृदयी व समाज सेवी व्यक्ति हैं।

दूसरी फर्म 'श्री रामनारायण चिरंजीलाल कसेरा' है। आजकल इसको श्री नथमल कसेरा संभालते हैं जो नगर के योग्य व्यापारियों में हैं।

५ जटिया परिवार

मैसर्स जटिया दाल मिल में आटा पिसाई, रुई पिनाई एवं तेल निकलवाने के साधन हैं। इसके प्रो० श्री परमानन्द जटिया हैं। आप बड़े परिश्रमी एवं योग्य व्यक्ति हैं। आप नगर के श्रेष्ठ कार्यकर्ता और समाज-सेवी हैं। आप अनेक संस्थाओं से संबद्ध हैं। आपकी देख-रेख में नगर की अनेक संस्थाओं के विशाल भवन बनवाए गए। भवन निर्माण कला में आप दक्ष हैं।

६ कल्याणी परिवार

मैसर्स बींजराज मालीराम एक पुराना प्रतिष्ठित फर्म है। इसके मालिक श्री मालीराम कल्याणी ने अपने अनुज श्री रामनिवास कल्याणी के साथ परिश्रम करके प्रतिष्ठान को चमकाया। इनका तेल किराना के व्यवसाय पर वर्षों तक एकाधिकार रहा। श्री मालीराम विष्णुनाट्य परिषद् के कोषाध्यक्ष रहे तथा परिषद् के नीचे दुकानें बनवाकर संस्था को स्वावलम्बी बनाने में इनका प्रमुख योगदान रहा। आप १९५७ ई० में स्व० हारीत के साथ नगरपालिका के सदस्य रहे। वर्तमान में इस फर्म को श्री रामजीलाल कल्याणी संभालते हैं। आप एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता हैं तथा व्यापार मण्डल के करीब १७ सालों से सेक्रेटरी हैं। आप वाणिज्य में स्नातक हैं। आपके अनुज भगवतीप्रसाद का फर्म रामनिवास भगवतीप्रसाद है आप तेल किरासन के प्रमुख व्यापारी हैं।

७ ठेलासरिया परिवार

फर्म राधाकिशन रामनिरंजन ठेलासरिया कपड़े के बड़े दुकानदार हैं।

आपकी फर्म के मालिक स्व० राधाकिशन को बाजार में समझदार व्यक्तियों में गिना जाता था। अब यह दायित्व श्री बाबूलाल ठेलासरिया पर आगया है। जो उनके छोटे भाई हैं।

८ महनसरिया

उक्त परिवार में बालूराम नन्दकिशोर एवं दुर्गादत्त महावीरप्रसाद महनसरिया फर्म से कपड़े की दो बड़ी दुकाने हैं। श्री बालूरामजी महनसरिया बिसाऊ के बाजार में प्रथम पूज्य माने जाते हैं।

९ दायमा

नून्दराम गणपतराय कपड़े का धंधा करने वाली बिसाऊ की पुरानी फर्म है। इसके मालिक श्री मालीराम एवं उनके छोटे भाई श्री गोविन्दप्रसाद दायमा हैं। श्री गोविन्दप्रसाद का सार्वजनिक जीवन सर्वविदित है। आप कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी हैं। आपको गणपति की तरह नगर के हर कार्य में सर्वप्रथम याद किया जाता है।

१० आर्य

'मैसर्स पीरामल एण्ड सन्स' के मालिक श्री पीरामलजी आर्य ने पसारट के व्यवसाय में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। आप एक मिलनसार व्यक्ति हैं। आप व्यापार मण्डल बिसाऊ के अध्यक्ष हैं। आपके बड़े पुत्र सांवरमल की (अबेरवाल ब्रादर्स) नामक फर्म व अलग से जनरल स्टोर है और इनके छोटे पुत्र श्री देवकीनन्दन आय दुकान का समस्त कार्यभार वहन करते है तथा एक उत्साही नवयुवक हैं।

११ म० लक्ष्मीनारायण वासुदेव बगड़िया फर्म के मालिक श्री श्यामसुन्दर बगड़िया हैं। इनके बड़े भाई श्री मुरारीलाल का 'बगड़िया ड्रग स्टोर' प्रसिद्ध है। इनके एक भाई हनुमान प्रसाद झुंझुनू में व्यवस्थित हैं।

इनके अलावा नगर की अन्य मुख्य फर्मों के नाम यहाँ दिये जा रहे हैं—

मैं० सागरमल बनवारीलाल, म० रमज्यान भूरा तेली, म० शिवबक्सराम खरतूराम म० श्यामसुन्दर रविकान्त, मालीराम रामावतार, कन्हैयालाल वशीधर, हुकमीचन्द महनसरिया, मोतीलाल बयाल, भवानीशंकर महनसरिया, बनवारीलाल दुर्गादत्त, मुरारिलाल रामप्रसाद, जुगलकिशोर ढण्ढारिया, विजय ट्रेडिंग कम्पनी, कालूराम महेशकुमार, दीन मोहम्मद शफी मोहम्मद,

बेगराज नन्दलाल, भूधाराम पीरामल, जिजाराम धोडीवाला, बनवारी लाल शर्मा समाचार पत्र विक्रेता, राजेश जनरल स्टोर, पवन जनरल स्टोर, वरायटी स्टार, सेमवा स्टोर, श्रीनिवास गोविन्दप्रसाद, हरी टेडस, गुरेखा भाटी, गोपाल एजेंसाज, जेमराज भुवारमल, रामनाथ मालीराम, भागीरथ स्वामी, शक्ति इलक्ट्रिक स्टार, रामप्रसाद सत्यनारायण, दिनश फोटोस्टेट, सेमका फोटोस्टेट आदि बिसाऊ के व्यापारिक प्रतिष्ठान हैं। पजाब बैंक, बडौदा बैंक व कोपरेटिव बैंक की शाखाओं से फसल सुविधाए प्राप्त होने से अब नई नई और भी दुकाने खुल रही है।

यहा बिसाऊ के प्रवासी श्रेष्ठियो मे पुराने प्रसिद्ध व्यापारिक फर्मों के कतिपय नाम दिए जा रहे है। ये नाम श्री गोविन्द अग्रवाल, चूरू के सौजन्य से प्राप्त हुए है—

१ मै बजनाथ बालमुकुन्द, कानपुर— बकिंग, कपडा, तेल
२ मै बिहारीलाल पोद्दार, दिल्ली — कपडा, बैंकिंग
३ मै बिसेसरदास कसेरा व कलकत्ता— किराना, आढत, कमीशन एजेन्ट
४ मै चनीराम जैसराज, बम्बई— कॉटन एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट
५ मै द्वारकादास लक्ष्मीनारायण, फरुखाबाद— बकिंग
६ मै फतेहचन्द मदनगोपाल, कराची — इम्पोर्ट बिजनेस
७ मै गुलाबराय रामप्रताप, बिहार— कपडा, आढत
८ मै गुटीराम डेडराज, कलकत्ता — कपडा, सीड, सुगर
९ मै हुक्मीचन्द हरदत्तराय, बिहार - बैंकिंग, आढत, कपडा
१० मै जमनाधर पोद्दार एण्ड कम्पनी, एम पी — कॉटन सोल एजेन्ट
११ मै लछीराम हनुमानप्रसाद, बिहार— बकिंग एजेन्ट
१२ मै मालीराम रामनिरजनदास, बिहार— तेल, बैंकिंग, जूट राइस मिल
१३ मै नाथूराम रामनारायण माहेश्वरी, —बकिंग, जिनिंग फक्ट्री
१४ मै लक्ष्मीचन्द मामराज, बगाल— कपडा, तेल
१५ मै रामचन्द्र जवाहरमल, एम पी — क्लोथ
१६ मै रामकुमार शिवचन्दराय, कलकत्ता— कपडा बनियान
१७ मै रामलाल जो लेमका, दिल्ली — कपडा, बैंकिंग, हुण्डी
१८ मै तेजपाल ब्रह्मदत्त, कलकत्ता— बैंकिंग, आढत
१९ मै तेजपाल जमनादास, कलकत्ता— बैंकिंग, कपडा
२० मै तुलसीराम धमनारायण, फरुखाबाद— बैंकिंग
२१ मै शिवचन्दराम जोखीराम, बिहार— कपडा, चादी
२२ म सवाईराम ओतमल कलकत्ता— Hession जूट, कपडा
२३ मै सुन्दरमल परसराम, कलकत्ता— कपडा मर्चेन्ट

सातवा अध्याय

विविधा

इस अध्याय मे विविध प्रकार की ऐसी सामग्री एव सूचनाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं जिनका उल्लेख पिछले अध्यायो मे नही हो पाया है तथा ग्रथ को पूर्ण बनाने के दृष्टिकोण से जिनका उल्लेख करना आवश्यक था। हमारा लक्ष्य यह रहा है कि सभी दिशाओ से नगर के दर्शन किए जावें ताकि ग्रथ के साथ अधिकाधिक विशिष्टता जुड सके।

इसमे विशिष्ट व्यक्तित्व के अन्तर्गत उनको स्थान दिया गया है जिनका परिचय यथा प्रसग पहले नही दिया जा सका था जिनका फोटो और परिचय विलम्ब से प्राप्त हुए हैं। यही स्थिति युवा प्रतिभा के साथ है। प्रयत्न करने पर भी वाछित स्वरूप म उनका परिचय नही दिया जासका है। 'प्रथम व्यक्ति' शीर्षक के अन्तर्गत यथावधि प्राप्त हुई सूचनाओ का उपयोग किया गया है। सस्थाओ और स्थानो की सूची मे प्राचीन एव वर्तमान सभी को प्रमुखता के आधार पर सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया है। इन के अतिरिक्त अन्य विभिन्न सूचनाएँ भी इसमे सम्मिलित की गई हैं।

विशिष्ट व्यक्तित्व

जतीजी के करिश्मे

श्री विष्णु नाट्य परिषद् भवन पहले मालचद जी जती का उपासना स्थल था इसलिए इसे जतीजी का उपासरा भी कहा जाता है। ये बड करामाती साधु थे। इनके करामाती करिश्मे यहा दिए जा रहे हैं —

(१) बिसाऊ राज दरबार मे एक दिन जतीजी ने अमावस्या के दिन को पूर्णिमा घोषित कर दिया। ठाकुर साहब ने इसे प्रमाणित कर दिखाने के लिए कहा। कहते हैं कि जतीजी ने मदिर म बैठे बैठे ही स्वर्णथाल को आकाश म चाद बनाकर चमका दिया जो बारह कोस के परिक्षेत्र म दिखाई दिया।

एक बार जतीजी ने अपने योग बल से आकाश मार्ग से बीकानेर जा रहे गढ़ के बोरा के आधे भाग को नीचे गिरा दिया जिससे बीकानेर के तपस्वी ने जतीजी पर मूठ छोडी। लेकिन जतीजी ने मूठ को पास पड़े घरहट पर गिरने का आदेश कर दिया। परिणामत घरहट के दो टुकड़े हो गए। कहते हैं, उसका एक टुकड़ा आज भी परिषद् के आगे के चबूतरे पर लगा हुआ है।

देश रक्षा मे शहीद

(१) युसुफ, पप्तान के पद पर सेना मे कार्यरत रहे। इन्होंने देश-सीमा की रक्षा करते हुए अत्यधिक शौर्य प्रदर्शित किया। आज भी इनका नाम गौरव के साथ लिया जाता है।

(२) शहीद मुश्ताकखा श्री मुरेखा के पुत्र थे। इन्होंने दिनांक ८ जुलाई, सन् १९४८ ई को भारतीय सेना मे प्रवेश लिया। आप लस नायक के पद पर काय करते हुए सन् १९६२ के चीनी हमले के समय युद्ध करते हुए दिनांक २१ नवम्बर सन् १९६२ ई को शहीद हो गए। ये ग्यारह गोलिया लगने पर भी अंतिम दम तक शत्रु सेना का मुकाबला करते रहे। इनके बलिदान को आज भी याद किया जाता है।

प० खेतराम शास्त्री

आप नगर के वयोवृद्ध प्रतिष्ठित संस्कृत के विद्वानो मे थे। इनका जन्म विद्वान जोशी परिवार मे चैत्र कृष्णा ९ वि स १९३४ को हुआ। आपके पिताश्री भोजराज जी भी संस्कृत के विद्वान थे। आपका अध्ययन घर से ही प्रारंभ हुआ। आप बचपन से ही विद्यानुरागी थे। अपने स्वाध्याय के बल पर आपने गणित, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन, साहित्य, कर्मकाण्ड, वेद, पुराण, मीमांसा आदि अनेक विषयो मे कुशलता प्राप्त की। जहां कही भी आपको ज्ञान-ज्योति दिखाई दी, वही आप जा पहुचे। चूरू, रामगढ, फतेहपुर के अतिरिक्त आपने ज्ञान के गढ काशी जाकर भी ज्ञान प्राप्त किया। आप स्वतंत्र गति मति के धनी थे। ज्ञान का घमण्ड न रखते हुए भी आपने किसी से दब कर रहना सहन नही किया।

नगर ज्योतिषी प० भोजाराम जी आपके प्रमुख शिष्यो मे थे। आपने अनेक शिष्य तैयार किए जो आज भी अपने-अपने क्षेत्र मे यशकीर्ति अर्जित कर

रहे हैं। आपके इकलौते पुत्र प श्री तुलाराम जी शास्त्री ने भी इनके पास रहकर ही सस्कृत साहित्य एव व्याकरण मे कौशल प्राप्त किया।

ये प खेतसीदास जी के नाम से लोकप्रिय हुए। इनका स्वर्गवास वैशाख कृष्णा ११ स २०१६ वि को हुआ।

प० भोलाराम शर्मा

आप पचाग कर्ता-ज्योतिषी के रूप में दूर-दूर तक प्रसिद्ध हुए। बिसाऊ से पचाग का प्रकाशन 'नगर गौरव' की बात है। आप बिसाऊ ठिकाने के समादृत राज ज्योतिषी थे। आप ज म पत्रिका, वर्षफल आदि बनाने मे भी सिद्ध हस्त थे।

पडितजी का ज म बिसाऊ मे फाल्गुन शुक्ला १२ स १९५० को हुआ। आपने स्वाध्याय करके ही ज्योतिष, गणित, कर्मकाण्ड, शास्त्र आदि मे सफल ज्ञान प्राप्त किया। मुख्यत आपने दानमल जी सुरेका और प खेतसीदास जी के सानिध्य मे रहकर अध्ययन किया।

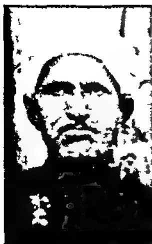
वि स १९८१ मे आपको ठिकाना बिसाऊ की ओर से 'ज्योतिभूषण' की उपाधि मिली।

वैशाख शुक्ला ७ रविवार वि स २०३१ (दिनांक २८ ४ १९७४) को प भोलाराम जी का देहावसान होने पर उनका स्थान उनके सुपुत्र श्री भवानीशकर शर्मा ने ले लिया। वि स २०३६ में आपने दशहरा-दीपावली के सम्ब ध मे जो निर्णय दिया, वह मा य हुआ। भोलाराम जी के पचाग को निकलते अब ७७ वर्ष हो गए हैं।

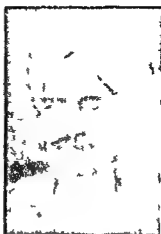
प० दुर्गाप्रसाद शर्मा

आप नगर के वयोवृद्ध शिक्षाविदो मे से एक थे। आपका ज म दिनांक १५ जनवरी, सन् १९०१ को प श्री शिवलाल जी के यहाँ हुआ। आप नगर में अंग्रेजी के प्रथम अध्यापक थे। आप स्काउट मास्टर भी रहे।

सन् १९२४ मे १९३८ तक जेड आर स्कूल मे पडित दुर्गाप्रसाद जी प्रधानाध्यापक पद पर रहे। आपको सन् १९४५ में आर बी मिडिल स्कूल का प्रधानाध्यापक बनाया गया। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वैद्य, कवि, ज्योतिषी के रूप मे भी आप बहुत प्रसिद्ध हुए। आपकी प्रेरणा से सेठ लक्ष्मी नारायण पोद्दार द्वारा सूर्य क्लब की स्थापना की गई।



श्री खेतराम शास्त्री



प० भोनाराम शर्मा



प० दुर्गाप्रसाद शर्मा



डा० मनुभाई शाह



श्री मोतीलाल सिंघानिया



बाबू घनश्यामदास पोद्दार जे पी



श्री पीरामल आय

इस वयोवृद्ध गुरु, अध्यापक विद्वान का स्वर्गवास ता २७ अप्रेल, १९७४ को हुआ। आपने अपने पीछे भरापूरा परिवार छोडा। आपके चारो पुत्र बनवारीलाल, आत्माराम, भवानीशंकर और सुखदेव अपने-अपने क्षेत्र में सफलता से कार्यरत हैं। श्री भवानीशकर शर्मा अध्यापक के सयोजकत्व मे दिनाक १०-५-१९८१ से १८ ५-८१ तक बिसाऊ मे श्री नवकु डी विष्णु महायज्ञ तपसीजी को कुई के स्थान पर सम्प न हुआ।

श्री दुर्गादत्त हारीत

श्री हारीत बिसाऊ नगरपालिका के प्रथम निर्वाचित चयरमैन थे। आजादी की लडाई मे आपने कधे से कधा मिलाकर भाग लिया। नगर म प्रजामण्डल की स्थापना करवाने म आपकी प्रमुख भूमिका रही। हीरालाल जी शास्त्री आपको बहुत मानते थे। लादूराम जोशी से आपका घनिष्ठ सम्पर्क था। जिले के स्वतत्रता सनानी चौ हरलालसिंह चौ नेतराम, ताडकेश्वर, नरोत्तमलाल जोशी आदि आपको सदव सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

नगर विकास की दृष्टि से आपने सदव अच्छा सोचा और किया। नि स्वार्थ सेवा भाव, सदाशयता, धर्य आदि आपके उज्ज्वल व्यक्तित्व के आभूषण थे। त्याग और समर्पण आपसे कभी अलग नही हो सके। आप चाहते तो हीरालाल जी शास्त्री तथा चौ हरलालसिंह से मिलकर सत्ता सचालन में कोई उच्च पद पा सकत थे किन्तु पद की भूख ने कभी आपको परेशान नहीं किया। आप सदा काग्रस के सच्चे और साधारण सिपाही बने रहे।

सेठ दुर्गादत्त रामकुमार जटिया

सेठ दुर्गादत्त रामकुमार जटिया श्री तरुण साहित्य परिषद् के सरक्षक थे। आपका शिक्षा एव साहित्य के प्रति प्रेम अनुकरणीय था। सेठ दुर्गादत्त जटिया राजकीय हायर सकण्डरी स्कूल तथा राजकीय बालिका सकण्डरी स्कूल बिसाऊ के दोनो भव्य भवन आपके शिक्षानुराग को प्रकट कर रहे हैं। इसी प्रकार सास्कृतिक एव सामाजिक सस्थाओ को भी आप सदव सहयोग देते रहते थे। नगर विकास मे आपका प्रशसनीय योगदान रहा। आप दोनो— पिता और पुत्र क्रमश दुर्गादत्त और रामकुमार जटिया— के पार्थिव शरीर आज नही रह परन्तु आपकी दानवीरता सदव अमर रहेगी।

डा० मनुभाई शाह

डा शाह मूलत गुजराती थे। वे दि १९-७-४६ को बिसाऊ मे आए और यही के हो गए। 'बिसाऊवाले डाक्टर' के नाम से आप बाहर प्रसिद्ध हुए।

आपका जन्म तारीख ७ अगस्त, सन् १९२२ को और स्वर्गवास तारीख ७ फरवरी, सन् १९८८ का हुआ, यह आपके जीवन का एक विचित्र संयोग है। इन्होंने लगभग २५ वर्ष की आयु में बम्बई से एम बी बी एस की उपाधि प्राप्त की। सपदंश और क्षय रोग के आप विशेषज्ञ थे। आप एक बहुविध कुशल चिकित्सक थे।

बिसाऊ के गौरव डा शाह बहुमुखी प्रतिभा के धनी, विलक्षण स्मरण शक्ति वाले एव उज्ज्वल चरित्रवान थे। नगर की प्रत्येक विकासात्मक प्रवृत्ति एव गतिविधि मे आप सदव सक्रिय रूप से भाग लेते थे। जयपुर गुजराती समाज के आप आजीवन सदस्य थे। बिसाऊ की अनेक साहित्यिक एव सांस्कृतिक संस्थाओं के आप सम्मानित अध्यक्ष रहे। 'वरदा' से आपको विशेष लगाव रहा।

नगरश्री डा शाह बिसाऊ के हृदयहार थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति की रजत जयन्ती, १९७२ (१५ ८ ७२) पर आपका नागरिक अभिनन्दन किया गया। कर्मनिष्ठ डा शाह को बिसाऊ सदा स्मरण करता रहेगा।

भागीरथसिंह पवार पुत्र श्री महादेवसिंह पवार बिसाऊ ने ३८ वर्ष तक आपकी सेवा की।

श्री गोरधन कसेरा

सीधासादा वेश, सरल स्वभाव, असीम धर्यवान, सहयोगी वृत्ति वाले श्री गोरधन कसेरा अपनी युवावस्था मे कपड़े के अच्छे व्यापारी थे। बाद में दुकान छोड कर बाहर चले गए। समय के अन्तराल से आप श्री पूरणमल जी झुंझामिया के यहा मुनीम रहे। आपके सुयोग्य पुत्र श्री रामावतार कसेरा का कलकत्ता मे व्यापारिक प्रतिष्ठान है।

आपको समाज सेवा मे बड़ा आनन्द आता था। किसी भी सामाजिक कार्य मे आप उपस्थित मिलते थे। धार्मिक भाव आपमे कूट कूट कर भरे हुए थे। बिसाऊ मे होनेवाली रामलीला मे सीता के स्वरूप की आप तन मन से सेवा और देखभाल किया करते थे। आपकी पुण्य भावना को सभी जानते हैं। आप अपनी क्षमता से अधिक दान देने की प्रबल इच्छा रखते थे। खेद है कि आपका स्वर्गवास प्रथम जेठ सुदी ६ बुधवार संवत् २०४५ वि (दिनांक २५-५ ८८) को हो गया।

श्री केशवदेव कानोडिया

दिनांक १३ अप्रेल, सन् १६३२ ई० को जन्मे श्री केशवदेव कानोडिया हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सन् १६४८ में बम्बई चले गए और वहीं सन् १६५४ में आपने बी० ए० की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने व्यापारिक प्रतिष्ठानों से अपना सम्पर्क बढ़ाया। धीरे-धीरे व्यापारिक दक्षता प्राप्त करके आपने बम्बई में अपने बलबूते पर तीन फर्मों की स्थापना की—१ श्री विश्वनाथ एण्ड कम्पनी, २ युनाइटेड क्लॉथ एजेंसी और ३ रवि एण्टरप्राइजेज।

आपका सार्वजनिक जीवन बड़ा व्यस्त एवं गौरवपूर्ण था। आप बम्बई में सन् १६५६ से १६६० तक हिन्दुस्तान मर्चेण्ट्स चेम्बर में पदाधिकारी रहे। इसी अवधि में मारवाड़ी कॉमर्शियल हाईस्कूल की कार्यकारिणी में पदाधिकारी रहे। सन् १६८० से १६८५ तक भारत मर्चेण्ट चेम्बर की कार्यकारिणी सभा में कोषाध्यक्ष रहे तथा सन् १६८६ से अपने अन्त समय तक इसके जनरल सेक्रेटरी के पद पर रहे। पावरलूम व्यवसाय को उसका वाजिब हक दिलवाने के लिए आप सन् १६८५ से अंतिम समय तक भारत सरकार से सतत् प्रयास करते रहे। इस काम में आपको अच्छी सफलता प्राप्त हुई।

आपने दिनांक १०-१२-१६६० ई० को बिसाऊ में 'युवक सभा' की स्थापना की। आप बिसाऊ की सभी सार्वजनिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। उनको आर्थिक सहयोग भी दिया करते थे।

श्री कानोडिया राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ के संस्थापक सदस्यों में थे। इससे प्रकाशित होने वाली 'वरदा' त्रैमासिक पत्रिका को आपने समय-समय पर आर्थिक सहयोग दिया। आपकी सन् १६८६ में 'श्री रामलीला शताब्दी समारोह' की योजना को बड़े उत्साह से पूरा करने की इच्छा थी, जो अंतिम इच्छा बनकर रह गई।

नगर विकास की दृष्टि से आपसे अनेक आशाएं थीं परन्तु ऐसा ईश्वर को स्वीकार नहीं था। वे दिनांक २२.१.८७ को संसार छोड़कर चले गए। सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में सूनापन कर गए।

श्री गिरधारीलाल झुंझुनूवाला

झुंझुनूवाला परिवार बिसाऊ के प्रतिष्ठित श्रेष्ठी परिवारों में है। सेठ श्रीरामजी की दानवीरता ने बड़ी ख्याति अर्जित की। स्व० श्री पुरुषोत्तमलालजी

झुंझुनू वाला बम्बई कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे । बाहर रहकर भी बिसाऊ की प्रत्येक गतिविधि से आप सदा जुड़े रहते थे । नगर विकास मे आपका सदा हाथ रहा । नगर मे हाई स्कूल खुलवाने के श्रेय के आप भी भागीदार थे ।

इसी परिवार के गुणों के धारक श्री गिरधारीलाल झुंझुनू वाला ने भी अपनी सजगता, क्रियाशीलता एव दानवीरता के साथ नगर विकास में भाग लेना प्रारम्भ किया । आप एक कुशल समाज सेवी, व्यवस्थापक और उद्योगपति हैं । बम्बई स्थित अनेक संस्थाओं के आप पदाधिकारी हैं तथा अपनी देख रेख म उनका सचालन करवाते हैं । आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व, अनोखी कार्य क्षमता, गभीर सूझ बूझ, उदारवृत्ति आदि गुण आपकी यश कीर्ति के चार चाँद लगाने मे सफल हुए हैं ।

श्री विश्वम्भर दयाल रूंगटा

आजादी की लडाई म भाग लेने वाले नगर के तत्कालीन उत्साही नवयुवको मे श्री विश्वम्भरदयाल रूंगटा का नाम उल्लेखनीय रहा है । आपने अपनी युवावस्था मे हरिजनो के बालको को पढाना जनजागरण का बिगुल बजाना तथा विदेशी शासन के अत्याचारो का मुकाबला करना आदि अनेक कार्य किए जिनकी स्मृति आज भी उनके सामने रील की भांति घूमती है । आप सदा कर्म मे विश्वास रखते हैं । कोरे उपदेश या भाषण से आप दूर रहते हैं । अपने जमाने के 'नवीनबोध के प्रति आप आस्थावान रहे और उसके अनुरूप परिवर्तन लाने मे आप सजग रहे हैं ।

भानीपुरा नाम स नई बस्ती बसाने वाले और सूरसागर तालाब का निर्माण करवाने वाले सेठ श्री भानीराम जी रूंगटा के परिवार म जन्मे श्री विश्वम्भरदयाल नगर विकास म आज भी रुचि रखते हैं । आपके दादा श्री सूरजमल रूंगटा व पिता श्री गजाधर रूंगटा थे । श्री विश्वम्भर दयाल ने अपनी धर्मशाला का नवीनीकरण करवाकर उसमे आधुनिक सभी सुखसुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं । नगर की साहित्यिक सांस्कृतिक, धार्मिक आदि सभी गतिविधियों में मन खोल कर आप भाग लेते हैं । नगर के प्रति आपका गहरा लगाव है ।

श्री परशुराम पोद्दार

आप श्री दिलसुखराय जी पोद्दार के सुपुत्र हैं । आपके पिताश्री कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता थे लम्बे समय तक आपने श्री हारीत जी के साथ मिलकर नगर विकास का कार्य किया ।



श्री केशरदेव रानोलिया



श्री गिरधारीलाल भुनझुनवाला



श्री विश्वम्भरदयाल रूंगटा



श्री रामगोपाल जटिया



श्री मुरारीलाल निम्मीवाला



श्री गिरधारीलाल दाधीच



श्री भगवतीप्रसाद प्रजापत



श्री इकराम हुसन

श्री परशुराम पोद्दार सरल हृदयी, उदारमना तथा नगर विकास मे आर्थिक योग देने वाले सेठ है। आप श्री तरुण साहित्य परिषद् के संरक्षक हैं। नगर की साहित्यिक उन्नति मे आपकी विशेष रुचि रहती है। आप सदा पोद्दार परिवार की उज्ज्वल परम्पराओ को बनाए रखने का ध्यान रखते है।

श्री इब्राहिम खा

श्री इब्राहिम खा हाजी लादूखा के सुपुत्र हैं। आप सी आई डी के नाम से विशेष लोकप्रिय हैं क्योकि बम्बई के सी आई डी विभाग म आप कुशलता से सेवाकर चुके हैं। आप एक सुलझे हुए विचारो वाले, निर्लेप भाव से समाज-सेवा करने वाले तथा नगर विकास मे रुचि रखने वाले कुशल नागरिक हैं। आप तरुण साहित्य परिषद् के सरक्षक हैं। इसस आपका साहित्य के प्रति लगाव प्रकट होता है। नगर की सभी गतिविधियो म आप आगे रहकर काय करने की भावना रखते है।

वर्तमान मे विशिष्ट समाज सेवी—

श्री बिहारीलाल शर्मा श्री हारीत जी की प्रेरणा से राजनीति म आए। आप बिसाऊ नगरपालिका के चेयरमैन रहे। आप एक कुशल समाज सेवक तथा सफल जन प्रतिनिधि हैं।

श्री शिवकुमार पुजारी वर्षों से जनसेवा मे रत हैं। आप इसके लिए समर्पित भाव रखते हैं तथा नगर विकास काय मे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। जन प्रतिनिधि सस्थाओ के आप पदाधिकारी हैं।

श्री गोविन्दप्रसाद दाधीच जनसेवा के लिए एक सफल कायकर्ता हैं। आपकी दृष्टि में छोटे बडे काय का कोई भेद नही है। आप प्रत्येक काय के लिए सक्रिय भाव से तयार मिलते हैं। जन सेवा करने म आपको आनन्द आता है।

श्री रामगोपाल शर्मा (टाईवाला) एक उत्साही जनसेवी हैं। जनसेवा से आपको विशेष लगाव है। नगर विकास के लिए आप आवश्यकता पड़ने पर तैयार मिलते हैं।

श्री ओमप्रकाश पोद्दार समाज सेवा मे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आप सक्रिय राजनीति से सवथा दूर रह कर भी जनसेवा की दृष्टि से एक सफल और समर्पित व्यक्तित्व रखते हैं।

इनके अतिरिक्त श्री ताराचन्द झुंझुनू वाला का नाम सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप म उल्लेखनीय है। काय की व्यवस्था एव सम्पादन मे आप बडे दक्ष हैं। श्री मातूराम गुसाई ने नगरपालिका मे वाड मेम्बर रहते हुए समाज सेवा की है। श्री गोमराज जटिया (रामवल्लभ) न जन पुस्तकालय, गऊशाला तथा अ य सस्थाओ के विकास मे प्रशसनीय काय किए। श्री श्याम सु दर पोद्दार पुत्र श्री मदनलाल जो पोद्दार नगर की कई सामाजिक, शक्षणिक तथा धार्मिक सस्थाओ की देखभाल कर रह हैं। पोद्दार परिवार की प्रतिष्ठा के अनुकूल आपके काय एव सवाए प्रशसनीय हैं। श्री किसन पारीक कापरटिव सोसाइटी बिसाऊ के अध्यक्ष हैं तथा आप समाज सेवा के लिए सदव तयार रहते हैं। सव श्री रामावतार जोशी, विनोद मिश्र, शुभकरण जांगिड, मुरारी लाल वगडिया, मावरमल पुजारी आदि भी समाज सेवा की दृष्टि से अपनी विशिष्टता रखत है।

नारी-भाव के लोग (चाल ढाल व बोली मे)

(१) भूरा दरोगा (२) भूरा मणियार (३) साहन दसू दी (४) मुलताना मीणा

विनोदी (मजाकिया) प्रकृति के लोग

(१) शुभा नाई (२) श्रीलाल डीडवाणिया (३) सत्यनारायण बावडी (४) मालजी दायमा (५) भगवाना खाती

युवा प्रतिभा

श्री विश्वनाथ आय

यह गव के साथ कहा जाता है कि श्री विश्वनाथ आय नगर के प्रथम कुशल इजीनियर हैं। आपक पिता श्री पीरामल आय की प्रेरणा आपको सदव अग्रसर करती रही है। इस समय आप राजस्थान केनाल पर कायरत हैं। आप साहित्य मे गहरी रुचि रखत ह। अपनी ज मभूमि के प्रति आपका गहरा लगाव है। 'तरुण साहित्य परिषद्' के आप सस्थापक सरक्षको म हैं।

श्री गोविन्दप्रसाद पोद्दार

श्री पोद्दार बिसाऊ के एक कुशल इजीनियर हैं। साहित्य से आपका गहरा लगाव होने क कारण आप तरुण साहित्य परिषद् के सरक्षक बने और सस्था को आपने कुशल मागदशन भी दिया। पोद्दार परिवार का नगर विकास मे बहुत योग रहा है। इसी प्रकार आपका सहयोग भी नगर की गतिविधियो में देखा जाता है।

श्री रमेशचन्द्र शर्मा

श्री शर्मा के पिता श्री नन्दकुमार जी शर्मा (भाटीवाडा) अपने जीवन मे कठोर परिश्रमी रहे हैं और आज भी अपने काय म पूरी सक्रियता रखते हैं। इन्ही के गुणो को धारण किए हुए श्री रमेशचन्द्र ने अपने काय क्षेत्र म कदम रखा। आप 'विजय दीप प्रोसेसस प्रा लि' भीलवाडा के चेयरमैन तथा विजय दीप शिल्क मिल्स, भीलवाडा और 'बिल्ड मेको', जयपुर के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। फारमस एण्ड गाडनस इ टरनेशनल, जयपुर प्रतिष्ठान का भी आप सचालन करते हैं। श्री शर्मा ने अपने बलबूते पर जीवनसघष करते हुए आर्थिक सफलता प्राप्त की।

श्री शर्मा का जन्म बिसाऊ म शिवरात्रि वि स १९९४ (दि २८ २-१९३८) को हुआ। आप बडे उदार भाव स आर्थिक सहयोग देने वाले हैं। आपने पिछले दिना कलेक्टर, झुझुनू की अध्यक्षता मे अकालराहत के अ तगत आर्थिक सहयोग दिया। आप तरुण साहित्य परिषद् के सरक्षक हैं तथा आवश्यकता पडने पर इसको आर्थिक सहयोग देते रहते हैं। आप 'राजस्थान साहित्य समिति' बिसाऊ की कायकारिणी के सदस्य तथा खाडल विप्र परिषद्, बिसाऊ के सरक्षक है। आपने नत्र चिकित्सालय जयतारण, केलगिरि आई अस्पताल जयपुर को भरपूर आर्थिक सहयोग दिया। आप 'खांडल विप्र सस्कृत महाविद्यालय, जयपुर के चेयरमैन हैं।

नगर की अनक सस्थाओ को आप आर्थिक सहयाग देते रहते हैं। नगर की उ नति मे आपकी विशेष रुचि है। एसी युवा प्रतिभा से सभी को विशेष आशाए हैं।

श्री मुरारिलाल बिरमीवाला

आप श्री साहनलाल जी के सुपत्र हैं। आपकी शिक्षा दीक्षा अधिकाश बाहर हुई। आप बचपन से ही प्रतिभाशाली नवयुवक रहे हैं। अपने अध्ययन मे सदा आगे रहने वाले श्री बिरमीवाला नगर के प्रथम सी ए हैं। नगर के लिए यह गौरव की बात है। एसे उदीयमान उत्साही नवयुवक की प्रगति से सब प्रस न हैं। आपसे अनेक आशाए हैं।

श्री गिरधारीलाल दाधीच

आप श्री मदनलाल दाधीच के सुपुत्र हैं। वतमान में आप बैंक आफ बडौदा की बीदासर शाखा मे मैनेजर के पद पर कायरत हैं। आप बिसाऊ के

बैंक मैनेजर के पद पर प्रथम युवक हैं। आपने अपनी प्रतिभा के बल पर इस पद को प्राप्त किया। नगर विकास मे आप विशेष रुचि रखते हैं।

श्री भगवतीप्रसाद प्रजापत

श्री प्रजापत नगर की उदीयमान प्रतिभाओ मे से हैं। आपका जन्म २७ अगस्त, १९७५ को अपने पिता श्री बजरंगलाल के घर हुआ। आप आर टी एस परीक्षा उत्तीर्ण कर दिनांक २२ अप्रेल, १९८१ ई को तहसीलदार बने। वर्तमान मे आप डीडवाना मे पदस्थापित हैं। इस पद पर नियुक्ति पाने वाले आप नगर के प्रथम नवयुवक हैं। आपसे अनेक आशाए हैं।

श्री ओंकारमल मीणा

आप सब प्रथम राजस्थान राज्य शिक्षा सेवा मे लेक्चरार के पद पर नियुक्त होकर नगर के प्रथम लेक्चरार के रूप मे सामने आए। आपके पिता का नाम श्री प्रहलादराय मीणा है आप प्रगतिशील प्रतिभा के धनी हैं। वर्तमान मे आप केन्द्र सरकार की शिक्षा सेवा मे एक उच्चाधिकारी के पद पर कार्यरत है। इस उदीयमान प्रतिभा से अनेक आशाए हैं।

श्री ज्ञानचन्द्र शर्मा

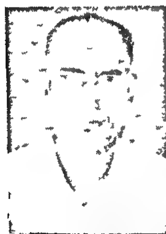
श्री बालमुकुन्द दायमा के सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द्र दायमा 'तरुण साहित्य परिषद् के युवा संरक्षक है। आपने अपनी प्रतिभा के बल पर युवावस्था मे ही आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करली आप अपने व्यवसाय के प्रति बडे सजग एव निष्ठावान हैं। ऐसी युवा प्रतिभा से अनेक अपेक्षाए हैं।

श्री इकराम हुसैन

श्री इकराम हुसैन आत्मज श्री नूरमोहम्मद खां का जन्म दिनांक २०-१०-१९६५ को बिसाऊ मे हुआ। इस उदीयमान विद्यार्थी ने बी एस सी तक सभी परीक्षाए प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की। आपने सन् १९८७ मे पी एम टी परीक्षा उत्तीर्ण कर मेडिकल मे प्रवेश लिया। सम्प्रति आप बीकानेर में मेडिकल कॉलेज मे अध्ययनरत हैं। मेडिकल मे जाने वाले आप नगर के प्रथम युवक हैं। आपसे अनेक उज्ज्वल आशाए हैं।



श्री परशुराम पोदार
परिषद संरक्षक



श्री इब्राहिम खा
हाजी लादू खा
कायमखानी
परिषद संरक्षक



श्री विश्वनाथ आर्य
परिषद्-संरक्षक



श्री गोविन्दप्रसाद पोदार
संरक्षक



श्री रमेशचन्द्र शर्मा
संरक्षक



श्री नानचन्द शर्मा
संरक्षक



श्री मदनलाल दाधीच
सदस्य



श्री परमानन्द जटिया
परिषद् अध्यक्ष



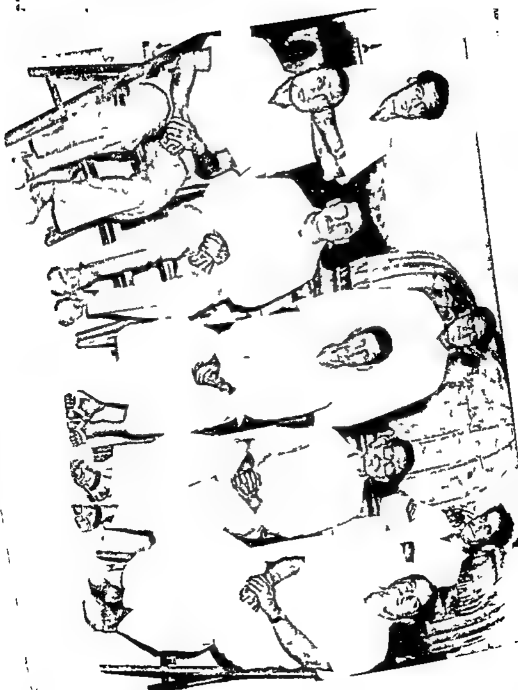
श्री रामजीलाल कल्याणी
परिषद् मन्त्री

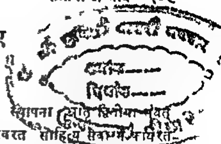


श्री अलादीन खां
परिषद् हिसाब परीक्षक



श्री सन्तोषकुमार पोद्दार
परिषद् उपमन्त्री





विशिष्ट संस्थाएं

राजस्थान साहित्य समिति

राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ की स्थापना आश्विन संवत् २०१४ को हुई थी। इस तिथि से यह संस्था अनवरत साहित्य सेवा में संलग्न है। जनवरी सन् १९५८ से 'वरदा' त्रैमासिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन हो रहा है, जो सभी के लिए एक गौरव की बात है। इसने अपना रजत जयंती समारोह स्वतन्त्रता दिवस, सन् १९८२ को धूमधाम से मनाया। इस संस्था ने राजस्थान के पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, साहित्य, कला आदि की खोज-शोध करके तथा अर्वाचीन साहित्य की श्रीवृद्धि करके अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत किया है। इस संस्था के संस्थापकों में सर्व श्री स्व प श्रीलाल जी मिश्र, डा मनोहर जी शर्मा, प तुनाराम जी जोशी एव डा उदयवीर जी शर्मा का स्तुत्य प्रयास रहा है। वर्तमान में इसकी कार्यकारिणी सभा इस प्रकार है— सर्व श्री निरंजन जोशी (सभापति), डॉ मनोहर शर्मा (उपसभापति), प तुनाराम जोशी (मंत्री), डा उदयवीर शर्मा (उपमंत्री), पीरामल एण्ड सस (कोषाध्यक्ष) एव सदस्य रमेशचन्द्र शर्मा, रामावतार कानोडिया, गोविन्दप्रसाद दाधीच, भोलाराम बजाज, अमोलकचन्द जांगिड और गौरीशंकर शर्मा हैं।

इस संस्था के द्वारा अब तक 'वरदा' के २५ विशेषांक, बातां री भूमको (तीन भाग), ऐतिहासिक शोधयात्रा (तीन), चार आसनों की स्थापना कर बास अभिभाषण, राजस्थान सुलभ ग्रंथमाला के अन्तर्गत ५० पुस्तकें, लोक साहित्य का पुस्तक रूप में प्रकाशन तथा अन्य अनेक महत्वपूर्ण प्रकाशन कराए जा चुके हैं जिनकी प्रशंसा भारत प्रसिद्ध विद्वानों ने मुक्तकंठ से की है।

तरुण साहित्य परिषद

श्री तरुण साहित्य परिषद्, बिसाऊ की स्थापना दिनांक ३० मई सन् १९७६ को हुई। इसके मुख्य उद्देश्य अप्रकाशित साहित्य का संग्रह व प्रकाशन एव अर्वाचीन साहित्य का प्रचार, प्रसार व प्रकाशन करना रहा है। इसके साथ गणमान्य साहित्यकारों का सम्मान एव उनके ग्रंथों का सस्ता, सुलभ प्रकाशन करवाना इसका उद्देश्य रहा है। अपने उद्देश्यों के अनुरूप दिनांक ९–६–१९७८ को डॉ मनोहर शर्मा अभिनन्दन समारोह का भव्य आयोजन किया गया तथा उनको अभिनन्दन ग्रंथ व ११००) रु की राशि भेंट स्वरूप दी गई। गुरु सम्मान की परम्परा में यह एक अभूतपूर्व समारोह सिद्ध हुआ तथा आगे के लिए एक

प्रेरणास्रोत के रूप में प्रकट हुआ । इस संस्था के संस्थापकों में सर्व श्री परमानन्द जटिया, विश्वनाथ बिरमीवाला, रामजीलाल कल्याणी, संतोषकुमार पोद्दार, डॉ उदयवीर शर्मा, अमोलकचन्द जांगिड, नेमीचन्द जेजानी, अलादीन खां, विश्वम्भरलाल अग्रवाल, ताराचन्द शर्मा, देवकीनन्दन आय आदि का प्रयास उल्लेखनीय रहा है। इस संस्था के प्रथम संरक्षक श्री रामावतार कसेरा का सहयोग सदव प्रशसनीय रहा है ।

नगरपालिका

ठिकाना बिसाऊ के कायकाल में दिनाक १–९–१९४५ को यहां नगरपालिका की स्थापना हुई । ठिकाना के निर्देशन मे मनोनीत कार्यकर्ताओं द्वारा इसका सचालन होता रहा जिसमे श्री चेतराम खेमका, दुर्गाप्रसाद हारीत, डा केशवलाल शुक्ला, दुर्गाप्रसाद मास्टर, पीरामल आय, तुलाराम जोशी, जीवणराम सिगतिया आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । इसके पश्चात् सन् १९५७ ई से विधिवत निर्वाचित सदस्यो द्वारा इसका सचालन अद्यावधि होता आ रहा है जिनमे अग्राकित नाम अपना विशेष महत्त्व रखते हैं— सर्व श्री दुर्गादत्त हारीत (चेयरमैन), डा केशवलाल शुक्ला, रामनिवास कल्याणी, वासुदेव बगडिया दुर्गादत्त पोद्दार, बालूराम महनसरिया, नन्दू खां, तुलाराम जोशी (चेयरमैन), मालीराम दायमा, नन्दलाल महनसरिया, बालूराम मुनीम, दीनेखां राजाजी, बालूराम नायक, अली अहमद जा, छीमादेवी कापडी (मनोनीत), बाबूलाल पुरोहित (चेयरमैन), अब्दुल जब्बार, शिवकुमार पुजारी, यासीन सब्जी फरोस, कैलाश नाई, हरबीराम कुम्हार, नानूखां, कृष्णादेवी और मणीदेवी (मनोनीत), बिहारीलाल शर्मा (चेयरमैन), अस्तअलीखां, सुखदेव जोशी, हनुमान पोशाकी गोरधन नायक अब्दुल गनी व्योपारी, सूबालाल मास्टर, गोपीराम ठेकेदार, वासुदेव पुजारी (चेयरमैन), रमजान तेली, इमामुद्दीन व्योपारी, जयनारायण जोशी, डूगरमल खाती, बशीधर क्याल, बलजी भाट, बशीरखां, शुभकरण जांगिड, मोहनलाल मेघवाळ, अब्दुल करीम (चेयरमैन) ग्यारसीलाल, गुलाम हुसेन, इब्राहिमखाँ, विश्वनाथ मिश्र, रामगोपाल टाईवाला, असगर अली, हनुमानप्रसाद दायमा, विनोदकुमार मिश्र, भगवान सहाय माछलपुरिया, जगदेवाराम मीणा इत्यादि ।

प्रमुख-प्रमुख प्रथम व्यक्ति

१ प्रथम मैट्रिक— श्री बासुदेव मन्त्री
२ प्रथम पोस्ट मास्टर— श्री नवीबक्स खां
३ वकील— श्री जीवनलाल सिंगतिया
४ वैद्य— श्री मुरारीलाल मिश्र
५ सी ए — श्री मुरारीलाल बिरमीवाला
६ इजीनियर— श्री विश्वनाथ आय
७ बैंक मैनेजर — श्री गिरधारीलाल दाधीच
८ तहसीलदार— श्री भगवतीप्रसाद प्रजापत
९ सम्पादक— श्री रतनलाल जोशी
१० पुस्तक लेखक — (तार दपण पुस्तक) श्री पूरणमल झुझुनूवाला
(सन् १९३८ ई मे बस चलाई)
११ लेक्चरर— श्री ओंकारमल मीणा
१२ मिल डायरेक्टर— श्री रामकुमार पोद्दार
१३ प्रथम प्रोफेसर— डा० मनोहर शर्मा
१४ प्रथम प्रधानाध्यापक—
१ सहायता प्राप्त विद्यालय— श्री श्रीलाल जी मिश्र
२ राजकीय हाई स्कूल— श्री गिरीशच द्र शर्मा
१५ पत्रकार— श्री मनवर अमी
१६ आय कर विभाग म प्रथम वरिष्ठ लिपिक— श्री श्रीराम शर्मा
१७ पाक्षिक पत्र के सम्पादक— श्री राधेश्याम सिंगतिया
१८ त्रमासिक शोध पत्रिका क सम्पादक— डा० मनोहर शर्मा
१९ प्रथम नाटककार— श्री गजान द पोडीवाला
२० प्रथम गजल लेखक— श्री सूरजमल जी गुरु
२१ प्रथम ख्याल लेखक— श्री सदाराम जी गुरु
२२ प्रथम पाठय पुस्तक लेखक— डा० उदयवीर शर्मा
(अजमेर बोर्ड की मकण्डरी क परीक्षा के लिए)
२३ प्रथम क्लारनेट वादक— श्री मोहनलाल आय
२४ आयुर्वेद शिक्षा में प्रथम लेक्चरर— श्री ताराचन्द पुजारी
२५ रेलवे वकशाप मे असिस्टेण्ट ए जी — श्री पवनकुमार पुरोहित
२६ स्टेशन मास्टर— श्री सुखदेव शर्मा
२७ सी आई डी विभाग बम्बई— श्री इब्राहिम खां

२८ नगरपालिका के चयरमैन— श्री दुर्गादत्त हारीत

२६ ठिकाना बिसाऊ के वयोवृद्ध अधिकारी कर्मचारी— प छिमनलाल जी शर्मा (राजकीय सेवा मे T R A सेवा निवृत्त)

३० प्रथम जन प्रिय साधु— जय सियाराम

३१ राजकीय सेवा मे प्रथम वैद्य— श्री भगवतीप्रसाद शर्मा

नगर की मुख्य-मुख्य सस्थाए

नगर की विशिष्ट एव सक्रिय सस्थाओ का उल्लेख सम्बधित अध्यायों म किया जा चुका है। इस अध्याय म शेष बची सस्थाओ का सक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है—

(१) रामलीला कमेटी

उपलब्ध प्रमाणो के आधार पर वि स १६३६ स रामलीला कमेटी सुव्यवस्थित ढग से अपना काय करती आरही है। इसके द्वारा प्रति वष आसोज सुदी मे पन्द्रह दिनो तक रामलीला का आयोजन दिन मे किया जाता है। पिछले वर्षों मे अनेक बार प० रामदत्त जी शर्मा (पुजारी) इसके अध्यक्ष रहे हैं तथा वत्तमान मे आप ही इसके अध्यक्ष हैं। आप पिछले ५०-६० वर्षों से यह सेवा काय करते आरहे हैं।

(२) बाजार मडल, बिसाऊ

चन कृष्णा ८ म १६६६ वि तदनुसार दिनाक २६ ३ ४३ को मर्चेण्ट कमेटी बिसाऊ की स्थापना हुई। इसके प्रथम अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर पोद्दार एव प्रथम मत्री श्री बिहारीलाल कानोडिया थे। इस कमेटी के अतिम मत्री श्री रामजीलाल कल्याणी रह। दिनाक ६-१-६८ से इसका नाम बदलकर व्यापार मडल कर दिया गया। इसके अध्यक्ष क्रमश श्री बासुदेव बगडिया, श्री सत्यनारायण विरमीवाला, श्री पीरामल आय हुए तथा मत्री श्री गोविन्दप्रसाद दाधीच, श्री रामजीलाल कल्याणी हुए। इस सस्था के तत्वावधान मे बाजार मे एक प्याऊ का सचालन होता है। यह सस्था नियमानुसार व्यापारिक कार्यों पर नियत्रण रखती है और नगर क सामाजिक कार्यों म भी इसकी अपनी प्रमुख भूमिका रहती है।

(३) मानस-प्रचार समिति

मानस प्रचार समिति नगर मे रामचरित मानस का प्रचार कर रही है। माग करन पर इसके द्वारा तीन दिनो का अखण्ड रामायण पठन इच्छुक

व्यक्ति के घर पर किया जाता है। रामायण के प्रमुख वाचकों के नाम नीचे दिए जा रहे हैं, जो वाचन में अपनी विशिष्ट छाप रखते हैं—

सर्वश्री केदारमल दायमा, सीताराम माटोलिया, भवानीशंकर मास्टर, जुगलकिशोर ढढारिया, वैद्य पूरणमल पाबूसरिया, गोविन्दप्रसाद दायमा, पूरणमल पारीक पनवाड़ी, सावित्री देवी पत्नी श्री मिनकाराम माटोलिया, रामलाल मास्टर, ग्रामप्रकाश पुजारी, गुणचन्द दायमा गुरु, रामजीलाल बरयाली और प्रकाशचन्द्र जोशी।

(४) बिसाऊ छात्र संघ

बिसाऊ में कॉलेज के छात्रों का एक संगठन 'बिसाऊ छात्र-संघ' के नाम से कार्यरत है। मेधावी छात्र अभिनन्दन समारोह इस संस्था की मुख्य गतिविधि है। इसके अलावा अनेक प्रतियोगिताएं व रंगारंग कार्यक्रम इसके द्वारा आयोजित होते रहते हैं। समारोह में कॉलेज के प्राचार्य, प्रोफेसर्स एवं नगर के बुद्धिजीवी भाग लेते हैं। कार्यक्रम बड़ा ही सुन्दर एवं भव्य होता है। छात्र शक्ति को रचनात्मक मोड़ देने में इस संगठन की मुख्य भूमिका है।

(५) रामलीला शताब्दी समारोह समिति

इस कमेटी की स्थापना श्री उमाशंकर बुनासिया के प्रयत्नों से श्री केशवदेव कानोड़िया के द्वारा बिसाऊ में सन् १९८६ में हुई। डा० मनोहर शर्मा एवं श्री अमोलक चंद जांगिड़ क्रमशः इसके अध्यक्ष एवं सचिव बनाए गए। यह समिति कार्यरत है।

(६) लायन्स क्लब, बिसाऊ

नगर में लायन्स क्लब की शाखा की स्थापना सितम्बर १९८७ में हुई। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है। इसके द्वारा सामाजिक सेवा कार्य किए जाते हैं। वर्तमान में इसके अध्यक्ष डा० हरीशचन्द्र लम्बोरिया तथा मंत्री श्री महावीरप्रसाद शर्मा हैं।

आगे प्रमुख प्राचीन व वर्तमान संस्थाओं की सूची दी जा रही है—

(अ) सार्वजनिक संस्थाएं—

१ बलवीर क्लब २ सूर्य क्लब ३ जयहिन्द क्लब ४ मित्र मण्डल ५ गणेश टाकीज ६ युवक सभा ७ पोद्दार डिस्पेंसरी (नारायण पोद्दार) ८ धन्वंतरी दातव्य औषधालय ९ पोकरमलजी का औषधालय १० उदय आयुर्वेद औषधालय

११ कांग्रेस कमेटी १२ श्री सनातनधर्म महावीर दल (स २००१) १३ महावीर व्यायाम शाला (सन् १६४८) १४ गौड ब्राह्मण भण्डार १५ खण्डेलवाल भण्डार १६ दायमा भण्डार १७ सटीक भण्डार १८ बेजारा भण्डार १६ माली भण्डार २० जांगिड समाज विकास समिति (२६-१-१६८०) २१ नगर विकास मण्डल व परिषद् २२ रागोमती भण्डार २३ कायमखानी भण्डार २४ नाई समाज भण्डार २५ नायक समाज भण्डार २६ तेली समाज भण्डार २७ अग्रवाल समाज भण्डार २८ गऊशाला भण्डार २६ कानोडिया भण्डार ३० व्योपारियान समाज भण्डार ३१ मीणा समाज भण्डार ३२ श्री पोद्दार बालाजी भण्डार आदि आदि ।

(आ) सरकारी संस्थाए—

१ जलदाय योजना २ टेलीफोन 3 विद्युत ४ कृषी उपज मण्डी ५ भेड ऊन विभाग ६ पशु चिकित्सालय ७ पुलिस चौकी ८ पंजाब बैंक ६ बड़ौदा बैंक १० सहकारी बैंक ११ पोस्ट आफिस मुख्य १२ पोस्ट आफिस बाजार १३ रेलवे १४ सहकारी वितरण विभाग १५ रोडवेज आदि आदि ।

प्रमुख स्थानों की सूची

(१) धर्मशालाए व अतिथि भवन

१ बोयतरामजी सिंघानिया की धर्मशाला २ विवाह भवन सेठ सूरजमल चिमनराम पोद्दार ३ सिंघानिया भवन सेठ जुगीलाल कमलापत सिंघानिया ४ लक्ष्मी भवन ५ शिवदयालजी सिंघानिया की धर्मशाला ६ टीबड़ेवालों की धर्मशाला ७ झुंझुनूवालों की धर्मशाला ८ घडसीराम रूंगटों की धर्मशाला ६ पोद्दारों की धर्मशाला १० सूरजमल चिमनराम पोद्दार की धर्मशाला ११ रामनारायण बावरी की धर्मशाला १२ मुसद्दी भवन १३ जमनाधरजी पोद्दार की धर्मशाला १४ महासरिया भवन १५ झुंझुनूवाला भवन १६ रतनी बाई घनश्यामदास पोद्दार अतिथि भवन आदि आदि ।

(२) जोहड़ जोहड़ी और तालाब

१ धवलपालिया २ सूरसागर ३ रामाणो ४ दत्ताणो (पुरानी चौकी वाला) ५ मानाणो ६ मुरयाणो ७ मोज्याणो ८ पथराणो ६ आटहाळो १० जोहड़ी (पहाड़सर) ११ लादाणो आदि आदि ।

(३) कुण्ड

१ कुंजलाल कन्हैयालाल मित्री की कुण्ड २ फतेहपुरियों की कुण्ड ३ केसाणो की कुण्ड ४ कानोडिया की कुण्ड ५ कामळिया की कुण्ड ६ सराफो की कुण्ड ७ सफड़ा की कुण्ड ८ टीलेवाली कुण्ड ९ सूरका की कुण्ड १० कठावटिया की कुण्ड ११ पनजी जोशी की कुण्ड १२ जालाणा की कुण्ड १३ टीबडेवालो की कुण्ड १४ पोद्दारो की कुण्ड इत्यादि ।

(४) छतरी

१ सरकारी २ सिगतिया ३ टीबडेवाला ४ पोद्दार ५ उत्तर-दरवाजे बाहर पोद्दारो की छतरी ६ जतीजी की छतरी ७ मेमको की ८ समस्त पोद्दारो की इत्यादि ।

(५) मन्दिर

१ झुंझनूवाला का २ शिवालय (पंचमुखी महादेव) ३ गंगाजी का मंदिर ४ हनुमानजी का मंदिर जोशियों का मोहल्ला ५ महादेवजी का मंदिर ६ शिखर मंदिर ७ प्राचीन शिवालय पंचमुखी महादेव (श्री चिमनलालजी भंवरलालजी बावलिया के मकान से सटकर जिसमे वर्तमान मे रामाश्रम की शाखा भी चलती है।) ८ हनुमानजी का मंदिर टीलेवाला ९ गट का मंदिर १० श्यामजी का मन्दिर ११ नाइयो का मंदिर इत्यादि ।

(६) बगीचा

१ सेठ श्रीराम झुंझनूवाला का बाग २ सेठ सूरजमल चिमनराम पोद्दार का बाग ३ सेठ दुर्गादत्त रामकुमार जटिया का बाग ४ सेठ रामगोपाल जटिया का बाग स्टेशन पर आदि ।

(७) बगीची

१ गूदीवाला की २ मंत्रियो की ३ केसानो की ४ सरावगियो की ५ फतहपुरियो की ६ ब्रह्मचारीजी की ७ तपसीजी की ८ जमनाधरजी की ९ टीबडेवाला की १० गोविन्दरामजी की ११ महनसरिया की १२ जालाणो की १३ नाथजी की १४ सिंघाणियो की १५ म्हालीरामजी की १६ मिश्रा की १७ मटरमल की १८ मरामल मिश्र की १९ श्रीलाल मिश्र की २० सिगतियो की २१ जयदेवजी मिश्र की २२ रूंगटो की २३ मूरेको की २४ पोकरमलजी की २५ महादेव कालूरामजी जोशी की आदि आदि ।

(८) कूप

१ सरकारी २ भूरामजी का ३ श्रीराम जी का ४ गुसांई जी का ५ नाथ जी का ६ गमाणो का ७ श्रीराम जी का टांई के मार्ग पर ८ मिधाणियों का ६ सिणतिया का १० नायका का ११ म्हालीराम जी का १२ जमनाधर जी का १३ गोविन्दराम जी का १४ टीबड़ेवालो का १५ नन्दराम जी का १६ बशीधर पोद्दार का १७ तपसीजी का १८ ब्योपारियों का १६ फतेहपुरियों का २० रूपदास जी का २१ गूदीवालों का २२ जतीजी का २३ शीतला का २४ पोकरमल जी का २५ रामप्रताप जी का २६ चौकी का २७ डेरोवाला २८ सूरजमल पोद्दार का २६ बाजोरियों का ३० घड़सीराम जी रूंगटा का ३१ मदनानन्द जी का टीले पर ३२ खेमकों का ३३ रूंगटों की धर्मशाला के पास ३४ कायमखानी ३५ कायमखानी ३६ भौतिका ३७ जगतपुरा ३८ पोद्दारों का ३६ जटिया ४० जटिया स्टेशन पर ४१ बुवालिया ४२ पचायती मंदिर का ४३ गऊशाला का ४४ गऊशाला के बेड़ा में आदि आदि।

(६) कुई

१ गोपीनाथ जी की २ बागला ३ नृसिंह ४ नाथूराम जी ५ नीमड़ी ६ सीताराम जी की ७ नानू स्वामी ८ रूंगटा सूरसागर ६ कन्हैयालाल रामनारायण मिश्री आदि।

(१०) बीड़

१ सूरसागर की बीड़ २ धवळपाळिया की बीड़

नगर मे आयोजित मुख्य - मुख्य मेले

१ शीतलाष्टमी (चैत बदी ८)
२ गणगोर (चैत सुदी ३)
३ नन्दपुरा बाबाजी (चैत सुदी १५)
४ तीज (श्रावण सुदी ३)
५ गूगा जी (भादवा बदी ६)
६ राणीसती (भादवा बदी अमावस्या ३०)
७ गोपाष्टमी (कार्तिक सुदी ८)

नगर के मुख्य - मुख्य मार्ग व चौक

१ सेठ घनश्यामदास पोद्दार पथ (उत्तर)
२ महात्मा गांधी पथ (दक्षिण)
३ नेहरु पथ (पश्चिम)
४ श्रीराम रामनिरञ्जन झुंझुनूवाला पथ (पूर्व)
५ दुर्गादत्त हारीत पथ (स्टेशन जानेवाला)
६ बाबूलाल पुरोहित पथ (बस स्टेण्ड से मुख्य सड़क—
चूरू झुंझुनू तक जाने वाला)
७ गांधी चौक (बीच बाजार— नगरपालिका के निकट)

बिसाऊ स्टेशन से गुजरनेवाली गाडियो का विवरण

गाडी न०	समय	कहा से	कहा तक
२१८ डा०	०–४३½	बीकानेर—	सवाईमाधोपुर
१२ डा०	३–३७½	श्री गगानगर—	जयपुर
२३६ डा०	८–११	चूरू—	सीकर
२३४ डा०	१५–४७½	चूरू—	जयपुर
११ अप	२३–५०	जयपुर—	श्री गगानगर
२३७ अप	१–५६	सवाईमाधोपुर—	बीकानेर
२३३ अप	११–१२	जयपुर—	चूरू
२३५ अप	१७–४१	सीकर—	चूरू



परिशिष्ट

'गजल सौदे की' (स्व० सूरजमल गुरु)

सौदो घनो बिसाहु माय । सौदा करने सब कोई जाय ।।
सौदा कर छतीसो जात । खोल कहू मैं उनकी बात ।।
नेतसीदास बड़ये रंगबाज । बो सौद मे कर आवाज ।।
भोत कर बा खाई लगाई । जद बरखा की हो सरचाई ।।
मुलतानचद चूरू से आयो । जिसके सागै ग्यारी आयो ।।
बो सौद की कर पिछाण । हवा पून से पटज्या जाण ।।
बृजलाल सौद को मौड । भट आवै गुदडी मे दौड ।।
रामप्रताप को सौदा न्यारा । बो गुदडी को करै इजारो ।।
सौदागर हरदत्त पोद्दार । कनीराम जी खूब हुश्यार ।।
श्रीराम लगाईवाल । बो सौद मे खोल माल ।।
मटरमल है खाईवाल । चाह मेह बरसा परनाल ।।
बनराज और घोडीवाल । सौद मे रहता मतवाल ।।
मह सौदागर बाका छल । और लोग सब बाकी गल ।।

गजल बिसाऊ की

सदा रखो सेवक पर महर । सुबस बसो बिसाऊ महर ।।
सब नगरी की मुखिया गीत । शेर प्रजा की रहती प्रीत ।।
श्री बिसनसिंघ जी तप हजूर । नितनित मुख पर बरसे नूर ।।
दुशमन सबी दफ होज्याव । ज्वाला सारी पेस चढाव ।।
किल्लो सज सजा गुन यारी । चन्द्र महल की सोभा न्यारी ।।
मतवु ों किल्लो है बको । बरी निसनि मान सको ।।
जुहार महल की सज अटारी । जस फल रहो गुल क्यारी ।।
दिवानखाने की सुणज्यो बहार । वक्त तीसर हो दरबार ।।
सुरगा हस्तो घूमै द्वार । सहर पना को लगर्यो कार ।।
जिमक है दरवाजा चार । पहरेदार वहा खडया हुस्यार ।।

× × × ×

उलटी मुलटी तुक मिलाई । चौक चानणी मार बनाई ।।
सावण सुदी ८ सुभवार । १९५४ मे करी तयार ।।

'शेखावत यश काव्य' से उद्धृत बिसाऊ सबंधी पद्य

(कवि ब्रजराम बारहठ, जवानी पुरा)

रोज बिसाऊ राज रै, सूरा तणी शिकार ।
सर दोला रहु सांवठा, शोस सदा एक सार ।।
शोस सदा एक सार, फन भइ स्यार स्या ।
साजी मोल अपार, सज्योडा त्यार स्या ।।
बीगल बज उण बार, व दूजा वावणी ।
।। ऋतु बारह मास, लगावै छावणी ।।

कवित्त बिसाहू को हजारीमल पोद्दार के मदरसे को—

(हास्य रस विलास से उदधृत, कवि
विलासराय ब्राह्मण सारस्वत, बिसाऊ)

मुलतान सुन हजारीराम, धम को करायो काम ।
पुण्य के प्रताप से आनन्द बहु पावैंगे ।
देश वो विदेश मे तिहारो यश फल गयो ।
धम हू की बात सुन पापी धकरावैंगे ।
गऊ द्विज पालक शाले शत्रु के कलेजे बीच ।
भनत विलास याद नित तुम आवोगे ।
'राजी रहो आप' नित अमरदराजी रहो ।
साजी रहो साहबी, जरुर सुख पावोगे ।।

'श्रीलाल सतक' से उद्धृत

(डा० उदयवीर शर्मा)

(अ) इतिहासा मे ऊजळो, साहित मे सरणाम ।
नगर बिसाऊ आपरो, अळम भोम अभिराम ।।
वरदा वर दी यो सबळ, बणगा ग्यान मसाल ।
नगर बिसाऊ जलमिया, धन्य धन्य श्रीलाल ।।
धन्य घडी जल्म्या रतन, धन्य मात कुळ धन्य ।
दोनी प्रतिभा धण प्रबळ, नगर बिसाऊ धन्य ।।
वरदा नगरी जगमगी, थार पुन - परताप ।
मनहर भाव अगाइया, साहित जग मे आप ।।

गुणपुरी सेखा धरा, धन बळ विद्या धाम ।
इतिहासा म ऊजळो, पु य थळो सरणाम ।।
सोनै सी प्यारी धरा, झूझारा री खान ।
साहित मे सबळो सजळ, देस धरम री स्यान ।।
कण कण मे कीरत रमी, म्हारो राजस्थान ।
पण ये साचा मिनख हा, कद न करयो गुमान ।।

(ब) श्रेष्ठ हाथ सू येपड्या, दूजै सू फटकार ।
ग्यान जोत राखी अटल, सिम्यां रा हियहार ।।
सेवा जीवन साधना, बिरला राख ध्यान ।
साच मन सेवा करी, बणगा मिनख महान ।।
इतिहासां रा पारखो, ऊडो ग्यान कमाल ।
कठ बिराज सुरसती, रग थान श्री लाल ।।
साहित मडल थरपियो, दियो 'मनोहर' रूप ।
पनप्यो फल्यो बिरख ज्यू, बो 'वरदा' र रूप ।।
ग्रथ पारखी गजब रा, पनी राखी दीठ ।
खरी खरी क ता सदा, सामै हो, परपीठ ।।
मीठी बाणी ओपती, थारी जीभ रसाल ।
'श्री' रा थे हा लाडला, इसडा थे श्री लाल ।।
विदवाना मिल सू पियो, सभापति पद भार ।
सगम नै उजळो करयो, साहित र ससार ।।
हाको पूटयो नगर म, कुरळाया बनमोर ।
गयो गयो घर लाडलो, जन मानस सिरमोर ।।
सीस झुका विनती कर, थां सू 'सिष्य' दयाल ।
जन मन मगळ मे रमा, वरदो थे श्री लाल ।।

'कवि का गाव' पुस्तक के मुख्य मुख्य उद्धरण
(कवि— डा॰ मनोहर शर्मा)

ओ प्यारे सुखधाम बिसाऊ नगर मनोहर ।
तू वसुधा का सार प्रेमरत्नो का आकार ।।
तेरी मिट्टी इस काया म रूप बढ़ाई ।
न दन वन सी पावन देह मे प्राण

पितृ भूमि तू मातृ भूमि तू विमल पावन ।
देव भूमि तू दिव्य भूमि तू परम सुहावन ।।
तेरे सुख में सुखी सदा यह तनमन मेरा ।
विजय उन्नति अभिलाषा का यह बसेरा ।।
पूर्व में वह बीड जहां हरियाली छाई ।
पात पात में स्नेह सुधा शोभा सरसाई ।।
सटा हुआ वह खेत बीड से मुझे खींच कर ।
अपनी गोदी में लेता है, प्रेम पुलक भर ।।
जिसकी बालू ने तन में रसधार बहाई ।
जिसके जोटों से है मेरी प्रेम मिताई ।।
मिल जाएगा धूल कणों में यह मेरा मन ।
चमचम करता ज्यों मोती का जीवन पावन ।।
टीले पर मंदिर कोठी है बनी बगीची ।
बालू के पवन पर छाई शोभा ऊंची ।।
सटाहुआ है वहां पास ही मृत्यु लोक वह ।
जहाँ घूमता है जीवन का स्रोत सुखावह ।।
जिसने देखा है बचपन, यौवन वृद्धापन ।
एक ठौर जो खडा हुआ, ढोता है जीवन ।।
लहराता है वहां तुम्हारा मान सरोवर ।
वर्षा ऋतु में ऊपर तक जब वह जाता भर ।।
गऊघाट, तिरधारा, बुर्जे छतरी उसकी ।
दर्शन का प्रस्थान, लहर, चोभी वह रस की ।।
उसके तन में न्हाता है इस मन का मोती ।
उसके तल में प्रकट कमल सी काया होती ।।
देव नदी का स्रोत खूब तुमने अपनाया ।
धोळपाळिया कहा प्यारा नाम धराया ।।
ऋतु आती थी एक साल में चार सुहावन ।
लट्टू, गिडी, कौडी, कजलों की मन भावन ।।
फागुन के डफ को कस में आज मुलाऊ ।
जिसमें मेरे चल जीवन को ठौर बताऊ ।।

वे सावन के गीत रसीले गली गली में।
गूंजा करते हैं माना की रगरली म ॥

वह तेरा बाजार श्रेष्ट देवालय शोभित।
पावन उच्च उत्तार कलश जिनके प्राम्नोषित ॥

महामहिम रामायण की लीला मन भावन।
भर देती उत्साह नया, जन जन मे जीवन ॥

दिव्य रूप नारायण का भाता भूतल पर।
छवि दिखलाता भाव जगाता सरस मनोहर ॥

ग्रथागार तुम्हारा सबको अतिशय प्यारा।
जनता के जीवन को देता रहा सहारा ॥

हंसवाहिनी जहां शारदा वीणा बजाती।
अमृत की वर्षा करती, रस धार बहाती ॥

मेरी लीला भूमि रहा वह रस का सागर।
मेरा प्रेम निकेत रहा वह ज्ञान उजागर ॥

वहा कूप पास खडा तेरा विद्यालय।
गीता के मत्रो से पावन ज्यो देवालय ॥

बहुत दिनो की याद पुरानी जिसमे सोई।
जिसमे मन की माला मैंने बैठ पिरोई ॥

खडा बीच मे दुर्ग तेरा गौरव गरिमामय।
दृढ विशाल अति उच्चधरा का साज सुखाशय ॥

जिसकी बुर्जें शौर्य कथा के गीत सुनाती।
बाहर भीतर त्याग तपस्या धार बहाती ॥

तू प्राणो का प्यार मेरी आखो का उत्सव।
तू मन का अभिराम कुज रसमय वशीरव ॥

आखो मे तेरी छवि जिह्वा पर तेरा रस।
कानो मे सगीत नासिका मे सौरभ यश ॥

गोकुल की गलियो को मैंने तुझम देखा।
मन मोहन के विमल प्रेम की उज्ज्वल रेखा ॥

अगर कहीं पशु होना मुझको पडे दयामय।
गायो के सग चरू बीड मे प्रेम सुखाशय ॥

टील पर जो पेड़ खड़ा हो वहां बसेरा ।
भोर साभ गावे मन मेरा मेरा मेरा ।।
यदि का गाव बिसाऊ भी, अमृत के स्वर मे ।
अपनापन जाग्रत करदे, जन जन के उर मे ।।

डा० मनोहर शर्मा सम्बधी डिंगल - गीत

(रावत सारस्वत)

नमो तूझ लेखणधर नामी, पामी धणनामी प्रभु - प्रीत ।
कलम करा थामी जसकामी, नह विसरामी होय नचीत ।। १ ।।
लोक कथ्यो, कथियो वेदागम, मथियो सैं साहित - महराण ।
गूढ मरम ग्रह लखा ग्रथियो, सथियो सो माडयो सहनाण ।। २ ।।
दिन दिन वार्ता रो धन दाटयो, खाटयो परा खेचळ कर ख्यात ।
बरस-बरस भर थाबा बाटयो, भरया खेत,लाटयो इण भात ।।३।।
गीत, प्रवाद, कवता, गाथा हरजस, भजन, पदा हरखाय ।
परवाडा व्हाळघा परचाया, हर पूरी चुटकला हसाय ।। ४ ।।
गीता कथ गाई जस - गाथा, 'ग्राडावळ री ग्रातम' ग्राण ।
रागा सू घोरा रीझाया, काव्य तणा रचिया कमठाण ।। ५ ।।
'वरडी माथ' तप्यो वण कु नण, 'सोनल भीग' सज्यो सिणगार ।
चलियाता 'साका' ग्रणकथिया, वरणविया तै वरती वार ।। ६ ।।
भिन भिन भेद कठा लग भाखा, साखा सबद न पार लहूस ।
रस री गाठ घुळी जिय राखा, साखा भर जग ग्राप सुणेस ।। ७ ।।
वरदहथी 'वरदा' विरदावण, प्रगटावण गुण ग्यान प्रकार ।
धीरप सू ध्याई तै ध्यानण, सुरसत रूप हुयो साकार ।। ८ ।।
बुधबळ सपजै, भर ग्रातम बळ, ग्रबळ प्रबळ राख ग्रापाण ।
ग्रमळ विमळ ग्रणभग ग्रचचल पहखडा, पुगी पहचाण ।। ९ ।।

☼

परिषद् के संरक्षक

१ श्री रामावतार कसेरा	५ श्री इब्राहिमखा हाजी लादूखा कायमखानी
२ " विश्वनाथ आर्य	६ " रमेशचन्द्र शर्मा
३ " गोविन्दप्रसाद पोद्दार	७ " ज्ञानचन्द्र शर्मा
४ " दुर्गादत्त रामकुमार जटिया	८ " परशुराम पोद्दार

विशिष्ट सहयोगी सदस्य

श्री नथमल कसेरा— नगर के उत्तरी बाजार मे श्री नथमल कसेरा की दुकान उनके पिता श्री केसरदेव कसेरा के समय से ही प्रसिद्ध रही है। आप एक कुशल दुकनदार हैं। खुदरा और थोक दोनो प्रकार का व्यापार आप बड़ी सफलता से करते हैं। अपने धंधे मे कुशल श्री कसेरा नगर की अन्य प्रवृत्तियों में भी पूरी रुचि रखते हैं। साहित्य के प्रति आपका विशेष रुझान है। आप तरुण साहित्य परिषद् के विशिष्ट सहयोगी सदस्य हैं।

संस्था के आजीवन सदस्य

१ श्री रामजीलाल कल्याणी	१८ श्री राधेश्याम पुजारी
२ " अमोलकचंद जांगिड	१९ " भोलाराम पवनकुमार बजाज
३ " नेमीचंद जेजानी	२० " सत्यनारायण बिरमीवाला
४ " विश्वनाथ बिरमीवाला	२१ " सन्तोषकुमार पोद्दार
५ " परमानन्द जटिया	२२ " विश्वनाथ पुजारी
६ " ओमप्रकाश बयाल	२३ " आत्माराम जोशी पुत्र श्री सांवलराम जी जोशी
७ " डा० उदयवीर शर्मा	२४ " विजयकुमार बयाल
८ " सज्जनकुमार बुचासिया	२५ " नथमल कसेरा
९ " नन्दराम गणपतराय	२६ " ताराचन्द शर्मा
१० " श्याममुन्दर ओमप्रकाश	२७ " नागरमल कानोडिया
११ " ओमप्रकाश धानूका	२८ " श्यामसुन्दर गाडोदिया
१२ " जगदीशप्रसाद कसेरा	२९ " राधाकिशन बेलासरिया
१३ " देवकीनन्दन आर्य	३० " बनवारीलाल शर्मा पुत्र श्री मूलचन्द शर्मा
१४ " विश्वम्भर अग्रवाल	३१ " केदारमल ओमप्रकाश जवानी
१५ " अलादीन खा	३२ " रामाकिशन पोद्दार
१६ " बाबूलाल जटिया	
१७ " बजनाथ बयाल	

10296